मुसलमानों को काफिर कौन कहेता है ?

MILLAT-E-ISLAMIA HOUSE

Wahabi Fatwa Tank

- : मुसन्निफ :-

मुनाज़िरे अहले सुन्नत,

ख़लीफए-हुज़ूर-मुफतीए-आज़मे हिन्द

अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी

(बरकाती-नूरी)

नाशिर

मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा

इमाम अहमद रज़ा रोड, मेमनवाड, पोरबंदर, गुजरात

"जमीअते अहले हक जम्मू और कश्मीर" नाम की फर्ज़ी तन्ज़ीम के नाम से मुसन्निफ का नाम भी पोशीदा रख कर झूठ और दरोगगोई पर मुश्तमिल "**बरैल्वी जमाअत का तआरुफ और उन के फत्वे**" के नाम से आठ वर्क़ी किताब्चा का तारीखी हकाइक और बराहीन की रौशनी में दन्दान शिकन जवाब, जिस से बहुतसी गलत फहमियों और शुबहात का इज़ाला और तदारुक हो जाएगा।

मुसलमानों को काफिर कौन कहेता है ??

मुसन्निफ

मुनाज़िरे अहले सुन्नत, ख़लीफ-ए-मुफ्ती-ए-आज़मे हिंद,
अल्लामा अबदुल सत्तार हमदानी 'मस्रूफ'
(बरकाती-नूरी)

नाशिर

मरकज़ अहले सुन्नत बरकाते रज़ा
इमाम अहमद रज़ा रोड, मेमन वाड, **पोरबंदर**, (गुजरात)
Phone : (0286) 2220886 Mob : 9879303557

नाम किताब : **"मुसलमानों को काफिर कौन कहेता है ?"**
मुसन्निफ : खलीफ-ए-मुफ्ती-ए-आज़मे हिंद, मुनाज़िरे अहले सुन्नत, माहिरे रज़वियात
अल्लामा अबदुलसत्तार हमदानी
"मसरूफ" (बरकाती,नूरी)
कम्पोज़िंग : हाफिज़ मुहम्मद इमरान हबीबी (मरकज़- पोरबंदर)
तस्हीह : अल्लामा मुस्तफा रज़ा यमनी, रिज़्वी
नायब बानीए मरकज़ पोरबंदर
सने तबाअत : जुलाई ई.स. २०१५
तादाद : ग्यारह सौ (११००)
नाशिर : **मरकज़ अहले सुन्नत बरकाते रज़ा**
इमाम अहमद रज़ा रोड, मेमनवाड, पोरबंदर (गुजरात)

-: मिलने के पते :-

(1) Mohammadi Book Depot. 523, Matia Mahal. Delhi
(2) Kutub Khana Amjadia. 425, Matia Mahal. Delhi
(3) Farooqia Book Depot. 422/C Matia Mahal. Delhi
(4) Madni Sarkar Gorup. Morbi. Gujarat
(5) New Silver Book Depot.
Mohammad Ali Road. Bombay
(6) Maktaba-e-Rahmania.
Opp: Dargah Aala Hazrat-Bareilly
(7) Kalim Book Depot
Khas Bazar, Tin Darwaja, Ahmedabad

शर्फ़े इंतिसाब

मैं अपनी इस काविश को अपने आक़ाए नेअमत, ताजदारे अहले सुन्नत, शेहज़ादए सय्यदना सरकार आला हज़रत, हम शबीहे गौसे आज़म, नायबे इमाम-ए-आज़म, मज़हरे मुजद्दिदे आज़म, सय्यदी व सनदी व मावाई-व-मलजाई

हुज़ूर मुफ्तीए आज़मे आलम, हज़रत मौलाना मुस्तफा रज़ा ख़ां क़िब्ला.

अलैहिर्रहमतो वर्रिदवान

की ज़ाते बा-बरकात से मन्सूब करता हूँ।

जिनकी एक तवज्जो ने मेरे दिल की दुनिया बदल दी और मुझे वहाबियत की गुमराही के दलदल में गर्क़ होने से बचा कर ईमान की लाज़वाल दौलत अता फरमाई। अल्लाह तबारक व तआला की रहमत के बेशुमार गुल उनके मर्क़दे मुक़द्दस पर ता क़ियामत नाज़िल होते रहें और उनके ●फ़ुयूज़ो-बरकात से हम हमेंशा मुस्तफीज़ व मुस्तफीद होते रहें। आमीन ! बेजाहे सय्येदिल मुर्सेलीन अलैहि अफज़लुस्सलातो वत्तस्लीम

खानकाहे आलिया बरकातिया
मारेहरा मुतह्हरा और
खानकाहे नूरिया रज़विया
बरैली शरीफ का अदना सवाली

फहेरिस्त

www.markazahlesunnat.net

www.markazahlesunnat.net

तक़रीज़े जलील

ख़लीफए ताजुश्शरीआ व मुहद्दिसे कबीर, फज़ीलतु श्शैख़, आलिमे जलील, फाज़िले नबील, मुनाज़िरे अहले सुन्नत, नासिरो नाशिरे मस्लके आला हज़रत, हामीए सुन्नत, क़ातए नजदियत व ज़लालत, मुफ्ती-ए-ज़ीशान, मुहक़्क़िे-बा-वक़ार

हज़रत अल्लामा मुफ्ती अख़्तर हुसैन अलीमी साहब क़िब्ला

सदर मुफ्ती :- दारुल उलूम अलीमीया जमदाशाही

व

क़ाज़ीए शरीअत :- ज़िला संत कबीर नगर (यू.पी.)

बादए तोहिब से मख़्मूर किसी ना-मुराद ने चंद महीनों पैशतर एक किताबचा बनाम **"बरेल्वी जमाअत का तआरुफ और उनके फत्वे"** छाप कर कश्मीर की ख़ूश अक़ीदगी की पुरबहार फिज़ाओं को जरासीमे वहाबीयत से मस्मूम करने और बद अक़ीदगी की नजासत से आलूदा करने की भरपूर कोशिश की और अस्लाफे किराम खुसूसन पेश्वाए अहले सुन्नत, आला हज़रत, अज़ीमुल

बरकत, सय्यदना इमाम अहमद रज़ा हनफी क़ादरी बरेल्वी क़ुद्दस सिर्रहू से मुतन●फ्फिर और बदज़न करने के लिए इफतिरा परदाज़ी और बोहतान तराशी का ख़तरनाक कारनामा अंजाम दिया।

उस की इस हरकते मज़बूही से अहले हक़ में इज़तिराब व बेचैनी पैदा होना एक फित्री बात थी। चुनांचे वादी के बाअज़ दर्दमंद हज़रात ने इस किताब्चा की फरेब कारीयों की क़लई खोलने और दीन कुश इन डाकूओं को बे-नक़ाब करने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की ताकि अवाम किसी ग़लत फहमी का शिकार न हों।

सरज़मीने नज्द से दुल्हन बनकर निकलने वाले इन डाकूओं को बेपर्दा करने के लिए मुनाज़िरे अहले सुन्नत, क़ात-ए-नजदियत, **अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी साहब** दाम ज़िल्लहुल आली मुन्तख़ब हुए। जो बजा तौर पर इस काम के लिए सिर्फ मुनासिब ही नहीं बल्कि बहुत बेहतर थे, कि रब्बे क़दीर ने अपने ख़ज़ानए आमिरा से आपको वो औसाफ व कमालात और खूबियां बख़्शी हैं कि जिन पर अहले सुन्नत को फख़्र है।

मौसूफ की ज़हानत व फतानत और लियाक़त व सलाहियत पर उनकी बेमिसाल तसानीफ शाहिद हैं, आप एक बेहतरीन मुसन्निफ व मोअल्लिफ, उम्दा ख़तीब और अज़ीम मुस्लेह व दाई होने के साथ एक ताजिर और इस्लामी कुतुब व मख़तूतात के आला दर्जा के ताबे व नाशिर हैं, सुरअते तेहरीर और ज़ूद नवेसी में अपनी मिसाल आप हैं, जिस काम का इरादा कर लिया, तो जब तक उसे पायए-तकमील तक नहीं पहुँचाते, सारा आराम व सुकून तर्क कर दिया करते हैं। अब तक आप तक़रीबन १३५/किताबें तसनीफ फरमा चुके हैं। जिनमें से अक्सर रद्दे वहाबियत और इमामे इश्क़ो

मुहब्बत **सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान के खिलाफ झूठे इल्ज़ामात पर मुश्तमिल इफतिराआत व इख़्तिराआत के दंदान शिकन जवाब में हैं। ये किताबें रज़वियात के ख़ज़ाने में बैश–बहा जवाहिर की हैसियत से दरख़्शां हैं।

सूब–ए–गुजरात में आपकी जहदे मुसलसल और सईए पैहम के बेहतर असरात व नताइज और मस्लकी कोशिश व कारकर्दगी के मज़ाहिर माथे की आँखों से देखे जा सकते हैं। रद्द व मुनाज़रा और एहक़ाके हक़ व इबताले बातिल में भी शोहरत याफ्ता हैं, वहाबियत व देवबंदियत और सुलेह कुल्लियत के परखचे उड़ाने का हुनर भी खूब है। गुजरात की वहाबियत, देवबंदियत और सल्फियत आपके नाम से लरज़ती और काँपती है।

आपने कश्मीरी मुसलमानों की ख़्वाहिश का एहतराम करते हुए क़लम उठाया, तो एक नई तर्ज़ व अदा और जदीद उस्लूब से हक़ाइक़ को बे–नक़ाब किया और सय्यदना इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरेल्वी कुद्दस सिर्रहू पर लगाए गए बे–बुनियाद इल्ज़ामात और इतहामात की दीवार ज़मीन बोस कर दी और वहाबी इफतिरा के ताजमहल को चकना चूर कर दिया।

ये किताब इंशाअल्लाह तआला बेशुमार ग़लत फहमियों का इज़ाला करेगी हक़ाइक़ से रुशनास करेगी और ये बता देगी कि उम्मते मुस्लिमा की तकफीर का ज़हर फिर्क़ए वहाबीया ने फैलाया है। अहले सुन्नत बिल ख़ुसूस इमाम अहमद रज़ा कुद्दस सिर्रहू का दामन इस तरह की जसारत से पाक है। इमाम अहमद रज़ा ने किसी एक भी मुसलमान को काफिर नहीं कहा है। हाँ जो लोग अपनी

शामते आमाल और शोमिए क़िस्मत से अल्लाह व रसूल की शान में गुस्ताख़ी का इर्तिकाब कर के काफिर हो चुके थे, आपने उनके मुतअल्लिक हुक्मे शरअ से लोगों को आगाह फरमा दिया है।

इन तफ्सीलात के लिए किताबे हाज़ा का वरक़ वरक़ बोलता नज़र आ रहा है। आईए! आप भी इस की सदाए हक़ से अपनी समाअत को ताज़गी बख़्शें और दिलो–दिमाग को इस की नग़मगी से महज़ूज़ फरमाएं।

दुआ है कि रब्बे क़दीर जल्लशानुहू अपने हबीबे आज़म व अकरम के सदक़े व तुफैल अल्लामा हमदानी साहब मद्दज़िल्लहू को बा–सेहत व आफियत उम्रे ख़िज़्र अता फरमाए और उनका क़लम शबो–रोज़ रवाँ–दवाँ रहे और किल्के रज़ा के ताबनाक जल्वे का मुज़ाहेरा कर के मुनाफिक़ीने ज़माना के कलेजों को छलनी करता रहे।

फक़त :–

मुहम्मद अख़्तर हुसैन क़ादरी

ख़ादिम इफ्ता व दरस, दारुल उलूम अलीमीया,
जमदाशाही, बस्ती, (यू.पी.)
क़ाज़ीए–शरीअत :– ज़िला संत कबीर नगर (यू.पी.)
२२/ज़िलहज हि.स. १४३६, ७/अक्तूबर इ.स. २०१०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहु वनुसल्ली वनुसल्लेमो अला रसूलेहिल करीम

इस्लामी अदालत में इस्तिग़ासा

हां ! मेरी फरियाद है। इस्तिग़ासा है। किस से ? इस्लामी अदालत के मोहतरमो मुकर्रम मुनसिफाने किराम (जजों = **Judges**) से। इस्लामी अदालत अब कहाँ मुनअक़िद होती है ? और दारुलक़ज़ा अब कहाँ हैं ? अद्लो-इन्साफ की दाद अब कहाँ से हासिल की जा सकती है ? इस किताब का हर पढ़ने वाला मेरे लिए इस्लामी अदालत का मुनसिफ है। मुझे यक़ीन है कि मेरे मोहतरम क़ारेईने किराम मेरी दादो फरियाद को बग़ौर समाअत फरमाएंगे। ब-नज़रे अमीक़ मेरा मुक़द्दमा देख कर ग़ौरो ख़ौज़ से काम ले कर हक़-व-बातिल का इमतियाज़ फरमाकर मेरे दामने उम्मीद को गौहरे इन्साफ से भर देंगे। आज में इस किताब के हर पढ़ने वाले को अल्लाह और रसूल का वास्ता देता हूँ कि आप गैर जानिबदार हो कर मुनसिफ आदिल की हैसियत से फैसला सादिर फरमाएं। आह कितना संगीन मुक़द्दमा है। हक़ीक़त को झूट के पर्दे में छिपा कर किज़्बे सरीह यानी खुल्लम खुल्ला झूट को सदाक़त के नाम से मौसूम किया जा रहा है। अवामुन्नास की आँखों में धूल झोंक कर उन्हें बदज़न व बदगुमान करने की मज़मूम कोशिश की जा रही है।

मेरे मुन्सिफ आदिल ! मेरे मुक़द्दमे का मा-हसल और मेरी फरियाद का लुब्बे लुबाब सिर्फ यही है कि सिर्फ मुझ पर ही नहीं बल्कि हमारी पूरी जमाअते हक़ यानी अहले सुन्नत व जमाअत पर मुख़ालिफीन का ये इल्ज़ाम व इत्तिहाम है कि हम अहले सुन्नत व जमाअत के मुत्तबईन यानी सुन्नी बरैल्वी लोग और हमारी अहले

ईमान की जमाअत के उलमा बात बात में मुसलमानों को काफिर कह देते हैं, बल्कि यहां तक का इल्ज़ाम लगाया जाता है कि हमारी जमाअत के इमाम और मुजद्दिद **आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरैल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने ज़िंदगी भर कुफ्र के फ़त्वे की मशीनगन चलाई और मिल्लते इस्लामिया के नामवर लोगों पर हमेशा कुफ्र के फत्वे का गोला दागते रहे। औलोमाए देवबंद और नदवा मौलाना अहमद रज़ा के कुफ्र के फत्वे की मशीन गन का शिकार हुए और बेशुमार उन के मुत्तबईन पर कुफ्र के फत्वे के गोले बरसाए गए।

जमीअते अहले हक़ - जम्मू व कश्मीर के नाम से एक किताबचा सिर्फ आठ (८) औराक़ पर मुश्तमिल शाए कर के कसीर तादाद में मुफ्त तक़सीम किया गया है। मज़कूरा आठ वर्क़ी किताबचा सरासर किज़्ब और बोहतान दराज़ी पर ही मुश्तमिल है। बग़ैर नामे मुसन्निफ और फर्ज़ी तन्ज़ीम के नाम से शाए होने वाला किताबचा हरगिज़ इस क़ाबिल नहीं कि उस का जवाब लिखा जाए। लैकिन मज़कूरा किताबचा में जिस चाबुकदस्ती और अय्यारी से इल्ज़ामात आइद किए गए हैं, वो इस क़दर ख़तरनाक अंदाज़ के हैं कि सादा लौह मो'मिन उसे पढ़कर बदगुमानी के दलदल में फंसे बग़ैर नहीं रह सकता। लिहाज़ा कश्मीर के शहर श्रीनगर (**Srinagar**) से हज़रत अल्लामा क़िबला बिलाल साहब और दीगर अहले ख़ैर हज़रात का मुसलसल इसरार रहा कि इस किताबचे का अगरचे वो किताबचा बेवक़अत ही सही, इस का दलाइलो-शवाहिद की रोशनी में दन्दान शिकन जवाब दिया जाए। लिहाज़ा इन्किशाफे हक़ और झूट का पुल मुनहदिम करने के लिए मक्तबए फिक्र देवबंद की किताबों के हवालाजात से साबित किया जाएगा कि **बेक़ुसूर मुसलमानों पर कुफ्र के फत्वे किस ने सादिर किए हैं और मुसलमानों को कौन काफिर बनाता और कहता है ?**

"कुफ्र और शिर्क के फत्वे की इब्तिदा"

मौलवी इस्माईल दहेल्वी कि जिन को देवबंदी मक्तबए फिक्र के लोग और जमीअते अहले हदीस दोनों के दोनों अपना इमाम और मुक़्तदा तस्लीम करते हैं। मौलवी इस्माईल दहेलवी ने हि.स. १२४० में रुस्वाए ज़माना किताब "**तक़्वियतुल ईमान**" तस्नीफ की थी। किताब तस्नीफ कर लेने के बाद मौलवी इस्माईल दहेलवी ने इशाअत के तअल्लुक़ से अपने मख़्सूस अहबाब की एक मिटिंग बुलाई थी। जिस का तज़्किरा वहाबी, देवबंदी जमाअत के हकीमुल उम्मत **मौलवी अशरफ अली थानवी** साहब ने इस तरह फरमाया है कि :-

"मौलवी इस्माईल साहब ने तक़्वीयतुल ईमान अव्वल अरबी में लिखी थी। चुनांचे उस का एक नुस्ख़ा मेरे पास और एक नुस्ख़ा मौलाना गंगोही के पास और एक नुस्ख़ा मौलवी नसरुल्लाह ख़ां ख़ूरजोवी के कुतुबख़ाने में भी था। इस के बाद मौलाना ने उस को उर्दू में लिखा। और लिखने के बाद अपने ख़ास ख़ास लोगों को जमा किया। जिन में सय्यद साहब, मौलवी अब्दुल हय साहब, शाह इस्हाक़ साहब, मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहब, मौलवी फरीदुद्दीन साहब मुरादाबादी, मोमिन ख़ां, अब्दुल्लाह ख़ां अल्वी (उस्ताज़ इमाम बख़्श सहबाई

व ममलूक अली साहब) भी थे। और उन के सामने तक़्वीयतुल ईमान पैश की और फरमाया कि मैंने ये किताब लिखी है।

और मैं जानता हूँ कि इस में बाज़ जगह ज़रा तेज़ अलफाज़ भी आ गए हैं और बाज़ जगह तशद्दुद भी हो गया है। मस्लन उन उमूर को जो शिर्के ख़फी थे, शिर्के जली लिख दिया गया है। इन वजूह से मुझे अंदेशा है कि इस की इशाअत से शौरिश ज़रूर होगी। अगर मैं यहां रहता तो इन मज़ामीन को मैं आठ दस बरस में ब तदरीज बयान करता, लैकिन इस वक़्त मेरा इरादा हज का है और वहां से वापसी के बाद अज़्मे जेहाद है। इस लिए इस काम से माज़ूर हूँ और मैं देखता हूँ कि दूसरा इस बार को उठाएगा नहीं। इस लिए मैंने ये किताब लिख दी है। **गो इस से शौरिश होगी मगर तवक़्क़ोअ है कि लड़ भिड़ कर ख़ुद ठीक हो जाएंगे। ये मेरा ख़याल है।** अगर आप हज़रात की राय इशाअत की हो, तो इशाअत की जाए, वर्ना इसे चाक कर दिया जाए। इस पर एक शख़्स ने कहा कि इशाअत तो ज़रूर होनी चाहीए। मगर फलां फलां मक़ाम पर तरमीम होनी चाहीए। इस पर मौलवी अब्दुल हय साहब, शाह इस्हाक़ साहब और अब्दुल्लाह ख़ां अलवी व मोमिन ख़ां ने

मुख़ालिफत की और कहा कि तरमीम की ज़रूरत नहीं। इस पर आपस में गुफ्तगू हुई और गुफ्तगू के बाद बिल इत्तिफाक़ ये तय पाया कि तरमीम की ज़रूरत नहीं है और इसी तरह शाए होनी चाहीए। **चुनांचे उस की इशाअत उसी तरह हूई ।"**

हवाला : हिकायाते औलिया, अज़ अशरफ अली थानवी, हिकायत नंबर : ५९, सफा : ८३,८४, मतबूआ : ज़करिया बुक डिपो, देवबंद, सहारनपुर – (यू.पी.)

किताब "**हिकायाते औलिया**" की इस इबारत को सिर्फ एक दो मर्तबा नहीं बल्कि कई मर्तबा तवज्जोह और ग़ौरो–फिक्र के साथ पढ़ें, इस इबारत में उन जुमलों पर ख़ुसूसी तवज्जोह दें, जैसा की मुसन्निफ ने बज़ाते ख़ुद तस्लीम करते हुए कहा कि :–

- **मैं जानता हूँ कि इस किताब में बाज़ जगह ज़रा तैज़ अलफाज़ भी आ गए हैं, और बाज़ जगह तशद्दुद भी हो गया है ।**
- **उन उमूर को जो शिर्के ख़फी थे, शिर्के जली लिख दिया गया है ।**
- **इन वुजूह से मुझे अंदेशा है कि इस की इशाअत से शौरिश ज़रूर होगी ।**
- **गो इस से शौरिश होगी, मगर तवक़्क़ोअ है कि लड़ भिड़ कर ख़ूद ठीक हो जाएंगे, ये मेरा ख़याल है ।**

वाक़िआ को बयान करने के बाद आख़िर में मौलवी अशरफ अली थानवी साहब ने लिखा है कि :–

- **चुनांचे उस की इशाअत उसी तरह हुई ।**

■ **अब आईए ! इन जुमलों पर ठंडे दिल से सोचें ।**

(१) **"मैं जानता हूँ कि इस में बाज़ जगह ज़रा तेज़ अलफाज़ भी आ गए हैं और बाज़ जगह तशद्दुद भी हो गया है ।"**

इस जुमले में मुसन्निफ का "**इक़बाले जुर्म**" साबित हो रहा है। "**मैं जानता हूँ**" केहकर मुसन्निफ तस्लीम कर रहा है कि इस किताब "**तक़्वीयतुल ईमान**" में मैंने तेज़ अलफाज़ और तशद्दुद का जो जुर्म किया है, वो ग़लती से नहीं हुवा बल्कि मैंने जान–बूझ कर किया है। ला–इल्मी में या किसी तरह के जज़्बात से मुतअस्सिर हो कर ग़लती नहीं हूई, बल्कि मुझे मालूम है, सोच समझ कर ही मैंने लिखा है, बेख़याली से मेरा क़लम बहेका नहीं है, जो भी लिखा है, वो मेरी सोच व फिक्र का ही नतीजा है, इसी लिए तो कहा कि "**मैं जानता हूँ ।**"

क्या जानता हूँ ? यही कि मैंने इस किताब में तशद्दुद यानी ज़्यादती की है। तशद्दुद का मअना जब्र होता है और जब्र के मानी है जुल्मो–सितम। यानी मौलवी इस्माईल ने अपनी किताब के ज़रीये उम्मते इस्लामिया पर जुल्मो–सितम किया है, और वो जुल्मो–सितम क्या है ?

(२) **''उन उमूर को जो शिर्के ख़फी थे, शिर्के जली लिख दिया गया है ।''**

हद कर दी !!! उमूर का मतलब लुग़त में **''बहुत से काम''** होता है, हवाले के लिए देखो **''फीरोज़ुल्लुग़ात''** सफा नंबर : १२२ यानी बहुत से ऐसे काम जो **''शिर्के ख़फी''** के थे, उन कामों को **''शिर्के जली''** लिख दिया। जिस का साफ मतलब यही हूवा कि जिन कामों के करने से आदमी मुशरिक और काफिर नहीं होता बल्कि मुसलमान ही बाकी रहता है, अलबत्ता गुनहगार ज़रूर होता है, लैकिन इस्लाम से ख़ारिज नहीं होता, ऐसे कामों के करने वाले लाखों मुसलमानों को क़लम के सिर्फ एक ही झटके से काफिर और मुशरिक बना दिया । शिर्क के फत्वे की मशीनगन चला कर लाखों के ईमान को नैस्तो-नाबूद कर दिया ।

यहां एक बात की वज़ाहत कर देना ज़रूरी है कि मौलवी इस्माईल देहलवी ने सिर्फ **''शिर्क''** के कामों पर ही **''शिर्के जली''** का फत्वा नहीं दिया, बल्कि सदियों से जो जाइज़ और मुस्तहब काम मिल्लते इस्लामिया में राइज थे, उन कामों पर भी **''शिर्क''** के फत्वे की मशीनगन चला दी। इस उम्मत के जलीलुल क़द्र सहाबा, औलिया, सुल्हा, सूफिया, औलोमा, मुहद्दिसीन, औलोमाए मुज्तहिदीन, मशाइख़ और रहबरे दीन जिन कामों को इस्लाम के इब्तिदाई दौर से करते आए और उन कामों को करने की नसीहतें और वसीयतें की थीं, उन तमाम कामों पर भी बेदर्दी से शिर्क का फत्वा सादिर कर दिया ।

मौलवी इस्माईल की किताब **''तक़वीयतुल ईमान''** छपने के बाद ही हिन्दुस्तान में वहाबियत और बद मज़हबियत फैली है । मौलवी इस्माईल दहेलवी की हैसियत वहाबियों और अहले हदीष (ग़ैर मुक़ल्लिदीन) के नज़दीक **''इमामे अव्वल फिल हिंद''** की है । मौलवी इस्माईल दहेलवी ने अपनी किताब **''तक़वीयतुल ईमान''** में बड़ी ना-इंसाफी से काम लिया है । ऐसा सख़्त तशद्दुद किया है कि आदमी काँप उठे, जो बातें **''शिर्के ख़फी''** की थीं, उन को **''शिर्के जली''** लिख दिया। यानी जिन बातों से आदमी सिर्फ गुनाहगार होता था, उन बातों की वजह से उन्हें काफिरो-मुशरिक बना दिया, जाइज़ कामों पर भी शिर्क के फत्वे लगा दिए, हज़ारों नहीं बल्कि लाखों की तादाद में ईमान वालों को काफिर और मुशरिक ठहरा दिया, शिर्क के फत्वे का तूफान बरपा कर के फित्ना व फसाद की आंधी फूंक दी, ख़ूद मौलवी इस्माईल दहेलवी ने इस बात का एतराफ किया है कि मैंने अपनी किताब **''तक़वीयतुल ईमान''** में तशद्दुद से काम लिया है ।

अब आईए ! हम **''शिर्के जली''** और **''शिर्के ख़फी''** का अज़ीम फर्क़ तफसील के साथ देखें ताकि अच्छी तरह ज़हन नशीन होजाए कि मुंदरजाबाला दोनों अक़सामे शिर्क में से एक शिर्क ऐसा है, जिस के इर्तिकाब से सिर्फ गुनाह आइद होता है और आदमी दाइरए-इस्लाम में ही रेहता है । और दूसरा शिर्क ऐसा भयानक और ख़तरनाक है कि जिस के करने से आदमी गुनाहे अज़ीम का मुर्तकिब और इस्लाम से भी ख़ारिज हो जाता है ।

लिहाज़ा कारेइने किराम से इलतिमास है कि अपनी तमाम तवज्जोहात को इस उनवान की तरफ मर्कूज़ फरमा कर शिर्क के अक़साम के पेचीदा उनवान को आसानी के साथ समझ कर अच्छी तरह ज़हन नशीन फरमा लें।

शिर्क के दो अक़साम :
शिर्के अकबर और शिर्के असग़र

आम तौर पर शिर्क एक ही मअना और मतलब के लिए बोला जाता है कि अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक करना या अल्लाह तआला की जो ज़ाती सिफतें हैं, ऐसी ज़ाती सिफतें या कोई एक सिफत उन ज़ाती सिफतों में से एक ज़र्रा बराबर किसी के लिए ज़ाती सिफत मानना शिर्क है। इसी तरह अल्लाह तआला के सिवा किसी को मुस्तहिक़े इबादत (परसतिश के लाइक़) ठहराना भी शिर्क है। ये हूई शिर्क की मुख़्तसर तारीफ।

अब शिर्क के तअल्लुक़ से तफसीली गुफ्तगू करें :

शिर्क की हदीसों में दो क़िस्में बताई गई हैं :

- **शिर्क की पहली क़िस्म :**
  शिर्के अकबर यानी "**बड़ा शिर्क**" इस का दूसरा नाम "**शिर्के जली**" यानी "**खुला शिर्क**" है।
- **शिर्क की दूसरी क़िस्म :**
  शिर्के असग़र यानी "**छोटा शिर्क**" इस का दूसरा नाम "**शिर्के ख़फी**" यानी "**छुपा शिर्क**" है।

www.markazahlesunnat.net

शिर्के अकबर यानी शिर्के जली

- **वजूद में शिर्क :**
  जो शख़्स अल्लाह तआला के सिवा किसी को वाजिबुल-वजूद (यानी हमेंशा से होना और हमेंशा रहना) ठहराए, वो मुशरिक है।
- **ख़ालिक़ियत में शिर्क :**
  जो शख़्स अल्लाह के सिवा किसी को हक़ीक़तन ख़ालिक़ (बनाने वाला, पैदा करने वाला) जाने, या कहे, या माने, वो मुशरिक है।
- **इबादत में शिर्क :**
  सिर्फ अल्लाह तआला ही इबादत के लाइक़ है, जो शख़्स अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे को मुस्तहिक़े इबादत माने, या ठहराए, या अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की इबादत करे, वो मुशरिक है, जैसे कि बुतपरस्त वग़ैरा।
- **सिफात में :**
  अल्लाह तआला की जितनी भी सिफतें हैं, वो ज़ाती हैं, जैसे अलीम यानी इल्म वाला, क़ादिर यानी क़ुदरत वाला और इख़्तियार वाला, रज़्ज़ाक़ यानी रोज़ी देने वाला वग़ैरा, अगर अल्लाह तआला के सिवा किसी के लिए एक ज़र्रे पर क़ुदरत, या इख़्तियार, या इल्म साबित करना, अगर बिज़्ज़ात हो यानी ख़ुद अपनी ज़ात से हो तो, ये शिर्क है।

■ **मुख़्तलिफ अंदाज़ से :**

इसी तरह अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे को इल्म, कुदरत या किसी इख़्तियार में अल्लाह तआला के बराबर, या बढ़कर मानना, या वो ज़रूरी अक़ीदे जो पिछले सफहात में तौहीद के तअल्लुक़ से बयान किए गए, उन अक़ीदों के ख़िलाफ अक़ीदा रखना भी शिर्क है ।

ये हूई शिर्क की मुख़्तसर तारीफ, शरीअत की इस्तिलाह में जब मुतलक़न यानी आम तौर पर शिर्क बोला जाता है, तो इस से मुराद यही **''शिर्के अकबर''** या **''शिर्के जली''** ही होता है । यही शिर्क तौहीदे इलाही का मनाफी है । जिस की वजह से ईमान बरबाद हो जाता है और ऐसा करने वाला अगर तौबा किए बग़ैर मर गया, तो हमेंशा के लिए जहन्नम की आग में रहेगा ।

शिर्के असग़र यानी शिर्के ख़फी

शिर्क का इतलाक़ (लागू होना) कभी मुख़्तलिफ मआनी में भी होता है, उस को **''शिर्के असगर''** या **''शिर्के ख़फी''** यानी छुपा हूवा शिर्क कहते हैं, शिर्के असगर यानी शिर्के ख़फी ये है कि बंदा अपनी इबादत या नैकी के काम में इख़्लास न करे, बल्कि रिया कारी करे, यानी दूसरों को दिखाने के लिए करे, ताकि लोग उसे नैक ईमानदार, इबादत गुज़ार समझें, उस की इबादत सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला के लिए न हो, बल्कि दिखावा करने के लिए हो, रिया कारी पर मुश्तमिल इबादत हरगिज़ क़बूल

नहीं होती, बल्कि ठुकरा दी जाती है । रिया कारी की निय्यत से इबादत करने वाला सवाब पाने के बजाए अज़ाब का हक़दार होता है ।

रियाकारी की इबादत की हदीस शरीफ में सख़्त अलफाज़ में मज़म्मत की गई है, बल्कि इसे **''शिर्के ख़फी''** कहा गया है, चंद हदीसें ख़िदमत में पेश हैं :

हदीस नंबर : १

"أَخْبَرَنَا أَبُو عَبْدِ اللّٰهِ الْحَافِظُ وَ مُحَمَّدُ بْنُ مُوسٰى قَالَ: انا أَبُوْ الْعَبَّاسِ الْأَصَمُّ، نَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيّ بْنِ عَفَّان، نَا زَيْدُ بْنُ الْحُبَابِ، نَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زَيْدٍ الْبَصْرِیُّ، نَا عُبَادَةُ بْنُ نَسِيّ اَلْكِنْدِیُّ عَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ، أَنَّهُ دَخَلَ عَلَيْهِ وَهُوَ فِیْ مُصَلَّاهُ يَبْكِیْ، فَقِيْلَ لَهُ مَا يُبْكِيْكَ ؟ فَقَالَ : حَدِيْثٌ ذَكَرْتُهُ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ، فَقِيْلَ لَهُ: وَمَا هُوَ ؟ قَالَ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ: "اِنِّیْ أَتَخَوَّفُ عَلٰى أُمَّتِیْ مِنْ بَعْدِیْ الشِّرْكَ وَ الشَّهْوَةَ الْخَفِيَّةَ، قُلْتُ : يَارَسُوْلَ اللّٰهِ أَوَ تُشْرِكُ أُمَّتُكَ مِنْ بَعْدِكَ ؟ قَالَ : "يَا شَدَّادُ اِنَّهُمْ، لَا يَعْبُدُوْنَ شَمْسًا وَّ لَا قَمَرًا وَّ لَا حَجَرًا وَّ لَا وَثَنًا وَلٰكِنْ يُرَاؤُوْنَ بِأَعْمَالِهِمْ"، قُلْتُ : يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَا الشَّهْوَةُ الْخَفِيَّةُ ؟

قَالَ : ”يُصْبِحُ أَحَدُهُمْ صَائِمًا فَتُعْرَضُ لَهُ شَهْوَةٌ مِنْ شَهَوَاتِهِ فَيُوَاقِعُ شَهْوَتَهُ وَيَدَعُ صَوْمَهُ.“

حوالہ :

(۱) شعب الایمان ، از امام ابو بکر احمد بن الحسین البیہقی ۴۵۸ھ ، الناشر : دار الکتب العلمیۃ ، بیروت، لبنان ، جلد ۵، حدیث نمبر ۶۸۳۰، ص ۳۳۳.

(۲) کنز العمال فی سنن الاقوال و الافعال ،از علامہ علاء الدین علی المتقی بن حسام الدین (۹۷۵ھ)، ناشر: ایضاً، جلد ۳، حدیث نمبر ۷۴۸۶، ص ۱۹۰.

मुन्दरजाबाला हदीस का हिन्दी तर्जुमा और हवाला

हज़रत उबादा बिन नसी कुंदी रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि वो हज़रत शद्दाद बिन औस रदीअल्लाहो तआला अन्हो के पास आए और हज़रत शद्दाद बिन औस अपने मुसल्ले पर बैठे हुए रो रहे थे, हज़रत शद्दाद ने पूछा कि किस चीज़ ने आप को रुलाया है ? तो उन्हों ने कहा कि इस हदीस को याद कर के रो रहा हूं, जिस को मैंने हुज़ूरे अक़दस ﷺ से सुना है, उन से पूछा गया कि वो कौन सी हदीस है ? हज़रत शद्दाद बिन औस ने कहा कि मैं ने रसूलल्लाह ﷺ को ये फरमाते हुए सुना कि :

''बेशक मैं ख़ौफ करता हूँ मेरी उम्मत पर कि

मेरे बाद वो शिर्क और छुपी हुई शहवत में मुबतेला होगी, अर्ज़ की मैं ने या रसूलल्लाह ! क्या आप की उम्मत आप के बाद शिर्क करेगी? हुज़ूर ने फरमाया: ए शद्दाद ! वो सूरज, चांद, पत्थर और बुत की इबादत नहीं करेगी बल्कि वो अपने अमलों को दिखाएगी । मैंने अर्ज़ की छुपी हुई शहवत क्या है ? आप ने फरमाया कि सुबह करेगा उन में से कोई रोज़ादार और आएगी उस पर शहवत में से कोई शहवत, और वो मुबतेला होगा शहवत में और छोड़ देगा रोज़ा।''

हवाला :-

(१) **''शोअबुल ईमान''**, अज़ इमाम अबीबक्र अहमद बिन हुसैन अल-बैहक़ी, इन्तेकाल :- हि.स. ४५८, नाशिर : दारुल कुतुबुल इल्मिया, बेरूत, लबनान, **जिल्द ५, हदीस नंबर : ६८३०, सफा : ३३३**

(२) **''कन्ज़ुल उम्माल फी सुनने अक़वाल व अफआल''**, अज़ अल्लामा अलाउद्दीन अली मुत्तक़ी बिन हिसामुद्दीन (हि. ९७५) नाशिर : अयज़न, **जिल्द : ३, हदीस नंबर: ७४८६, सफा: १९०**
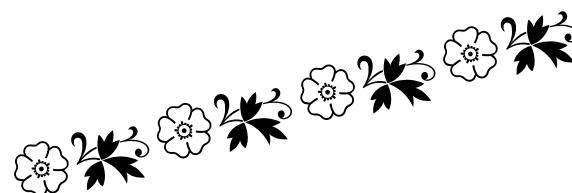
हदीस नंबर : २

"أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ أَحْمَدَ بْنِ عَبْدَانَ، نَا اَحْمَدُ بْنُ عُبَيْدِ بْنِ شَرِيْكٍ، نَا ابْنُ اَبِيْ مَرْيَمَ، نَا اَبِي الزِّنَادِ وَ حَدَّثَنِيْ عَمْرُو بْنُ اَبِيْ عَمْرٍو، عَنْ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ مَحْمُوْدِ بْنِ لَبِيْدٍ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ :

"اِنَّ أَخْوَفَ مَا أَخَافُ عَلَيْكُمُ الشِّرْكُ الْاَصْغَرُ" قَالَ : وَمَاالشِّرْكُ الْأَصْغَرُ؟

قَالَ : "اَلرِّيَاءُ، اِنَّ اللّٰهَ يَقُوْلُ يَوْمَ يُجَازِى الْعِبَادَ بِأَعْمَالِهِمْ: اِذْهَبُوْا إِلَى الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُرَاؤُوْنَ فِي الدُّنْيَا فَانْظُرُوا هَلْ تَجِدُونَ عِنْدَهُمْ جَزَاءً أَوْ خَيْرًا"

حوالہ :
شعب الایمان، از: امام ابوبکر احمد بن الحسین البیہقی ۴۵۸ھ، الناشر: دار الکتب العلمیۃ، بیروت، لبنان، جلد: ۵، حدیث نمبر: ۶۸۳۱، صفحہ: ۳۳۳.

मुन्दरजाबाला हदीस का हिन्दी तर्जुमा और हवाला

"हज़रत महमूद बिन लबीद रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि बेशक रसूलल्लाह ﷺ ने इरशाद फरमाया कि :

"ख़ौफ करने वाली जो चीज़ें हैं, उन में सब से ज्यादा डरने वाली चीज़ जिस का मैं तुम पर ख़ौफ करता हूँ, वो शिर्के असग़र है। अर्ज़

किया, कि शिर्के असग़र क्या है ? आप ने इरशाद फरमाया कि रियाकारी।"

"बेशक अल्लाह तआला फरमाएगा कि आज के दिन बंदों को अपने अमलों का बदला दिया जा रहा है। जाओ, उन के पास, जिन को दिखाने के लिए दुनिया में अमल करते थे और देखो, क्या तुम उन के पास कोई बदला और कोई भलाई पाते हो ?

हवाला :-

(१) **"शोअबुल ईमान"**, अज़ इमाम अबीबक्र अहमद बिन हुसैन अल-बैहक़ी, इन्तेकाल हि.स. ४५८, नाशिर : दारुल कुतुबुल इल्मिया, बेरूत, लबनान, **जिल्द ५, हदीस नंबर : ६८३१, सफा : ३३३**

हदीस नंबर : ३

أَخْبَرَنَا أَبُوْ سَعِيْدٍ الْمَالِيْنِيُّ، أَنَا أَبُوْ أَحْمَدَ بْنُ عَدِيٍّ، نَا مُحَمَّدُ بْنُ الْحُسَيْنِ بْنِ مُكْرَمٍ، نَا مَحْمُوْدُ بْنُ غَيْلَانَ، نَا أَبُوأَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، نَا كَثِيْرُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ رُبَيْحِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ أَبِيْ سَعِيْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ : كُنَّا نَتَنَاوَبُ النَّبِيَّ ﷺ نَبِيْتُ عِنْدَهُ فَذَكَرَهُ وَ قَالَ فِيْهِ:

"أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَخْوَفَ مِنَ الْمَسِيْخِ الشِّرْكَ الْخَفِيَّ أَنْ يَقُوْلَ الرَّجُلُ يَعْمَلُ لِمَكَانِ الرَّجُلِ"

حوالہ:

شعب الایمان، از: امام ابوبکر احمد بن الحسین البیہقی ۴۵۸ھ، الناشر: دار الکتب العلمیۃ، بیروت، لبنان، جلد:۵، حدیث نمبر:۶۸۳۲، صفحہ:۳۳۴.

मुन्दरजाबाला हदीस का हिन्दी तर्जुमा और हवाला

''हज़रत रुबैह बिन अब्दुर्रहमान बिन अदी सईद से रिवायत है और वो अपने वालिद से और उन के वालिद उन के दादा से रिवायत करते हैं, कि हम रात के वक़्त बारी बारी ख़िदमते अक़दस में रहा करते थे । एक मर्तबा रात को मैं हुज़ूरे अक़दस ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर था । तब हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने मुझ से इरशाद फरमाया कि मैं तुम पर ख़ौफ करता हूँ, ऐसा ख़ौफ जो निहायत बुरा है और वो शिर्के ख़फी है यानी छुपा हुवा शिर्क । और वो ये है कि आदमी ने आदमी को दिखाने के लिए अमल किया ।''

हवाला :

(१) **''शोअबुल ईमान''**, अज़ इमाम अबीबक्र अहमद बिन हुसैन अल-बैहक़ी, इन्तेकाल हि.स. ४५८, नाशिर : दारुल कुतुबुल इल्मिया, बेरूत, लबनान, **जिल्द ५, हदीस नंबर : ६८३२, सफा : ३३४**

www.markazahlesunnat.net

हदीस नंबर : ४

''عَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ: اَلشَّهْوَةُ اَلْخَفِیَّةُ وَالرِّیَاءُ شِرْکٌ''

حوالہ:

کنز العمال فی سنن الاقوال والافعال، المؤلف: علامہ علاء الدین علی متقی حسام الدین، ناشر: دار الکتب العلمیہ، بیروت، لبنان، جلد:۳، حدیث نمبر:۷۴۸۳، صفحہ:۱۹۰.

मुन्दरजाबाला हदीस का हिन्दी तर्जुमा और हवाला:-

हज़रत शद्दाद बिन औस रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलल्लाह ﷺ इरशाद फरमाते हैं कि छूपी शहवत और रियाकारी शिर्क है ।

हवाला :

(१) **''कन्ज़ुल उम्माल फी सुनने अक़वाल व अफआल''**, मोअल्लिफ : अल्लामा अलाउद्दीन अली मुत्तक़ी बिन हिसामुद्दीन (हि. ९७५) नाशिर : दारुल कुतुबुल इल्मिया, बेरूत, लबनान, **जिल्द ३, हदीस नंबर : ७४८३, सफा:१९०**

शिर्के ख़फी यानी छुपा हुवा शिर्क, जिस को शिर्के असग़र कहते हैं, इस के रद्द में हम ने कुल चार (४) हदीसें यहां बयान की हैं, हालाँकि इस क़िस्म की कई हदीसें मौजूद हैं, जिन को यहां नक़्ल नहीं करते, अलबत्ता सिर्फ उस का हवाला दर्ज कर देते हैं ।

■ **किताब ''अल-जामेउस्सगीर फी अहादीसे बशीरो-नज़ीर''**
मुसन्निफ : इमाम जलालुद्दीन सुयूती (मुतवफ्फा : हि.स. ९११) नाशिर : दारुल कुतुबुल इल्मिया, बेरूत, लबनान.
★ **जिल्द नंबर:१, हदीस नंबर: ४९३२,सफा नंबर: ३०३ और**
★ **जिल्द नंबर : १, हदीस नंबर : ४९६०, ३०५**

■ **किताब ''कन्ज़ुल उम्माल फी सुनने अक़वाल व अफआल''**
मोअल्लिफ : अल्लामा अलाउद्दीन बिन हिसामुद्दीन, नाशिर: दारुल कुतुबुल इल्मिया, बेरूत, लबनान
★ **जिल्द नंबर : ३, हदीस नंबर : ७४७४, सफा नंबर:१८९**
★ **जिल्द नंबर : ३, हदीस नंबर : ७४७५, सफा नंबर:१८९**
★ **जिल्द नंबर : ३, हदीस नंबर : ७४९९, सफा नंबर:१९१**

ज़रूरी नुक्ता

रियाकारी यानी लोगों को दिखाने के लिए जो अमल किया जाता है, उस को हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने शिर्क फरमाया, लैकिन शिर्क ऐसा नहीं कि जिस से ईमान ख़त्म हो जाए, इसी लिए इस शिर्क को **''शिर्के ख़फी''** यानी **''छुपा हुवा शिर्क''** फरमाया। जिसको शरई इस्तिलाह में **''शिर्के असग़र''** कहा जाता है।

शिर्के असग़र का अमल बेशक क़ाबिले मज़म्मत है, ऐसा करने वाला सख़्त से सख़्त अज़ाब का हक़दार है, उस का अमल दरबारे इलाही में ना-क़ाबिले कुबूल है, उस का अमल उस के मुँह पर मार दिया जाएगा, ऐसा अमल करने वाले को सवाब के बदले अज़ाब मिलेगा, वो सख़्त गुनाहगार है।

www.markazahlesunnat.net

लैकिन ..... ''इस्लाम और ईमान से ख़ारिज हरगिज़ नहीं, वो गुनाहगार ज़रूर है लैकिन मुशरिक या काफिर नहीं।''

रियाकारी की मज़म्मत में बहुत कुछ लिखा जा सकता है लैकिन ज़्यादा ना लिखते हुए, सिर्फ एक हदीस शरीफ यहां पेश की जाती है :

हदीस शरीफ :

''عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ قَالَ فَاِنِّی سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ: ''مَنْ صَلّٰی یُرَائِیُ فَقَدْ اَشْرَکَ وَمَنْ صَامَ یُرَائِیُ فَقَدْ اَشْرَکَ وَمَنْ تَصَدَّقَ یُرَائِیُ فَقَدْ اَشْرَکَ''

حوالہ: مشکوٰۃ المصابیح، باب الریاء، الفصل الثالث، ص۴۵۵، مطبو رضا اکیڈمی، بمبئی.

मुन्दरजाबाला हदीस का हिन्दी तर्जुमा और हवाला

''हज़रत शद्दाद बिन औस रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि कहा उन्हों ने कहा कि मैं ने हुज़ूरे अक़्दस ﷺ को ये फरमाते सुना कि :

''जिस ने रियाकारी से नमाज़ पढ़ी, उस ने शिर्क किया, जिस ने रियाकारी से रोज़ा रखा, उस ने शिर्क किया, जिस ने रियाकारी से सदक़ा दिया उस ने शिर्क किया।''

हवाला : ''मिश्कातुल मसाबीह'', बाबुर्रिया, अल-फस्लुस्सालिष, **सफा : ४५५**, मतबूआ : रज़ा अकैडमी, मुंबई

इस हदीस में रियाकारी से नमाज़ पढ़ने वाले को, रियाकारी से रोज़ा रखने वाले को और रियाकारी से सदक़ा करने वाले को, शिर्क करने वाला फरमाया गया है, इस का मतलब हरगिज़ ये नहीं कि वो काफिर और मुशरिक हो कर इस्लाम से ख़ारिज हो गया, यहां शिर्क से मुराद हरगिज़ शिर्के अकबर नहीं बल्कि शिर्के असगर है। शिर्के अकबर उस को केहते हैं कि अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे को इबादत के लाइक़ समझ कर उस की इबादत की जाए, ये खुला हुवा यानी शिर्के जली है। इस के करने से बेशक करने वाला इस्लाम व ईमान से ख़ारिज हो जाएगा।

लैकिन रियाकारी की इबादत को भी शिर्क कहा गया है, उस की वजह ये है कि रियाकारी से इबादत करने वाला अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे की हरगिज़ इबादत नहीं करता, सिर्फ अल्लाह तआला ही की इबादत करता है, ग़ैरे ख़ुदा यानी अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे की इबादत को शिर्क समझता है। शिर्क से नफरत करता है। फिर भी उसे शिर्क करने वाला इस लिए कहा गया है कि उस की इबादत में इख़लास नहीं रहा, बेशक वो सिर्फ अल्लाह तआला ही की इबादत करता है। मगर उस की इबादत में दुनिया के मफाद और हिर्स की आमेज़िश आगई है। इस आमेज़िश की वजह से इबादत का असल मक़सद यानी अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी और रज़ामंदी ख़त्म हो गई। लोगों की नज़रों में अच्छा दिखाने की लालच की मिलावट आ गई और इस लालच का नाम ही रियाकारी। रियाकारी कैसा क़ाबिले मज़म्मत काम है, इस का ज़िक्र हम कर चुके, ये ऐसा शर्मनाक फेअल है कि हमारे प्यारे आक़ा नबी-ए-रहमत, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने उम्मतियों को इस बुराई से बचाने के लिए ऐसे सख़्त

अलफाज़ में उस की बुराई बयान फरमाई कि उस को सुनकर हर शख़्स रियाकारी के इर्तिकाब से बचने की हर मुम्किन कोशिश करे। रियाकारी को शिर्क केहकर उस से डराया गया है। रियाकार शख़्स को ज़जरन यानी डराने के लिए शिर्क करने वाला कहा गया है। हुक्मन नहीं कहा गया, यानी उस पर मुशरिक होने का हुक्म नहीं लगेगा, हाँ ये बात भी ज़रूर है कि वो सख़्त गुनाहगार है। उस की इबादत कोई मानी नहीं रखती, क़यामत के दिन उस की इबादत उस के मुँह पर मार दी जाएगी। लैकिन, उस को काफिर या मुशरिक नहीं कहा जाएगा।

साबित हुवा कि :

- **शिर्के अकबर (शिर्के जली) यानी खुला हुवा शिर्क से आदमी काफिर व मुशरिक हो कर इस्लाम से और ईमान से निकल जाता है।**
- **शिर्के असग़र (शिर्के ख़फी) से आदमी काफिर या मुशरिक हो कर इस्लाम और ईमान से नहीं निकल जाता।**

मौलवी इस्माईल दहेलवी ने किस को किस को काफिर व मुशरिक कहा

मौलवी इस्माईल दहेलवी ने अपनी रुस्वाए ज़माना किताब **"तक़वियतुल ईमान"** में शिर्के ख़फी के कामों को शिर्के जली में शुमार कर के करोड़ों बल्कि अरबों कल्मा गो अहले ईमान मुसलमानों को काफिर व मुशरिक बना दिया। आईए ! मौलवी इस्माईल दहेलवी की मज़कूरा रुस्वाए ज़माना किताब का सरसरी जायज़ा

लें और देखें कि किन किन बे-कुसूर मुसलमानों को बे-दरेग़ काफिर केह दिया। बल्कि यूं केहना ज़्यादा मुनासिब होगा कि भोले भाले और बे-कुसूर मुसलमानों पर कुफ्र व शिर्क के फत्वे की मशीनगन दाग़ दी।

- **नज़रो-नियाज़ करने वाला मुशरिक है। सफा नंबर:१६**
- **अब्दुन्नबी, अली बख़्श, नबी बख़्श नाम रखने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : १६**
- **पीर बख़्श, मदार बख़्श, सालार बख़्श नाम रखने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : १६**
- **गुलाम मुहीयुद्दीन और मुईनुद्दीन नाम रखने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : १७, १० पुराना**
- **बुज़ुर्गों के नाम पर माल ख़र्च करने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : २४**
- **क़ब्र पर गि़लाफ डालने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : २४**
- **बुज़ुर्गों की चौखट के आगे खड़े हो कर दुआ मांगने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : २४**
- **क़ब्र के गि़लाफ को पकड़कर दुआ करने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : २४**
- **मज़ार के इर्दगिर्द रोशनी करने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : २४**
- **मज़ार और आस्ताने को झाड़ू देने वाला और फर्श बिछाने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : २४**

- **मज़ार पर आने वाले लोगों को पानी पिलाने वाला और उन के वुज़ू और गु़स्ल का सामान दुरुस्त करने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : २४**
- **वली अल्लाह के आस्ताने के कूवें का पानी मुतबर्रक समझ कर पीने वाला, कूवें का पानी आपस में बांटने वाला और वो पानी किसी के लिए ले जाने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : २४**
- **आस्ताने से रुख़्सत होते वक़्त उल्टे पांव चलने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : २५**
- **मज़ार शरीफ पर मुजावर बनकर बैठने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : २५**
- **क़ब्र को और चौखट को बोसा देने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : २५**
- **क़ब्र को मोर छल झिलने वाला और शामियाना खड़ा करने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : २५**
- **अल्लाह और रसूल चाहेगा, तो मैं आऊँगा। ऐसा केहने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : २६**
- **नबी, वली, इमाम, शहीद को अल्लाह की जनाब में अपना शफी यानी शफाअत करने वाला समझने वाला असली मुशरिक है। सफा नंबर : ५४**
- **मुहर्रम के महीने में पान ना खाने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : ८४**
- **मुहर्रम के महीने में लाल कपड़ा ना पहनने वाला मुशरिक है। सफा नंबर : ८४**

मौलवी अशरफ अली थानवी ने भी जी भर के मुसलमानों को काफिरो मुशरिक कहा

वहाबी, देवबंदी और तबलीग़ी जमाअत के हकीमुल उम्मत **मौलवी अशरफ अली थानवी साहब** ने अपनी किताब "**बहिश्ती ज़ेवर**" हिस्सा अव्वल, मतबूआ :- रब्बानी बुक डिपो । दहेली । सफा नंबर : ३४ पर "**कुफ्र और शिर्क की बातों का बयान**" उनवान के तहत कुफ्र और शिर्क के कामों को शुमार किया है । उन में

- **हुसैन बख़्श, अली बख़्श, अब्दुन्नबी नाम रखने वाला काफिर व मुशरिक है ।**
- **सहेरा बांधना शिर्क है । लिहाज़ा शादी में सहेरा बांधने वाला मुशरिक है ।**
- **ख़ुदा और रसूल ﷺ अगर चाहेगा, तो फुलां काम हो जाएगा । ऐसा केहने वाला मुशरिक है ।**
- **किसी को दूर से पुकारने वाला मुशरिक है ।**
- **किसी बुज़ुर्ग के नाम का वज़ीफा पढ़ने वाला मुशरिक है ।**
- **किसी से मुराद मांगने वाला मुशरिक है ।**
- **किसी के नाम की मन्नत मानने वाला मुशरिक है।**
- **अम्बिया और औलिया के लिए इल्मे ग़ैब का अक़ीदा रखने वाला मुशरिक है ।**

मौलवी रशीद अहमद गंगोही के कुफ्र और शिर्क के फत्वे की मशीनगन

मौलवी रशीद अहमद गंगोही जिन का शुमार अकाबिर औलोमाए देवबंद में होता है और वहाबी, देवबंदी और तबलीग़ी जमाअत के मुत्तबईन मौलवी रशीद अहमद गंगोही को "**इमामे रब्बानी**" और "**मुजद्दिद**" के अलक़ाब से मुख़ातब करने में फख़्र महसूस करते हैं । उन्होंने अपनी किताबों और फतावा में अहले सुन्नत व जमाअत के दरमियान सदियों से राइज मरासिम और अक़ाइद को कुफ्र और शिर्क कहा है । मस्लन :

- **अम्बियाए किराम के लिए इल्मे ग़ैब का अक़ीदा रखने वाला मुशरिक है । (हवाला :- फतावा रशीदिया, कामिल व मुबव्वब, सफा : ६२)**
- **या रसूलल्लाह केहने वाला काफिर है । (हवाला : फतावा रशीदिया, सफा : ६२)**
- **नबी बख़्श, पीर बख़्श, सालार बख़्श, मदार बख़्श नाम रखने वाला मुशरिक है । (हवाला : फतावा रशीदिया, सफा : ६९)**
- **हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम को इल्मे ग़ैब था, ऐसा अक़ीदा रखने वाला मुशरिक है। (हवाला : फतावा रशीदिया, सफा : १०३)**
- **हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह और वालिदा हज़रत आमेना दोनों**

का इन्तक़ाल हालते कुफ्र में हुवा है । (हवाला :- फतावा रशीदिया, सफा : १०४)

(मआज़ल्लाह दोनों काफिर थे ।)

- **या शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी का वज़ीफा पढ़ने वाला मुशरिक है ।(फतावा रशीदिया, सफा : ६८)**
- **साहिबे क़ब्र से इल्तिजा करने वाला मुशरिक है । (फतावा रशीदिया, सफा : १११)**
- **दुरूदे ताज पढ़ने वाला मुशरिक है ।(हवाला : फतावा रशीदिया, सफा : १६२)**

सदियों से राइज मरासिमे अहले सुन्नत के जाइज़ और मुस्तहब कामों पर हराम, नाजाइज़ और बिदअत के फत्वे

मौलवी इस्माईल दहेलवी, मौलवी अशरफ अली थानवी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही और दीगर अकाबिर औलोमाए देवबंद ने अपनी मुख़्तलिफ किताबों में सदियों से कौमे मुस्लिम में राइज अहले सुन्नत व जमाअत के जाइज़ और मुस्तहब कामों पर बिला किसी दलील के सिर्फ बुग्ज़ो–इनाद की बिना पर हराम, बिदअत और ना–जाइज़ के फत्वे थोप कर करोड़ों की तादाद के मुसलमानों को नाजाइज़ और हराम काम के मुर्तकिब ठहरा कर पूरी मिल्लते इस्लामिया के मज़हबी जज़्बात और उन के हुस्ने–ए'तक़ाद को कारी ज़र्ब की ठेस पहूँचाने की मज़मूम हरकत भी की है । जिस का तफसीली बयान यहां मुम्किन नहीं । लिहाज़ा ज़ैल

में औलोमाए देवबंद की किताबों के चंद हवाले पैशे ख़िदमत हैं, जिन को देखने से क़ारेईने किराम को मालूम होगा कि औलोमाए देवबंद ने कैसे कैसे जाइज़ और मुस्तहब कामों पर हराम, बिदअत और ना–जाइज़ के फत्वे की मशीनगन चलाकर मज़हबी दहेशतगर्दी का मुज़ाहेरा किया है। मुलाहिज़ा फरमाएं :-

- **मुहर्रम में सहीह रिवायात के साथ भी शहादत का बयान करना हराम है ।**
  (हवाला :- फतावा रशीदिया, सफा :- १३९)
- **मेहफिले मीलाद कि जिस में रिवायाते सहीहा पढ़ी जाएं और किसी क़िस्म की बेहूदगी और रिवायाते ममनूआ न हों, ऐसी मेहफिले मीलाद भी हर हाल में नाजाइज़ और ममनू हैं ।(हवाला :- फतावा रशीदिया, सफा :- १३०, और १३१)**
- **जिस उर्स में सिर्फ क़ुरआन शरीफ पढ़ा जाये और किसी क़िस्म के ख़िलाफे शरअ काम न हों । तब भी ऐसे उर्स में शरीक होना जाइज़ नहीं । (फतावा रशीदिया, सफा :- १३४)**
- **मुहर्रम में पानी की सबील लगाना और शरबत पिलाना या दूध पिलाना, ये सब काम हराम हैं ।(हवाला :- फतावा रशीदिया, सफा :- १३९)**
- **मुर्दा दफ्न करने के बाद क़ब्र पर अज़ान देना बिदअत है ।(हवाला :- फतावा रशीदिया, सफा: १४५)**
- **ईद के दिन मुसाफहा और मुआनेक़ा करना बिदअत दलाला और हराम है ।**
  (हवाला :- फतावा रशीदिया, सफा :- १४८)

- **तीजा, दस्वां, चालिस्वां ये सब गुमराही भरी बिदअत है। (हवाला :- फतावा रशीदिया, सफा :- १५४)**
- **मुहर्रम में बनाई जाने वाली पानी की सबील और मुहर्रम में लोगों को पिलाने के लिए बनाए जाने वाले शर्बत में चंदा देना हराम है।**
(हवाला :- फतावा रशीदिया, सफा :- १३९)
- **शबे बरात का हलवा, मुहर्रम का शर्बत व खिचड़ा लग्व और गुनाह है।**
(हवाला:- बहिश्ती ज़ेवर, हिस्सा : ६, सफा : ६६)
- **हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के जुब्बा शरीफ और मूए मुबारक शरीफ या और किसी बुज़ुर्ग के तबर्रुकात की ज़ियारत करना, इस में बहुत ख़राबियां हैं लिहाज़ा मना हैं। (हवाला :- बहिश्ती ज़ेवर, हिस्सा :- ६, सफा : ६७)**

क़ारेईन इंसाफ करें

मुंदरजाबाला इक़्तिबासात देखने के बाद अब हम क़ारेईने किराम की ख़िदमत में मोअद्दबाना गुज़ारिश करते हैं कि अब फैसला आप के हाथों में है। गैर जानिबदार हो कर मुंसिफाना नज़र की सदाक़त से आप खूद फैसला फरमाएं कि **मुसलमानों पर काफिर और मुशरिक के फत्वे कौन देता है ? मुसलमानों को बिदअती कौन बनाता है ? मुसलमानों को हराम और नाजाइज़ काम के मुर्तकिब कौन कहेता है?** मुंदरजाबाला अक़ाइद और अफआल को शिर्क, कुफ्र, बिदअत, नाजाइज़ और हराम के फत्वे

दे कर औलोमा-ए देवबंद कितने मुसलमानों को अपने फत्वों की ज़द में ले रहे हैं। लाखों नहीं बल्कि करोड़ों की तादाद में सहीहुल-अक़ीदा मुसलमानों पर शिर्क के फत्वे की मशीनगन चला रहे हैं। करोड़ों की तादाद में मुसलमानों पर कुफ्र और शिर्क के फत्वे थोप कर उन्हें इस्लाम से ख़ारिज कर रहे हैं।

क़लम के सिर्फ एक झटके से कसीर तादाद के मुसलमानों के ईमान को ज़बह कर के उन्हें **"काफिर"** और **"मुशरिक"** बनाया जा रहा है। मुंदरजाबाला मरासिमे अहले सुन्नत के मुस्तहब और जाइज़ कामों को सदियों से करते आ रहे हैं। उन तमाम को **"काफिर"** और **"मुशरिक"** क़रार दिया जा रहा है। जिस का साफ मतलब ये हुवा कि उन कामों को जिन्हों ने **माज़ी में किया, दौरे हाज़िर में कर रहे हैं, या मुस्तक़बिल में जो करेंगे, वो सब के सब काफिरो-मुशरिक थे, हैं या होंगे**। माज़ी के यानी इस्लाम की इब्तिदा से अब तक होने वाले और इन्तक़ाल करने वाले, दौरे हाज़िर में जो हयात हैं और मुस्तक़बिल में जो पैदा होने वाले हैं, वो तमाम ईमान वाले मुसलमानों को **वहाबी, देवबंदी जमाअत के अकाबिर औलोमा काफिर और मुशरिक केह रहे हैं**। चौदह सौ १४००, साल से अब तक के और अब से ले कर क़यामत तक होने वाले कितने मुसलमानों को काफिर कहा जा रहा है। इन तमाम मुसलमानों की तादाद को शुमार किया जाए इस का अदद (**Figure**) लाखों और करोड़ों में नहीं बल्कि अरबों खरबों (**Million Billion**) से भी बढ़ जाएगा। और इन में के अकसर तो इस फानी दुनिया से कूच फरमाकर अपनी अपनी क़ब्रों में आराम फरमा रहे हैं। वो तमाम मक़बूर और मदफून अरबों खरबों की तादाद के अहले ईमान मुसलमानों को अब रेह रेह कर,

अर्सए-दराज़ के बाद "**काफिर**" और "**मुशरिक**" ठहेराया जा रहा है। इन मरहूमीन को औलोमा-ए देवबंद काफिर और मुशरिक ठहरा रहे हैं। हैरत तो इस बात पर है कि दौरे हाज़िर के वहाबी और उन के पेश्वा औलोमा अपने आबा व अजदाद को भी नहीं बख़्श रहे हैं। क्यूंकि फिर्क़ा-ए-वहाबियह नजदियह की ईजाद के पहेले उन के आबा व अजदाद भी वो तमाम मरासिमे अहले सुन्नत अंजाम देते थे, जिन को दौरे हाज़िर के वहाबी अकाबिर औलमा कुफ्र और शिर्क कहेते हैं।

क्या क़ारेईने किराम इस बात को तस्लीम करते हैं कि सदियों से जिन मरासिमे अहले सुन्नत के जाइज़ और मुस्तहब कामों के करने वाले अरबों खरबों की तादाद के माज़ी के तमाम मुसलमान **काफिर और मुशरिक थे ?** क्या उन तमाम अहले ईमान मरहूमीन को दहेलवी साहब, थानवी साहब, गंगोही साहब वगैरा के फतावा की बिना पर काफिर और मुशरिक कहा जाएगा? अगर अकाबिर औलोमा-ए देवबंद के फतावा और किताबों को हक़ तस्लीम किया जाएगा, तो ला मुहाला और नाचार हो कर माज़ी के तमाम मुसलमानों को काफिरो-मुशरिक मानना पड़ेगा। जिस का मतलब यही हुवा कि माज़ी के बेशुमार अहले ईमान मुशरिक थे। सिर्फ बराए नाम मुसलमान थे, लैकिन औलोमा-ए देवबंद के नज़रिये से वो तमाम मुशरिक थे, शिर्क की उन्हें तमीज़ न थी। माज़ी के तमाम मुसलमान जिन में सुल्हा, औलोमा, औलिया, सूफिया, अत्क़िया वगै़रा सब के सब जाहिल थे ? शिर्क क्या है ? शिर्क की इस्तिलाह क्या है ? कौन से काम शिर्क के हैं ? कौन सा काम करने से आदमी मुशरिक हो कर इस्लाम के दाइरे से ख़ारिज हो जाएगा? इन तमाम ज़रूरी उमूर का माज़ी में किसी

को इल्म ही नहीं था ? माज़ी के तमाम मुसलमान जहालत और ला-इल्मी की बिना पर शिर्क का इर्तिकाब करते थे ? और मुशरिक थे? बहैसियते मुशरिक ज़िंदा रहे और शिर्क की हालत में ही उन का इन्तक़ाल हुवा है ? लिहाज़ा माज़ी में होने वाले तमाम मुसलमानों ने जो नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे, ज़कात अदा की, हज व उमरा किया, ख़ैरातो-सदक़ात और दीगर आमाले सालेहा किए, वो सब अकारत और बरबाद हुए ? उन की तमाम इबादतो रियाज़त राइगा और ज़ाए हुईं ?

क्या चौदह सौ साल तक शिर्क और कुफ्र की सही इस्तिलाह का किसी को इल्म ही न था ? इस्लामी अहकाम की सच्ची समझ रखने वाला चौदह सौ साल में कोई पैदा ही नहीं हुवा था ? चौदह सौ साल तक के माज़ी के मो'मिनीन में से, जिन की तादाद अरबों और खरबों से भी मुतजाविज़ है, इतनी भारी तादाद के मुसलमानों में एक भी माई का लाल ऐसा पैदा न हुवा था, जो कुफ्र और शिर्क के अहकाम और इस्तिलाह की मालूमात रखता हो ? और चौदह सौ साल के बाद ही इस्लाम को सही माअनों में समझने वाले और कुफ्रो-शिर्क के अहकाम की मुसल्लम मालूमात रखने वाले नानौता, दहेली, गंगोह और थानाभवन ही में पैदा हुए ?

क़ारेईने किराम ! ठंडे दिल से सोचो ! मीज़ाने इंसाफ में तोलकर फैसला करें कि अकाबिर औलोमा-ए देवबंद के फत्वे को हक़ और सच तस्लीम कर के माज़ी के, हाल के और मुस्तक़बिल के अरबों खरबों मुसलमानों को इर्तिकाबे कुफ्रो-शिर्क के मुजरिम ठहेराकर उन्हें इस्लाम से ख़ारिज करना, केहना और मानना मुनासिब है ? अरे अगर अकाबिर औलोमा-ए देवबंद के फत्वे को हक़ तस्लीम किया गया, तो आम मुस्लिमीन तो क्या, ख़ुद इन फतावा देने वालों के बाप दादा भी उन के मशीनगन के कुफरी फतावे की

गोलियों से छलनी हो कर रेह जाऐंगे । मिसाल के तौर पर :-

- **मौलवी इस्माईल देहलवी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही और मौलवी अशरफ अली थानवी के फत्वे के मुताबिक़ :- नबी बख़्श, अली बख़्श, पीर बख़्श, मदार बख़्श, हुसैन बख़्श वग़ैरा नाम रखना शिर्क है ।** (हवाला :- तक़्वीयतुल ईमान, फतावा रशीदिया और बहिश्ती ज़ेवर)

लैकिन .... ???

★ देवबंदी फिर्के के इमामे रब्बानी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही के दादा और नाना दोनों मज़्कूरा नामों से मौसूम थे । हवाला मुलाहेज़ा फरमाएं :-

"बाप की जानिब ख़ानदानी सिलसिला जिस को हज़रत ने ख़ुद बयान फरमाया था, इस तरह है । मौलाना रशीद अहमद बिन मौलाना हिदायत अहमद साहब बिन क़ाज़ी पीर बख़्श"

फिर चंद सतर बाद लिखा है कि :-

"और माँ की जानिब से सिलसिल-ए-नसब जिस को हज़रत के मामूं मुहम्मद शफी साहब ने ख़ानदानी शजरा महफूज़ा से नक़ल कराया, यूं है । मौलाना रशीद अहमद साहब बिन मुसम्मात करीमुन्निसा बिन्ते फरीद बख़्श"

www.markazahlesunnat.net

हवाला :-

(१) "**तज़्किरतुर्रशीद**" मुसन्निफ :- मौलवी आशिक़ इलाही मेरठी, नाशिर :-मक्तबए नोमानिया, देवबंद, (यू.पी.) **जिल्द :-१, सफा :- १३** (पुराना ऐडीशन)

(२) "**तज़्किरतुर्रशीद**" मुसन्निफ :- मौलवी आशिक़ इलाही मेरठी । नाशिर :- दारुल किताब, देवबंद, सने तबाअत २००२ ई., जिल्द : १, सफा : ३२

❖ अब आईए ! दारुल उलूम देवबंद के बानी और मक्तब-ए-फिक्र देवबंद के क़ासिमुल-उलूम वल ख़ैरात, मौलवी क़ासिम नानौत्वी साहब का नसब नामा देखें :-

"सवानेह क़दीम के मुसन्निफ इमाम ने मौलाना मरहूम के शजर-ए-नसब को दर्ज करते हुए लिखा है । मुहम्मद क़ासिम बिन असद अली बिन गुलाम शाह बिन मुहम्मद बख़्श"

हवाला :-

"**सवानेह क़ासमी**" मुसन्निफ : मौलवी मुनाज़िर अहसन गिलानी, नाशिर : दारुल उलूम देवबंद (यू.पी) **जिल्द : १, सफा : ११३**

नतीजा : मुंदरजाबाला दोनों हवालों से साबित हुवा कि :-

- **मौलवी रशीद अहमद गंगोही के दादा का नाम पीर बख़्श था ।**
- **मौलवी रशीद अहमद गंगोही के नाना का नाम फरीद बख़्श था ।**

- **मौलवी क़ासिम नानौत्वी के परदादा (वालिद के दादा) का नाम मुहम्मद बख़्श था ।**

अकाबिर वहाबिया देवबंदिया की किताबों में दर्ज फतावा की रू से पीर बख़्श, फरीद बख़्श, मुहम्मद बख़्श नाम रखना शिर्क है। **"खूद आप अपने दाम में सय्याद आ गया"** वाली मिस्ल के मिस्दाक़ गंगोही साहब और नानौत्वी साहब के आबा व अज्दाद भी वहाबी फतावा की मशीनगन से महफूज़ व मामून न रेह सके।

अल-मुख़्तसर ! वहाबी फित्ने के इबतिदाई दौर में कुफ्र और शिर्क के फतावे का जो मोहलिक तूफान बरपा हुवा, उस की वजह से करोड़ों बल्कि अरबों खरबों मुसलमानों के ईमान ख़तरे में आ गए थे । मुसलमानों की अक्सरीयत पर वहाबी देवबंदी औलोमा ने कुफ्र और शिर्क के फत्वे लगाकर उन्हें इस्लाम से ख़ारिज कर भगाया था। बात सिर्फ कुफ्र और शिर्क के फतावे तक महेदूद रह कर न रुकी, बल्कि **ज़ख़्म पर नमक छिड़कते हुए** अवामुल मुस्लिमीन का अम्बियाए-किराम और औलियाए-इज़ाम से रिश्ता मुनक़ते करने की फासिद ग़रज़ से अम्बियाए-किराम और औलियाए-इज़ाम की अक़ीदतो-महब्बत में किए जाने वाले वो काम कि जिन कामों से अम्बियाए-किराम और औलियाए-इज़ाम की अज़्मतो-रिफअत का इज़्हार होता था, उन तमाम जाइज़ और मुस्तहब कामों को हराम, नाजाइज़ और बिदअत ठेराए । बुज़ुर्गाने दीन से मिल्लते इस्लामिया की अक़ीदत और महब्बत को अदावत और तौहीन में पलटाने की साज़िश के तहत एक मुनज़्ज़म तेहरीक चलाई गई। कुरआने मजीद की आयात के ग़लत तराजम व तफासीर, ग़लत मफहूम, मनचाहा मक़सद व

मुराद और इसी तरह अहादीसे करीमा से मनचाहा, मन घड़त और किज़्ब पर मुश्तमिल इस्तिदलाल कर के अम्बिया-ए-किराम और औलिया-ए-किराम की शाने अर्फा व आ'ला में सख़्त गुस्ताख़ियां और तौहीनें की गईं। उन्हें किताबों की शक्ल दी गई और इस्लाम के दाइमी दुश्मन नस्रानी और अंग्रेज़ों की हुकूमते बर्तानिया के भरपूर माली तआवुन और सियासी पुश्तपनाही के बल बूते पर उन किताबों की नश्रो-इशाअत की गई। इस सिलसिले की पहेली कड़ी हि. १२४० में हिन्दुस्तान में शाए होने वाली **मौलवी इस्माईल देहेलवी** की तसनीफ करदा किताब **"तक़्वीयतुल ईमान"** है। इस किताब में बुज़ुर्गाने दीन की जी भर के गुस्ताख़ियां कर के अपनी क़ल्बी अदावत व शक़ावत का मुज़ाहेरा किया गया है। इस किताब के चंद इक़्तिबासात मुलाहेज़ा फरमाएं :-

- **अल्लाह को मानो और अल्लाह के सिवा किसी को न मानो । (सफा : ३१)**
- **किसी भी नबी और वली को ग़ैब की बात का इल्म नहीं । (सफा : ४०)**
- **रसूलल्लाह ﷺ के बारे में ये अक़ीदा न रखो कि वो ग़ैब की बात जानते थे । (सफा : ४७)**
- **किसी भी नबी और वली को ये भी नहीं मालूम कि अल्लाह उन के साथ क्या मआमला करेगा । (सफा: ४८)**
- **अम्बिया और औलिया को दुनिया का ख़्वाह क़ब्र का और आख़िरत का अपना और दूसरों का क्या हाल होगा, ये भी नहीं मालूम । (सफा : ४८)**

- **अम्बिया और औलिया को आलम में तसर्रुफ करने की क़ुदरत नहीं । (सफा : ५१)**
- **नबी और वली अल्लाह के दरबार में किसी की भी शफाअत नहीं करेंगे और जो किसी नबी और वली को अल्लाह की जनाब में अपना शफी समझे वो मुशरिक है । (सफा : ५४)**
- **जिस का नाम मुहम्मद या अली है, वो किसी चीज़ का मुख़्तार नहीं । (सफा : ७०)**
- **सब अम्बिया और औलिया अल्लाह के सामने एक ज़र्रए-नाचीज़ से भी कमतर हैं । (सफा : ९२)**
- **रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता । (सफा : ९६)**
- **तमाम औलिया, अम्बिया, इमामज़ादा, पीर और शहीद और अल्लाह के जितने मुक़र्रब बंदे हैं वो सब आजिज़ बंदे हैं (सफा : ९९)**
- **अम्बिया और औलिया की ताज़ीम बड़े भाई की तरह करनी चाहिए । वो हमारे भाई हैं । हम उन के छोटे भाई हैं । अल्लाह ने उन को बड़ाई दी है। वो बड़े भाई हैं । (सफा : ९९)**
- **हुज़ूर ﷺ मरकर मिट्टी में मिल गए हैं । (सफा:१००)**

मुंदरजाबाला तौहीन आमेज़ और गुस्ताख़ाना जुम्ले बतौरे नमूना पैश किए हैं। अल्लाह तआला के मुक़द्दस और मुक़र्रब बंदों और महबूबों की शान में खुली हुई तौहीन और बेअदबी से पूरी किताब भरी हुई है। जिस को कोई भी मुसलमान बर्दाश्त नहीं कर सकता । लिहाज़ा मिल्लते इस्लामिया में कोहराम मच गया ।

नतीजा क्या आया ? ये मुझ से नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के मशहूरो माअरूफ सियासी लीडर मौलवी अबुल कलाम आज़ाद की ही ज़बानी सुनीए कि क्या हुवा ?

> **"मौलाना इस्माईल शहीद, मौलाना मुनव्वरुद्दीन के हम दर्स थे, शाह अब्दुल अज़ीज़ के इन्तक़ाल के बाद जब उन्होंने "तक़वीयतुल ईमान" और "जिलाउल-अयनैन" लिखीं और उन के मस्लक का मुल्क भर में चर्चा हुवा, तो तमाम औलोमा में हलचल पड़ गई"**
>
> **हवाला :-**
> **"आज़ाद की कहानी खूद आज़ाद की ज़बानी"**, मुअल्लिफ : मौलवी अब्दुर्रज़्ज़ाक़ मलीहाबादी, नाशिर: मक्तबा ख़लील, उर्दू बाज़ार,लाहौर, पाकिस्तान (**सफा:४८**)

नतीजा ये आया कि मिल्लते इस्लामिया के दरमियान एक अज़ीम फित्ना बरपा हो गया, क़ौमे मुस्लिम की अक्सरियत ने इस किताब की मुख़ालिफत की और हर जगह इस किताब की वजह से फित्ना व फसाद की आंधी चली ।

घर घर में ख़ानाजंगी, मोहल्लों में तनाव, मस्जिदों में मारपीट, मदरसों में लड़ाई, बिरादरी में इख़्तिलाफ़ात, दोस्तों में नज़रियात का तज़ाद, भाई भाई में मज़हबी तनाज़ोअ, बाप बेटे में अक़ीदे की मुख़ालिफत और मज़हब के नाम पर होने वाले दंगे फसाद की वजह से मुस्लिम इत्तेहाद पारा पारा हो गया, पूरे मुल्क में इख़्तिलाफ और झगड़े की आग फैल गई। आम लोगों के साथ साथ आलिमों में भी हलचल मच गई ।

पूरे मुल्क में आग लग गई, अवाम के साथ साथ औलोमा में भी कोहराम मच गया, "**तक़वीयतुल ईमान**" की इशाअत में अंग्रेज़ों ने भरपूर माली तआवुन किया था। ये किताब बड़ी भारी तादाद में छाप कर मुल्क के गोशे गोशे और कोने कोने तक पहूंचाई गई। इस किताब ने मिल्लते इस्लामिया के लोगों के दिन का चैन और रात की नींद तक छीन ली, क़ौमे मुस्लिम का इत्तिहादो-इत्तिफाक़ चकनाचूर हो गया, लोग एक अजीब ज़हनी उलझन का शिकार थे. क्यूं कि तक़वीयतुल ईमान में आयाते क़ुरआनी और अहादीसे नबवी के तराजिम व मफहूम को तोड़ मरोड़ कर ग़लत और अपनी हस्बे मन्शा तावीलात की गई थीं, सादा लौह मुसलमान क़ुरआनो-हदीस के नाम से मुतास्सिर व मरऊब हो कर बेहकावे में आ गए और गुमराहियत के सैलाब में बेह गए, नतीजतन लाखों की तादाद में लोग ईमान से हाथ धो बैठे और एक नया फिर्क़ा बनामे "**नजदी वहाबी फिर्क़ा**" सरज़मीने हिन्दुस्तान में नमूदार हुवा। मुल्क का माहौल नए मज़हब की गंदगी से आलूदा हो गया था। लोग बेचैन थे, परेशान थे, मुज़्तरिब थे, मग़मूम थे, शशो-पंज में थे, तज़बज़ुब में थे, ऐसे परागंदा माहौल में औलोमा-ए हक़ की एक जमाअत उठ खड़ी हुई।

हरमैन शरीफैन से पहेला फत्वा और तक़वीयतुल ईमान का रद करने वाले उलमा

शायद बहुत से लोग ना वाक़फियत की वजह से ये समझते हैं कि हिजरी १३२३ में "**हुस्सामुल हरमैन**" नाम से अकाबिर औलोमाए देवबंद पर कुफ्र का जो फत्वा आया है, वो

हरमैन शरीफैन का पहेला फत्वा है। लैकिन हक़ीक़त ये है कि "**हुस्सामुल हरमैन**" के शरीफैन नाम से शाए होने वाला औलोमाए देवबंद के ख़िलाफ का फत्वा मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा के औलोमा-ए हक़ का दूसरा फत्वा है। जिस की तफसील चंद सुतूर के बाद मज़कूर होगी।

मौलवी इस्माईल दहेलवी की रुस्वाए ज़माना किताब "**तक़वीयतुल ईमान**" की तरदीद में मुल्क भर के औलोमा-ए-हक़ कमरे हिम्मत बांधकर खड़े हो गए। तक़ारीरो-तसानीफ का गैर-मुनक़तेअ सिलसिला क़ाइम हो गया। भोले भाले मुसलमानों के ईमान बचाने के लिए उस वक़्त के यानी **हि. १२४० से हि. १२४६ तक** सैंकड़ों औलोमा व मुसन्निफीन ने इबताले बातिल और एहक़ाक़े हक़ के लिए अपनी बे-लौस ख़िदमात पैश कीं। तक़रीबन तीस (३०) से ज़ाइद ज़ख़ीम और मबसूत किताबें शाए हुईं। तक़वीयतुल ईमान किताब के फित्ने की आंधी के सामने सीना सिपर हो कर आहिनी दीवार बनकर खड़े रहने वाले औलोमा में सब से ज़्यादा सरगर्मी दिखाने वाले औलोमा में तीन (३) हज़रात ने नुमायां कारनामा अंजाम दिया। जिस की तफसील बहुत ही इख़्तिसारन ज़ैल में नाज़रीन की ख़िदमत में पैश है :-

(१) इमामे मंतिक़ो-फलसफा, अल्लामा मुफ्ती फज़्ले हक़ ख़ैराबादी.

अल्लामा फज़्ले हक़ ख़ैराबादी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने इस्माईल दहेलवी के बातिल नज़रियातो-फासिद अक़ाइद का बड़ी गर्मजोशी से मुक़ाबला फरमाया। हि. १२४० में दहेली की जामेअ मस्जिद में मुनाज़रा किया और मौलवी इस्माईल

दहेलवी को शिकस्ते फाश दी, अलावा अज़ीं इस्माईल दहेलवी और तक़्वीयतुल ईमान किताब के रद में **"इमतिनाउन्नज़ीर"** और **"तहक़ीक़ुल-फतावा-फी-इबताले-तुगा"** नाम की तहक़ीक़ी और दलाइलो-बराहीन से लबरेज़ आ'ला मेअयार की किताबें लिखीं और इस्माईल दहेलवी पर कुफ्र का फत्वा भी सादिर फरमाया।

(२) अबुल-कलाम आज़ाद के वालिद हज़रत मौलाना ख़ैरुद्दीन

हज़रत मौलाना ख़ैरुद्दीन साहब ऐसे मुतसल्लिब सुन्नी आलिम थे कि वो गुस्ताख़े रसूल के साथ किसी क़िस्म की रिआयत नहीं करते थे। उन्होंने इस्माईल दहेलवी, तक़्वीयतुल ईमान किताब और तमाम वहाबी अक़ाइद के लोगों के ख़िलाफ मुहिम चलाई। तक़्वीयतुल ईमान किताब के रद में दस (१०) मबसूत और ज़ख़ीम जिल्दों पर मुश्तमिल किताब **"रज्मुश्शयातीन"** लिखी। मौलवी इस्माईल दहेलवी और तमाम वहाबी अक़ाइद रखने वालों पर कुफ्र का फत्वा दिया। अपनी हर तक़रीर और हर मजलिस में वहाबियों के अक़ाइदे बातिला का बड़ी शिद्दत के साथ रद फरमाया और अपने मुतवस्सिलीन व मोअतक़िदीन को वहाबियों की तरदीदो-मुख़ालिफत की तरग़ीब दी बल्कि सख़्त ताकीद फरमाई और **"बिला ख़ौफे लव मता-लाइम"** एहक़ाक़े हक़ और इबताले बातिल का अहम फरीज़ा अंजाम दिया। हज़रत मौलाना ख़ैरुद्दीन साहब रहमतुल्लाहे तआला अलैहे वहाबियों के मआमले में कैसे सख़्त और मुतशद्दिद थे, इस का अंदाज़ा ज़ैल के इक़तिबास से आ जाएगा कि ख़ुद **मौलवी अबुल कलाम आज़ाद** ने अपने वालिदे माजिद के लिए लिखा है कि :-

"वो वहाबियों के कुफ्र पर वसूक़ के साथ यक़ीन रखते थे, उन्होंने बारहा फत्वा दिया कि वहाबियह या वहाबी के साथ निकाह जाइज़ नहीं।"

हवाला :
"आज़ाद की कहानी ख़ुद आज़ाद की ज़बानी", मोअल्लिफ : मौलवी अब्दुर्रज़्ज़ाक़ मलीहाबादी, नाशिर: मक्तबए ख़लील, लाहौर (पाकिस्तान) **सफा : १३५**

(३) मुनाज़िरे अहले सुन्नत अल्लामा मुनव्वरुद्दीन दहेलवी

हज़रत मौलाना मुनव्वरुद्दीन साहब शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहद्दिसे दहेलवी रहमतुल्लाहे तआला अलैह के शागिर्दे रशीद थे और मौलवी इस्माईल दहेलवी के हमसबक़ थे। दोनों ने **हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहद्दिसे दहेलवी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान से एक साथ पढ़ा है। लैकिन जब मौलवी इस्माईल दहेलवी ने रुस्वाए ज़माना किताब **"तक़्वीयतुल ईमान"** लिखी और इस्लामी अक़ाइद की मुख़ालिफत की तो **हज़रत मौलाना मुनव्वरुद्दीन साहब दहेलवी** ने अपने उस्ताज़ भाई के रिश्ते का मुत्लक़ लिहाज़ न फरमाया और मौलवी इस्माईल दहेलवी और उस की किताब तक़्वीयतुल ईमान की तरदीद में सब से ज़्यादा सरगर्मी और सरबराही दिखाते हुए मुतअद्दिद किताबें लिखीं और हि. १२४० में दहेली की जामेअ मस्जिद में मौलवी इस्माईल दहेलवी से मुनाज़रा किया और मौलवी इस्माईल दहेलवी को शिकस्ते फाश दी।

हज़रत मौलाना मुनव्वरुद्दीन ने एक अज़ीम कारनामा ये

अंजाम दिया कि उन्होंने इस्माईल दहेलवी के ख़िलाफ मुल्क भर के औलोमा से फत्वा हासिल किया और फिर बाद में हरमैन शरीफैन के सरताज औलोमाए किराम से फत्वा हासिल किया और इस्माईल दहेलवी की तरदीद व तकफीर में नुमायां काम अंजाम दिया। जिस का ऐतराफ करते हुए जनाब अबुल कलाम आज़ाद साहब इस तरह रक़म तराज़ हैं कि :

> **"उन के रद में सब से ज्यादा सरगर्मी बल्कि सरबराही मौलाना मुनव्वरुद्दीन ने दिखाई। मुतअद्दिद किताबें लिखीं और हि. १२४० वाला मशहूर मुबाहिसा जामेअ मस्जिद दहेली में किया। तमाम औलोमा-ए हिंद से फतावा मुरत्तब कराया, फिर हरमैन से फत्वा मंगाया।"**
>
> **हवाला :**
> **"आज़ाद की कहानी ख़ुद आज़ाद की ज़बानी"**, मोअल्लिफ : मौलवी अब्दुर्रज़्ज़ाक़ मलीहाबादी, नाशिरः मक्तबा ख़लील, लाहौर (पाकिस्तान) **सफा : ४८**

मुंदरजाबाला तीन ३, अज़ीम शख़्सियतों के अलावा ज़ैल में दर्ज अज़ीमुश्शान औलोमा-ए-किराम व मुफ्तियाने इज़ाम ने मौलवी इस्माईल दहेलवी पर कुफ्र का फत्वा लगाया या उस की किताब का रद्दे बलीग तस्नीफ फरमाया। सिर्फ चंद नाम ही पैशे ख़िदमत हैं :

(४) आलिमे जलील, फाज़िले नबील, **हज़रत मौलाना फज़्ले रसूल साहब बदायूनी** रहमतुल्लाहे तआला अलैह जिन्होंने तक़्वीयतुल ईमान के रद में **"सौतुर्रहमान"** और **"सैफुल जब्बार"** नाम की माअरकतुल आरा किताबें तस्नीफ

फरमाईं, जिन का जवाब देने से मौलवी इस्माईल दहेलवी आजिज़ और क़ासिर रहा और आज तक फिर्क़ा-ए-वहाबियह के औलोमा इन दोनों तारीख़ी किताबों का जवाब लिखने से साकित और मजबूर हैं।

(५) मुजाहिदे जंगे आज़ादी, हज़रत मौलाना **मुफ्ती सदरुद्दीन साहब, "आज़ुरदा"**

(६) हज़रत मौलाना **रशीदुद्दीन दहेलवी.**

(७) हज़रत मौलाना **मख़्सूसुल्लाह दहेलवी.**

(८) हज़रत अल्लामा **रहमतुल्लाह कैरानवी.**

(९) हज़रत मौलाना **शुजाउद्दीन ख़ां.**

(१०) हज़रत मौलाना **शाह मुहम्मद मूसा.**

(११) हज़रत मौलाना **अब्दुल गफ़ूर अख़ुंद** पीरे तरीक़त.

(१२) हज़रत मौलाना **मियां नसीर अहमद सवाती.**

(१३) हज़रत मौलाना **हाफिज़ दराज़ पैशावरी,** शारेह बुख़ारी शरीफ.

(१४) हज़रत मौलाना **मुहम्मद अज़ीम अख़ुंद सवाती.**

(१५) हज़रत मौलाना **शाह अहमद सईद मुजद्दिदी.**

(१६) हज़रत मौलाना **शाह अब्दुल मजीद बदायूनी.**

(१७) शहीदे जंगे आज़ादी, शाइरे इस्लाम, आशिक़े रसूल, **हज़रत मौलाना किफायतुल्लाह "काफी", मुरादाबादी.**

अलावा अज़ीं मुल्क के तूल व अर्ज़ से मुतअद्दिद औलोमाए किराम ने वहाबी नजदी फिर्के के रद में अपनी ना-क़ाबिले फरामोश ख़िदमात पैश कीं।

एक बहुत ही अहम सवाल तारीख़ की रौशनी में

मौलवी इस्माईल दहेलवी के रद में किताबें लिखना और इस्माईल दहेलवी को काफिर का फत्वा देना वग़ैरा में मुनहमिक एक सौ (१००) से ज़्यादा अकाबिर औलोमा-ए अहले सुन्नत और हज़ारों की तादाद में असागिरे औलोमा-ए अहले सुन्नत ने जो ख़िदमात अंजाम दीं। वो ज़माना **हि. १२४० से हि. १२४६ के दरमियान का अर्सा है।** क्यों कि मौलवी इस्माईल दहेलवी ने रुस्वाए ज़माना किताब हि. १२४० में लिखकर शाए की थी और मौलवी इस्माईल दहेलवी की मौत हि. १२४६ में वाक़ेअ हुई थी। यानी हि. १२४० से हि. १२४६ के दरमियान का छ (६) साल (**Six Years**) का अर्सा मिल्लते इस्लामिया के लिए इफ्रातो-तफरीत और फित्ना व फसाद के गैर मोअतदिल हालात का अर्सा था और ऐसे संगीन और ना-गवार हालात में अहले सुन्नत व जमाअत के हज़ारों औलोमा-ए हक़ क़ौमे मुस्लिम के ईमान के तहफ्फुज़ के लिए उठ खड़े हुए थे और मौलवी इस्माईल दहेलवी पर और उस के हम-ख़याल फिर्क़ा-ए-वहाबियह के मुत्तबईन लोगों पर काफिर का फत्वा दिया था।

अब हम तारीख़ी शवाहिद की रौशनी में एक अहम मरहले पर आ पहुंचे हैं, और वो ये है कि :

★ **मौलवी इस्माईल दहेलवी की पैदाइश : १२,रबीउस्सानी हि. ११९३**

★ **मौलवी इस्माईल दहेलवी की मौत : २४, ज़िलहिज्जा हि. १२४६**

★ **इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेल्वी की पैदाइश : १०, शव्वाल हि. १२७२**

★ **इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेल्वी का विसाल : २५, सफर हि. १३४०**

मज़्कूरा हक़ीक़त की बिना पर मौलवी इस्माईल दहेलवी की मौत और इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेल्वी की पैदाइश के दरमियान २६/साल का फास्ला है और हि. १२४० में जब तक़्वीयतुल ईमान शाए हुई और औलोमा-ए हक़ ने फिर्क़ा-ए-वहाबियह नजदीयह के अक़ाइदे बातिला पर कुफ्र का फत्वा सादिर फरमाया **वो वक़्त इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेल्वी की पैदाइश से तक़रीबन ३२/साल क़ब्ल का था।** अब सवाल ये पैदा होता है कि **हि. १२४० में सब से पहेले वहाबियों पर कुफ्र का फत्वा देने वाले उस वक़्त के औलोमा-ए हक़ क्या बरेल्वी थे ?** क्या उन्होंने इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेल्वी के कहेने, उकसाने, मुश्तइल करने और बहकाने की वजह से कुफ्र का फत्वा दिया था? नहीं, हरगिज़ नहीं, क्यों कि जब ये फत्वा दिया गया था उस वक़्त तक इमाम अहमद रज़ा इस दुनिया में तशरीफ भी नहीं लाए थे बल्कि **इस फत्वे के तक़रीबन ३२/साल के बाद आप की विलादत हुई है।**

एक अहम बात की वज़ाहत यहां पर कर देना अशद्द ज़रूरी है कि हि. १२४० में औलोमा-ए इस्लाम ने फिर्क़ा-ए-वहाबियह नजदियह पर कुफ्र का जो फत्वा दिया था, वो फत्वा देना ऐसा ज़रूरी था कि इस के अलावा और कोई चारा ही न था। मिल्लते इस्लामिया पर उमंडकर आने वाले नजदी फित्ने के सैलाब के सामने वो फत्वा आहिनी दीवार की हैसियत रखता था।

उस वक़्त माहौल ये था कि मौलवी इस्माईल दहेलवी और उस के हमनवाओं की बे एअतेदालियाँ हद से तजावुज़ कर गई थीं। लाखों की तादाद में मुसलमानाने अहले सुन्नत को काफिर और मुशरिक क़रार दे कर उन के अमवाल को लूटना और उन को बेदर्दी और बेरहेमी से मौत के घाट उतारना एक मामूली बात थी। बेकुसूर मुसलमानों पर ये ज़ुल्मो-सितम इसलिए रवा रखे गए थे कि उन्होंने वहाबी नजदी अक़ाइद तस्लीम करने से इन्कार किया था। एक तारीख़ी दस्तावेज़ पैशे ख़िदमत है :-

"ई. १८३० में सय्यद अहमद बरेल्वी और मुहम्मद इस्माईल दहेलवी ने पैशावर, मरदान और सवात की मुस्लिम आबादी को बज़ौरे शमशीर महकूम बनाकर सरदार पाईंदा ख़ान को पैगाम भिजवाए और ख़ूद मिलकर बैअत की दअवत दी, जब वो बैअत पर तय्यार न हुवा तो सय्यद साहब ने उस पर कुफ्र का फत्वा लगाकर चढ़ाई कर दी।"
हवाला : "**तारीख़े तनावुलियां**", मुसन्निफ : सय्यद मुराद अली अलीगढ़ी, नाशिर : मक्तबा क़ादरिया, लाहौर (पाकिस्तान) का तआरुफ, सफा नंबर : २, अज़ : मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम जलवाल।

सिर्फ बैअत न करने के जुर्म में कितनी बड़ी सज़ा दी जा रही है? सरदार पाईंदा ख़ान का जुर्म क्या था? सिर्फ यही कि उस ने वहाबी नजदी अक़ाइद क़ूबूल करने और वहाबियों के पेश्वा के

हाथ पर बैअत करने से इन्कार किया गोया कुफ्र का फत्वा लगाना एक मामूली बात थी कि धड़ाक से लगा दिया? क्या अपनी टोली और गिरोह में शमूलियत से इन्कार करने वाले को इस तरह कुफ्र के फत्वे से नवाज़ना मुनासिब है? सिर्फ सरदार पाईंदा ख़ान ही नहीं बल्कि सरहदी इलाक़े में बसने वाले बेशुमार मुसलमान अवाम और उन क़बाइल के सरदार भी इसी तरह वहाबी नजदी लश्कर के ज़ुल्मो-तशद्दुद का निशाना बने थे। बेगुनाह और बेकुसूर मुसलमानों को अपना शिकार बनाने के लिए वहाबियों के मुक़्तदा कैसी कैसी तरकीबें और हीले बहाने ईजाद करते थे। मुलाहिज़ा फरमाएं :

"यहां पर दो मआमले दरपैश हैं, एक तो मुफसिदों और मुख़ालिफों का इर्तिदाद साबित करना और क़त्लो-ख़ून के जवाज़ की सूरत निकालना और उन के अमवाल को जाइज़ क़रार देना।"
हवाला : "**मक्तूबाते सय्यद अहमद शहीद**" (उर्दू तर्जुमा) मुतर्जिमः सख़ावत मिर्ज़ा, नाशिर : नफीस अकैडमी, कराची (पाकिस्तान) **सफ़ा : २४१**

एक और तारीख़ी शहादत पैशे ख़िदमत है :

"आप की इताअत तमाम मुसलमानों पर वाजिब हुई, जो आप की इमामत सिरे से तस्लीम न करे या तस्लीम करने से इन्कार कर दे, वो बाग़ी मुस्तहिलुद्दम है और उस का क़त्ल कुफ्फार के

क़त्ल की तरह ख़ुदा की ऐन मर्ज़ी है। मोअतरेज़ीन के एतराज़ात का जवाब तलवार है, न कि तेहरीरो-तक़रीर।''

हवाला :
''**सीरते सय्यद अहमद शहीद**'', मुसन्निफ : सय्यद अबुलहसन अली नदवी, नाशिर : एम, एच सईद ऐंड कंपनी, कराची (पाकिस्तान) सफा : ४८५

मज़्कूरा दोनों इक़्तिबासात का गहेरी नज़रों से मुतालेआ फरमाएं और गौरो फिक्र करें कि वहाबी नजदी गिरोह के मुक़्तदा कैसे कैसे हथकंडे ईजाद करते थे। तलवार की ताक़त के बलबूते पर वहाबियत फैलाने में ऐसे जरी थे कि अक़ाइदे बातिला को तस्लीम न करने वाले सादा लौह मुसलमानों पर इनादन कुफ्र के फत्वे थोपे और उन फत्वों की आड़ में मुसलमानों का माल लूटना और उन्हें क़त्ल तक करना जाइज़ क़रार दिया, सिर्फ जाइज़ ही नहीं क़रार दिया बल्कि ख़ुदा की ऐन मर्ज़ी क़रार दे कर, अपनी शक़ावते क़ल्बी का सुबूत दिया।

इस्लामी तारीख़ के सियाह अवराक़ की हैसियत से वहाबी नजदी तेहरीक हमेंशा बदनाम रहेगी, क्यूं कि इस तेहरीक को नाम निहाद ''**जेहाद**'' केह कर इस के ज़िम्न में बे-गुनाह व बे-क़ुसूर मुसलमानों पर ज़ुल्मो-सितम, तास्सुब व तशद्दुद और जबरी तसल्लुत के वक़्त सिर्फ इस्लामी अख़्लाक़ो-रिवायात और जज़्ब-ए-उख़ुव्वत ही नहीं बल्कि इन्सानियत का भी सरे आम ख़ून किया गया। तफरीक़ बैनुल मुस्लिमीन, तज़लीले मुस्लिमीन, तकफीरे मुस्लिमीन और क़िताले मुस्लिमीन का बाज़ार इतना गर्म

था कि वहाबी नजदी लश्कर के नाम-निहाद मुजाहिदीन के नज़्दीक एक कल्मा गो मुसलमान को मार डालना और एक च्यूंटी को मसल देना, दोनों बराबर था। लोगों की जान, माल, हत्ता कि उन के ईमान का फैसला भी वहाबियों के हाथों में था। कौन मोमिन ? कौन काफिर ? कौन मुर्तद ? कौन मुशरिक ? कौन ज़िंदा रहने का हक़्दार ? किस को मरना चाहिए ? इन तमाम उमूर के फैसले वहाबी नजदी फिर्क़े के इमामे अव्वल के इशारे पर होते थे, अगर वहाबियों के मुक़्तदा को अमीरुल मुस्लिमीन तस्लीम करके उस के हाथ पर बैअत हो गए और उन के अक़ाइदे बातिला ज़ाल्ला से इत्तिफ़ाक़ कर लिया तो अब मोमिनो-मुत्तक़ी व परहेज़गार, मुजाहिद व गाज़ी के इल्क़ाबात से नवाज़िश हो रही है और हमेंशा सलामत व ऐश में रहो, के नारे बुलंद हों और अगर कोई आशिक़े रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम अपनी फरासते ईमानी से उन वहाबियों की हक़ीक़त से वाक़िफ हो कर उन के अक़ाइदे फासिदा से इख़्तिलाफ कर के बैअत होने से इन्कार करे, तो वो बेचारा उन ज़ालिमों के गज़ब व तशद्दुद का शिकार बना ही समझो. काफिर, मुशरिक, मुर्तद, बिदअती, के इल्ज़ामात, के नौकीले कांटे उस के क़ल्ब को छलनी करने के लिए तय्यार ही थे और साथ में इस पर काफिरो मुशरिक का फतावा सादिर कर के, ख़ूद साख़्ता वहाबियों के अमीरुल मुअमिनीन के इमाअ व इशारे पर उस के साथ हर तरह का ज़ुल्मो-सितम जाइज़ समझा जाता था। इस पर तुर्रह ये कि मक़्तूलीन की बेवाओं को अय्यामे इद्दत में भी उन के साथ जबरन और मजबूरन निकाह का नाटक खेल कर अपनी हवस पूरा करने के लिए घरों से घसीट घसीट कर उठा ले जाते थे।

यहां इतनी गुंजाइश नहीं कि उन तमाम वाक़िआत को तफसील के साथ बयान किया जाए, अगर इन तमाम वाक़िआते ज़ुल्मो-सितम की बिल इस्तीआब तफसीली मालूमात हासिल करनी हो तो फक़ीर की तसनीफ करदा किताब **"भारत के दोस्त और दुश्मन"** व नीज़ **"इस्लाम और भारत के गद्दार कौन ?"** का मुतालआ करें।

अल-मुख़्तसर ! कुफ्र और शिर्क के फत्वे इतने आम कर दिए गए थे कि उस दौर में एक मुसलमान को काफिर क़रार देना हर काम से ज़्यादा आसान था, हालां कि किसी मुसलमान पर कुफ्र का फत्वा देना मुश्किल से मुश्किल काम है। मुतकल्लिम, कलाम, तकल्लुम, इल्ज़ाम, लुज़ूम, तावील, सराहत, एहतमाल, ईहाम, ज़ाहिरी मान-अे-कलाम, लुग्वी पहेलू, मुहावरात, इस्तिलाहे अलफाज़, ज़न्ने ख़ैर, वुसूले निय्यत, वग़ैरा अहम अहम और ज़रूरी उमूर को मल्हूज़ रखते हुए जब वजहे कुफ्र **"अज़्हर मिन-श्शम्श"** की तरह साबित हो, तब कहीं कुफ्र का फत्वा सादिर किया जाता है। बल्कि हत्तल इमकान ये कोशिश की जाती है कि उस के कौल की कोई मुनासिब तावील कर के भी उस को कुफ्र से बचाया जाए। लैकिन यहां तो अंधा धुंद बात बात में कुफ्र और शिर्क के फत्वे की मशीनगन ही चलाई जा रही थी।

औलोमा-ए-अहले सुन्नत ने फिर्क़ा-ए-वहाबियह नजदियह पर कुफ्र के फतावे सादिर फरमाए उस की एक वजह ये भी थी कि **"तक़वीयतुल ईमान"** में अम्बियाए किराम और बुज़ुर्गाने दीन की मुक़द्दस बारगाहों में ऐसे ऐसे नापाक और गुस्ताख़ाना जुम्ले लिखे गए थे, जो उसूले अक़ाइद और शुरूते ईमान की रू से यक़ीनन कुफ्र पर मुश्तमिल थे। जिन का लिखना, सुनना, रवा

रखना ख़िलाफे ईमान था, लैकिन फिर भी औलोमा-ए-अहले सुन्नत ने ज़ब्त और तहम्मुल का दामन न छोड़ा, इतमामे हुज्जत के तमाम शराइत पूरे करने के बाद इन इबारात पर गौरो-फिक्र किया, कुरआन और हदीस की रौशनी में उन को परखा, ज़रूरीयाते दीन के उसूलो-क़वानीन के तराज़ू में तोला, औलोमा-ए मुतक़द्दिमीन की मोअतबर व मुस्तनद कुतुब से टटोला, तावीलात के इम्कानात भी जांचे, लैकिन हर तरफ से जब वो नाकाम व मायूस हो गए, तब उन्हों ने मफादे दीन और दीनी भाईयों के ईमान के तहफ्फुज़ की निय्यते ख़ैर को मल्हूज़ रखकर तकफीर फरमाई।

कुफ्र का फत्वा देने में इमाम अहमद रज़ा का तवक़्क़ुफ और शाने एहतियात

"जमीअते अहले हक़ जम्मू-कश्मीर" नाम की फर्ज़ी कमिटी ने हाल में एक आठ (८) वर्की किताब्चा **"बरेल्वी जमाअत का तआरुफ और उन के फत्वे"** के नाम से शाए किया है। जिस में आला हज़रत, अज़ीमुल बरकत, इमाम अहले सुन्नत, **इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी** के ख़िलाफ ज़हर उगलने में झूट के दामन को ही थामा है और ये साबित करने की कोशिश की है कि इमाम अहमद रज़ा एक तंग नज़र और जलाली तबीअत की वजह से बात बात में गुस्सा करने वाले और कुफ्र का फत्वा देने वाले थे (मआज़ल्लाह)

लैकिन हक़ीक़त इस के बरअक्स है। तारीख़ के अवराक़ टटोलने से इस हक़ीक़त का इन्किशाफ होगा।

अभी अवराक़े साबिक़ा में आपने तक़वीयतुल ईमान के मुसन्निफ, मौलवी इस्माईल दहेलवी के तअल्लुक़ से हि. १२४० से लेकर हि. १२४६ तक के हालात का जाइज़ा लिया। इन तमाम हवादिसात में और मौलवी इस्माईल दहेलवी पर कुफ्र का फत्वा देने में कहीं भी आ'ला हज़रत, इमाम अहले सुन्नत, इमामे इश्क़ो-मुहब्बत, **इमाम अहमद रज़ा** मुहद्दिसे बरेल्वी अलैहिर्रहमा का ज़िक्र नहीं आया और यक़ीनी बात है कि उन का ज़िक्र आ भी नहीं सकता, क्यूं कि अभी आप इस दुनिया में तशरीफ भी नहीं लाए थे। ये सारा माहौल आप की विलादत से रुबोअ (१/४) सदी क़ब्ल का है, जिस से हम एक नतीजा अख़्ज़ कर सकते हैं कि कुफ्र का फत्वा देने की इब्तिदा करने का इमाम अहमद रज़ा पर जो इल्ज़ाम आइद किया जा रहा है, वो सरासर ग़लत और बे-बुनियाद है, बल्कि आप ये हक़ीक़त जानकर हैरतज़दा होंगे कि जिस को बात बात में कुफ्र का फत्वा देने वाला केहकर बदनाम करने की भरपूर कोशिश की जाती है, उस इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेल्वी ने इमामुत्ताइफा मौलवी इस्माईल दहेलवी पर कुफ्र का फत्वा देने से एहतियात करते हुए "**कफे लिसान**" फरमाया है।

हि. १२४० में "**तक़वीयतुल ईमान**" मुसन्निफ : मौलवी इस्माईल दहेलवी, इस किताब को हुकूमते बर्तानिया ने अपने सर्फ से लाखों की तादाद में छापकर मुफ्त तक़सीम किया और मुसलमानों के हर घर में ये किताब पहुंचाई। अलावा अज़ीं हुकूमते बर्तानिया के माली तआवुन से देवबंदी मक्तबए-फिक्र के मुतअद्दिद मदारिस,

www.markazahlesunnat.net

कुतुब ख़ाने, दारुल-क़लम और दीगर इदारे वजूद में आए और परवान चढ़े। लिहाज़ा हिन्दुस्तान के तूलो-अर्ज़ में वहाबी फिर्क़ा फैला और इस फिर्क़े के अकाबिर औलोमा ने मुतअद्दिद किताबें तस्नीफ कर के शाए कीं। मस्लन :-

- "**तेहज़ीरुन्नास**" - मुसन्निफ : मौलवी क़ासिम नानौत्वी, हि. १२९० में लिखी गई और शाए हुई।
- "**बराहीने क़ातेआ**" - मुसन्निफ : मौलवी ख़लील अहमद अंबेठवी। मुसद्दिक़ा मौलवी रशीद अहमद गंगोही। हि. १३०४ में लिखी और शाए की।
- "**इम्काने किज़्ब का फत्वा**" - अज़ : मौलवी रशीद गंगोही हि. १३०८ में मेरठ से शाए हुवा।
- "**हिफ्ज़ुल ईमान**"- मुसन्निफ : मौलवी अशरफ अली थानवी, हि. १३१९ में लिखी गई और शाए हुई।

सिर्फ मौलवी इस्माईल दहेलवी (हि. ११९३ ता हि. १२४६) के अलावा बाक़ी तमाम अकाबिर औलोमा-ए देवबंद का ज़माना और इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी का ज़माना एक रहा है। मुंदरजा बाला कुतुब के तमाम मुसन्निफीन इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी के हम-अस्र थे। जैसा कि :

❁	**इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी**	विलादत	हि.१२७२	दुनिया से पर्दा	हि.१३४०
◙	मौलवी क़ासिम नानौत्वी	पैदाइश	हि.१२४९	मौत	हि.१२९७
◙	मौलवी रशीद अहमद गंगोही	पैदाइश	हि.१२४४	मौत	हि.१३२३
◙	मौलवी अशरफ अली थानवी	पैदाइश	हि.१२८०	मौत	हि.१३६२
◙	मौलवी ख़लील अहमद अंबेठवी	पैदाइश	हि.१२९६	मौत	हि.१३४७

दौरे हाज़िर में मस्लए तकफीर के तअल्लुक़ से इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिस बरेल्वी के ख़िलाफ जो तेहरीक चलाई जा रही है, वो इतने वसीअ पैमाने पर है कि हक़ीक़त से नाआश्ना बहुत से हज़रात उस के दामे फरेब में आ गए हैं और ना–वाक़फियत की वजह से इमाम अहमद रज़ा की मुख़ालिफत व तज़लील में न जाने क्या क्या कहते और करते रहते हैं। कुफ्र के फत्वे की तमाम ज़िम्मेदारी सिर्फ अकेले इमाम अहमद रज़ा के सर थोपी जा रही है, बल्कि इस में हद दर्जा गुलू भी किया जा रहा है। इस साज़िश में मक्तबा देवबंद अकेला नहीं बल्कि तमाम फिर्क़ए बातिला इस में शामिल हैं, हैरत तो इस बात पर होती है कि जब कि उनमें आपस में उसूली और फुरूई इख़्तिलाफ वसीअ पैमाने पर हैं लैकिन **"दुश्मन का दुश्मन अपना दोस्त"** इस नज़रिये के तहत उन्होंने सिर्फ इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिस बरेल्वी की दुश्मनी में बाहम इत्तिहाद किया है, लैकिन इस इत्तिहाद की वजह क्या है? सिर्फ यही **कि तमाम के सीने किल्के रज़ा के नेज़े की मार से छलनी हैं।** इमाम अहमद रज़ा ने तमाम फिर्क़ए बातिला की तरदीद में नुमायां किरदार अदा फरमाया है और वो किरदार सिर्फ उसूली मसाइल तक ही महदूद नहीं बल्कि फुरूई मसाइल में भी जहां–जहां बातिल परस्तों ने रख़्ना अंदाज़ी की, वहां वहां इमाम अहमद रज़ा ने उनका तआक़ुब किया और अपनी नादिरे रोज़गार तसानीफ से उनको क़यामत तक के लिए साकित और मबहूत कर दिया। जहां तक फिर्क़ए वहाबीया नजदीया का मआमला है वहां ये हक़ीक़त भी पोशीदा नहीं कि हिन्दुस्तान में जब इस फिर्क़ए बातिला का वजूद नमूदार हुवा, तो उस वक़्त के बहुत से औलोमा–ए अहले सुन्नत ने इस का सद्दे बाब फरमाया।

यहां तक कि कुफ्र के फत्वे भी सादिर फरमाए लैकिन उस वक़्त के इन तमाम औलोमा–ए अहले सुन्नत से ऐ'राज़ कर के सिर्फ इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरेल्वी ही को क्यों निशाना बनाया गया है? और अपनी तमाम तर ताक़तो–कुव्वत सिर्फ इमाम अहमद रज़ा की शख़्सियत को मजरूह करने के लिए क्यों इस्तमाल की जा रही है?

बिलाशक–व–शुबह ! हि. १२४० के पुर फितन दौर के औलोमा–ए हक़ ने फिर्क़ए–वहाबिया की तरदीद और बीखकुनी में अहम और नुमायां किरदार अदा किया और फिर्क़ए–वहाबिया की बुनियादें हिला दीं, लैकिन इन हज़रात की ये ख़िदमात उसूली मसाइल तक महदूद थीं। अलावा अज़ीं वो वहाबियत का इब्तिदाई दौर था और उस वक़्त अक़ाइद के तअल्लुक़ से चंद ही गुमराह कुन किताबें राइज थीं, लैकिन इमाम अहमद रज़ा के दौर में सैंकडों उसूली मसाइल में फसाद, बेशुमार फुरूई मसाइल में तनाज़ा, बेशुमार वहाबी मौलवी, कसरत से उनके मदारिस, वसीअ पैमाने पर तन्ज़ीमें, इशाअती वसाइल वग़ैरा एक मुसलेह फौज की हैसियत से फिर्क़ाए–वहाबिया अपने शबाब पर था। इस पर तुर्रह ये कि इस फिर्क़े को हुकूमते बरतानिया की पुश्तपनाही हासिल थी। ऐसे नाज़ुक हालात में इमाम अहमद रज़ा ने तने–तन्हा हर महाज़ पर उनका ऐसा मुक़ाबला फरमाया कि उनकी बुनियादें उखेड दीं। माज़ी के तमाम औलोमा–ए अहले सुन्नत ने मजमूई तौर पर फिर्क़ाए वहाबिया की तरदीद में जो ख़िदमात अंजाम दी थीं, इस से कई गुना ज़्यादा तरदीदी ख़िदमात इमाम अहमद रज़ा ने तने–तन्हा अंजाम दीं। मक्तबे फिक्र वहाबिया देवबंदिया से जब भी कोई गुमराही उठी, चाहे उस का तअल्लुक़ उसूले दीन से हो या फिर फुरूए दीन से हो,

बरेली से उस का दंदान शिकन जवाब दिया गया और हालत ये हो गई थी कि इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरेल्वी के इल्म की जलालते इल्मी से पूरी दुनियाए वहाबियत थर-थर काँपती थी । इमाम अहमद रज़ा के पैश करदा दलाइलो-बराहीन का जवाब देने से दुनियाए वहाबियत के तमाम के तमाम मुसन्निफीन आजिज़ो-क़ासिर थे ।

फिर्क़ाए-वहाबिया के अलावा और भी बहुत सारे फिर्क़े सर उठाए हुए थे । बड़े बड़े दानिश्वर, माहिरे फन, औलोमा, फुज़ला, उदबा, मुहद्दिस, मुफक्किर, मुफस्सिर, मोअर्रिख़, साइंसदाँ वग़ैरा उस के हामी, नाशिर और बानी थे, लैकिन वो जब इमाम अहमद रज़ा की क़लम की ज़द में आए, तो मैदाने इल्म की जंग में गाजर और मूली की तरह कट गए । बड़े बड़े माहिरीने फन और दुन्यवी उलूमे जदीदा के आला ओहदों पर फाइज़ नामवर लोग इमाम अहमद रज़ा की आहिनी दलीलों की ज़र्बें खा कर चकना चूर हो गए। इमाम अहमद रज़ा की तसानीफ का जवाब लिखने की हिम्मत करने का तसव्वुर करने वाले बड़े बड़े क़लम कारों के हाथ काँप रहे थे, उनके क़लम की नोकें कुंद हो चुकी थीं ।

लिहाज़ा ! उन्होंने मकरो फरेब की राह इख़्तियार की । इल्मी दलाइल से सर्फे नज़र कर के उन्होंने झूठ का दामन थामा, इल्ज़ामात, इफ़्तिरा, बोहतान और झूठी तोहमतें घड़नी शुरू कीं और इस में इतने मुनहमिक हुए कि दीगर फिर्क़ाए बातिला के अफराद से इत्तिहाद कर के इमाम अहमद रज़ा के ख़िलाफ मुस्तक़िल तौर पर एक मुनज़्ज़म साज़िश की मुहिम चलाई और दिन-ब-दिन उसे फरोग दिया ।

हिन्दुस्तान में वहाबी फित्ने का आगाज़, उरूज और शबाब की एक सदी का जायज़ा

रुस्वाए ज़माना किताब "**तक़वियतुल ईमान**" की इशाअत हि. १२४० में हुई और हिन्दुस्तान में वहाबी फित्ने का आगाज़ हुवा। हि. १२४० से लेकर इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वरिज़्वान की रेहलत हि. १३४० यानी पूरी एक सदी का अरसा अपने दामन में मुतअद्दिद तारीख़ी हवादसात और वाक़िआत समेटे हुए है । जिसका मुख़्तसर जायज़ा लेने से वहाबी फित्ने की हक़ीक़त तारीख़ की रोशनी में अयाँ और बराए तफहीम सहल हो जाएगी ।

मज़्कूरा एक सदी के हिस्से को हम दो(२) हिस्सों में तक़सीम करेंगे । तफसील हस्बे ज़ैल है ।

❖ **पहेला हिस्सा :-** हि. १२४० से हि. १२९० तक का पचास (५०) साल का अरसा जो वहाबी फित्ने के आगाज़ और नश्रो-इशाअत का ज़माना था ।

❖ **दूसरा हिस्सा :-** हि. १२९० से हि. १३४० तक का पचास (५०) साल का अरसा जो वहाबी फित्ने के उरूज और शबाब का ज़माना था ।

मज़्कूरा तक़सीम जो वहाबी फित्ने के तअल्लुक़ से लिखी गई है, वो सिर्फ हिन्दुस्तान यानी गैर मुनक़सिम हिन्दुस्तान में वहाबी फित्ने के आगाज़, उरूज और शबाब की एक सदी का जाएज़ा है । जिसके ज़िम्न में तफसीली गुफ्तगू हम आइन्दा सफहात में करेंगे । लैकिन क़ारेईने किराम की मज़ीद मालूमात की ग़रज़ से पहेले हम

ये बताएँगे कि हिन्दुस्तान में वहाबी फित्ना मुल्के हिजाज़ से एक सदी के बाद आया है। जिसका मतलब ये है कि वहाबी फित्ने की इब्तिदा हि. ११४० के अरसे में हो चुकी थी। यानी हि. ११४० से हि. १२४० तक वहाबी फित्ना जज़ीरए अरब में बज़ोरे शमशीर और शदीद जुल्म व जफा की वजह से फैला और एक सदी के बाद ये फित्ना बर्तानवी हुकूमत के इमाअ व इशारा और माली व सियासी तआवुन से हिन्दुस्तान में आया। मुनासिब ये है कि पहेले हम मुल्के हिजाज़ में वहाबी फित्ने के आगाज़ के तअल्लुक़ से तफसीली लैकिन बहुत ही अहम और ज़रूरी मालूमात इख़तिसारन फराहम करें।

वहाबी फित्ने का मुल्के हिजाज़ में आगाज़ और इस का बानी

इस्लाम की दरख़्शां तारीख़ और इस्लाम के जां-निसार व सरफरोश मुजाहिदों ने क़लील ताअदाद और बे-सरो-सामाँ होने के बावजूद कसीर तादाद और हर क़िस्म के जंगी आलात और आसाइश से लैस दुश्मन के अज़ीम लश्कर को दिलैरी और जवाँमर्दी से खाको-ख़ून में मिला देने की दास्तान का अंग्रेज़ों ने बहुत ही गहराई से जाएज़ा लिया था और ये नतीजा अख़्ज़ किया था कि मैदाने जंग में सीना-ब-सीना हो कर इस्लाम के जाँबाज़ मुजाहिदों से टकराने की किसी में ताब नहीं। खुले मैदान की जंग में हम इस्लाम को कोई नुक़सान और ज़रर नहीं पहुंचा सकते बल्कि ख़ुद नेस्तो-नाबूद हो जाएंगे। लिहाज़ा अगर इस्लाम को ज़रर पहुंचाना है तो मुसलमानों को आपस में लड़ाओ, उनमें मज़हबी इख़्तिलाफ पैदा करो और ये काम बिकाऊ और गद्दार

नाम निहाद मुसलमानों के ज़रीए अंजाम दो।

इस्लाम के दाइमी दुश्मन ईसाइयों की हुकूमत बरतानिया के लोमड़ी सिफत के अय्यार और फरेबी मुक़्तदाओं ने एक मुनज़्ज़म साजिश के तहत मुख़्तलिफ इस्लामी ममालिक में अपने जासूसों को भेजा और उन जासूसों को ये हिदायतो-तलक़ीन की कि मुसलमानों में मज़हबी इख़्तिलाफ पैदा कर सकने की सलाहियत रखने वाले अफराद क़ौमे मुस्लिम से ढूंढो और उन्हें कसीर माल और ऐशो-इशरत की फराहमी से ख़रीदो और उन्हें काम पर लगाओ। बरतानवी हुकूमत के नुमाइंदे की हैसियत से कुल दस (१०) जासूस इस्लामी ममालिक के मुख़्तलिफ इलाक़ों में गए हुए थे। उनमें से एक जासूस का नाम **"हेमफ्रे"** (**Mr. Humphrey**) था। उसने एक ऐसे शख़्स को ढूंढ निकाला, जिसने क़यामत तक बाक़ी रहने वाला फित्ना यानी वहाबी मज़हब का फित्ना क़ाइम कर के क़ौमे मुस्लिम को खाना-जंगी की बला में मुबतला कर के हमेंशा के लिए मिल्लते-इस्लामिया का इत्तिहादो-इत्तिफाक़ दरहम-बरहम बल्कि पाश-पाश कर के रख दिया। इस रुस्वा-ए-ज़माना शख़्स का नाम **मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब नज्दी** था। आइन्दा सफहात में जहां कहीं भी मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब नज्दी का जिक्र आएगा, वहां हम उसे **"शैख़े नज्दी"** के नाम से मुख़ातब करेंगे।

यहां इतनी गुंजाइश नहीं कि शेख़े नज्दी के तअल्लुक़ से किए जानेवाले बयान के सुबूत के जो हवाले अस्ल अरबी किताबों से राक़िमुल-हुरूफ के पास मौजूद हैं, वो तमाम हवाले अरबी इबारत के साथ नक़ल किए जाएं। लिहाज़ा सिर्फ किताब का नाम, जिल्द नंबर, सफा नंबर और मतबूआ लिख कर सुबुकदोश होने के लिए क़ारेईन से मआज़ेरत ख़्वाह हूँ।

शेखे़ नज्दी के मुख़्तसर हालात

पैदाइश :-

मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब **"शेखे़ नज्दी"** की विलादत हि. १११५ मुताबिक़ इ. १७०३ में मुल्के अरब के इलाक़-ए-नज्द की जुनूब में वारिद **"वादी-ए-हनीफा"** के एक गांव **"ऊयैयना"** में हुई थी।

शेखे़ नज्दी के वालिद :-

शेखे़ नज्दी के वालिद **हज़रत अब्दुलवह्हाब बिन सुलेमान बिन अली शरफ** रहमतुल्लाहि तआला अलैहि निहायत सालेह, सहीहुल-अक़ीदा बुजु़र्ग, आलिमे दीन और फक़ीह थे। हम्बली मस्लक और मुतसल्लिब सुन्नी थे। अपने ज़माने के मोअतमद और मशहूर आलिमे दीन थे। हुरैमला शहर के क़ाज़ी के ओहदे पर भी फाइज़ थे।

शेखे़ नज्दी के भाई :-

शेखे़ नज्दी के भाई **हज़रत सुलेमान बिन अब्दुलवह्हाब** अल-मुतवफ्फा हि. १२०८ निहायत ही मुतसल्लिब सुन्नी और सहीहुल-अक़ीदा बुजु़र्ग और आलिमे दीन थे। अपने वालिदे माजिद हज़रत अब्दुलवह्हाब बिन सुलेमान के मस्लक के हामिल थे और अस्लाफे किराम की अक़ीदत को अपने सीने से लगाए हुए थे। लिहाज़ा वो अहले सुन्नत व जमाअत में सदियों से राइज मामूलात और मुस्तहब कामों के पाबंद थे।

हज़रत सुलेमान बिन अब्दुलवह्हाब जय्यद आलिमो-फक़ीह होने की वजह से अपने वालिद के इन्तेक़ाल के बाद हुरैमला शहर

के क़ाज़ी के ओहदे पर फाइज़ हुए। हज़रत शैख़ सुलेमान बिन अब्दुल वह्हाब ज़िंदगी भर अपने बदअक़ीदा भाई शेखे़ नज्दी से अक़ाइद की जंग लड़ते रहे। उन्होंने शेखे़ नज्दी के अक़ाइदे बातिला के रद्द व इब्ताल में एक निहायत मुफ़ीद और मुदल्लल किताब तस्नीफ फरमाई जिसका नाम **"अस्सवाइके-लाहिया फी रद्दे अलल वहाबिया"** है। इस किताब को अवामो-ख़वास में इंतिहाई शोहरत और मक़बूलियत हासिल हुई।

हवाला (१) **"उनवानुल मज्द फी तारीख़े नज्द"** (अरबी)
मुसन्निफ :- उसमान बिन बशर नज्दी, अलमुतवफ्फा हि. १२८८, मतबूआ :- रियाज़, **जिल्द :१, सफा : ६**
(२) **"मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब"** (अरबी)
मुसन्निफ :- शेख़ अली तनतावी जौहरी मिस्री, अल-मुतवफ्फा हि. १३३५, **सफा : १३**

शेखे़ नज्दी की तालीम और फिर गुमराह होना :-

शेखे़ नज्दी बचपन से ही बेहद ज़हीन और सेहतमंद था। सिर्फ दस/१० साल की उम्र में नाज़रा कलामुल्लाह ख़त्म कर लिया था। फिर अपने वालिद हज़रत शैख़ अब्दुल वह्हाब से हम्बली मज़हब की कुतुबे फिक़्ह की तालीम लेनी शुरू की। तहसीले इल्म की ग़रज़ से मुतअद्दिद मरतबा हिजाज़ के सफर किए। तालिबे इल्मी के ज़माने में उस की मुलाक़ात और पहेचान **शेख़ मुहम्मद हयात सिंधी** से हुई। शेख़ हयात मुतसल्लिब क़िस्म का ग़ैर मुक़ल्लिद (अहले हदीस) आलिम था और वो **हुज़ूरे अक़दस** सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम से इस्तिआनत व इस्तिग़ासा करने को शिर्क कहेता था। शेख़ हयात ने अपने कुफरी अक़ाइद की तालीम शुरू से ही शेखे़ नज्दी को दी। अलावा अज़ीं क़ियामे

हिजाज़ के दौरान शेखे़ नज्दी का तआरुफ और राब्ता जिन आलिमों से हुवा, उनमें से अक्सर वो आलिम थे, जो ग़ाली क़िस्म के मुतअस्सिब ग़ैर मुक़ल्लिद और इब्ने तयमिया के फासिद नज़रियात के दिलदादा थे। उनमें से एक आलिम ख़ुसूसी तौर पर **शेख़ अब्दुल्लाह बिन इब्राहीम बिन सैफ** था। उस से शेखे़ नज्दी बहुत ही मुतअस्सिर हुवा और शेख़ अब्दुल्लाह ने शेखे़ नज्दी को गुमराहियत के गहेरे दलदल में डाल कर उसे इब्ने तयमिया की किताबों के मुतालेआ का आदी बना दिया।

हवाला (१) "**सवानेह हयात सुल्तान बिन अब्दुलअज़ीज़ आले सऊद**" (अरबी)
मुसन्निफ:- सय्यद सरदार मुहम्मद हसनी (बी.ए. आनरेज़),
मतबूआ :- रियाज़, **सफा : ४० ता सफा : ४१**

(२) "**मुहम्मद बिन अब्दुलवह्हाब**" (अरबी)
मुसन्निफ :- शेख़ अली तनतावी जौहरी मिस्री,
अल-मुतवफ्फा हि. १३५३, **सफा : १५**

▣ शेखे़ नज्दी का अपने वालिद से इख़्तिलाफ, वालिद का तर्के वतन:

शेखे़ नज्दी अपने वालिद के हल्क़-ए-दर्स में हाज़िर हुआ करता था और सदियों से मिल्लते इस्लामिया में राइज शआइरे अहले सुन्नत को बिदअत क़रार दे कर एतराज़ किया करता था। शेखे़ नज्दी की गुमराहियत भरी बातों से इस के वालिद इस पर सख़्त नाराज़ थे और इस की सरज़निश करते थे। यहां तक कि अवामुल मुस्लिमीन भी शेखे़ नज्दी की मुख़ालिफ हो गई। शेखे़ नज्दी के वालिद जय्यद आलिम और फक़ीह थे, लिहाज़ा उन्होंने शेखे़ नज्दी के एतराज़ात का दलाइले क़ाहिरा से मुस्कत जवाब

दिया, लैकिन शेखे़ नज्दी की हट धर्मी इस हद तक पहुंच गई थी कि उसने अपने वालिद की एक बात भी क़बूल न की बल्कि झगड़े और फसाद पर आमादा हो गया। शेख़ अब्दुल वह्हाब नज्दी अलैहिर्रहमतो वर्रिजवान सादा-लौह और अम्न पसंद शख़्स थे। झगड़े और फसाद को नापसंद फरमाते थे। उन्होंने अपने नालायक बेटे को समझाने की हत्तलइम्कान कोशिश की, लैकिन वो न माना। लिहाज़ा शेख़ अब्दुल वह्हाब ने अपने बेटे से नाराज़ हो कर अपने आबाई वतन "**ऊयैयना**" की सुकूनत को तर्क फरमा कर हिज़रत कर के "**हुरैमला**" नाम के शहर में चले गए। हुरैमला में आ कर शेख़ अब्दुल वह्हाब अपने बेटे के अक़ाइदे फासिदा के ख़िलाफ मुहिम चलाते रहे। आम्मतुल मुस्लिमीन के दिलों में शेख़ अब्दुल वह्हाब की इल्मी वजाहतो-जलालत और तक़्वा व बुज़ुर्गी की अज़्मत का सिक्का जमा हुवा था। लिहाज़ा शेखे़ नज्दी के नए मज़हब की तेहरीक को फरोग हासिल न हो सका और अवाम की अक्सरीयत शेखे़ नज्दी के वालिद की हिमायत और ताईद में रही।

▣ शेखे़ नज्दी के वालिद का इंतिक़ाल और बदलते हालात :

शेखे़ नज्दी को अपने वालिद की हयाती में अपनी तहरीके वहाबियत को तैज़ रफ्तारी से आगे बढ़ाने में कामयाबी हासिल न हो सकी। लैकिन हि. ११५३ मुताबिक़ ई. १७४० में शेखे़ नज्दी के वालिद का इंतिक़ाल हुवा, तो अब सारी रुकावटें हट गईं।

अलावा अज़ीं अंग्रेज़ जासूस हमफ्रे का मिलना, बर्तानवी हुकूमत की पुश्तपनाही हासिल होना, इन हालात में शेखे़ नज्दी का हौसला बढ़ा और उसने अलल-ऐलान वहाबी मज़हब का ऐलान

कर दिया। अंग्रेज़ हुकूमत के तवस्सुत से शेखे़ नज्दी का राब्ता **"मुहम्मद बिन सऊद"** से हुवा। मुहम्मद बिन सऊद सियासत का माहिर, जंगजू, और डाकू क़िस्म का ज़ालिम शख़्स था। दोनों मुहम्मद यानी (१) मुहम्मद बिन अब्दुलवहहाब नज्दी और (२) मुहम्मद बिन सऊद ने हाथ मिलाए और दोनों ने मुत्तहिद हो कर नज्द के क़ुरबो-जवार में वाक़ेअ एक शहर **"दुरईय्या"** को सियासी और मज़हबी तहरीक का मुशतरका दारुल-सल्तनत (Capital) और मर्कज़ (Centre) बनाया और दोनों ने अपने बाज़ू के ज़ोर और अंग्रेज़ों के माली तआवुन के बलबूते पर वहाबी मज़हब की पुर ज़ोर नशरो इशाअत में कोई कसर बाक़ी न छोड़ी।

हवाला:- (१) **"मुहम्मद बिन अब्दुलवहहाब"** (अरबी)
मुसन्निफ :- शेख़ अली तनतावी जौहरी मिस्री, अल-मुतवफ्फा :- हि. १३३५ **सफा :- २१**
(२) **"अददुररूस्सुन्निया-फी-रद्दे-अलल वहाबिया"** (अरबी)
मुसन्निफ :- सय्यद अहमद दहलान मक्की अल-मुतवफ्फा:- हि. १३०४ **सफा :- ४७**
(३) **"उन्वानुल-मज्द-फी-तारीखे-नज्द"** (अरबी)
मुसन्निफ :- उसमान बिन बशर नज्दी, अल-मुतवफ्फा :- हि. १२८८, मतबूआ :- रियाज (सऊदी अरब) जिल्द नं. १, **सफा :- ८**

शेखे नज्दी के नए दीन का नाम "वहाबियत" शुरू से ही मशहूर हुवा।

आजकल एक ग़लत प्रोपेगंडा ये भी आम किया जा रहा है कि शेखे़ नज्दी मुहम्मद बिन अब्दुलवहहाब नज्दी की तेहरीक को **"वहाबियत"** और शेखे़ नज्दी के मुत्तबईन को **"वहाबी"** के नाम से मौसूम और बदनाम करने वाले इमाम अहले सुन्नत, मुजद्दिदे

दीनो मिल्लत, शैख़ुल-इस्लाम-वल-मुस्लिमीन, **इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान हैं। लैकिन हक़ीक़त ये है कि शेखे़ नज्दी ने हि. ११४० में जब नए दीन की बुनियाद डाली, तब से इस नए दीन का नाम वहाबियत और इस के मुत्तबईन का नाम वहाबी मशहूर हो गया था।

▣ एक हवाला पेशे ख़िदमत है :-

"اَمَّا مُحَمَّدٌ فَهُوَ صَاحِبُ الدَّعْوَةِ الَّتِى عُرِفَتْ بِالْوَهَابِيَّةِ"

तर्जुमा:- "मुहम्मद बिन अब्दुलवहहाब ने जिस तहरीक की दाअवत दी थी, वो वहाबियत के नाम से मारूफ है।"

हवाला :- मुहम्मद बिन अब्दुलवहहाब नज्दी (अरबी)
मुसन्निफ :- शेख़ अली तनतावी जौहरी मिस्री, **सफा :- १३**

▣ तारीख़ की शहादत

★ मुहम्मद बिन अब्दुलवहहाब नज्दी यानी शेखे़ नज्दी की पैदाइश हि. १११५ में हुई है।

★ मुहम्मद बिन अब्दुलवहहाब नज्दी यानी शेखे़ नज्दी की मौत हि. १२०६ में हुई है।

जब कि :-

★ इमाम अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी की पैदाइश हि. १२७२ में हुई है।

यानी

शेखे़ नज्दी की मौत के छासठ (६६) साल के बाद इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान की विलादते बा सआदत हुई है।

-: और :-

★ जब मुहम्मद बिन अब्दुलवह्हाब नज्दी ने अपने नए दीन की हि. ११४० में बुनियाद डाली थी, वो अरसा इमाम अहमद रज़ा की पैदाइश से १३२ साल पहले का है।

तब इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान की विलादत भी न हुई थी। आपका इस दुनिया में वजूद ही न था, तो आपने अंग्रेज़ों की ईमा और इशारे से शेख़े नज्दी की तहरीक की मुख़ालिफत की और शेख़े नज्दी की मुख़ालिफत में गर्म–जोशी से हिस्सा लिया और शेख़े नज्दी की तहरीक को वहाबियत और शेख़े नज्दी के मुत्तबईन को वहाबी नाम से मौसूम और बदनाम करने में नुमायां किरदार अंजाम दिया। ये एक ऐसा बे–बुनियाद इल्ज़ाम और इफतरा है कि **"जिसका न सर है, न हाथ है"**, बल्कि ये इल्ज़ाम तारीख़ से अपनी सरासर जहालत और अंजान होने का सबूत है। बल्कि तारीख़ की पैशानी पर बदनुमा दाग़ लगाने के मुतरादिफ है। जब तहरीके वहाबियत की इब्तिदा के वक़्त इमाम अहमद रज़ा का इस दुनिया में वजूद ही नहीं था, तो आपने तहरीके वहाबियत के इबतिदा के वक़्त कैसे मुख़ालिफत की ? अलबत्ता:–

मिल्लते इस्लामिया के अज़ीम औलोमा ने शेख़े नज्दी की तहरीक को वहाबियत के नाम से मौसूम कर के मुख़ालिफत की और कुतुब तस्नीफ फरमाई

▣ कुफरी अक़ाइद और ज़ुल्मो–जफा पर मुश्तमिल शेखे नज्दी की वहाबी तहरीक के रद्द और इब्ताल में सबसे ज़्यादा गर्म–जोशी से शेख़े नज्दी के हक़ीक़ी भाई **हज़रत सुलेमान**

www.markazahlesunnat.net

बिन अब्दुलवह्हाब नज्दी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने मुख़ालिफत की ख़िदमत अंजाम दी। हज़रत सुलेमान बिन अब्दुलवह्हाब ने शेख़े नज्दी से अक़ाइद की जंग लड़ने के लिए अपनी ज़िंदगी वक़्फ फरमा दी थी। शेख़े नज्दी के रद्द में उनकी लिखी हुई तारीख़ी किताब **"अस्सवाइक़े इलाहिया फी रद्दे अलल वहाबिया"** आज भी अवामो–ख़्वास में मक़बूलियत की हामिल है। इस किताब के नाम में लफ्ज़े **"अल–वहाबिया"** इस अम्र की शहादत देता है कि शेख़े नज्दी के नए दीन की तेहरीक शेख़े नज्दी की ज़िंदगी ही में **"वहाबियत"** के नाम से मौसूम और बदनाम थी। शेख़ सुलेमान बिन अब्दुलवह्हाब रहमतुल्लाहि तआला अलैह का विसाल हि. १२०८ में यानी शेख़े नजदी की मौत हि. १२०६ के दो (२) साल बाद हुवा है।

▣ शेख़े नजदी की बातिल तेहरीक के रद्द व इब्ताल में मिल्लते इस्लामिया के अज़ीमुश्शान और जलीलुलक़द्र औलोमा–ए किराम ने तस्नीफी ख़िदमात अंजाम दी हैं और कई औलोमा ने अपनी किताब का नाम ही ऐसा रखा है कि उस नाम में लफ्ज़े **"अल–वहाबिया"** आता है।

● अल्लामा शेख़ इबराहीम समनूदी मन्सूरी की माअरकतुलआरा किताब :–

"सआदतुद्दारैन–फी–रद्दे–अलल–फिरकतैन–अल–वहाबिया–व–मुकल्लिदतुज्जाहेरिय्या"

● शेख़ हसन शत्ती हम्बली दमिश्की की किताब :–

"अल–न्नुकुलुश्शरइय्या–फी–रद्दे–अलल–वहाबिया"

- शेख़ अता अल कसम दमिश्की की किताब :-
  "अल-अकवालुल-मरदिय्या-फी-रद्दे-अलल-वहाबिया"
- अल्लामा शेख़ ख़ज़ीक इराक़ी की किताब :-
  "अल-मकालातुल-वफिय्या-फी-रद्दे-अलल-वहाबिया"
- अल्लामा शेख़ अबू हामिद बिन मरज़ूक की किताब :-
  "अत्तवस्सुल-बिन्नबिय्यि-व-जहलतिल-वहाबिय्यीन"

इस तरह के नाम वाली किताबों की फहेरिस्त तवील है और उन तमाम कुतुब के अस्मा यहां अरक़ाम करना तूले मज़मून के ख़ौफ से मुम्किन नहीं। लिहाज़ा चंद मशहूर और मारूफ कुतुब के अस्मा पर इक्तिफा किया है।

पूरे आलमे इस्लाम से मिल्लते इस्लामिया के जय्यद आलिमों ने शेख़े नज्दी की तहरीक का रद्द फरमाया।

शेख़े नज्दी की वहाबी तेहरीक तौहीने अंबिया व औलिया, तकफीरे मुस्लिमीन, ख़िलाफे कुरआनो-अहादीस नीज़ ईमान तबाह करने वाले उसूलों पर मुश्तमिल थी। लिहाज़ा इस तेहरीक की वजह से पूरे आलमे इस्लाम में हलचल मच गई। अवामो-ख़वास में ग़म व गुस्से की लहर दौड़ गई और सबने इस ईमान कुश तेहरीक की मुख़ालिफत की। खुसूसी तौर पर औलोमा-ए-हक़ ने अपने मो'मिन भाईयों के ईमान के तहफ्फुज़ की पुर खुलूस निय्यत से शेख़ नज्दी की वहाबी तेहरीक का कुरआनो-हदीस की रोशनी में तक़रीरो-तसनीफ के ज़रीये रद्दे बलीग़ फरमाया, शेख़े नज्दी की तकफीर फरमाई और मिल्लते इस्लामिया के अफराद को शेख़े नज्दी की

बातिल तेहरीके वहाबियत से दूर रहेने और बचने की नसीहत, तलक़ीन और ताकीद फरमाई, उन औलोमा-ए हक़ के मुबारक अस्मा की फहेरिस्त बहुत ही तवील है। यहां पर चंद उन औलोमा-ए हक़ के मुबारक नाम दर्ज किए जाते हैं। जिन्होंने शेख़े नज्दी की तकफीर की या किताब तसनीफ फरमाई :

● शेख़े नज्दी के उस्ताद अल्लामा अबदुल्लाह बिन अब्दुल लतीफ शाफई ● अल्लामा शेख़ मुहम्मद बिन सुलेमान कुरदी ● अल्लामा अफीफुद्दीन अब्दुल्लाह बिन दाऊद हम्बली ● अल्लामा मुहक़्क़िक़ मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अकालिक हम्बली ● अल्लामा अहमद बिन अली अल कबानी, बसरी, शाफई ● अल्लामा अब्दुलवह्हाब बिन अहमद बरकात शाफई, अहमदी, मक्की ● अल्लामा शेख़ अबदुल्लाह बिन इबराहीम मीरगनी, साकिन ताइफ ● अल्लामा मुहक़्क़िक़, शेखुलइस्लाम, बुतूनस इस्माईल, तमीमी, मालिकी ● अल्लामा शेख़ मुहम्मद इबराहीम अली क़ादरी, असकन्दरी ● अल्लामा शेख़ अबदुल अज़ीज़ क़रशी, इलजी, मालिकी, अहसानी वग़ैरा

जमीअते अहले हक़ जम्मू व कश्मीर की किताब बरेल्वी जमाअत का तआरुफ का जवाब

जमीअते अहले हक़ जम्मू व कश्मीर सिर्फ इतना ही लिख कर एक आठ वर्की किताब्चा शाए किया गया है। जमीअते अहले हक़ जम्मू व कश्मीर का न पता लिखा है और न ही ये किताब्चा किस शहर से शाए हुवा है, ये भी नहीं लिखा। न मुसन्निफ का नाम, न सने तबाअत, न मतबाअ का नाम, कुछ भी नहीं। बुज़दिलों और हिजड़ों में इतनी भी हिम्मत नहीं कि वो नशरो इशाअत के ज़रूरी

लवाज़्मात की रिआयत करें। झूठे इल्ज़ामात, इफ्तिराआत व इख़्तिराआात पर मुश्तमिल किज़्ब और दरोग़ गोई के पुलन्दे की हैसियत से फर्ज़ी नाम से गुमराह कुन और फित्ना बरपा करने वाला बे-वक़अत किताब्चा शाए कर के फित्ना और फसाद फैलाने की फासिद ग़रज़ का मुज़ाहिरा किया गया है।

मज़्कूरा किताब्चा में आशिके़ रसूले अकरम, इमाम अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो-मिल्लत, शेख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन, **इमाम अहमद रज़ा** मुहक़्क़िक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान के ख़िलाफ खूब ज़हर उगला गया है और सरासर किज़्बो-दरोग पर मुश्तमिल झूठे इल्ज़ामात व इफ्तिराआत, इख़तिराआत व इतहामात के ज़रीये आलमे इस्लाम की अबक़री शख़्सियत इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी को बदनाम करने की नाकाम सई की गई है। इस किताब्चा में वहाबी देवबंदी जमाअत के चंद अकाबिर, चंद सियासी लीडर, कुछ नैचरी ख़यालात के हामिल और कुछ ऐसे लोग कि जिन्होंने खुल्लम खुल्ला कुफ्रियात बके और अल्लाह तबारक व तआला और अल्लाह तआला के महबूबे आज़म की बारगाह में गुस्ताख़ियां और तौहीन कीं, ऐसे लोगों के नाम का ज़िक्र कर के वावेला मचाया गया है कि देखो, देखो, मौलाना अहमद रज़ा ने इन सबको काफिर कह दिया, कुफ्र के फत्वे की मशीनगन चला दी वग़ैरा।

अवामुन्नास जो हक़ीक़त से ना-आश्ना हैं, इन को मुश्तइल और भड़काने के लिए सीना कूट कूट कर नौहा ज़नी की गई है कि बरेल्वी जमाअत के औलोमा ने मिल्लते इस्लामिया के अज़ीम औलोमा, शोअरा, हामियान, हमदर्दान, सियासतदान और मुस्लेह को बड़ी बेदर्दी से काफिर कह दिया। ये तमाम हज़रात बेक़सूर थे,

सहीहुल-अक़ीदा थे, नैक थे, बुज़ुर्ग थे, मुस्लहे क़ौम थे, हमदर्दे मिल्लत थे, अदीबे शहीर थे, आलिमे जलील थे। मुत्तक़ी और परहेज़गार थे। लैकिन मौलाना अहमद रज़ा बरेल्वी और दीगर बरेल्वी आलिमों ने ज़ाती रंजिश, ज़ाती अदावत, बुग़्ज़ो-इनाद और हसद की वजह से, उनकी बैनुल अक़वामी शौहरत और इज़्ज़त से जल कर, उनकी शख़्सियत को मजरूह और बदनाम करने की गरज़ से, कुफ्र का फत्वा थोप दिया है और बरेल्वी मकतबए-फिक्र के औलोमा व मुफ्तियान की ये आदत है कि वो बात बात में काफिर का फत्वा दे देते हैं। इस्लाम का दाइरा उन्होंने बहुत तंग कर दिया है और तअस्सुबो-तंगनज़री से काम लेते हुए किसी को भी लात मार कर दाइरए-इस्लाम से बाहर फेंक देते हैं। किसी काफिर को तो मुसलमान बनाते नहीं और जो मुसलमान हैं, उन्हें काफिर बना देते हैं।

मुंदरजा बाला ग़लत प्रोपेगंडा इतना आम कर दिया है कि सादा-लौह मुसलमान उनकी बातों के दामे फरेब में आ जाते हैं और नादानिस्ता तौर पर औलोमा-ए अहले सुन्नत और बिल ख़ुसूस इमामे अहले सुन्नत, **मुजद्दिदे दीनो-मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान** से बदज़न हो कर बेजा अदावतो-दुश्मनी का जज़्बा रखने लगते हैं। लेहाज़ा क़ारेईने किराम को सहीह मालूमात फराहम करने की निय्यते सालेह से हक़ीक़त का इन्किशाफ शवाहिदो-बराहीन के ठोस सुबूत के साथ पैश करना अशद्द ज़रूरी है।

हक़ीक़त ये है कि बे-शक चंद नामवर और शौहरत याफ्ता नाम निहाद मुस्लिम सियासी लीडरान, नैचरी ज़ेहनियत रखने वाले गुमराह क़ाइद और बारगाहे रिसालत ﷺ के गुस्ताखों पर उनके कुफ़्रियात और इर्तिदाद की वजह से अहकामे शरीअत के दाईरे

में रह कर शरई हुक्म और फतावा ज़रूर सादिर किए गए हैं। लेकिन वो तमाम फतावा शरई सुबूत व दलाइल की रोशनी में नाफिज़ किए गए हैं। जिसकी तफसील आइन्दा सफहात में मुलाहिज़ा फरमाएं। इस तफसील के अरक़ाम से पहले हम इस हक़ीक़त का इन्किशाफ करना चाहते हैं कि चंद वो अफराद कि जिन्हों ने सरासर कुरआनो-हदीस की ख़िलाफ वरज़ी करते हुए, ज़रूरियाते दीन का इन्कार, बारगाहे ख़ुदावन्दी की तौहीनो-तन्क़ीस, हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की शाने आ'ला व अर्फा में गुस्ताख़ियाँ, औलिया-ए-इज़ाम की तौहीन व तज़लील, मरासिमे अहले सुन्नत के जाइज़ और मुस्तहब कामों पर हराम के फत्वे, बेगुनाह और बेक़सूर मुसलमानों पर शिर्क के फत्वों की गोलाबारी वग़ैरा जैसे संगीन जराइम के मुर्तकिबीन पर अगर शरई हुक्म नाफिज़ किया गया, तो दौरे हाज़िर के मुनाफिक़ीन ने सर पिटना और रोना शुरू कर के वावेला मचा दिया कि हमको काफिर कहा, हम पर काफिर का फत्वा लगाया। लेकिन यही वावेला मचाने वाले मक्कार और फरेबी नोहा बाज़ों से पूछो कि तुम जिनकी हिमायत में शोर मचा रहे हो, जिन पर लगाए गए फत्वे के ख़िलाफ शद्द व मद्द से रो-रो कर और सर पीट कर वावेला मचा रहे हो, वो कितने बडे मुजरिम थे ? उनका जुर्म आफताब नीम रोज़ की तरह आज भी किताबों में छपा हुवा है और वो गुमराह कुन किताबें बड़ी आसानी से मार्कीट में दस्तयाब हैं। ज़रा अपने गिरेबान में झांक कर तो देखो कि तुम्हारा दामन कितना दाग़दार है। बक़ौले शाइर :-

दामन को लिए हाथ में कहता था ये क़ातिल
कब तक इसे धोया करूँ लाली नहीं जाती

www.markazahlesunnat.net

कुफ्र के फत्वे की मशीनगन किस ने और किस बे-दर्दी से चलाई

अब हम तारीख़ की शहादत और मोअतबर व मोअतमद कुतुब के हवालाजात से एक ऐसी हक़ीक़त का इन्किशाफ कर रहे हैं कि जिस से साफ तौर से साबित हो जाएगा कि अनगिनत मुसलमानों पर कुफ्र और शिर्क के फतावा की मशीनगन फिर्क़ए-वहाबिया के बानी और उस के मुत्तबईन ने चलाई है। बेगुनाह और बेक़सूर मुसलमानों पर कुफ्र व शिर्क के फतावा की गोलाबारी का जो सिलसिला वहाबी फिर्क़ा के बानी शेख़े नज्दी ने शुरू किया है, वो सिलसिला गैर मुनक़ते तौर पर आज तक बगैर किसी रुकावट के जारी और सारी है। शेख़े नज्दी के नक़्शे क़दम पर चल कर माज़ी और हाल के औलोमा-ए देवबंद, औलोमा-ए गैर मुक़ल्लिदीन और उनके जाहिल बल्कि अजहल मुत्तबईन हर वक़्त अपने हाथ में शिर्क व कुफ्र के फत्वे की मशीनगन (**Ak-56**) ले कर घूमते हैं और मिल्लते इस्लामिया के बे क़ुसूर ईमान वालों को बड़ी दिलैरी से काफिर और मुशरिक बनाते हैं।

अपनी जमाअत के चंद गुस्ताखे रसूल मौलवियों की तकफीर के ख़िलाफ सदाए एहतेजाज बुलंद कर के **इमामे इश्क़ो-मुहब्बत, इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी** रदीअल्लाहो तआला अन्हो और दीगर औलोमा-ए अहले सुन्नत को सड़ी हुई और गंदी गालियां देकर, अपनी मादरी ज़बान की क़बाहत का मुज़ाहेरा करने वाले दौरे हाज़िर के मुनाफिक़ीन अवामुल मुस्लिमीन के सामने मक्कारी और फरेब-कारी का रोना रोते हुए ये कहते हैं कि हमारे अकाबिर औलोमा-

ए देवबंद को सुन्नी बरेल्वी मक्तब–ए–फिक्र के औलोमा काफिर कहते हैं। हालाँकि हमारे अकाबिर औलोमा–ए देवबंद कल्मए–तौहीद **''ला–इलाहा–इल्लल्लाहो–मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह''** का इक़रार करने की वजह से **''कल्मा गो''** और **''अहले क़िब्ला''** थे और किसी भी कल्मा गो और अहले क़िब्ला को काफिर कहना सख़्त मना है। इन मुनाफ़िक़ीन से पूछो कि लाखों, करोड़ों, खरबों बल्कि अनगिनत मुसलमानों को तुम हर बात में मुशरिक और काफिर का फत्वा देते फिरते हो, **वो भी तो कल्मा गो और अहले क़िब्ला हैं। फिर उन्हें तुम क्यों काफिर व मुशरिक कहते हो।**

हक़ीक़त ये है कि वहाबी, देवबंदी और नज्दी फ़िर्क़ा के मुत्तबईन अपने हम अक़ीदा लोगों के इलावा रूए ज़मीन के तमाम कल्मा गो और अहले क़िब्ला मुसलमानों को काफिर समझते हैं। वहाबी फ़िर्क़ा के बानी शेखे नज्दी के तअल्लुक़ से एक हवाला मुलाहिज़ा हो :–

> ” وَيَقُوْلُ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّدْخُلَ فِىْ دِيْنِهٖ اِشْهَدْ عَلٰى نَفْسِكَ اَنَّكَ كُنْتَ كَافِرًا وَاشْهَدْ عَلٰى وَالِدَيْكَ اَنَّهُمَا مَاتَا كَافِرَيْنَ وَاشْهَدْ عَلٰى فُلَانٍ وَّ فُلَانٍ وَّ يُسَمِّى لَهٗ جَمَاعَةً مِنْ اَكَابِرِ الْعُلَمَاءِ الْمَاضِيْنَ اَنَّهُمْ كَانُوا كُفَّارًا ○ فَاِنْ شَهِدَ بِذَالِكَ قَبَّلَهٗ وَاِلَّا اَمَرَ بِقَتْلِهٖ ○ وَكَانَ يُصَرِّحُ بِتَكْفِيْرِ الْاُمَّةِ مُنْذُ سِتِّ مِائَةِ سَنَةٍ وَّ يُكَفِّرُ كُلَّ مَنْ لَا يُتْبِعُهٗ وَ اِنْ كَانَ مِنْ اَتْقَى الْمُسْلِمِيْنَ وَ يُسَمِّيْهُمْ مُشْرِكِيْنَ وَ يَسْتَحِلُّ دِمَاءَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ ○ وَيُثْبِتُ الْاِيْمَانَ لِمَنْ اَتْبَعَهٗ وَاِنْ كَانَ مِنْ اَفْسَقِ النَّاسِ “

मुंदरजा बाला अरबी इबारत का हिन्दी तर्जुमा और हवाला:-

और जो शख़्स उस के हाथ पर बैअत करता, उस से इक़रार कराता कि तुम गवाही दो कि तुम पहले मुशरिक थे और गवाही दो कि तुम्हारे माँ–बाप भी शिर्क पर मरे। और गवाही दो कि फ़ुलां फ़ुलां अकाबिर औलोमा–ए दीन भी मुशरिक थे। वो शख़्स अगर इस तरह की गवाही देता, तो उस की बैअत क़बूल करता और अगर वो शख़्स ऐसी गवाही देने से इनकार करता, तो उस को क़त्ल करा देता था। और शेखे़ नज्दी साफ तौर पर कहता था कि अब से छे सौ/६०० साल पहले की तमाम उम्मत काफिर थी और जो शख़्स उस की पैरवी न करता, उस को काफिर कहता, ख़्वाह वो कितना ही परहेज़गार मुसलमान क्यों न हो, उसे मुशरिक कह कर उस के क़तल को हलाल और उस के माल को लूटने को जाइज़ कहता और जो शख़्स उस की पैरवी कर लेता, ख़्वाह वो कैसा ही फासिक़ क्यों न हो उस को मो'मिन कहेता था।

हवाला :-

(१) ''**अल-फजरुस्सादिक-फी-रद्दे-अला-मुन्करित-तवस्सुले-वल-करामात-वल-ख़्वारिक़**'' मुसन्निफ:- अल्लामा शेख़ जमील आफुंदी सिद्की अज़्ज़हावी अल बगदादी अल मुतवफ्फा हि. १३५४ मतबूआ :- बेरूत, लबनान **सफा : १७, सफा : १८**

(२) अयज़न

मतबूआ :- मक्तबतुल हक़ीक़िया शारेअ दारुश्शफक़ता, इस्तम्बुल, तुर्की – **सफा : १४**

मुंदरजा बाला इबारत पर कुछ भी तबसेरा करने से पहले वहाबी, देवबंदी और नज्दी जमाअत के बानी मुहम्मद बिन अब्दुलवह्हाब नज्दी यानी शेखे़ नजदी की ही ज़बानी और उनकी ही किताब से एक हवाला क़ारेईने किराम की ख़िदमत में पैश है :-

"وَعَرَفْتَ اَنَّ اِقْرَارَهُمْ بِتَوْحِيْدِ الرُّبُوْبِيَّةِ لَمْ يُدْخِلْهُمْ فِى الْاِسْلَامِ وَاَنَّ قَصْدَهُمُ الْمَلَائِكَةُ وَالْاَنْبِيَاءُ وَالْاَوْلِيَاءُ يُرِيْدُوْنَ شَفَاعَتَهُمْ وَالتَّقَرُّبَ اِلَى اللّٰهِ بِذَالِكَ هُوَ الَّذِىْ اَحَلَّ دِمَاءَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ"

मुंदरजा बाला अरबी इबारत का हिन्दी तर्जुमा और हवाला:-

और तुमको मालूम हो चुका है कि इन लोगों (मुसलमानों) का अल्लाह की तौहीद को मान लेना उन्हें इस्लाम में दाखि़ल नहीं करता और इन लोगों का फरिश्तों, नबियों और वलियों से शफाअत तलब करना और उनके ज़रीअे से अल्लाह तआला का कुर्ब चाहना ही वो सबब है, जिसने इनको क़त्ल करने को और इनके अमवाल को लूटने को जाइज़ कर दिया है।

हवाला :- "**कशफुश्शुबहात**" (अरबी)
मुसन्निफ :- शेखे़ नज्दी मुहम्मद बिन अब्दुलवह्हाब नज्दी, अल मुतवफ्फा हि. १२०६, मतबूआ रियाज, **सफा : ७**

क़ारेईने किराम से इल्तिमास है कि "**कलमए-तय्यबा**" और "**अस्तगफिरुल्लाह**" का विर्द ज़बान से जारी रखते हुए मुंदरजा

बाला दोनों अरबी इबारात और उनका हिन्दी तर्जुमा बग़ौर मुतालेआ फरमाएं और फिर्क़ए-वहाबिया के बानी शेखे़ नजदी की मुसलमानों को काफिर बनाने की दीदा दिलैरी और बे-बाकी मुलाहेज़ा फरमाएं।

मुंदरजा बाला दोनों इबारत से फिर्क़ए-वहाबिया के बानी शेखे़ नज्दी की ज़हेनियत, नज़रिया, अक़ीदा और उसूल का पता चलता है। शेखे़ नज्दी अपने हम-ख़याल और हम अक़ीदा मुवाफिक़ीन और मुत्तबेईन के सिवा रुअे ज़मीन के तमाम मुसलमानों को काफिर क़रार देता था। बिला किसी दलीलो-सुबूत और बग़ैर किसी इर्तिकाबे जुर्मे कुफ्रो शिर्क के, सिर्फ वहाबी न होने की वजह से, रूअे ज़मीन के तमाम सहीहुल-अक़ीदा, कल्मा गो, अहले-क़िब्ला, नैक व सालेह और इस्लाम के पाबंद ईमान वाले तमाम मुसलमानों को शेखे़ नज्दी काफिर समझता था और कहता था। इस ज़िम्न में कोई तबसेरा और तन्क़ीद करने से पहले क़ारेईने किराम की ख़िदमत में एक ऐसी किताब का हवाला पेश किया जा रहा है, जिसका मुसन्निफ एक मशहूरो मारूफ अदीब, मुसन्निफ, मुअर्रिख़ और कलमकार है और शेखे़ नज्दी का हामी, मदहा-ख़्वाँ, दिफा करने वाला और सना ख़्वाँ (Admirer) है। शेखे़ नज्दी का वो दाफेअ मुअर्रिख़ यानी **अल्लामा अली तन्तावी जौहरी मिस्री** भी शेखे़ नज्दी के अपने ज़माने से पहले की तमाम उम्मते मुस्लिमा को क़लम की एक जुंबिश और झटके से काफिर क़रार देने की हरकत से तिलमिला उठा। शेखे़ नज्दी की ये बात अल्लामा तनतावी को भी हज़्म न हो सकी और हक़ बात सर चढ़ कर बोलती है के मुताबिक़ जो तबसेरा लिखा है, वो मुलाहिज़ा हो :-

”وَحِيْنَ اَذْكُرُ اَنَّ الشَّيْخَ كَادَ يُكَفِّرُ الْمُسْلِمِيْنَ جَمِيْعًا اِلَّا جَمَاعَتَهُ مَعَ اَنَّ هٰؤُلَاءِ الْمُسْلِمِيْنَ لَمْ يَعْبُدُوْا (جَمِيْعًا) الْقُبُوْرَ وَلَمْ يَاتُوْا (جَمِيْعًا) الْمُكَفَّرَاتِ وَاِنَّمَا فَعَلَ ذَالِكَ عَوَامُهُمْ وَاَنَّ فِيْهِمُ الْعُلَمَاءَ وَالْمُصْلِحِيْنَ اَقُوْلُ لَيْسَ لِلشَّيْخِ عُذْرٌ“

मुंदरजा बाला अरबी इबारत का हिन्दी तर्जुमा और हवाला:-

और जब मैं ये सोचता हूँ कि शेख़े नज्दी अपने मुवाफिकीन के अलावा तमाम मुसलमानों को काफिर करार देता है, हालाँ कि इन तमाम मुसलमानों ने न क़ब्रों की पूजा की है और न कोई कुफ्रिया काम किए हैं। अगर कुछ किया भी है, तो वो अवाम ने किया है। लैकिन इस बिना पर सबको काफिर कहना, जबकि मुसलमानों में औलोमा और इस्लाह करने वाले भी मौजूद हैं। लिहाज़ा शेख़े नज्दी का सबको काफिर कहना, उस के सहीह होने पर मैं कोई उज्र नहीं पाता।

हवाला :- ''मुहम्मद बिन अब्दुलवहहाब'' (अरबी)
मुसन्निफ :- अली तन्तावी, जौहरी मिस्री
मतबूआ :-रियाज, **सफा : ३६**

शेख़े नज्दी के दिफा और हिमायत में कलम चलाने वाले अल्लामा शेख़ तनतावी से भी शेख़े नज्दी की ये बात गवारा और बर्दाश्त न हो सकी कि **शेख़े नज्दी से पहले तमाम मुसलमान काफिर थे।** अल्लामा तनतावी ने शेख़े नज्दी का ये उज्र भी बातिल ठहरा दिया कि शेख़े नज्दी ये बहाना बता कर लोगों को काफिर कहता था कि ये लोग क़ब्रों की पूजा करते हैं। हालाँकि कोई भी मुसलमान किसी भी नबी या वली की कब्र को अपना मा'बूद समझ कर उस की पूजा नहीं करता, और अगर किसी जाहिल बल्कि अजहल ने किसी कब्र के साथ ताजीम में गुलू कर के खिलाफे शरीअत इर्तिकाब किया है, तो ऐसे और नादिर वकूअ पजीर एक्का-दुक्का वाकिआ को दलील बना कर, पूरी उम्मते मुस्लिमा को काफिर कहना और किसी जाहिल की नाज़ेबा हरकत की बिना पर मिल्लते-इस्लामिया के तमाम लोगों को काफिर कहना, कहाँ की शरीअत है ? तमाम उम्मत को काफिर कहना, इस का मतलब ये हुवा कि उम्मते मुस्लिमा के तमाम अफराद यानी अवामो-खवास सब काफिर हैं। हालाँकि उम्मत में औलोमा, सुल्हा, औलिया, सूफिया, अतकिया, मुजतहिद, मुफस्सिर, हुफ्फाज, अग़वास, अक़्ताब, मुहद्दिस, मुहक्क़िक़, मुजद्दिद, मुजाहिद, शोहदा बल्कि सहाबा, ताबईन, तबेअ ताबईन, खुलफाए राशिदीन, अश्रए-मुबश्शेरा सब आगए। इन तमाम को शेख़े नज्दी बिला किसी दलीलो-सुबूत के काफिर कह कर अपनी शक़ावते क़ल्बी का मुजाहेरा कर रहा है।

बैअत के वक्त छ सौ साल/६०० के मुसलमानों को काफिर कहने का इक़रार लेना। अज शेख़ नज्दी

सफ़ा नंबर ८७/८८ पर अरबी किताब **"अल-फजरुस्सादिक"** के हवाले से बताया गया है कि शेख़ नज्दी जिस शख़्स से बैअत लेता था, तब उस शख़्स से ये इक़रार कराता था कि **"मैं गवाही देता हूँ कि अब से छ सौ /६०० साल पहले के तमाम मुसलमान काफिर थे।"** शेख़े नज्दी की मौत हि. १२०६ में हुई है। लिहाज़ा पूरी उम्मत के काफिर होने का जो इक़रार बैअत के वक्त कराता था और इस की मुद्दत छ सौ/६००साल तय करता था। जिसका मतलब ये हुवा कि **"शेख़े नज्दी हि. ६०० से हि. १२०० तक के तमाम मुसलमानों को काफिर कहता था और बैअत करने वाले से इस का इक़रार कराता था।"**

क़ारेईने किराम सोचें ! दो पाँच या चंद अफराद को काफिर नहीं कहा जा रहा, किसी एक गिरोह या जमाअत या बिरादरी को काफिर नहीं कहा जा रहा, बल्कि पूरी उम्मत को काफिर कहा जा रहा है और वो भी दो पाँच साल तक के अरसे के लिए नहीं बल्कि पूरे छ सौ/६०० साल के मुसलमानों को काफिर कहा जा रहा है। जिसका मतलब ये हुवा कि हि. ६०० से हि. १२०० तक यानी छे सदियां गुज़र गईं और पूरी दुनिया में कोई मुसलमान ही नहीं था। बल्कि बक़ौल वहाबी देवबंदी नज्दी जमाअत के बानी शेख़े नज्दी तमाम उम्मत छे सदी तक काफिर थी। यानी छ सदी तक रूए जमीन ईमान वालों से खाली थी (मआज़ल्लाह)

वा हसरता ! सर धुनने की और बड़े अफसोस की बात है कि जिस शख़्स ने करोड़ों, खरबों बल्कि अन-गिनत मुसलमानों को बेधड़क काफिर कहा, ईमान वाले मुसलमानों को क़त्ल करना और उनके माल को लूटना जाइज़ कहा, ऐसे ज़ालिम, शक़ी, संगदिल, बेरहम, बेसलीका, बेशऊर, बेगैरत, बे-लिहाज़, बे-वहदत और बेलगाम शख़्स को फिर्कए-वहाबिया नजदिया के मुत्तबईन अपना पेश्वा, हादी, रहबर बल्कि मुजद्दिद मानते हैं और उस की इत्तिबा करते हैं। शेख़े नज्दी ने बेशुमार मुसलमानों को काफिर और मुशरिक कह कर सिर्फ कुफ्र का फत्वा देने की नौबत तक ही नहीं पहुंचा बल्कि बेक़सूर और बेगुनाह मुसलमानों को लूटना और क़त्ल करना अपना शेआर बनाया। इब्ने सऊद की हिमायत और इब्ने सऊद की तलवार के बलबूते पर उसने मुसलमानों के क़त्ले आम का जो बाजार गर्म किया था, वो तारीख़ इतनी लर्ज़ाख़ेज है कि तारीख़ के अवराक से भी खून के आँसू टपक रहे हैं। यहां इतनी गुंजाइश नहीं कि उन तमाम वाक़ेआत की हक़ीक़त क़लमबंद की जाए। शेख़े नज्दी के मज़ालिम की तफसीली मालूमात हासिल करने के लिए राकिमुल-हुरूफ की आइन्दा तसनीफी काविश **"दास्ताने ज़ुल्मो-सितम"** का मुतालेआ फरमाएं।

शेख़े नज्दी छ सौ ६०० साल तक के तमाम मुसलमानों को काफिर कहता था। शेख़े नज्दी की मौत सन हिजरी १२०६ में वाकेअ हुई है। यानी शेख़े नज्दी हि. ६०१ ता हि. १२०० तक के तमाम मुसलमानों को काफिर कहता था। इस छ सौ ६०० साल के अरसे में रूए जमीन पर कितने मुसलमान थे, उस की तादाद का सही अंदाजा तो मुश्किल है लैकिन तख़्मीनन यानी क़यास से तादाद का धुँधला अक्स शुमार झाँकने के लिए ज़ैल में सिर्फ ग्यारह

साल की तादाद का खाका (**Table**) पैश किया जा रहा है। हि. ६०१ से हि. १२०० यानी शम्शी साल के मुताबिक ई. १२०४ (**A.D.1204**) से ई. १७८५ (**A.D.1785**) में से सिर्फ ग्यारह/११ साल में दुनिया की कुल आबादी और दुनिया में मुस्लिम आबादी कितनी थी ? इस का तख़मीनन खाका मुलाहेजा फरमाएं।

३० फीसद के हिसाब से मुस्लिम आबादी	दुनिया की आबादी	मुताबिक सने इस्वी	सने हिजरी	नं. शुमार
13,50,00,000	45,00,00,000	C. E. - 1204	۶۰۱ھ	१
12,48,00,000	41,60,00,000	C. E. - 1250	۶۴۷ھ	२
12,96,00,000	43,20,00,000	C. E. - 1300	۶۹۹ھ	३
13,29,00,000	44,30,00,000	C. E. - 1340	۷۴۰ھ	४
11,22,00,000	37,40,00,000	C. E. - 1400	۸۰۲ھ	५
13,80,00,000	46,00,00,000	C. E. - 1500	۹۰۵ھ	६
16,68,44,400	55,61,48,000	C. E. - 1600	۱۰۰۸ھ	७
15,00,00,000	50,00,00,000	C. E. - 1650	۱۰۵۹ھ	८
20,37,00,000	67,90,00,000	C. E. - 1700	۱۱۱۱ھ	९
23,10,00,000	77,00,00,000	C. E. - 1750	۱۱۶۳ھ	१०
28,62,00,000	95,40,00,000	C. E. - 1800	۱۲۱۴ھ	११
i.e. :- 1,80,82,44,400 - Total of 11 Years				

नोट नंबर : १

मुंदरजाबाला खाका के हिसाब से दुनिया की मुस्लिम आबादी का ग्यारह साल का मीज़ान यानी Total एक अरब, अस्सी करोड, बयासी लाख, चुवालीस हजार, चार सौ

(**1,80,82,44,400**) हुवा। इस हिसाब से क़ारेईने किराम छ सौ (६००) साल का अंदाजा लगालें कि छ सौ साल में दुनिया में कितने मुसलमान थे और वो तमाम इमामुल वहाबिया शेख़े नज्दी मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब नज्दी के फत्वे से काफिर थे।

नोट नंबर : २

क़ारेईने किराम की मालूमात में इजाफा की निय्यते सालेह से मौजूदा आबादीए आलम और मुस्लिम आबादी की तफसील ज़ैल में पेश कर रहे हैं :-

आज बतारीख १६/अगस्त इ. २०१५ बरोज यक शम्बा, ब-वक़्त रात ८:३० बजे दुनिया की कुल आबादी और दुनिया की मुस्लिम आबादी हस्बे जैल है,

- ▣ **World Population :- 7,31,82,90,560**
- ▣ **Muslim Population of World :- 2,03,44,84,775**
- ◈ **Muslim Population's Percentage :- 27.80**

नोट :- दुनिया की कुल आबादी (**World Population**) की तादाद (**Figher**) देखने के लिए कारेईने किराम (**Wikipedia**) गूगल पर सर्च करें।

मुंदरजा बाला खाका के मुताबिक सिर्फ ग्यारह/११ साल की दुनिया की मुस्लिम आबादी का मजमूआ ही सैंकड़ों करोड़ तक पहुंचता है तो छ सौ ६०० साल की दुनिया की मुस्लिम आबादी का मजमूआ और मीजान (**Total**) अरबों और खरबों (**Millions and Billions**) में बल्कि अन-गिनत तादाद तक पहुंच जाएगा।

इतनी भारी तादाद के सहीहुल-अकीदा, ईमानदार और बेक़ुसूर मुसलमानों को वहाबी नज्दी फिरके का बानी काफिर कह रहा है।

अलावा अजीं छ सौ/६०० साल के जिन तमाम मुसलमानों को शेखे़ नज्दी, कलम के एक झटके से काफिर करार दे कर दाइरए इस्लाम से खारिज कर रहा है, वो तमाम मुसलमानों में अज़ीमुल मरतबत औलिया, सुलहा, सूफिया, अक़ताब, अग़वास, अतक़िया, अस्फिया, सालेहीन, शोहदा, मुजाहिदीन और सालिकीन के अलावा इल्मो-अमल के कोहे बुलंद मुफस्सिरीन, मुहद्दिसीन, मुफक्किरीन, मुज्तहिदीन, मुजद्दिदीन, औलोमा, फुकहा, खुत्बा, अइम्मए दीन और नाशिरीनो-मुसन्निफीन भी थे। इन तमाम के मुबारक अस्मा जमा व शुमार व इनहिसार में लाना ना-मुमकिन है।

सिर्फ चंद मशहूरो-मारूफ औलियाए-किराम कि जिनके आस्ताने मरजए खलाइक हैं और जिनकी हयाते तय्यबा कौमो-मिल्लत के लिए मशअले राहे हिदायत हैं। ऐसे चंद अजीमुश्शान औलिया के अस्माए गिरामी ज़ैल में मुंदरज हैं, जो शेखे़ नज्दी के कुफ्र के फत्वे की ज़द में आते हैं :-

नं.	अस्माए औलियाए किराम	सने वफात	मजार शरीफ
१	हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी	हि. ६३३	दहेली
२	हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी	हि. ६४३	नागौर शरीफ
३	हज़रत अलाउद्दीन साबिर पीया कलियरी	हि. ६९०	कलियर शरीफ
४	हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया	हि. ७२५	दहेली
५	हज़रत आशिक़े मुर्शिद अमीरे ख़ुश्रो	हि. ७२५	दहेली
६	हज़रत ख़्वाजा नसीरुद्दीन चिराग दहेल्वी	हि. ७५७	दहेली
७	हज़रत मख़्दूम जहांगीर अशरफ सिमनानी	हि. ८३२	किछौछा शरीफ

www.markazahlesunnat.net

नं.	अस्माए औलियाए किराम	सने वफात	मजार शरीफ
८	हज़रत सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा मुईनुद्दीन ग़रीब नवाज़ चिश्ती	हि. ६२७	अजमेर शरीफ
९	हज़रत शाह मीना	हि. ८८४	लखनऊ
१०	हज़रत सुल्तानुल औलिया शाहे आलम	हि. ८८०	अहमदआबाद
११	हज़रत ख़्वाजा बन्दा नवाज़ गैसू दराज़	हि. ८२५	गुलबर्गा
१२	हज़रत शाह वजीहुद्दीन अल्वी गुजराती	हि. ९९८	अहमदआबाद
१३	हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहेल्वी	हि. १०५२	दहेली
१४	हज़रत शाह मख़्दूम अली माहिमी	हि. १०८५	मुम्बई
१५	हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस दहेल्वी	हि. ११७६	दहेली

▣ शैखे नज्दी के कुफ्र के फत्वे से मुंदरजाजैल मशाहिर औलोमा भी नहीं बच सके।

नं.	मशाहिर औलोमा के अस्माए गिरामी	सने वफात	उन की लिखी हुई किताब
१	हज़रत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद क़ुरतुबी	हि. ६७१	तफ्सीरे क़ुरतुबी
२	हज़रत शैख़ अबू ज़करिया यहया बिन शरफ नववी	हि.६७६	शरहे मुस्लिम शरीफ
३	हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बैज़ावी	हि. ६९१	तफ्सीरे बैजावी
४	हज़रत निज़ामुद्दीन हुसन बिन हुसैन नीशापूरी	हि. ७२८	तफ्सीरे नीशापूरी
५	हज़रत अब्दुल अज़ीज बिन अहमद बुख़ारी	हि. ७३०	तेहकीकुलहुस्सामी
६	हज़रत फख़्रुद्दीन उसमान बिन अली जीलई	हि. ७४३	तबय्यिनुल हकाइक
७	हज़रत सदरुश्शरीआ उबैदुल्लाह बिन मसऊद	हि. ७४७	शरहे वकाया
८	हज़रत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन रमज़ान रूमी	हि. ७६९	यनाबेअ फी माअरकतुल उसूल
९	हज़रत अबू अब्दुल्लाह बिन यूसुफ हनफी जीलई	हि.७६२	नस्बुर्राया
१०	हज़रत अबूबक्र बिन अली बिन मुहम्मद हद्दाद यमनी	हि. ८००	अल जवाहिरतुन्नय्येरा
११	हज़रत शहाबुद्दीन अहमद बिन अली बिन हजर अस्क़लानी	हि.८५२	अल हिदाया फी तखरीजे अहादीसे बिदाया

नं.	मशाहिर औलोमा के अस्माए गिरामी	सने वफात	उन की लिखी हुई किताब
१२	हज़रत अल्लामा अबुल बरकात अब्दुल्लाह बिन अहमद नस्फी	हि. ७१०	तफसीरे नस्फी
१३	हज़रत कमालुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद बिन हुमाम	हि. ८६१	तेहरीरुल उसूल
१४	हज़रत अल्लामा बदरुद्दीन अबी मुहम्मद महमूद बिन अहमद ऐनी	हि. ८५५	उम्दतुलकारी
१५	हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र सुयूती	हि.९११	तफसीरे जलालैन वग़ैरा
१६	हज़रत यूसुफ बिन जुनैद जलबी (चलपी)	हि. ९०५	जखीरतुलउक्बा
१७	हज़रत इमाम इबराहीम बिन मुहम्मद हल्बी	हि.९५६	मुल्तकीयुल अबहर
१८	हज़रत शम्सुद्दीन मुहम्मद खुरासानी कुहस्तानी	हि.९६२	जामेउर्रुमूज
१९	हज़रत शैख़ जैनुद्दीन बिन इबराहीम बाबिन नजीम	हि.९७०	बहरुर्राइक
२०	हज़रत इमाम अब्दुलवह्हाब शेआरानी	हि.९७३	मीजानीश्शरी–अइतिल कुबरा
२१	हज़रत शहाबुद्दीन अहमद बिन हजर अस्कलानी मक्की	हि.९७३	अस्सवाइके मुहरिका
२२	हज़रत अलाउद्दीन अली मुत्तकी बिन हिसामुद्दीन	हि.९७५	कन्जुलउम्माल
२३	हज़रत अली बिन सुल्तान मुल्ला अली कारी	हि.१०१४	मिरकात शरहे मिश्कात
२४	हज़रत शैख़ अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन सुलेमान	हि.१०७८	मजमउन्नहर
२५	हज़रत अबू हामिद बिन यूसुफ बिन मुहम्मद फासी	हि.१०५२	मुतालेउल मुसर्रात
२६	हज़रत अल्लामा हसन बिन अम्मार बिन अली शरनबलाली	हि.१०६९	गुनिय्या
२७	हज़रत अल्लामा शहाबुद्दीन खुफ्फाजी	हि.१०६९	नसीमुर्रियाज
२८	हज़रत अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुलबाक़ी जरक़ानी	हि.११२२	शरहे मुअत्ता
२९	हज़रत अल्लामा इस्माईल बिन अबदुलगनी नाबल्सी	हि.११४३	अलहदीक्तुन्नदिय्या
३०	हज़रत अल्लामा अलाउद्दीन मुहम्मद बिन अली हसकफी	हि.१०८८	अद्दुर्रुल मुख्तार
३१	हज़रत अल्लामा खैरुद्दीन बिन अहमद बिन अली रमली	हि.१०८१	फतावा ख़ैरिया
३२	हज़रत अल्लामा अहमद बिन मुहम्मद हमवी मक्की	हि.१०९८	गमज़े उयून–अलबसाइर

www.markazahlesunnat.net

क़ारेईने किराम बनजरे इन्साफ फैसला करें कि मुसलमानों पर धड़ा धड़ कुफ्र के फत्वे कौन थोप रहा है ? लाखों, करोड़ों, अरबों, खरबों बल्कि अददो शुमार में भी न आ सकें इतने मुसलमानों को काफिर कौन कह रहा है ? शेखे़ नज्दी जैसे संग दिल, शक़ी और ईमान कुश मिल्लते इस्लामिया के इर्तिकाबे रज़ीला के हथकंडों के खिलाफ वहाबी नज्दी जमाअत के मुनाफिक़ीन एक हर्फ भी अपनी गंदी ज़बान से नहीं निकालते बल्कि उस के बर अक्स शेखे़ नजदी की तारीफो–तौसीफ के पुल बाँधने में मुस्तइदो–मुतहर्रिक रहते हैं। मस्लन

बक़ौल गंगोही शेखे़ नज्दी अच्छा आदमी था

वहाबी, देवबंदी और तबलीग़ी जमाअत के मुक़्तदा और पेश्वा व नीज़ तबलीग़ी जमाअत के बानी मौलवी इल्यास कान्धलवी के पीरो–मुर्शिद और उस्ताद **मौलवी रशीद अहमद गंगोही** कि जिनको दौरे हाजिर के देवबंदी मक्तबए फिक्र के लोग बडे फख्र से **"इमामे रब्बानी"** और **"मुजद्दिद"** के लकब से मुलक़्क़ब करते हैं, वो गंगोही साहब के **"फतावा रशीदिया"** के **सफा नं. २८०** के दो/२ इक्तिबासात ज़ैल में दर्ज हैं।

इक़तिबास नंबर १ :-

मुहम्मद बिन अब्दुलवह्हाब को लोग वहाबी कहते हैं। वो अच्छा आदमी था। सुना है कि मज़हबे हम्बली रखता था और आमिल बिल हदीस था। बिदअतो–शिर्क से रोकता था मगर तश्दीद उस के मिजाज़ में थी।

इक़्तिबास नंबर २ :-

मुहम्मद बिन अब्दुलवह्हाब के मुक़्तदियों को वहाबी कहते हैं। उनके अक़ाइद उम्दा थे और मज़हब उनका हम्बली था। अलबत्ता उनके मिजाज़ में शिद्दत थी मगर वो और उनके मुक़्तदी अच्छे हैं।

हवाला :- "फतावा रशीदिया" (कामिल) मौलवी रशीद अहमद गंगोही के फतावा का मजमूआ, नाशिर:- मक्तबा रहीमीया - देवबंद (यू.पी.) सने तबाअत : जुलाई ई. २००१, **सफा नंबर : २८०**

बेशुमार बेक़सूर मुसलमानों को काफिर और मुशरिक का फत्वा दे कर उनके खून की होली खेलने वाले ज़ालिम और सरकश शेखे़ नज्दी को वहाबियों का पेश्वा व मुक़्तदा मौलवी रशीद अहमद गंगोही अच्छा आदमी और उनके अक़ाइद उम्दा थे केह कर तारीफ के पुल बांध कर ख़िराजए-अक़ीदत व तेहसीन पैश कर रहा है।

औलोमा-ए हक ने जिन चंद देवबंदी औलोमा के खिलाफ फत्वा दिए, वो क्यों दिए ? और फत्वे देने वाले औलोमा कौन थे ?

"बरेल्वी जमाअत का तआर्रुफ और उनके फत्वे" के नाम से **"जमीअते अहले हक जम्मू व कश्मीर"** के नाम से आठ वर्की बे-वक़्त किताबचा में सरासर दरोग-गोई का दामन थाम कर किज़्बो-इफ्तिरा पर मुश्तमिल जो झूठ नामा शाए किया गया है, इस का वाहिद मकसद अवामुन्नास को धोका देकर गलत फहमी का शिकार बनाना है। लिहाज़ा इस उन्वान के तहत लिखे जाने वाले

मजमून में झूठ का पर्दा चाक और तार तार कर के हक़ व सदाक़त की रोशनी में कारेईने किराम की सही रेहनुमाई की जाएगी।

सफा ५४ पर हिन्दुस्तान में वहाबी फित्ने के आगाज़, उरूज और शबाब की एक सदी का जाइज़ा के तहत ⊙ हि. १२४० से हि. १२९० तक का पहला हिस्सा और ⊙ हि. १२९० से हि. १३४० का पचास साल के दूसरे हिस्से का जिक्र किया है। वहाबी फित्ना असल में मुल्के हिजाज़ के नज्द इलाके से शुरू हुवा। हि. ११४० से हि. १२४० वहाबी फित्ना मुल्के हिजाज़ और अतराफ के ममालिक में ब-ज़ौरे शमशीर फैला। शेखे़ नज्दी मुहम्मद बिन अब्दुलवह्हाब के हि. १२०६ देहांत (मौत) के बाद उस के क़ाइद की हैसियत से मुहम्मद बिन सऊद ने कमांड सँभाल कर ज़ुल्मो-सितम की तमाम सरहदें उबूर करलीं और बर्तानवी हुकूमत से ज़र्रे कसीर हासिल कर के पानी की तरह ख़र्च कर के डरा कर, धमकाकर, मालो-दौलत की लालच दे कर, लोगों को वहाबी बनाए। शेखे़ नज्दी के अक़ाइदे बातिला और फासेदा को क़बूल करने पर मजबूर किया और जो साहिबे ईमान वहाबियत के ईमान कुश अक़ाइदे कुफ्रिया क़बूल करने से इन्कार बल्कि तवक़्क़ुफ करता, वो पल-भर में खाको-खून में तड़पता और मुर्दा नज़र आता। शेखे़ नज्दी की तसनीफ करदा किताब **"अत्तौहीद"** (अरबी) का **मौलवी इस्माईल देहलवी** ने उर्दू ज़बान में तर्जुमा किया और इस का नाम **"तक़्वीयतुल ईमान"** रखा। इस किताब के तअल्लुक से सफा नंबर (४८) और सफा नंबर (६४) पर तफ्सीली गु●फ्तगु हम कर चुके हैं। हि. १२४० से हि. १२४६ तक मौलवी इस्माईल दहेलवी ने जेहाद के नाम से देहश्तगर्दी का नंगा नाच दिखाया। हुकूमते बर्तानिया के माली तआवुन और नाम निहाद मुजाहिदों की बाजूओं की कुव्वत (**Musclepower**)

से वहाबी फित्ने की आंधी खूब चलाई। अंग्रेज़ों के ईमाअ व इशारे पर बनामे जेहाद सुन्नी मुसलमानों से जंगें लडीं। बिल आखिर २४, ज़िलहिज्जा हि. १२४६ को बमुकाम "**बालाकोट**" (पंजाब) में सरहद के सुन्नी मुस्लिम पठानों के हाथों मारा गया। मौलवी इस्माईल देहलवी ने नाम निहाद जेहाद के नाम से कुल बाईस (२२) जंगें लड़ी हैं। जिसमें से सात/७ जंगें सिखों के सामने, चौदह/१४ जंगें मुसलमानों के सामने और एक जंग सिख मुस्लिम इत्तिहाद के सामने लड़ी है। जिसकी तफसील हस्बे जैल है।

सिखों के सामने लड़ी हुई जंगों के मुकाम :-

(१) सीदू (२) अकोरा (३) डमगला (४) शंगारी
(५) मुजफ्फराबाद (६) हज़रू (७) अबासीन

मुसलमानों के सामने लड़ी हुई जंगों के मुकाम :-

(१) खैबर (२) पनजतार (३) हिंड-पहली मर्तबा
(४) हिंड-दूसरी मर्तबा (५) पैशावर (६) छतरबाई
(७) ओतमान ज़ई (८) इनब (९) कोहाट (१०) मायार
(११) मरदान (१२) स्वात (१३) ज़ीदा (१४) खुलाबट

सिख मुस्लिम इत्तिहाद के सामने लडी हुई जंग का मुकाम:-

(१) बालाकोट - जहां पर इस्माईल दहेलवी मारा गया।

हवाला :-

(१) "**हयातेतय्येबा**" मुसन्निफ :- मिर्ज़ा हैरत देहलवी,
सफा : ३३०, ३०९,२९१

(२) "**सय्यद अहमद शहीद**" मुसन्निफ :- गुलाम रसूल महर
सफा : ४५३, सफा : ६२६, सफा : ४८७

(३) "**सवानेह अहमदी**" मुसन्निफ :- मुहम्मद जाफर थानेसरी, **सफा : २४३**

(४) "**तारीखे तनावुलियाँ**" मुसन्निफ :- सय्यद मुराद अली अलीगढी
सफा : ४७, ५६

(५) "**मुशाहेदाते काबुल व यागिस्तान**" मुसन्निफ :- मुहम्मद अली कसूरी
सफा : ११८

(६) "**हकाइके तेहरीके बालाकोट**" मुसन्निफ :- शाह हुसैन गुर्ज़ैदी
सफा : ९५, १२८

(७) "**मौलाना इस्माईल देहेलवी और तकवियतुलईमान**"
मुसन्निफ :- मौलाना शाह अबुल हसन ज़ैद फारूकी, **सफा : ९०, सफा ९७, ८९**

नोट :-

मज़कूरा बाला कुल २२ जंगों की तफसीली वज़ाहत अगर किसी साहब को दरकार है, तो वो राकिमुल हुरूफ की तस्नीफ "**भारत के दोस्त और दुश्मन**" का मुतालेआ फरमाएं। ये किताब गुजराती और अंग्रेजी में दस्तयाब है। इस किताब का उर्दू और हिन्दी ऐडीशन इन्शाअल्लाह अनकरीब मन्ज़रे आम पर आ जाएगा।

मौलवी इस्माईल देहलवी ने मुत्तहिदा हिन्दुस्तान (अखंड भारत) में वहाबियत का बीज बोया। हुकूमते बर्तानिया ने खाद (Furtilizer) और पानी के ज़रीये बीज से पोदा और पोदे से वसीअ दरख्त बनाया। तक्वियतुलईमान का पहला उर्दू ऐडीशन हुकूमते बर्तानिया के माली तआवुन से पाँच लाख (5,00,000) कापी छाप कर घर-घर पहुँचाया गया। वहाबियों के दारुल उलूम क़ायम करने में तआवुन किया और जिनका शुमार अकाबिर औलोमा-ए वहाबी में होता था। मस्लन मौलवी अशरफ अली थानवी जैसे कई मौलवियों को ख़रीदा। उनकी माहाना तनख़्वाहें भारी रक़म में तय कीं। मौलवी अशरफअली थानवी को माहाना छःसौ रुपया (Rs. 600/-) तनख़्वाह दी जाती थी।

(**हवाला :- "मकालमतुस्सदरैन** "- अज :- मौलवी ताहिर अहमद क़ासमी - देवबंद, सफा : १०)

हुकूमते बर्तानिया के माली, सियासी, समाजी, इक़्तिसादी और सरवती तआवुन के तुफ़ैल फ़िर्क़ए-वहाबियत ज़ोरो-शोर से बर्रे-सगीर हिन्दुस्तान में फैला। हज़ारों की तादाद में जरख़रीद वहाबी मुल्लाने हिन्दुस्तान के कोने कोने में फैल गए और ज़र व बाज़ू (**Money & Muscle Power**) के बलबूते पर वहाबी तेहरीक परवान चढ़ी। तबलीग़ी जमाअत वजूद में आई और उसने कलमा और नमाज़ के बहाने लोगों को धोका और फरेब दे कर वहाबियत फैलाई। लाखों की तादाद में अहले ईमान उनके दामे फरेब में फंस कर ईमान की लाज़वाल दौलत से हाथ धो बैठे। हुकूमते बर्तानिया ने वहाबी तेहरीक का भरपूर तआवुन किया। क्योंकि वहाबियत की वजह से ही कौमे मुस्लिम दो अलग गिरोह में मुनक़सिम हो रही थी और मिल्लते इस्लामिया का इत्तिहादो-इत्तिफाक चकनाचूर और पाश पाश हो रहा था। अंग्रेज़ों ने हिन्दुस्तान की हुकूमत मुसलमानों से छीनी थी। ई. १२०६ सुलतान कुत्बुद्दीन ऐबक से ई.१८५७ बहादुरशाह ज़फर तक कुल छ : सौ इक्कावन साल ६५१ साल (**651 Year**) मुस्लिम हुक्मरानों ने हिन्दुस्तान पर हुकूमत की थी। लिहाज़ा अंग्रेज़ों को सबसे ज़्यादा ख़ौफ व डर मुस्लिम कौम से ही था कि अगर हुकूमते बर्तानिया के ख़िलाफ अलमे बग़ावत कोई बुलंद करेगी तो वो सिर्फ और सिर्फ कौमे मुस्लिम ही होगी। लिहाज़ा मुस्लिम कौम को मज़हब के नाम पर आपस में लड़ा कर, उनमें ऐसी फूट डाल दो कि वो कभी भी मुत्तहिदो-एक न हो सकें। मुसलमान मज़हब के नाम पर आपस में जंगो-जिदाल में उलझें और लड़ें, यही हमारे हक में बेहतर है। आपस में लड़ाओ और हुकूमत करो (**Devide and-Rule**) वाली पोलिसी इख़्तियार करो और चैन की नींद सोते रहो। वहाबी मज़हब के अक़ाइदे बातिला की नश्रो इशाअत के लिए

www.markazahlesunnat.net

अंग्रेज़ों ने ख़ज़ाने खोल दीए। वहाबी लिटरेचर घर-घर मुफ्त पहुँचाया गया और दिन-दहाड़े लोगों के ईमान लूटे गए।

अंग्रेज़ों के ईमाअ व इशारे पर वहाबी देवबंदी जमाअत के पेश्वाओं ने अल्लाह तबारक व तआला और हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम व नीज़ मिल्लते इस्लामिया के मरकज़े अकीदत औलियाए-इजाम रिदवानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन की तौहीनो-तन्क़ीस में **तकवियतुलईमान, हिफ्जुल ईमान, तेहज़ीरुन्नास, बराहीने कातेआ, अल जोहद्दुल मिक्ल, यकरोज़ी, सिराते मुस्तकीम** वग़ैरा जैसी फूहड़ और रज़ील किस्म की किताबें लिखीं और छपवाईं। इन किताबों में ऐसी ऐसी तौहीन आमेज़ और गुस्ताख़ाना इबारतें थीं कि मुसलमान भड़क उठे। उनके मज़हबी जज़बात इतने शदीद मजरूह हुए कि बर्दाश्तो-तहम्मुल से बाहर थे। हर सूबा, हर ज़िला, हर शहर, हर गांव, हर मोहल्ला, हर मस्जिद बल्कि हर घर मज़हबी इख़्तिलाफो-अक़ाइदी तनाज़ो का अखाड़ा बन गया।

भोले-भाले और मज़हबी मालूमात से नाआश्ना मुसलमानों को कुरआनो-हदीस के नाम पर अंग्रेज़ों के ज़र ख़रीद वहाबी मुल्लाने गुमराह कर रहे थे। मालो-दौलत की तमअ और हुकूमत के ख़ौफ से बेचारे कई भोले-भाले मुसलमान गुमराहियत की राह पर चल बसे और जो पुख़्ता ईमान वाले होशमंद मो'मिन थे, उन्होंने औलोमा-ए अहले सुन्नत की रहबरी में डट कर मुकाबला किया। उस वक्त के औलोमा-ए अहले सुन्नत ने अपना सब कुछ दाव पर लगा कर अपने दीनी भाईयों के ईमान के तहफ्फुज़ के लिए मैदाने अमल में आए और वहाबी मौलवियों के मकरो फरेब का पर्दा चाक कर दिया।

माहौल की संगीनी और परागंदा हालात

हालात ऐसे परागंदा थे कि अवामुन्नास के लिए सबसे बड़ा अलमिया (Tragedy) ये था कि दोनों तरफ से कुरआनो–हदीस की दलीलें पैश की जाती थीं। वहाबी मौलवी आयाते कुरआनी के मनचाहे मतलब व मफहूम बयान कर के खुल्लम खुल्ला तहरीर कर के लोगों को गुमराह कर रहे थे। उनकी गुमराह कुन दलीलों को औलोमा–ए अहले सुन्नत ललकारते थे और मुनाज़रे का चैलेंज देते थे लेकिन मुनाज़रा करने से हक़ीक़त खुल कर सामने आजाएगी और हमारी पोल खुल जाएगी, इस डर से वहाबी देवबंदी मुल्लाने हमेंशा मुनाज़रे से भागते रहे बल्कि किसी सुन्नी आलिम के सामने बहेसो–मुबाहिसे के लिए रूबरू आने से भी गुरेज़ करते रहे। औलोमा–ए अहले सुन्नत ने वहाबियों के अक़ाइदे बातिला के रद्दो इबताल में तसनीफो–तालीफ का सिलसिला जारी किया, लेकिन वहाबी देवबंदी मुल्लाने औलोमा–ए अहले सुन्नत के दलाइले काहेरा पर मुश्तमिल नादिरे ज़मन तसानीफे जलीला का जवाब लिखने से आजिज़, कासिर और साकित रहे।

औलोमा–ए अहले सुन्नत व जमाअत जो सही माअनों में **"हिज़बुल्लाह"** के लक़ब के हामिल थे। इस अल्लाह वालों की जमाअत ने **ए'लाए कलिमतुल हक़** यानी हक बात बुलंद करने में किसी की परवा न की और बिला ख़ौफो ख़तर फरीज़ए–हक अदा करने में किसी किस्म की कोई कसर न उठा रखी। इन औलोमा–ए हक में सरे फहेरिस्त **इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो–मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो

वर्रिज़वान का मुबारक इस्मे गिरामी आता है। हालाँकि दीगर औलोमा–ए अहले सुन्नत ने अपनी बिसात और सलाहियत के मुताबिक हस्बे इस्तिताअत बेहतरीन खिदमात अंजाम दीं और अवामुन्नास को फिर्कए बातिला के अक़ाइदे बातिला के दामे फरेब से महफूज रखने में नुमायां किरदार अंजाम दिया लेकिन इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी ने तो वहाबियत की कमर तोड़ कर रख दी। उसूली मस्अला हो, चाहे फुरूई मस्अला हो, ईमानो–अकीदे से तअल्लुक रखने वाला मामला हो, चाहे मरासिमे अहले सुन्नत के जाइज़ और मुस्तहब होने का मामला हो। जब कभी भी फिर्कए वहाबिया नजदिया बातिला के गुमराह कुन दज्जालों ने सर उठाया और कुफ्रो शिर्क और नाजाइज़ व हराम का फत्वा दिया। इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने ख़ुदा दाद सलाहियतों के तुफैल दंदान शिकन जवाब दिया। बल्कि यूं कहने में भी कोई मुबालेगा आराई नहीं कि **किल्के रज़ा** हरकत में आया और **शमशीरे हक** के जल्वे और तुमतराक़ से चकाचाक की गूंज ने सफें उलट कर रख दीं और ऐसा महसूस होता था कि मैदाने जंगे दलील में लश्करे वहाबिया का हर गब्बर खाको–खून में तड़पता नज़र आता है।

लैकिन ....

इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी ने फिर्कए–वहाबिया के हर मुसन्निफ मुल्लाने को दलील के मैदान में मात करने के बावजूद इतमामे हुज्जत का भी फरीज़ा अंजाम दिया है। कुफ्र का फत्वा देने में कोई जल्दबाज़ी नहीं की, बल्कि कमाले एहतियात से काम लिया है। हम तारीख़ की रोशनी और गवाही में ये बात साबित करेंगे कि **इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने **इतमामे हुज्जत** और **कमाले एहतियात**

में जिस तहम्मुल और बुर्दबारी का जो मुजाहेरा फरमाया है, उस की मिसाल शायदो-बायद ही मिले। आपने मैदाने दलील के शहसवार होने के बावजूद इश्तिआले तबाअ, तैश, सुबुक रवी, ज़ाती बुग़्ज़ो-इनाद, नफ़्सानियत, सब व सितम, बे-एहतियाती, जल्दबाज़ी, ज़र्ब व जरर, बोहतानो-इत्तहाम वग़ैरा जैसे ग़ैर मौज़ूं जज़्बाती और मुश्तइल मिजाज़ी व फित्ना अंगेज़ी से किनारा-कशी इख्तियार फरमाकर सब्रो-तहम्मुल से काम लिया है। दो चार महीने या साल दो साल नहीं बल्कि तीस/३० साल (30 Years) तक इतमामे हुज्जत का फरीज़ा अंजाम दिया है। जिसका सही अंदाजा हस्बे ज़ैल उन्वान के तहत का मज़मून पढ़ने से आएगा।

औलोमा-ए देवबंद की किताबों की कुफ्री इबारतें

दारुल उलूम देवबंद के बानी आँजहानी **मौलवी कासिम नानोत्वी** ने हि. १२९० में "**तेहज़ीरुन्नास**" नाम की किताब लिखी। उस किताब के सिर्फ दो/२ इकतिबासात ज़ैल में पैश किए जाते हैं :-

इक़्तिबास नंबर : १

"अगर बिलफर्ज़ बाद ज़मानए नबवी सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम कोई नबी पैदा हो, तो फिर भी ख़ातमियते मुहम्मदी में कुछ फर्क़ न आएगा।"

हवाला :- "तेहज़ीरुन्नास"
मुसन्निफ :- मौलवी कासिम नानोत्वी अल-मुतव●फ्फा हि. १२९७
(१) मतबूआ :- कुतुबखाना रहीमिया -देवबंद, **सफा : २५**
(२) मतबूआ :-मक्तबा थानवी - देवबंद, **सफा : ४०**
(३) मतबूआ :- दारुल किताब - देवबंद, **सफा : ४३**
(४) मतबूआ :- मक्तबा थानवी-देवबंद (पुराना ऐडीशन) **सफा : ४१**

इक़्तिबास नंबर : २

"अम्बिया अपनी उम्मत से मुमताज़ होते हैं तो उलूम ही में मुमताज़ होते हैं। बाकी रहा अमल, इस में बसा अवक़ात बज़ाहिर उम्मती मसावी हो जाते हैं, बल्कि बढ़ जाते हैं।"

हवाला :- "तेहज़ीरुन्नास"
मुसन्निफ :- मौलवी कासिम नानोत्वी अल-मुतव●फ्फा हि. १२९७
(१) मतबूआ :- कुतुबखाना रहीमिया -देवबंद, **सफा : ५**
(२) मतबूआ :-मक्तबा थानवी - देवबंद, **सफा : ७**
(३) मतबूआ :- दारुल किताब - देवबंद, **सफा : ८**
(४) मतबूआ :- मक्तबा थानवी-देवबंद (पुराना ऐडीशन) **सफा:८**

मुंदरजा बाला दो/२ इकतिबासात में दारुल उलूम देवबंद के बानी मौलवी कासिम नानोत्वी ने ● ख़त्मे नबुव्वत का इनकार और ● अमल के ज़रीये उम्मती नबी के बराबर हो सकने बल्कि नबी से बढ़ जाने का नज़रिया पैश किया है। जो कुरआने मजीद के इरशाद और ज़रूरियाते दीन के ख़िलाफ है और बारगाहे रिसालत ﷺ में तौहीनो-तन्क़ीस के मुतरादिफ है।

फिर्कए वहाबिया के इमामे रब्बानी **मौलवी रशीद अहमद गंगोही** के हुक्म से देवबंदी जमाअत के मुक़्तदा व पैश्वा **मौलवी ख़लील अहमद अंबेठवी** ने हि. १३०४ में "**बराहीने कातेआ अला ज़लामे अनवारे सातेआ**" नाम की किताब लिखी। जिसकी एक इबारत ज़ैल में पैशे ख़िद्मत है :-

"अल-हासिल ग़ौर करना चाहिए कि शैतान व मलकुल-मौत का हाल देखकर इल्मे मुहीत ज़मीन का फख़्रे आलम (स.) को ख़िलाफे नुसूसे क़तइय्या के बिला दलील महज़ क़यासे फासेदा से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है। शैतान व मलकुल मौत को ये वुसअत नस्स से साबित हुई, फख़्रे आलम (स.) की वुसअते इल्म की कौन सी नस्से कतई है कि जिस से तमाम नुसूस को रद्द कर के एक शिर्क साबित करता है।"

हवाला :- "अल बराहीने कातेआ"
मुसन्निफ :- मौलवी ख़लील अहमद अंबेठवी अल-मुतवफ्फा : हि. १३२३ - ब-अम्रे :- मौलवी रशीद अहमद गंगोही अल-मुतवफ्फा हि. १३४७
(१) मतबूआ :- कुतुब खाना इमदादिया - देवबंद, **सफा : ५५**
(२) मतबूआ :- दारुल किताब - देवबंद, **सफा : १२२**
(३) मतबूआ :- इमदादुल इस्लाम-मेरठ(पुराना ऐडीशन) **सफा:५१**

मुंदरजा बाला इबारत में शैतान और मलकुलमौत के इल्म को हुज़ूरे अकदस ﷺ के इल्म से जाइद बताया है। और यहां तक बकवास लिखी है कि शैतान और मलकुल मौत का वसीअ इल्म नस्स यानी कुरआन की आयत से साबित है लेकिन **हुज़ूरे अकदस**ﷺ के इल्म की वुसअत के सुबूत में कुरआने मजीद की कोई साफ आयत नहीं बल्कि **हुज़ूरे अकदस** ﷺ के लिए ऐसा इल्म होने का अक़ीदा शिर्क है। (मआज़ल्लाह) इस इबारत में कुरआनो-हदीस के ख़िलाफ फासिद नज़रिया व अक़ीदा पैश कर के बारगाहे रिसालत

में सख़्त तौहीन और घिनौनी गुस्ताख़ी की गई है और ख़ुश अकीदा मुसलमानों के मज़हबी जज़्बात को कारी ठेस पहूँचाने का शदीद व सरीह ज़ुल्म किया गया है।

▣ वहाबी और देवबंदी जमाअत के इमामे रब्बानी **मौलवी रशीद अहमद गंगोही** ने हि. १३०८ में "**इमकाने-किज़्बे बारी तआला यानी ख़ुदा का झूठ बोलना मुम्किन है**" का फत्वा दिया और मेरठ (यू.पी.) से शाए किया। अलावा अज़ीं "**फतावा रशीदिया**" और "**बराहीने कातेआ**" में इमकाने किज़्ब को **खल्फे वईद** से मअनून कर के अल्लाह तबारक व तआला की ज़ाते मुकद्दसा के लिए ऐसा फासिद अक़ीदा लिखा कि मआज़ल्लाह सुम्मा मआज़ल्लाह झूठ बोलने पर अल्लाह तआला कादिर है और झूठ बोलना अल्लाह तबारक व तआला की कुदरत में शामिल है।

मौलवी रशीद अहमद गंगोही के मुंदरजा बाला फासिद अकीदे के रद्दो-इबताल में आला हज़रत, अज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अहले सुन्नत, **इमाम अहमद रज़ा मुहक्किक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने "**सुब्हानस्सुब्बुह-अन-अैबे-किज़्बिल-मकबूह**" नाम की किताब हि. १३०८ में तसनीफ फरमाई और गंगोही साहब के फासिद नज़रिये व अक़ीदे का ऐसा रद्दे बलीग़ फरमाया कि गंगोही साहब के बखीए उधेड़ कर रख दिए। इस किताब की इशाअत को तकरीबन एक सौ पच्चीस (१२५) साल का दराज़ अरसा हो चुका है, लैकिन इस तारीखी किताब के दलाइले काहिरा और बराहीने बाहिरा का जवाब और रद्द लिखने से पूरी दुनियाए वहाबियत व देवबंदियत के औलोमा व मुसन्निफीन आजिज़ व कासिर और माज़ूरो-नाचार हैं और इन्शाअल्लाह तआला कयामत तक साकितो-मबहूत रहेंगे।

▣ वहाबी, देवबंदी और तबलीगी जमाअत के नाम निहाद मुजद्दिद और हकीमुल उम्मत **मौलवी अशरफ अली थानवी** ने हि. १३१९ में अपनी रुस्वाए-ज़माना किताब **''हिफ्ज़ुल ईमान''** में इल्मे गैब के मस्अले के ज़िम्न में बारगाहे रिसालत मआब ﷺ में सख़्त गुस्ताख़ी और गंदी तौहीन करते हुए लिखा कि :-

''फिर ये कि आपकी ज़ाते मुक़द्दसा पर इल्मे गैब का हुक्म क्या जाना ? अगर बक़ौले ज़ैद सहीह हो तो दरयाफ्त तलब अमर ये है कि इस ग़ैब से मुराद बाअज़ ग़ैब है या कुल गैब ? अगर बाअज़ उलूमे ग़ैबिया मुराद हैं, तो इस में हुज़ूर (स.) ही की क्या तख़सीस है, ऐसा इल्मे-ग़ैब तो ज़ैद व अमर बल्कि हर सबी व मजनून बल्कि जमीअ हैवानातो-बहाइम के लिए भी हासिल है।''

हवाला :- **''हिफ्ज़ुलईमान''** मुसन्निफ़ :- मौलवी अशरफ अली थानवी, अल-मुतवफ्फा हि. १३६२
(१) मतबूआ :- दारुल-किताब, देवबंद (यू.पी.) **सफा : १५**
(२) मतबूआ :- मसऊद पब्लिशिंग हाऊस, देवबंद (यू.पी.) **सफा : १४**
(३) मतबूआ :- कुतुब खाना अशरफिया, राशिद कंपनी, देवबंद (यू.पी.) **सफा : ८**
(४) मतबूआ :- मदरसा मजाहिरुल उलूम, सहारनपूर (यू.पी.) **सफा : ६**

▣ अलावा अज़ीं ● ख़ुदा झूठ बोल सकता है। ● हुज़ूर ﷺ मर कर मिट्टी में मिल गए हैं। ● नमाज़ में हुज़ूर ﷺ का ख़्याल करना अपने बैल गधे बल्कि अपनी बीवी के साथ मुजामेअत करने के ख़याल में डूबने से भी बुरा है। ● हुज़ूर ﷺ को दीवार के पीछे का भी इल्म न था। ● ऐसे ऐसे ईमान सोज़ और गुमराह करने वाले अक़ाइदे बातिला की नश्रो-इशाअत बड़े जोशो-ख़रोश से की जा रही थी। लोगों के ईमान दिन-दहाड़े लूटे जा रहे थे।

▣ बानीए वहाबियत मुहम्मद बिन अब्दुलवह्हाब नज्दी की किताब **''अत्तौहीद''** और वहाबियों के इमामे अव्वल फिल हिन्द मौलवी इस्माईल देहलवी की किताब **''तकवियतुलईमान''** में मर्क़ूम फासिद नज़रियात और अक़ाइदे बातिला रज़ीला को अवामुल मुस्लिमीन में राइज और नाफिज़ करने में पूरी दुनियाए वहाबियतो देवबंदियत बड़े शद्दो-मद के साथ मुतहर्रिक थी और मदारिसो-मकातिब, तकारीरो-तसानीफ, गश्तो-तबलीग़, तमअ व लालच, ज़ोरो-ज़ुल्म, समाजी व सियासी इक्तिदार, मालो-दौलत की बेहतात और दीगर कारआमद ज़राए के बलबूते पर तसल्लुत और ग़लबा हासिल करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया जा रहा था। अम्बियाए किराम और औलियाए इजाम की मुकद्दस बारगाह में तौहीनो-तन्क़ीस करने का नाम ही तौहीद रख दिया गया था। सदियों से राइज जाइज़ और मुस्तहब मरासिमे अहले सुन्नत को नाजाइज, बिदअत, हराम, कुफ्र और शिर्क कह कर उनका इर्तिकाब करने वाले लाखों, करोड़ों, अरबों, खरबों बल्कि

बेशुमार सहीहुल-अकीदा मुसलमानों पर कुफ्रो-शिर्क के फतावा की मशीनगन दागी जा रही थी।

▣ सबसे बड़ी अफसोस की और ख़तरनाक बात ये थी कि जिसको इस्तिनजा करने का भी मस्अला मालूम न था, ऐसा वहाबी और तबलीगी जाहिल बल्कि अजहल मुबल्लिग़ कुरआने मजीद की आयात और अहादीसे करीमा के मनचाहे तराजिम कर के मज़हिका ख़ैज मफाहिम अख़्ज कर के बुजुर्गाने दीन की जनाब में बेबाकी से गुस्ताख़ी और तौहीन करता था और अम्बियाए किराम व औलियाए इजाम से अकीदतो-इरादत रखने वाले मुसलमानों के मज़हबी जज़्बात को मजरूह बल्कि कारी ज़र्ब की ठेस पहुँचाता था।

कारेईने किराम बनज़रे इन्साफ ग़ौर करें

ये हक़ीक़त मुसल्लम और आज़मूदा है कि आम बोल-चाल में भी किसी शख़्स को ऐसे अलफाज़ से मुख़ातब करना कि उर्फे आम में वो ल●फ्ज़ तौहीन, ज़िल्लत, हकारत और बे-अदबी का हो, ऐसा ल●फ्ज किसी के लिए इस्तिमाल करने से यकीनन उस की तौहीन और गुस्ताख़ी होगी और वो शख़्स और उस के मोअतकिदीन ऐसे तौहीन आमेज़ अलफाज़ से मुरक्कब जुम्ले सुनकर अपनी तौहीन और ज़िल्लत महसूस करेगा और उस के दिली जज़्बात को ज़रूर ठेस पहूंचेगी। तौहीन आमेज़ जुम्ले कहने वाला ये कहे कि अलफाज़ चाहे बे-अदबी के हैं लैकिन मेरा इरादा बे-अदबी और तौहीन करने का हरगिज़ न था। उस का ये उज़्र और बहाना हरगिज़ सुना न जाएगा और उस को तौहीन के जुर्म से बरी न किया जाएगा।

www.markazahlesunnat.net

मिसाल के तौर पर ज़ैद एक पढ़ा लिखा शख़्स है। उसने बकर को जो समाज में एक मुअज़्ज़ज़ शख़्स की हैसियत रखता है, उस से कहा कि तुम्हारी आँखें उल्लू (Owl) जैसी हैं। इस जुम्ले में बे:शक बकर जैसे मुअज़्ज़ज़ शख़्स की तौहीन है। अपनी ये तौहीन सुनकर बकर ज़ैद से कहे कि मेरी गुस्ताख़ी के जुर्म में मेरी माफी मांग। जवाब में ज़ैद कहे कि जनाब! आप क्यों इतने बेज़ार होते हैं। मैं एक पढ़ा लिखा, ज़ी इल्म, बा अखलाक़, बा-तवाजोअ आदमी हूँ, मैं आपकी तौहीन क्यों करूं ? मेरा इरादा हरगिज़ तौहीन करने का नहीं है। मैंने तो सिर्फ एक मिसाल दी है। एक तशबीह दी है। तुम्हारी आँखें उल्लू जैसी हैं, इस का मतलब ये है कि आँख देखने के लिए है। जिस तरह उल्लू अपनी आँख से देखता है, आप भी अपनी आँख से ही देखते हैं। कान से नहीं देखते। क्योंकि अल्लाह तआला ने सबको देखने के लिए आँख दी है। हर एक अपनी आँख से ही देखता है। मैंने इस माअना में तुम्हारी आँख को उल्लू की आँख से तमसील दी है। तौहीन या गुस्ताख़ी करने की निय्यत हरगिज़ नहीं, बल्कि मैं तुम्हारी तौहीन करने का तसव्वुर भी न कर सकूं।

अपनी गुस्ताख़ी के ज़िम्न में ज़ैद का ये ख़ुलासा बकर को हरगिज़ मंजूर न होगा। बकर ने अपने समाज की पंचायत (Arbitration) में इस मुआमले की ज़ैद के ख़िलाफ फरियाद दाइर की। पंचायत के ओहदे दारों ने ज़ैद को पंचायत कचहरी में बुलाया और तफतीश की। ज़ैद अपने साबिक़ा बयान पर ही चिपका रहा। और यहां भी यही कहा कि मैंने ये अलफाज़ तौहीन की निय्यत से नहीं कहे, बल्कि फरियादी बकर की तौहीन करने का मैं तसव्वुर भी न कर सकूं। मुझ पर तौहीन करने का ग़लत

इल्ज़ाम लगाया गया है। मैं किसी की भी तौहीनो–तन्क़ीस का जुर्म करूँ ही नहीं। जैद के इस खुलासए–कलाम से पंचायत के अराकीन मुत्लक़ मुतमइन न होंगे और उसे सख़्त तम्बीह के लहजे में सरज़निश करते हुए ताकीद करेंगे कि तुम चाहे पढ़े लिखे और ग्रेज्यूएट शख्स हो, लैकिन तुम्हारे क़ौल के अलफाज़ इतने रज़ील और सिफ्ला क़िस्म के हैं कि तुम इन अलफाज़ की कितनी ही तावीलो–तौज़ीह करो, तुम्हारा दिफा नहीं हो सकता। एक छोटा बच्चा भी समझ सकता है कि इन अलफाज़ से मुख़ातब की तौहीनो–तज़लील हुई है। तुम्हारी तावीलो–तौज़ीह को कबूल कर के अगर तुम्हें बेक़सूर ज़ाहिर किया जाएगा, तो इस के मुज़िर असरात ये होंगे कि हर शख्स किसी के लिए भी मन में जो आए ऐसे तौहीन आमेज़ और दिल–आज़ार जुम्ले बोलेगा और जब उस को टोका जाएगा, तो वो ये कह देगा कि मेरा इरादा और निय्यत तौहीन का न था बल्कि मैंने एक मिसाल दी है। लिहाजा पंचायत का ये फैसला है कि बकर साहब की तौहीन और दिल–आज़ारी के जुर्म की माफी माँगो। वर्ना तुम्हारा समाजी मुकातेआ (Social- Boycott) करने में आएगा।

इसी तरह अगर किसी शख्स से ये कहा जाए कि तेरे बाप के कान और आँख बंदर की आँख और कान जैसे हैं। और वो शख्स गुस्से से लाल हो कर मुश्तइल हो जाए और उस का गुस्सा ठंडा करने के लिए ऐसी बे–तुकी तावील की जाए कि मेरा इरादा तेरे बाप की तौहीन का न था बल्कि मैंने एक तशबीह (मिसाल) दी है कि जिस तरह बंदर आँख से देखता और कान से सुनता है, इसी तरह तेरा बाप भी आँख से देखता और कान से सुनता है। क्योंकि अल्लाह तआला ने सबको आँख देखने के लिए और कान सुनने के लिए

www.markazahlesunnat.net

दिया है। तो क्या वो शख्स अपने बाप की तौहीन बर्दाश्त करेगा ? और कहने वाले ने तौहीन आमेज़ अलफाज़ की जो तावीलो–तौज़ीह पैश की है, उसे कबूल करेगा ? हरगिज़ नहीं। तो जब अपने माँ बाप के लिए ऐसी तौहीन आमेज़ मिसाल बर्दाश्त नहीं हो सकती, तो जिस ज़ाते गिरामी पर हमारे माँ बाप कुर्बान, हमारा सब कुछ बल्कि हमारी जान तक कुर्बान। उस **ज़ाते अक़्दस** ﷺ के लिए ऐसे तौहीन आमेज़ और गुस्ताख़ाना जुम्ले एक सच्चा मो'मिन कभी भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। औलोमा–ए देवबंद ने अपनी किताबों में **अल्लाह तबारक व तआला और अल्लाह के महबूबे आज़म** ﷺ के लिए जो तौहीन आमेज़ अलफाज़ और गुस्ताख़ाना जुमले लिखे हैं, वो कोई भी मो'मिन किसी भी हाल और किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं कर सकता था। लिहाज़ा औलोमा–ए देवबंद के खिलाफ मुखालिफत का तूफान बरपा हुवा। अवामो–खवास में गमो–गुस्से की लहर फैल गई। औलोमा–ए अहले सुन्नत ने तकारीरो–तसानीफ से वहाबी देवबंदी अक़ाइद का रद्दो–इबताल किया। अवामुल मुस्लिमीन ने उनका समाजी मुकातेआ, क़तेअ तअल्लुक़, वग़ैरा से मुखालिफत में गर्म–जोशी दिखाई।

औलोमा–ए देवबंद ने अपनी गलती का एतराफ कर के अपनी किताबों की कुफ्री इबारतों से रुजू व ताइब होने के बजाए अपनी किताबों की कुफ्रिया इबारात की बे–तुकी और ना–माकूल तावीलें कीं, तारे अन्कबूत जैसी कमजोरो–लागर दलीलें और मिसालें पैश कर के नाक़ाबिले क़बूल खुलासे और तोज़ीहात पैश कीं मगर अपनी किताबों की कुफ्री और तौहीन आमेज़ गुस्ताख़ाना इबारात से रुजू और तौबा करने में अपनी ज़िल्लत और रुस्वाई महसूस की बल्कि ज़िद और हटधर्मी से काम लिया। किताब की कुफ्रिया

इबारत के तौहीन आमेज़ अलफाज़ को बदल कर उस के बदले ताज़ीमो–तौकीर के अलफाज़ डाल कर जुम्लों को सहीह व दुरुस्त करने की तरमीम को वबाले जान समझा । खब्ते अनानियत (Egomania) के गुरूरो–ख़ुमार में अपनी कुफ्री इबारतों की नामाकूल तावीलात में सैंकड़ों सफहात व मुतअद्दिद रसाइल लिख डाले मगर रुजू और तास्सुफ व निदामत का एक जुमला लिखना गवारा न क्या औलोमा–ए देवबंद की फूहड किस्म की किताबें आसमानी कुतुब का दर्जा रखती थीं, कि उनमें एक जुमला भी न बदला जा सके ? जिन जुमलों से बारगाहे ख़ुदावंदी और अम्बियाए किराम व औलियाए इजाम की शान में तौहीनो बे–अदबी होती हो, मुसलमानों की दिल–आज़ारी होती हो, मज़हबी जज़्बात को ठेस पहूँची हो, मुसलमानों में मज़हबी इख़्तिलाफो–फित्ना व फसाद बरपा होता हो, मिल्लते इस्लामिया मुख़्तलिफ गिरोह में मुनक़सिम होती हो, ऐसे फित्ना अंगेज दो–चार जुमलों की क्या इतनी एहमियत थी कि इन जुमलों को वापस न लिया जाए ? क्या औलोमा–ए देवबंद की रुस्वाए–ज़माना किताबों की एहमियत मआज़ल्लाह कुरआने मजीद जैसी थी कि उनमें एक लफ्ज़ की भी तरमीमो–तबदील जाइज़ न थी ?

नहीं । बल्कि औलोमा–ए देवबंद ने अपनी किताबों से तौहीन आमेज़ जुमलों से रुजू करने को अपनी अनानीयत (Ego), ख़ुदी, पिंदार और ख़ुद–पसंदी का मुआमला बना लिया । आलमे इस्लाम के औलोमा ने उन्हें समझाया, गुज़ारिशें कीं, मज़हब की रोशनी में हिदायात कीं । कुरआनो–अहादीस के दलाइले काहिरा से साबित कर दिया कि तुम्हारी किताबों की मुतनाज़ेअ इबारतें वाक़ई तौहीन आमेज़ और गुस्ताख़ाना हैं । अल्लाह तबारक व तआला और हुज़ूरे अकदस ﷺ की शान में ये जुम्ले ग़ैर मौज़ूं, ग़ैर मुनासिब, ग़ैर

साइब, ग़ैर शरई और नारवा हैं । इन जुमलों से रुजू करो । लैकिन औलोमा–ए देवबंद के **कानों पर जूं न रेंगीं ।** अपनी किताबों की कुफ्री इबारतों को मुनासिब, मौज़ूं और दुरुस्त साबित करने के लिए मज़ीद कुफ्रियात लिख डाले । मिल्लते इस्लामिया के अम्नो–अमान को लगी हुई आग को बुझाने के लिए पानी के बजाए पेट्रोल (Petrol) छिड़कने की बेवकूफी की और आग के शोलों को ख़तरनाक रूप से मुश्तइल किया ।

एक अवामी सतह का आदमी भी जो बात आसानी से समझ सके, ऐसी आसान बात को बड़ी बड़ी डिग्रियां, अलक़ाब और मरातिब रखने वाले औलोमा–ए देवबंद न समझ सके कि जब मुआशरा और समाज में जिन अलफाज़ से मुखातब की तौहीनो–तज़्लील (Insult) होती हो, ऐसे अलफाज़ या जुमले कभी भी नहीं बोलना चाहीए । फिर चाहे वो अलफाज़ और जुमले हक़ीक़त पर मबनी हों । मिसाल के तौर पर कोई शख़्स अपनी "**माँ**" को माँ के बजाए "**मेरे बाप की बीवी**" कहे, तो क्या उसने अपनी माँ की शान में तौहीन की या नहीं ? बेशक उस की माँ, उस के बाप की बीवी है, बल्कि हक़ीक़त तो ये है कि **वो उस के बाप की बीवी बनने के सबब ही उस की माँ बनी है,** लैकिन फिर भी माँ को बाप की बीवी होने के बावजूद "**माँ**" व "**अम्मी जान**" व "**वालिदा मोहतरमा**" और "**वालिदा माजिदा**" जैसे मुअज़्ज़मो–मुकर्रम व मोहतरम आदाबो–अलक़ाब से ही मुखातब किया जाएगा ।

तो जब मआशरी बोल–चाल में तेहज़ीब, अदब, शाइस्तगी, ख़ुश–अखलाकी, तमीज़, हिफ्जए मरातिब, एहतरामे शख्सियत वग़ैरा की एहमियत, वुकअत, मंजिलत बल्कि ज़रूरत महसूस की जाती है और हर शख़्स अपने मुआशरे के अफराद का हस्बे मरातिब

अदबो–हुर्मत का लिहाज़ करते हुए संजीदगी, मतानत और बुर्दबारी से गुफ्तगू करता है और मुख़ातब करता है। मुआशरे में राइज दस्तूर तेहज़ीब (Manner) की खिलाफ वरज़ी करने वाला शख्स अपने ग़ैर अखलाकी इर्तिकाबात की वजह से पूरी सोसाइटी में बदनाम और रुस्वा होता है। उस की फहश कलामी, तुन्द मिजाज़ी, दुरुश्त खूई और बद–अखलाकी की वजह से लोग ऐसे शख़्स से उकता जाते हैं और उस के वजूद से भी नफरत करने लगते हैं। अगरचे उस की बदतमीज़ी, बद खिसाली, बदज़ाती, बदज़बानी, बदसुलूकी, बद–गोई और बद निहादी के तौरो–अत्वार से खौफ महसूस कर के बज़ाहिर उस का समाजी मुकातेआ (Social Boycott) चाहे न करें लैकिन फिर भी वो क़ल्बी मुकातेआ (Heartly Boycott) और तनफ्फुर और बेज़ारी का मौरिदे मलामत बन जाता है।

लैकिन वो बे–अदब हटधर्मी, अनानियत, तकब्बुर, गुरूर, खुद–सताई, अपनी इल्मी वजाहत, दुन्यवी शोहरत, ज़अमी लियाक़त और ज़न्नी दबदबे के नशे में मखमूर हो कर ऐसा ग़बी और ठुस दिमाग हो जाता है कि उस की अक्ल पर पर्दे पड़ जाते हैं। और उसे सच व झूठ की परख और हक व बातिल की शनाख्त का एहसास तक नहीं होता। या उसे उस का तकब्बुरो–गुरूर क़बूले हक़ करने से रुकावट पैदा करने से रोड़े अटकाता है। मेरा किया हुवा या लिखा हुवा पत्थर की लकीर की तरह मुस्तहकम, अटल और मुस्तनद है, ऐसे कैफ्ो–खुमार में वो ऐसा हक़ीक़त ना–आश्ना हो जाता है कि उस की आँखों पर तकब्बुर, गुरूर, घमंड और अनानियत की स्याह पट्टी बंध जाती है और सूरज से भी ज़्यादा रोशन हक़ीक़त और सदाक़त भी नहीं देख सकता और गुमराहियत के घटाटोप अंधेरे में भटकता है और दर दर की ठोकरें खा कर ज़लीलो–ख़्वार होता है।

इमाम अहमद रज़ा की शाने तहम्मुल, एहतियात, इतमामे हुज्जत और फिर निफाज़े शरई हुक्म

इमाम अहमद रज़ा मुहक्किक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतोवर्रिज़वान की अबक़री शख्सियत को मजरूह करने की फासिद ग़रज से मुखालिफीन ने ग़लत इल्ज़ामात, इखतिराआत और इत्तिहामात का रवैय्या अपनाने के साथ साथ एक ग़लत और बे–बुनियाद प्रोपेगंडा (Propaganda) ये भी चलाया है कि :–

- **इमाम अहमद रज़ा कौमे पठान के फर्द थे और मिजाज में ग़ुस्से की भड़क और इश्तिआले तबअ की वजह से उन्हें बहुत जल्द गुस्सा आ जाता था, बर्दाश्त करने का माद्दा बहुत कम था, लिहाज़ा बात बात में कुफ्र का फत्वा दे देते थे। औलोमा–ए देवबंद के मुआमले में भी उन्होंने अपनी आदत से मजबूर हो कर जल्द–बाज़ी से काम लिया। औलोमा–ए देवबंद को न समझाया, न उन्हें ख़ुलासा करने का कोई मौक़ा दिया, न उनकी कोई बात सुनी, बल्कि सब्रो–तहम्मुल को रुखस्त कर के फौरन कुफ्र का फत्वा दे दिया।**
- **औलोमा–ए देवबंद की जिन किताबों की वजह से उन्हें काफिर कहा गया है, वो किताबें उर्दू जबान में हैं। मौलाना अहमद रज़ा ने ये चालबाज़ी और फरैब–कारी की कि उन उर्दू किताबों की इबारतों का अरबी ज़बान में तरमीमो–इज़ाफा के साथ ग़लत और मन चाहा अरबी तर्जुमा कर के मक्कए–मुअज़्ज़मा और**

मदीना मुनव्वरा के आलिमों से उन गलत अरबी तर्जुमों की बुनियाद पर कुफ्र का फत्वा हासिल कर के ''फतावा हुस्सामुल-हरमैन अला मुनहरिल कुफ्रि वलमैन'' के नाम से शाए कर दिया। मक्का और मदीना के औलोमा उर्दू नहीं जानते थे, लिहाज़ा उन्हें भी धोका दिया गया। औलोमा-ए देवबंद की उर्दू किताबों की इबारात का अरबी तर्जुमा करने में काट छांट, कतओ बुरीद और ख़्यानत कर के धोका और फरेब दे कर औलोमा-ए हरमैन से फत्वा हासिल कर लिया।

मुंदरजा बाला दोनों इल्ज़ामात सरासर झूठ, किज़्ब, छल, धोका, फरेब, मक्कारी और बे-बुनियाद हैं। जिसका हम तारीख़ की रोशनी और दलाइले काहिरा की दरख़्शानी में ऐसा दंदानशिकन और मुस्कित जवाब देते हैं कि इन्शाअल्लाह तआला पूरी दुनियाए वहाबियतो-देवबंदियत उस का जवाब व रद्द लिखने से कयामत तक आजिज़ो-कासिर और मजबूरो-नाचार रहेगी।

हालाँकि ये इल्ज़ामात आजकल के जदीद तराशीदा नहीं बल्कि बहुत पुराने हैं। तक़रीबन एक सदी से इन बे-बुनियाद इल्ज़ामात की बाँसुरी के बे ढंगे सुर आलापे जाते हैं। हालाँकि इन इल्ज़ामात के माजी में औलोमा-ए अहले सुन्नत ने ऐसे मुंह तोड़ जवाब दिए हैं कि मुँह के साथ उनकी बाँसुरी (Flute) भी तोड़ कर रख दी है। मगर ये बे-हया और बे शरम इत्तिहाम परवर उसी टूटी हुई बाँसुरी के बेसलीका और नफरत आवर बेतुके भद्दे राग मुसलसल आलापते ही रहते हैं और मुँह की खाते रहते हैं।

www.markazahlesunnat.net

इमाम अहमद रज़ा ने तीस/३० साल तक इतमामे हुज्जत फरमाई।

हि. १२९० में मौलवी कासिम नानोत्वी ने **''तेहजीरुन्नास''** नाम की किताब लिखी। हि. १३१९ में मौलवी अशरफ अली थानवी ने **''हिफ्ज़ुलईमान''** नाम की किताब लिखी। हि. १२९० से हि. १३१९ यानी तीस/३० साल के अरसे में औलोमा-ए देवबंद की तरफ से मुतअद्दिद कुतुब, रसाइल, फतावा, तक़रीर वग़ैरा के जरीए बारगाहे रिसालत ﷺ की तौहीनो-गुस्ताख़ी के अक़ाइदे बातिला की नशरो इशाअत बड़े शद्दो-मद से होती रही और भोले-भाले मुसलमानों की मताए ईमान की डाका ज़नी बे रोक-टोक होती रही।

इमाम अहमद रज़ा मुहक्किक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतोवर्रिज़वान ने औलोमा-ए देवबंद के अक़ाइदे बातिला शनीआ के रद्दो इबताल में तस्नीफो-तालीफ का सिलसिला जारी रखा और अवामुल मुस्लिमीन के ईमानो-अक़ाइद की हिफाज़त का फरीज़ा अंजाम दिया।

यहां तक कि :-

औलोमा-ए देवबंद की तौहीने रिसालत पर मुश्तमिल किताबों का मुसलसल तीस/३० (30 Years) साल तक रद्द फरमाया, बल्कि औलोमा-ए देवबंद की जिन किताबों का रद्द लिखा, वो किताबें ख़ुद औलोमा-ए देवबंद को भी भेजीं। ख़ुतूत लिखे और उन्हें उनकी गलतियां बताईं। सही और सच्चे मश्वरे दिए। कुरआन और अहादीस की मज़बूत दलीलों से साबित कर के औलोमा-ए देवबंद को मुतनब्बे किया कि तुम्हारी किताबों की इबारतें अल्लाह

तआला और रसूलल्लाह ﷺ की शान में नाज़ेबा हैं। तौहीन आमेज़ और गुस्ताख़ाना हैं। तुम्हारी बोली ईमान की बोली नहीं बल्कि कुफ्री बोली है। लिहाज़ा रूबरू आमने सामने बैठ कर तुम्हारी किताबों की मुतनाज़ेआ इबारत पर गुफ्तगू, बहस, तबादलए-ख़यालात कर के बाहमी इत्तिफाक़ से कोई फैसला कर लिया जाए, या फिर तरकश के आख़री तीर की हैसियत से मुनाज़रा कर लिया जाए।

लैकिन :-

बुरा हो अनानीयत, तकब्बुर, गुरूर और हटधर्मी का कि मुसलसल तीस/३० साल के तवील अरसे तक इमाम अहमद रज़ा के जरीए इतमामे हुज्जत की हैसियत से पैश की गईं तजावीज़ पर औलोमा-ए देवबंद ने कोई इलतिफात न किया। अपनी किताबों की मुतनाज़ेआ इबारात पर नज़रे सानी और तसफिया करने के बजाए सुलहो-अमन की करार दाद को हमेंशा ठुकराया। मज़हबी इख़तिलाफ और तनाजोअ के दिफा और दाइमी हल निकालने की तरकीब से बेरुख़ी बरती बल्कि इख़तिलाफ के अंगारों को भड़कते शोले बनाने का मज़मूम इर्तिकाब करते हुए ऐसी गपें मारीं कि मौलाना अहमद रज़ा की किताबों का ● जवाब लिखा जा रहा है ● मुंह तोड रद्द लिखा जा रहा है ● जवाब लिखा जा चुका है ● जवाब छप रहा है ● मंज़रे आम पर आ रहा है। वग़ैरा वग़ैरा।

औलोमा-ए देवबंद मजमूई हैसियत से भी अकेले **इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी** के मुकाबिल मैदाने दलील में ठहर सकने की इल्मी सलाहियत, इस्तिदाद, लियाक़त, क़ाबिलियत, वस्फ, हौसला, जोहर और ज़र्फ नहीं रखते थे। लिहाज़ा उन्होंने हमेंशा राहे फरार और मुँह छुपाई की पहेलू तही इख्तियार की।

कारेईने किराम को ये मालूम कर के हैरत होगी कि हि.१३०७ में मौलवी रशीद अहमद गंगोही ने **"इमकाने किज्बे बारी तआला"**

यानी **"अल्लाह तआला का झूठ बोलना मुम्किन है"** का फत्वा दिया। गंगोही साहब के इस फत्वे के रद्दो इबताल में इमाम अहमद रज़ा मुहक्किक बरेल्वी ने हि. १३०८ में तारीखी किताब **"सुबहान-स्सुब्बूह-अनऔबे-किज़्बिल-मकबूह"** तसनीफ फरमाई। इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान ने इस किताब का एक नुस्ख़ा मौलवी रशीद अहमद गंगोही को रजिस्टर (Register A.D.) पोस्ट से भेजा। किताब की वुसूली की रसीद भी गंगोही साहब के दस्तख़त से आ गई। इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी ने अपनी इस तारीखी किताब में गंगोही साहब की शदीद गिरफ्त फरमाई और दलाइले काहेरा से गंगोही साहब को उनकी ग़लती का एहसास कराया, लैकिन वाए हटधर्मी कि गंगोही साहब ने क़बूले हक़ और एतराफे तक़सीर की सआदत हासिल करने के बजाए **"उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे"** वाली मषल पर अमल करते हुए तीन साल मुसलसल शेख़ी मारते रहे कि इमाम अहमद रज़ा की किताब का जवाब लिखा जा रहा है, बल्कि लिखा जा चुका है, वो अनक़रीब शाए किया जाएगा, बल्कि बराए तबाअत मतबा (प्रैस) के हवाले कर दिया गया है। जो ज़ेवरे तबाअ से आरास्ता हो कर बहुत जल्द मंज़रे आम पर आ जाएगा। लैकिन पंदरह (१५) साल का तवील अरसा गुज़र जाने तक यानी हि. १३२३ तक यानी हरमैन शरीफैन से कुफ्र का फत्वा सादिर होने तक भी, गंगोही साहब को जवाब लिखने की तौफीक़ व जुर्रत न हुई। यहां तक कि वो आग़ोशे लहद में जा पहूंचे।

गंगोही साहब ता वक्ते मर्ग इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान की किताब का जवाब देने से आजिज़ो-कासिर रहे। जवाब की सआदत हासिल करने के बजाए अपने उसी कुफ्री फत्वा

को चिपक कर रहे। उस कुफ्री फत्वा में मुंदरजा कुफ्री अकीदे की नश्रो इशाअत में गर्म-जोशी दिखाई और बम्बई (महाराष्ट्र) से बश्क्ले इश्तिहार शाए कर के फैलाया। इमाम अहमद रज़ा ने गंगोही साहब का मज़कूरा अस्ल फत्वा गंगोही साहब की मोहर-मअ दस्तख़त अपनी आँखों से देखा और चश्मदीद गवाह की हैसियत से तेहक़ीक़ फरमाई।

कारेईने किराम ग़ौर फरमाएं कि हि. १२९० से हि. १३२० तक यानी तीस/३० साल (30 Years) तक इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी ने औलोमा-ए देवबंद के फासिद नज़रियात और कुफ्रिया अक़ाइद के खिलाफ कुरआनो हदीस की रोशनी में इतमामे हुज्जत (Accomplishment of Argument) फरमाई। उनकी गलतियां बताईं। कुतुबो-रसाइल इरसाल फरमाए। ख़ुतूत लिखे। इश्तिहारात शाए किए। अल-गर्ज इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी ने औलोमा-ए देवबंद को समझाने में कोई कसर या कमी बाकी न रखी, लैकिन औलोमा-ए देवबंद ने अपनी ज़िद न छोड़ी। अनानियत और तकब्बुर के कैफ में मदहोश हो कर अपनी हटधर्मी पर अड़े रहे और क़बूले हक़ से इन्हिराफ ही किया।

बल्कि.........

औलोमा-ए देवबंद ने अपने अक़ाइदे बातिला व नज़रियाते फासिदा की नश्रो इशाअत के लिए हुकूमते बर्तानिया का माली व इकतिसादी तआवुन हासिल किया। हुकूमते बर्तानिया से हासिल शूदा ज़र्रे कसीर के बलबूते पर लोगों के ईमान के थोक बंद सौदे होने लगे। गुमराहियत और बे-दीनी की आंधी तैज़ रूप से चलने लगी। इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी के इमतिहान का वक्त था। मुसलसल तीस/३० साल तक नर्म रवैया अपना कर औलोमा-ए

देवबंद को समझाते रहे, लैकिन औलोमा-ए देवबंद ने इमाम अहमद रज़ा की नर्मी को कमज़ोरी मुतसव्वर कर के इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी की इतमामे हुज्जत की हैसियत से शाए शूदा कुतुबो-रसाइल, ख़ुतूत और पंदो-नसाएह को ला-यानी और ला यम्बगी समझ कर उनकी तरफ इल्तिफात न किया। तौहीने रसूलﷺ के जुर्म की ग़लती से तौबा और रुजू करने के बजाए मज़ीद तौहीन करने लगे और अपनी गुस्ताख़ाना रविश से बाज़ न आए बल्कि बे-बाक हो कर ज़्यादा तौहीन करने लगे।

इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने तीस/३० साल के तवील अरसे तक इतमामे हुज्जत की शरई खिदमत अंजाम दे दी और आपको यक़ीन के दर्जा में ए'तमाद हो गया कि औलोमा-ए देवबंद अब किसी भी हाल में अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आने वाले, तब आपने बा-दिले नख्वास्ता हि. १३२० में **"अल-मोअतमदुल-मुस्तनद"** के नाम से कुफ्र का फत्वा सादिर फरमाया।

इमाम अहमद रज़ा का फर्ज़े मन्सबी

इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी तमाम अहले ईमान के मुक्तदा, रहनुमा और पैश्वा की हैसियत के हामिल थे और इमामे अहले सुन्नत व मुजद्दिदे दीनो-मिल्लत के मन्सबे आ'ला पर फाइज थे। लिहाज़ा आपने निहायत तहम्मुल, सब्र, तहक़ीक़ अनीक़, तावील की गुंजाइश, सबूते काहिरा, इबारत के अल्फाज़ वग़ैरा जैसे ज़रूरी और लाज़्मी उमूर का पास और लिहाज़ कर के औलोमा-ए देवबंद की कुफ्री इबारत का बनज़रे उमुक जाएज़ा ले कर ग़ौरो फिक्र

व खौज़ के बाद कुफ्र का फत्वा देने का शरई व मन्सबी फर्ज़ अदा किया।

तारीख़ के सफहात इस हक़ीक़त के शाहिदे आदिल हैं कि हि. १२९० से हि. १३२० तक मुसलसल तीस/३० साल तक तम्बीह, नसीहत, फहमाइश और दलाइले काहिरा सातेआ से समझाने के बावजूद औलोमा-ए देवबंद ने ज़िद, हट, अड़, अनानियत और मुतअस्सिब रवैया अपना कर अपनी कुफ्री इबारतों पर चपके रहे। रुजू या तरमीमो-इज़ाफा से कुफरी पहलू हटाने को भी आमादा न हुए, अब इफ्हामो-तफ्हीम से काम नहीं चलने वाला, गु●फ्तो-शुनीद का नरम पहलू लाग़री और कमजोरी में शुमार होता है। लिहाज़ा इमाम अहमद रज़ा मुहक्किक़ बरेल्वी ने "**तरकश का आखिरी तीर निकाला**" और बा-दिले नख्वास्ता इस्तिमाल फरमाया। जिसका खुलासा खुद इमाम अहमद रज़ा अपनी तसनीफ में फरमाते हैं कि :-

> मुसलमानो ! ये रोशन ज़ाहिर वाज़ेह काहिर इबारात तुम्हारे पैशे नज़र हैं, जिन्हें छपे हुए दस दस और बाज़ को सतरह और तस्नीफ को उन्नीस साल हुए, और इन दुशनामियों की तकफीर तो अब छ/६ साल यानी हि. १३२० से हुई है, जब से "**अल-मोअतमदुल-मुस्तनद**" छपी। इन इबारात को बग़ौर नज़र फरमाओ और अल्लाहो-रसूल के खौफ को सामने रखकर इन्साफ करो। ये इबारतें फकत उन मुफ्तरियों का इफतिराही रद्द नहीं करतीं बल्कि सराहतन साफ साफ शहादत दे रही हैं कि ऐसी अज़ीम एहतियात वाले ने हरगिज़

> इन दुशनामियों को काफिर न कहा, जब तक यक़ीनी, कतई, वाज़ेह, रौशन जली तौर से उनका सरीह कुफ्र आफताब से ज़्यादा ज़ाहिर न हो लिया, जिसमें अस्लन अस्लन हरगिज़ हरगिज़ कोई गुंजाइश, कोई तावील न निकल सकी कि आखिर ये बंदए-खुदा वही तो है जो उनके अकाबिर पर सत्तर सत्तर वजह से लुज़ूमे कुफ्र का सबूत दे कर यही कहता है कि हमें हमारे नबी ने अहले ला-इलाहा-इल्लल्लाह की तकफीर से मना फरमाया है। जब तक वजहे कुफ्र आफताब से ज़्यादा रोशन न हो जाए और हुक्म इस्लाम के लिए अस्लन कोई ज़ईफ सा ज़ईफ एहतिमाल भी बाकी न रहे।
>
> **हवाला :-**
> "**तमहीदे ईमान ब-आयाते कुरआन**" मुसन्निफ :- इमाम अहमद रज़ा मुहक्किक़ बरेल्वी - सने तस्नीफ हि. १३२६ नाशिर:- रज़ा अकैडमी, बम्बई, **सफा : ४४**

मुंदरजा बाला इबारत में इमाम अहमद रज़ा मुहक्किक़ बरेल्वी औलोमा-ए देवबंद की कुफ्री इबारात की तरफ इशारा फरमा रहे हैं कि इन गुस्ताखों पर जो कुफ्र का फत्वा दिया गया है, इस को छ/६ साल का अरसा हुवा है। क्योंकि मुंदरजा बाला इबारत इमाम अहमद रज़ा की किताब तम्हीदे ईमान की है। जो हि. १३२६ में लिखी गई है, जब कि कुफ्र का फत्वा "**अल-मोअतमदुल-मुस्तनद**" हि. १३२० में दिया गया है। हि. १३२० से पहले से ही औलोमा-ए देवबंद अल्लाह तआला और अल्लाह तआला के महेबूब ﷺ की बारगाह में गुस्ताखियाँ करते आए हैं। इन गुस्ताखियों के रद्दो

इबताल में इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी ने तस्नीफो-तालीफ का सिलसिला जारी रखा। उनमें से बाज़ किताबों को दस/१० साल से उन्नीस/१९ साल का अरसा हो चुका है। इन किताबों में इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी ने औलोमा-ए देवबंद की कुफ्री इबारतों का रद्द फरमा कर तक़रीबन सत्तर (७०) कुफ्रियात बयान किए, लैकिन फिर भी "**हरगिज़ इन दुशनामियों को काफिर न कहा**" लैकिन जब इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी को साफ, मज़बूत, रोशन और मोअतमद सबूत से यक़ीन हो गया और औलोमा-ए देवबंद के कुफ्रियात आफताब नीम रोज़ की तरह ज़ाहिरो बाहिर न हो गए, तब तक इमाम अहमद रज़ा ने कुफ्र का फत्वा न दिया, बल्कि शाने एहतियात का मुज़ाहिरा फरमाते हुए यही कहा कि हमारे नबी ﷺ ने अहले कल्मा की तकफीर से मना फरमाया है। अहले कल्मा का कुफ्र आफ्ताब से भी ज़्यादा रोशन दलीलों से साबित न हो जाए, तब तक उस पर कुफ्र का फत्वा सादिर नहीं किया जा सकता।

अब सवाल ये पैदा होता है कि इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी ने :-

- **औलोमा-ए देवबंद की किताबों से जिन इबारात को कुफ्री बताया, क्या वो इबारात वाक़ई कुफ्री थीं ?**
- **इमाम अहमद रज़ा ने औलोमा-ए देवबंद की इबारतों का जो मतलब समझा क्या वो मुनासिब था ?**
- **क्या इमाम अहमद रज़ा के लिए ज़रूरी था कि वो औलोमा-ए देवबंद पर कुफ्र का फत्वा दें ?**
- **इमाम अहमद रज़ा ने औलोमा-ए देवबंद पर कुफ्र के फत्वे दीए, क्या वो मुनासिब थे ?**

इन तमाम सवालात का जवाब बल्कि फैसला वहाबी देवबंदी जमाअत के मोअतमद आलिम और दारुल-उलूम देवबंद के नाज़िमे तालीमात **मौलवी मुर्तजा हसन चांदपूरी सुम्मा दरभंगी**●की ज़बानी समाअत फरमाएं :-

> **अगर खान साहब के नज़दीक बाज़ औलोमा-ए देवबंद वाक़ई ऐसे ही थे, जैसा कि उन्होंने उन्हें समझा। तो खान साहब पर उन औलोमा-ए देवबंद की तकफीर फर्ज थी, अगर वो उन को काफिर न कहते, तो वो ख़ुद काफिर हो जाते।**
>
> **हवाला :-**
> **"अशद्दुल-अज़ाब-अला-मुसैलमतिल-पंजाब"**
> मुसन्निफ :- मौलवी मुर्तज़ा हसन चांदपूरी दरभंगी
> नाशिर :- मक्तबा मुजतबाई जदीद - देहेली. **सफा नं. १३**

मुंदरजा बाला इबारत में मक्तबए फिक्र देवबंद के एक ज़िम्मेदार आलिम एतराफो-इक़रार कर रहे हैं कि अगर इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी औलोमा-ए देवबंद के कुफ्रियात पर मुत्तलेअ हो चुके थे, तो इमाम अहमद रज़ा पर फर्ज़ था कि वो औलोमा-ए देवबंद पर कुफ्र का फत्वा दें। अगर इमाम अहमद रज़ा औलोमा-ए देवबंद के कुफ्रियात पर मुत्तलेअ होने के बावजूद औलोमा-ए देवबंद को काफिर न कहते, तो ख़ुद इमाम अहमद रज़ा काफिर हो जाते। दारुल उलूम देवबंद का नाज़िमे तालीमात और ज़िम्मेदार मौलवी भी इस बात का इक़रार कर रहा है कि अगर औलोमा-ए देवबंद की किताबों की इबारतें कुफ्री थीं, तो इमाम अहमद रज़ा के लिए लाज़्मी और ज़रूरी था कि वो औलोमा-ए देवबंद को काफिर कहें।

क्या इमाम अहमद रज़ा ने ज़ाती बुग्ज़ो-इनाद की वजह से कुफ्र का फत्वा दिया था ?

इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान के खिलाफ एक सरासर झूठा और दरोग-गोई पर मुश्तमिल इल्ज़ाम आइद किया जाता है कि इन को औलोमा-ए देवबंद से ज़ाती बुग्ज़ और रंजिश थी। ज़ाती दुश्मनी के जज़्बे से मुतास्सिर हो कर बेचारे और बेक़सूर औलोमा-ए देवबंद को बिला वजह काफिर कह दिया। ये इल्ज़ाम तारीखी हक़ाइक़ के साथ घिनौना मज़ाक़ है। इस का जवाब खुद इमाम अहमद रज़ा की ज़बानी समाअत फरमाएं :-

> हज़ार हज़ार बार हाशा-लिल्लाह ! मैं हरगिज़ उनकी तकफीर पसंद नहीं करता। जब क्या उनसे कोई मिलाप था , अब रंजिश हो गई ? जब उनसे जायदाद की कोई शिरकत न थी, अब पैदा हो गई ? हाशा-लिल्लाह ! मुसलमानों का इलाकए-मुहब्बतो-अदावत सिर्फ मुहब्बतो-अदावते खुदा व रसूल है। जब तक इन दुश्नाम दहों से दुश्नाम सादिर न हुई, या अल्लाहो-रसूल की जनाब में उनकी दुश्नाम न देखी, सुनी थी, उस वक्त तक कल्मा-गोई का पास लाज़िम था। ग़ायते एहतियात से काम लिया, हत्ताकि फुकहाए-किराम के हुक्म से तरह तरह उन पर कुफ्र लाज़िम था, मगर एहतियातन उनका साथ न दिया। और

> मुतकल्लिमीने इज़्ाम का मस्लक इख्तियार किया। जब साफ सरीह इन्कार ज़रूरियाते दीन व दुश्नाम दही रब्बुल आलमीन व सय्यदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम आँख से देखी, तो अब बे तकफीर चारा न था, कि अकाबिरे अइम्मए-दीन की तस्रीहात सुन चुके कि **"मन-शक्का-फी-अज़ाबिही-व-कुफरिही-फक़द-कफर"** जो ऐसे के अज़ाब और काफिर होने में शक करे, खुद काफिर है।
>
> अपना और अपने दीनी भाईयों, अवामे अहले इस्लाम का ईमान बचाना ज़रूरी था। लाज़ुर्म हुक्मे कुफ्र दिया और शाए किया।
>
> **हवाला :- "तमहीदे ईमान ब आयाते कुरआन"**
> मुसन्निफ :- इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी-नाशिर :- रज़ा अकैडमी बम्बई, सने तस्नीफ हि.१३२६, **सफा नं. : ४४**

मुंदरजा बाला इबारत में इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान साफ लफ्ज़ों में फरमा रहे हैं कि मैं हरगिज़ हरगिज़ उनकी तकफीर यानी उन औलोमा-ए देवबंद को काफिर कहेना पसंद नहीं करता। बाज़ मोअतरिज़ीन इमाम अहमद रज़ा पर ये इल्ज़ाम आइद करते हैं कि इमाम अहमद रज़ा को औलोमा-ए देवबंद के साथ ज़ाती रंजिशो-अदावत थी। लिहाज़ा उसी अदावत के जज़्बे के तहत उन्होंने औलोमा-ए देवबंद पर कुफ्र का फत्वा दिया था। लैकिन इमाम अहमद रज़ा इस इल्ज़ाम की तरदीद फरमाते हैं कि मुसलमान दोस्ती और दुश्मनी सिर्फ अल्लाह और रसूल के लिए रखता है। अल्लाह व

रसूल की तारीफ व ताज़ीम करने वालों से मुहब्बत रखता है और तौहीनो–गुस्ताख़ी करने वालों से नफरत रखता है।

औलोमा–ए देवबंद ने अपनी किताबों में अल्लाह तआला और रसूलल्लाह की आली जनाब में जो बे–अदबियाँ व गुस्ताख़ियाँ कीं थीं, उन्हें इमाम अहमद रज़ा ने पढ़ा, देखा, सुना, इबारत के मअनी, मतलब, मकसद, मुराद, मफ्हूम, सियाको–सबाक को परखा, तावील की गुंजाइश, क़ौले मुतकल्लिम का मा–हसल, इल्ज़ाम कुफ्र व लुज़ूमे कुफ्र, वग़ैरा ज़रूरी और लाज़मी उमूर की तेहक़ीक़ व तदक़ीक़, इतमामे हुज्जत से तहम्मुलो–ताम्मुल में निफाज़े हुक्म की ताखीर करते हुए हर एतबार से **"कल्मा–गोई"** का पासो–लिहाज़ रखा। शाने एहतियात का मुज़ाहिरा करते हुए कुफ्र का फत्वा देने में उजलतो–जज़बाते तबाअ से मुतास्सिर हुए बगैर रिआयत की, और यहां तक तहम्मुलो–बर्दाश्त किया कि औलोमा–ए देवबंद की किताबों की कुफ्री इबारात पर चंद वजूहात से कुफ्र लाज़िम आने के बावजूद भी कुफ्र का फत्वा देने में जल्दबाज़ी न की बल्कि औलोमा–ए देवबंद को अर्सए–दराज़ तक समझाया, एहसास दिलाया, इतमामे हुज्जत का फरीज़ा अंजाम दिया, लैकिन औलोमा–ए देवबंद ज़िद और अनानियत पर अड़े रहे, मजबूरन हि. १३२० में कुफ्र का फत्वा दिया।

॥ औलोमा–ए हरमैन शरीफैन के फतावा ॥

हि. १३२० में इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी ने **"अल–मोअतमदुल–मुस्तनद"** के नाम से औलोमा–ए देवबंद पर कुफ्र का फत्वा दिया। इस फत्वे की शौहरत सिर्फ महदूद हलक़े तक ही हुई। आलमी पैमाने पर इस फत्वे की तश्हीर न हुई।

अलावा अज़ीं औलोमा–ए देवबंद और देवबंदी मक्तबए फिक्र के लोगों ने इस फत्वे की कदरो मंजिलत कम जान कर एहमियत न दी बल्कि **"ये तो खान साहब की आदत पड़ी हुई है कि बात बात में कुफ्र का फत्वा देते हैं"** कह कर फत्वे की वक्अत को कम जाना और मुतलक़ चीं–ब–चीं न हुए।

लिहाज़ा हि. १३२३ में इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी ज़ियारते हरमैन शरीफैन के लिए जब मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा तशरीफ ले गए, तब आपने मक्का और मदीना के सरताज औलोमा–ए हक की बारगाह में अपना फत्वा बशक्ले किताब **"अल–मोअतमदुल–मुस्तनद"** पैश किया और उन औलोमा–ए हक़ की तरफ रुजू करते हुए अपने फत्वे की ताईदो–तौसीक में बहैसियते मुस्तफ्ती (सवाल पूछने वाले) के इस्तिग़ासा व इस्तिफसार फरमाया और औलोमा–ए देवबंद के कुफ्रियात मक्का और मदीना के औलोमा–ए किराम की खिदमत में बतौरे सबूत पैश किए और हरमैन शरीफैन के औलोमा–ए किराम से औलोमा–ए देवबंद के मुतअल्लिक शरई हुक्म पूछा।

इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी के इस्तिफ्ता (सवाल) के जवाब में और इमाम अहमद रज़ा के फत्वे "अल–मोअतमदुल–मुस्तनद" की तक़रीज़, ताईद और तौसीक में मुंदरजा ज़ैल २०, औलोमा–ए मक्का मुअज़्ज़मा और १३, औलोमा–ए मदीना मुनव्वरा ने औलोमा–ए देवबंद के कुफ्रियात पर **"हुस्सामुल–हरमैन–अला–मुन्हरिल–कुफ्रि–वलमैन"** (हि. १३२४) के नाम से तारीखी फत्वा सादिर फरमाया :–

हुस्सामुल-हरमैन शरीफैन पर दस्तख़त फरमाने वाले औलोमा-ए मक्का मुअज़्ज़मा

१ शेख़ुल औलोमा, सय्यदना व मौलाना शेख मुहम्मद सईद बिन मुहम्मद बाबसील (मुफ्ती अल-शाफईया बमक्कतिल मुकर्रमा)

२ शेख़ुल अइम्मा वल ख़ुतबा बिल मक्कतिल मुकर्रमा, मौलाना शेख अहमद अबुल खैर बिन अब्दुल्लाह मीरदादा (खादिमुल इल्म वल खतीब वल इमाम बिल मस्जिदिल हराम)

३ नासिरुस्सुन्नह व कासिरुल फित्ना, मौलाना अल्लामतुश्शेख मुहम्मद सालेह इब्ने अल्लामा सिद्दीक कमाल (मुफ्ती मक्कतुल मुकर्रमा साबिका)

४ अल्लामतुल मुहक्किक व फहामतुल मुदक्किक मौलाना शैख अली बिन सिद्दीक कमाल.

★ ५ हामिए सुनन, माहीए फितन, मौलाना शेख मुहम्मद अब्दुल हक़, अल-मुहाजिर इलाहाबादी.

★ ६ मुहाफिज़े कुतुबुल हरम, अल्लामुल जलील व फहामतुल नबील हज़रत मौलाना सैयद इस्माईल खलील मक्की.

७ मौलाना अल्लामा सय्यद मरज़ूकी अबू हुसैन (खादिम तल्बतुल इल्म बिल मस्जिदिल हराम मक्की)

८ अल आलिमुल आमिल, दामिगु अहलल कुफ्रे वल कयदे मौलाना शेख उमर बिन अबीबक्र बा-जुनैद.

९ मौलाना शेख आबिद बिन हुसैन (खादिमुल इल्म बिद्दयारतिल हरम व मुफ्तीयुस्सादत अल-मालिकिया)

१० साहिबुत्तसानीफ, मौलाना अली बिन हुसैन अल-मालिकी (अल-मुदर्रिस बिल-मस्जिदिल-हराम)

११ मौलाना शेख जमाल बिन मुहम्मद बिन हुसैन (अल-मुदर्रिस बिद्दयारे हरम)

१२ जामेउल-उलूम व नाबिग़ुल मफहूम मौलाना शेख असद बिन अहमद अद्दहान (मुदर्रिस हरम शरीफ)

१३ अल-फाज़िलुल अदीब, मौलाना शेख अब्दुर्रहमान अद्दहान.

१४ मौलाना शेख मुहम्मद यूसुफ अफगानी (मुदर्रिस मदरसतुल सवलतिय्या मक्का मुकर्रमा)

★१५ अजल्लो खुल्फा, अल्हाज मोलवी शाह इम्दादुल्लाह, मौलाना शेख अहमद अल-मक्की अल-इमदादी अल-जिश्ती अस्साबरी (मुदर्रिस हरम शरीफ व मदरसतुल अहमदिया बेमक्कतिल मुकर्रमा)

१६ अल-आलिमुल आमिल वल फाज़िलुल कामिल, मौलाना मुहम्मद यूसुफ अल-खयात.

१७ अश्शेख जलील, मौलाना शेख मुहम्मद सालेह बिन मुहम्मद.

१८ अल-फाज़िलुल कामिल, मौलाना शेख अब्दुल करीम नाजी अद्दागिस्तानी (मुदर्रिस मस्जिदिल हराम)

१९ अल फाज़िलुल कामिल मौलाना शेख मुहम्मद सईद बिन मुहम्मद यमानी (मुदर्रिस मस्जिदिल हराम)

२० मौलाना शेख हामिद अहमद मुहम्मद अल-जदावी.

हुस्सामुल-हरमैन शरीफैन पर दस्तख़त फरमाने वाले औलोमा-ए मदीना मुनव्वरा

२१ ताजुल मुफतीन व सिराजुल मुतकन्नीन, मौलाना मुफ्ती ताजुद्दीन बिन मुस्तफा इलयास अल-हन्फी (अल-मुफ्ती बिल मदीनतुल मुनव्वरा)

२२ अजलुल फाज़िल, अमसलुल अमासिल, फाज़िले रब्बानी, मौलाना उसमान बिन अब्दुस्सलाम दाग़िस्तानी (अल-मुफ्ती बिल मदीनतुल मुनव्वरा साबेका)

२३ शेख़ मालिकीया सय्यद शरीफ सर्री, मौलाना सय्यद अहमद जज़ाइरी अल-मदनी, अल-अशअरी, अल-मालिकी, अल-कादरी.

२४ कबीरुल औलोमा कन्ज़ुल अवारिफ, व मअदनिल मआरिफ, मौलाना शेख खलील बिन इबराहीम अल-खरबूती (खादिमुल इल्म बिल हरम शरीफ नबवी)

२५ शेखुद्दलाइल, हक़ीक़तुस्सियादत, ज़ुल हसनी व ज़ियादह, मौलाना सय्यद मुहम्मद सईद बिन सय्यद मुहम्मद अल-मग़रिबी.

२६ अल-फाज़िलुल जलील, व आलिमुन्नबील, मौलाना मुहम्मद बिन अहमद अल-उमरी (मुदर्रिस हरमुन्नबवी)

२७ अस्सय्यद शरीफ, हज़रत मौलाना सय्यद अब्बास इब्ने सय्यद जलील मुहम्मद रिज़वान (मुदर्रिस बिल मस्जिदे नबवी)

२८ अल-फाज़िलुल ऊकूल, अहदुल फुहूल, मौलाना उमर बिन हमदान, अल-महरसी, अल-मालिकी (खादिमुल इल्म बिल मदीनतुल मुनव्वरा)

२९ अल-फाज़िलुल कामिल, वल आलिमुल आमिल, सय्यद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-मदनी अद्दीदावी.

३० शेख मुहम्मद बिन मुहम्मद अस्सौसी अल-खयारी (खादिमुल इल्म बिल हरम नबवी)

३१ वारिसुल इल्म वल मजद अब्बन अन अब्बिन, अल मुहक़्क़िक, वल मुदक़्क़िक, मौलाना सय्यद शरीफ अहमद अल-बरज़नजी (मुफ्तीयुस्सादत अश्शाफइय्या बिमदीनति खैरुलबरिय्या)

३२ अल-फाज़िलुश्शहीर, मौलाना शेख मुहम्मद अज़ीज़ अल-वज़ीर, अल-मालिकी, अल-मग़रिबी, अल-उन्दुलुसी, अल-मदनी.

३३ अश्शेखुल फाज़िल अब्दुल कादिर तौफीक़ शल्बी, अत्तराबुलुसी, अल-हन्फी (मुदर्रिस बिल मस्जिदिल करीम अन्नबवी)

औलोमा-ए हरमैन शरीफैन ने फतावा में क्या लिखा ?

इमाम अहमद रज़ा मुहक्किक़ बरेल्वी ने "**अल-मोअतमदुल-मुस्तनद**" किताब से औलोमा-ए देवबंद की कुफ्री इबारात वाला हिस्सा उनकी अस्ल किताबें और अस्ल फतावा के फोटो को बतौरे सबूत पेश कर के :-

▣ **मक्का मुअज़्ज़मा के औलोमा-ए किराम से २१, जिल हिज्जह हि.१३२३ पंज शम्बा को**

और

▣ **मदीना मुनव्वरा के औलोमा-ए किराम से ५, रबीउल अव्वल हि. १३२४ को इस्तिफता किया।**

औलोमा-ए हरमैन शरीफैन ने "**अल-मोअतमदुल-मुस्तनद**" की कुरआनो-हदीस और कुतुबे फिकह के हवालों से तस्दीक फरमाई और बारगाहे रिसालत ﷺ के गुस्ताख, अकाबिरे औलोमा-ए देवबंद को उन किताबों की कुफ्रिया इबारात की बिना पर काफिर और मुर्तद होने के फतावे सादिर फरमाए। जिसकी तफसील और असल अरबी फतावा "**हुस्सामुल-हरमैन-अला-मुन्हरिल-कुफ्रि-वलमैन**" में दर्ज हैं। इन फतावा में से चंद इक्तिबासात बतौरे नमूना कारेईने किराम की खिदमत में पेश हैं :-

(१)

मुहाफिजे कुतुबे हरम, खतीब खुत्बहाए करम, हज़रत अल्लामा सय्यद इस्माईल खलील - मक्का मुअज़्ज़मा

"اِنَّ هٰؤُلَآءِ الْفِرَقَ الْوَاقِعِيْنَ فِی السُّؤَالِ. غُلامُ اَحْمَدُ الْقَادْيَانِیْ وَ رَشِیْد اَحْمَدُ وَ مَنْ تَبِعَهُ كَخَلِيْلِ الْاَنْبَتهیْ وَاَشْرَفْ عَلِیْ وَغَيْرِهِمْ لا شُبْهَةَ فِی كُفْرِهِمْ بِلَا مَجَالٍ"

मुंदरजा बाला अरबी इबारत का हिन्दी तर्जुमा और हवाला:-

ये ताइफे जिनका तज़किरा सवाल में वाकेअ है। गुलाम अहमद कादयानी और रशीद अहमद और जो उस के पैरव हों, जैसे खलील अहमद अम्बेठवी और अशरफ अली वग़ैरा। उनके कुफ्र में कोई शुब्ह नहीं, न शक की मजाल।

हवाला :-
"**हुस्सामुल-हरमैन-अला-मुन्हरिल-कुफ्रि-वलमैन**"
मतबूआ :- रजा अकैडमी, बम्बई, सने इशाअत ई.२००९,
सफा : १०६

(२)

सरदारे लश्करे औलोमा-ए मालिकिया, मुफ्ती मालिकिया, हज़रत अल्लामा शेख़ आबिद बिन हुसैन। मक्का मुअज़्ज़मा

"اَلصَّادِرُ مِنْ اَهْلِ الْخَبَالِ، وَهُمْ غُلامُ اَحْمَدُ الْقَادْيَانِیُّ وَ رَشِیْد اَحْمَدُ وَ خَلِیْل اَحْمَدُ وَ اَشْرَفْ عَلِیْ وَغَیْرُهُمْ مِنْ اَهْلِ الضَّلَالِ وَالْكُفْرِ الْجَلِیِّ."

मुंदरजा बाला अरबी इबारत का हिन्दी तर्जुमा और हवाला:-

गुमराही जो अहले फसाद से सादिर हुई और वो अहले फसाद गुलाम अहमद कादयानी व रशीद अहमद व खलील अहमद व अशरफ अली वग़ैरहुम खुले काफिराने गुमराह हैं।

हवाला :-
''हुस्सामुल-हरमैन-अला-मुन्हरिल-कुफ्रि-वलमैन''
मतबूआ:- रज़ा अकैडमी, बम्बई, सने इशाअत ई.२००९, **सफा : १२१**

(३)

फाज़िले जलील, कामिलुल अक्ल, अहदुल फुहूल, हज़रत अल्लामा उमर बिन हमदान महरसी - मदीना मुनव्वरा

”وَهُمُ الْخَبِيْثُ اللَّعِيْنُ غُلَامُ اَحْمَدُ اَلْقَادْيَانِیّ، الدَّجَّالُ الْكَذَّابُ مُسَيْلَمَةُ اٰخِرِ الزَّمَانِ وَرَشِيْدُ اَحْمَدُ اَلْكَنْكُوْهِیُّ وَخَلِيْلُ اَحْمَدُ اَلْاَنْبَتِهِیُّ وَاَشْرَفُ عَلِیُ التَّانَوِیُّ. فَهٰؤُلَاءِ اِنْ ثَبَتَ عَنْهُمْ مَاذَكَرَهُ هٰذَا الشَّيْخُ مِنْ اِدِّعَاءِ النُّبُوَّةِ لِلْقَادْيَانِیِّ وَانْتِقَاصِ النَّبِیِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ رَشِيْدُ اَحْمَدُ وَخَلِيْلُ اَحْمَدُ وَاَشْرَفُ عَلِی اَلْمَذْكُوْرِيْنَ فَلَا شَكَّ فِیْ كُفْرِهِمْ وَ وُجُوْبِ قَتْلِهِمْ عَلٰى كُلِّ مَنْ يُمْكِنُهُ“

मुंदरजा बाला अरबी इबारत का हिन्दी तर्जुमा और हवाला:-

और वो लोग कौन हैं, खबीस मर्दूद गुलाम अहमद कादयानी दज्जाल कज़्ज़ाब आखिर ज़माने का मुसैलमा और रशीद अहमद गंगोही और खलील अहमद अम्बेठवी और अशरफ अली थानवी। तो इन लोगों से जब कि वो बातें साबित हों, जो फाज़िले मजकूर ने जिक्र कीं। कादयानी का नबुव्वत का दावा करना और रशीद अहमद और खलील अहमद और अशरफ अली का शाने नबी की तन्क़ीस करना। तो कुछ शक नहीं कि वो कुफ्फार हैं और जो कत्ल का इख्तियार रखते हैं (यानी सलातीने इस्लाम) **उन पर वाजिब है कि वो उन को सज़ा-ए-मौत दें।**

हवाला :-
''हुस्सामुल-हरमैन-अला-मुन्हरिल-कुफ्रि-वलमैन''
मतबूआ :- रज़ा अकैडमी, बम्बई, सने इशाअत ई.२००९, **सफा : १७७**

(४)

मुदर्रिस मदरसए-मस्जिदे नबवी, फाजिले जलील हज़रत अल्लामा अब्दुल कादिर तौफीक़ सल्बी, तराबुलुसी, हन्फी - मदीना मुनव्वरा

”فَاِذَا ثَبَتَ وَتَحَقَّقَ مَا نُسِبَ لِهٰؤُلَاءِ الْقَوْمِ وَهُمْ غُلَامُ اَحْمَدُ اَلْقَادِيَانِیُّ وَقَاسِمٌ اَلنَّانُوْتَوِیُّ وَرَشِيْدُ اَحْمَدُ اَلْكَنْكُوْهِیُّ وَخَلِيْلُ اَحْمَدُ اَلانبِتِهِیُّ وَاَشْرَفُعَلِیُ اَلتَّانَوِیُّ

وَاَتْبَاعُهُمْ مِمَّاهُوَ مُبَيَّنٌ فِی السُّوَالِ فَعِنْدَ ذَالِکَ یُحْکَمُ بِکُفْرِهِمْ وَاِجْرَاءِ اَحْکَامِ الْمُرْتَدِّیْنَ عَلَیْهِمْ وَاِنْ لَمْ تَجْرِ فَیَلْزَمُ التَّحْذِیْرُمِنْهُمْ وَالتَّنْفِیْرُعَنْهُمْ عَلَی الْمَنَابِرِ وَفِی الرَّسَائِلِ وَالْمَجَالِسِ وَالْمَحَافِلِ. حَسْمًا لِمَادَّةِ شَرِّهِمْ وَقَطْعًا لِجُرْثُوْمَةِ کُفْرِهِمْ".

मुंदरजा बाला अरबी इबारत का हिन्दी तर्जुमा और हवाला:-

जब कि साबित व मुतहक़्क़क हुवा, जो उनकी तरफ निस्बत किया गया और वो गुलाम अहमद कादयानी और कासिम नानोत्वी और रशीद अहमद गंगोही और खलील अहमद अम्बेठवी और अशरफ अली थानवी और उनके साथ वाले हैं, और वो जो सवाल में बयान हुवा, तो बे-शक ये उनके कुफ्र पर हुक्म करता है। और ये कि मुर्तदों का जो हुक्म है यानी हाकिम का उनको कत्ल करना, उन पर जारी किया जाए और अगर ये हुक्म वहां जारी न हो, तो वाजिब है कि मुसलमानों को इन से डराया जाए और उन से नफरत दिलाई जाए, मिम्बरों पर और रिसालों में और मजलिसों और महफिलों में, ताकि उन के शर्र का माद्दा जल जाए और उन के कुफ्र की जड़ कट जाए।

हवाला :-

''हुस्सामुल-हरमैन-अला-मुन्हरिल-कुफ्रि-वलमैन''

मतबूआ :- रज़ा अकैडमी, बम्बई, सने इशाअत ई.२००९, **सफा : २०७**

मुंदरजा बाला सिर्फ चार (४) इकतिबासात से कारेईने किराम ने अंदाजा कर लिया होगा कि मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा के जय्यद औलोमा-ए मिल्लते इस्लामिया ने औलोमा-ए देवबंद की किताबों की कुफ्री इबारतों से कैसी सख्त नफरत, ना-गवारी और बेज़ारी का मुज़ाहिरा फरमाया है और इन गुस्ताखाने बारगाहे उलूहियतो-रिसालत के लिए कैसी सख्त ताज़ीर, सज़ा और अकूबत मुतअय्यन फरमा रहे हैं। मस्लन :-

- **उनके कुफ्र में कोई शुब्ह नहीं, न शक की मजाल।**
- **खुले हुए काफिराने गुमराह हैं।**
- **कुछ शक नहीं कि वो कुफ्फार हैं।**
- **जो कत्ल का इख्तियार रखते हैं, वो उनको सज़ाए-मौत दें।**
- **उन पर मुर्तदों का हुक्म जारी कर के उनको कत्ल किया जाए।**
- **वाजिब है कि मुसलमानों को उनसे (उनके अक़ाइद से) डराया जाए।**
- **मिम्बरों पर खुत्बों में उन के खिलाफ नफरत दिलाई जाए।**
- **किताबों के जरीए उनका रद्द किया जाए।**
- **मजालिसो-महाफिल में उनके अक़ाइदे बातिला बयान कर के उनके शर्र और उनके कुफ्र से अवामुल मुस्लिमीन को आगाह किया जाए।**

औलोमा-ए हरमैन शरीफैन के फतावे का मजमूआ बनाम **''हुस्सामुल-हरमैन-अला-मन्हरिल-कुफ्रे-वलमैन''** शायेअ हो

कर मंज़रे आम पर आते ही पूरे आलमे इस्लाम में हलचल मच गई। पूरी दुनिया के सामने औलोमा-ए देवबंद के जाली तक़द्दुस का पर्दा चाक हो कर रह गया। औलोमा-ए देवबंद अपने अक़ाइदे बातिला कि वजह से काफिरो मुर्तद हैं। ऐसा हुक्म मक्का और मदीना के अकाबिर औलोमा ने दिया है। ये जान कर आलमे इस्लाम का हर फर्द औलोमा-ए देवबंद पर लानत और फिटकार बरसाने लगा। वहाबी फिर्क़ा के देवबंदी औलोमा ऐसे ज़लीलो-ख्वार हुए कि किसी को भी मुँह दिखाने के काबिल न रहे। उनकी इज़्ज़त, आबरू, शर्फ व मन्ज़िलत, नामवरी, हुर्मत, इस्मत, इमारत, वजाहत, नामूस और तौकीर खाक में मिलकर मलिया-मेट हो कर रह गई। हर तरफ से नफरतो-बेज़ारी की सदाएँ बुलंद होने लगीं। औलोमा-ए देवबंद के पांव लड़खड़ा गए लेकिन **"रस्सी जल गई, पर बल नहीं गया"** मषल के मुताबिक ऐसी रुस्वाई आमेज़ सज़ा भुगतने पर भी औलोमा-ए देवबंद ने बुराई की जड़ तकब्बुर व ग़ुरूर व अनानियत की लत न छोड़ी और ....???

दरोग़-गोई का रोना रो कर इमाम अहमद रज़ा के खिलाफ इल्ज़ामात व बोहतान की भरमार

अपनी गलती बताकर इस्लाह करने की नसीहत करने वाले मुहसिन के पंदो-नसाएह को कबूल कर के एतराफ ज़न्ब और इक़बाले जुर्म की फराख़ दिली से रुजू और तौबा की सआदत हासिल कर के गुनाहो-अज़ाब से सिफा और सैकल होने के बजाय औलोमा-ए देवबंद ने **उलटा चोर कोतवाल को डाँटे** वाला रवय्या इख्तियार किया। लोगों की हमदर्दी हासिल करने की फासिद

गर्ज से बनावट का रोना पीटना शुरू कर दिया और गिर्या व ज़ारी का दामन थाम कर अपनी बे-क़सूरी और बे-गुनाही का मातम और कोहराम मचाना शुरू किया कि इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी ने ज़ाती बुग्जो इनाद की बिना पर हमारे खिलाफ मुनज़्ज़म साज़िश के तहत औलोमा-ए हरमैन शरीफैन को धोका दे कर हम पर कुफ्र का फत्वा लगाया है। हम बिलकुल बेक़सूर हैं। हमारी किसी भी किताब में अल्लाह और रसूल की शान में गुस्ताख़ी और तौहीन करने का तसव्वुर भी हम नहीं कर सकते, फिर भी बरेली के मौलाना अहमद रज़ा साहब ने हमारी किताब की इबारत का अपनी मर्ज़ी से तौहीन आमेज़ मतलब निकालकर हम पर तौहीने रसूल का संगीन जुर्म आइद किया है। बल्कि हमारी किताबें जो उर्दू जबान में थीं, उन उर्दू किताबों की इबारतों का अरबी तर्जुमा करने में खान साहब ने खियानत और बद-दियानती की और हम पर कुफ्र का फत्वा यक़ीनी तौर पर आए, ऐसा अरबी तर्जुमा घढ़ कर हरम शरीफ के औलोमा के सामने हमारे नाम से घढ़ी हुई जाली और ख़ुद-साख्ता अरबी इबारात पैश कर के कुफ्र का फत्वा हासिल कर लिया। औलोमा-ए हरमैन शरीफैन उर्दू ज़बान से वाक्फियत नहीं रखते थे और न ही उनके सामने हमारी अस्ल उर्दू किताबें पैश की गईं। अलावा अज़ीं जिन औलोमा-ए हरमैन शरीफैन से मौलाना अहमद रज़ा ने हमारे खिलाफ फत्वा हासिल किया है, उन औलोमा-ए हरमैन शरीफैन से मौलाना अहमद रज़ा खान बरेल्वी के गहरे दोस्ताना तअल्लुक़ात थे। लिहाज़ा वो मौलाना बरेल्वी के धोके और फरेब में आ गए। उनकी बात पर भरोसा व एतमाद कर के हम बे-गुनाहों पर कुफ्र का फत्वा दे कर हमारी इज्जतो-आबरू को खाक में मिला दिया। ऊं.... ऊं...ऊं.... (हिचकियाँ लेकर रो रो कर अपनी सफ़ाई का नाटक मुल्क भर में किया)

इन मक्कारों के रोने धोने के ड्रामे ने अच्छे अच्छों को अपने दामे फरेब में ले लिया। अलावा अर्जी औलोमा-ए देवबंद के चेले व चमचों नीज़ ज़र ख़रीद गुलामों ने इमाम अहमद रज़ा मुहक्किक़ बरेल्वी के खिलाफ मज़कूरा बाला इल्ज़ाम व बोहतान में खूब मिर्च मसाला मिलाकर उस की मुनज़्ज़म साज़िश के तहत तश्हीर कर के वसीअ पैमाने पर ऐसा ढ़िंडोरा पीटा कि बहुत से लोग ना वाक्फ़ियत की वजह से इमाम अहमद रज़ा मुहक्किक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान के खिलाफ ये राय और नज़रिया क़ाइम कर बैठे हैं कि :-

- **मौलाना अहमद रज़ा बरेल्वी ने औलोमा-ए देवबंद की उर्दू किताबों का मन चाहा अरबी तर्जुमा कर के औलोमा-ए हरमैन शरीफ़ैन के सामने पैश किया है और इस में ये ख़यानत की कि उर्दू इबारत में तौहीने रिसालत पर मुश्तमिल जुम्ले नहीं थे, फिर भी मौलाना अहमद रज़ा ने अरबी तर्जुमा में तौहीन आमेज़ जुमले कस्दन डाल कर बे-क़सूर औलोमा-ए देवबंद पर कुफ्र का फत्वा हासिल कर लिया।**
- **हरमैन शरीफैन के औलोमा उर्दू ज़बान नहीं जानते थे। लिहाज़ा उन्होंने मौलाना अहमद रज़ा बरेल्वी के ज़रीये औलोमा-ए देवबंद की किताबों का जो ख़ुद-साख्ता अरबी तर्जुमा था, उस तर्जुमे पर भरोसा कर के कुफ्र का फत्वा दे दिया।**
- **मौलाना अहमद रज़ा ने हरमैन शरीफैन के औलोमा से जो इस्तिफता किया था, उस इस्तिफ्ता के साथ औलोमा-ए देवबंद की अस्ल उर्दू किताबें बतौरे सबूत पैश नहीं की थीं। ताकि हरम शरीफ के औलोमा किसी उर्दू दां से वो किताबें पढ़वाकर मुतनाज़ा इबारात की हक़ीक़त की वाक़फियत हासिल कर सकें।**
- **औलोमा-ए देवबंद पर कुफ्र का फत्वा देने वाले हरमैन शरीफैन के औलोमा के साथ मौलाना अहमद रज़ा के गहरे दोस्ताना मरासिमो-तअल्लुकात थे। इसी बिना पर उन्होंने मौलाना अहमद रज़ा के पैश करदा उर्दू इबारात के अरबी तराजिम पर एतमाद कर के, धोका खा कर फत्वा दे दिया है।**
- **हरमैन शरीफैन के औलोमा-ए इजाम से जिन औलोमा-ए देवबंद के मुतअल्लिक इस्तिफता किया गया था, वो उन औलोमा-ए देवबंद से वाक़िफ नहीं थे। उन्होंने ये समझा कि ऐसा लिखने वाले मुक़ामी सतह के जाहिल क़िस्म के मुल्लाने हैं। आलमी शौहरत रखने वाले जय्यद औलोमा नहीं। लिहाज़ा ऐसे जाहिल क़िस्म के बे-लगाम और बे-एहतियात मुल्लानों की ताज़ीर व तोबीख के लिए सख्त अहकाम पर मुश्तमिल फतावा सादिर करें ताकि आइन्दा के लिए वो ऐसी हरकतों से बाज़ रहें। इसी जज़्बे और दूर अंदेशी को मलहूज़ रखते हुए उन्होंने कुफ्र का फत्वा दिया है।**

मुंदरजा बाला इल्ज़ामात का अगर तफ्सीली जवाब अरक़ाम किया जाए तो एक अलग ज़खीम किताब बन जाए। लिहाज़ा हम बहुत ही इख्तिसार के साथ लैकिन तसल्ली बख्श और शाकी व वाफी जवाब ज़ेल में नए उन्वान से देने की सई करते हैं। उम्मीद है कि कारेईने किराम ज़रूर मुतमइन होंगे।

कुफ्र का फत्वा देने वाले हरम शरीफ के औलोमा में औलोमा-ए देवबंद के पीर भाई और पीर के खलीफा भी थे।

इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान के इस्तिफसार पर हरमैन शरीफैन के औलोमा-ए ज़वील अहतराम ने **"हुस्सामुल-हरमैन-अला-मुन्हरिल-कुफ्रे-वल-मैन"** नाम से औलोमा-ए देवबंद पर काफिर का फत्वा दिया। इस फत्वे पर मक्का मुअज़्ज़मा के बीस (२०) और मदीना मुनव्वरा के तेराह (१३) जय्यद आलिमों ने दस्तख़त फरमाए थे। इन कुल तेंतीस (३३) हज़रात के मुबारक अस्माए गिरामी सफा नं. (१३७) से सफा नं. (१४०) तक दर्ज हैं। इन मुंदरज बित्तरतीब अस्मा में नंबर ५/६ और १५ के सामने ★ का निशान बना हुवा है। इन हज़रात का मुख्तसर तआर्रुफ मुलाहेजा फरमाएं।

▣ हज़रत मौलाना शेख़ अहमद मक्की इमदादी :-

हज़रत मौलाना शेख़ अहमद मक्की इमदादी चिश्ती साबरी का शुमार मक्का मुअज़्ज़मा के अजिल्ला व अकाबिर औलोमा में होता है। आप मक्का मुअज़्ज़मा में आलमे इस्लाम के आफताबे इल्म की हैसियत से दरख्शां थे। आपके इल्म का दरिया हमेंशा मोजज़न रहता था और तिश्नगाने इल्म आपके दरियाए इल्म से अपनी प्यास बुझाते रहते थे। आप हरम शरीफ के मदरसए-इस्लामिया व नीज़ शहर मक्का मुअज़्ज़मा में वाकेअ मदरसए-अहमदिया के मुदर्रिस थे। हाजी इमदादुल्लाह साहब मुहाजिरे मक्की से आप मुरीद हुए थे और हाजी साहब ने उन्हें खिलाफतो-इजाज़त से नवाज़ा भी था।

अकाबिर औलोमा-ए देवबंद ● मौलवी याकूब नानोत्वी ●मौलवी कासिम नानोत्वी ● मौलवी रशीद अहमद गंगोही और ● मौलवी अशरफ अली थानवी ये चारों **हाजी इमदादुल्लाह साहब फारुकी चिश्ती** से मुरीद थे और चारों को हाजी साहब ने खिलाफत भी दी थी। हाजी इमदादुल्लाह फारुकी चिश्ती की पैदाइश हिन्दुस्तान के सूबा यू.पी. के सहारनपूर ज़िले के **"नानौता"** गांव में २२/सफर हि.१२३३ को हुई थी। आपने अपनी ज़िंदगी के ४३/साल हिन्दुस्तान में गुज़ारे। ज़िला मुज़फ्फर नगर के **"थाना भवन" में खानकाहे इमदादिया** क़ायम की। फिर हि.१२७६ में ना-मुवाफिक हालात की वजह से हिज़रत कर के मक्का मुअज्जमा आए और मुस्तकिल सुकूनत इख्तियार की। मक्का मुअज्जमा में तक़रीबन ४१/साल तक ब-क़ैदे हयात रहने के बाद १२/जमादिल आखिर हि. १३१७, ८४/ साल की उम्र में इन्तक़ाल फरमाया और मक्का मुअज़्ज़मा के मशहूर कब्रस्तान "जन्नतुल मुअल्ला" में दफ्न हुए।

कयामे हिन्दुस्तान के दौरान औलोमा-ए देवबंद से हाजी साहब के गहरे तअल्लुक़ात थे और औलोमा-ए देवबंद हाजी साहब से बहुत ही मुतास्सिर थे और हाजी साहब से बैअत हो कर खिलाफत हासिल की थी और हाजी साहब से गायत दर्जा की अकीदत और मुहब्बत रखते थे। हाजी इमदादुल्लाह साहब **हि.१२७६ में हिन्दुस्तान से हिज़रत कर के** मक्का मुअज़्ज़मा मुस्तकिल तौर पर क़याम पज़ीर हुए और कुछ अरसे के बाद सिलसिलए-चिश्तिया साबिरीया के ज़बरदस्त शेख़ व मुर्शिद की हैसियत से मशहूर हुए। हज़रत अल्लामा शेख़ अहमद मक्की मक्का मुअज़्ज़मा में हाजी साहब से मुरीद हुए और खिलाफत हासिल की और हाजी साहब के **"अजिल्ल खुल्फा"** में उनका शुमार होने लगा। हाजी साहब से कुरबत,

अकीदत, नज़्दीकी, गहरे तअल्लुकात और कवी मरासिम की वजह से हाजी साहब के खासुल खास मुरीदो–खलीफा व अकरब मसाहिब की हैसियत से इत्ने मशहूर हुए कि उन की पहचान **''इमदादी''** मशहूर हो गई। हाजी साहब की निसबत से लोग उन्हें मौलाना **''अहमद इमदादी''** के नाम से पहचानते थे। हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की से तअल्लुक रखने वाले मुल्के अरब और मुल्के हिन्दुस्तान के करीब करीब तमाम मुरीदीन व मुतवस्सिलीन हज़रत मौलाना अहमद मक्की को जानते और पहचानते थे और हज़रत मौलाना अहमद मक्की इमदादी भी हाजी साहब के अक्सर मुरीदीनो मुतवस्सिलीन से वाकफियत व शनासाई रखते थे।

औलोमा–ए देवबंद जब हज्जे बैतुल्लाह के लिए मक्का मुअज़्ज़मा जाते थे, तब वो अपने पीरो–मुर्शीद हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिरे मक्की के मकान पर ठहरते थे। हाजी साहब के औलोमा–ए देवबंद के साथ पुराने तअल्लुकात थे। अलावा अजीं वो हाजी साहब से बैअत थे, लिहाजा हाजी साहब उन्हें ● **मुरीदीन** ● **औलोमा** ● **ज़ाइरीने हज्ज** ● **पुराने तअल्लुकात और** ● **अपने खलीफा** की वजह से बहुत ही ए'जाज़ो–इकराम से मेहमान बनाकर ठहराते थे और आला किस्म की खातिर तवाज़ो फरमाते थे। हज़रत मौलाना अहमद मक्की इमदादी की हाजी साहब के यहां मुसलसल आमदो–रफ्त थी। लिहाज़ा वो भी हाजी साहब के जरीये औलोमा–ए देवबंद की मेहमान–नवाज़ी और खातिर व तवाज़ो अपनी आँखों से देखते थे और उन्हें मालूम था कि हाजी साहब के ये खासुलखास मेहमान औलोमा–ए देवबंद कोई मुकामी सतह के एरे गैरे और कम हैसियत के मुल्लाने नहीं बल्कि आलमी पैमाने के, एक अज़ीम दीनी दर्सगाह के मुदर्रिसीनो–मुन्तज़िमीन, मशहूरो–मारूफ मुक्तदा और शौहरत–याफ्ता औलोमा हैं। मेरे पीर के खुल्फा हैं।

लैकिन.......

तहनियत और सलाम है हज़रत अल्लामा अहमद मक्की इमदादी की इंसाफ पसंदी और अद्लपर्वरी को कि उन्होंने अल्लाह और रसूल की शान में गुस्ताख़ी और तौहीन का जुर्म करने वाले अपने पीर भाईयों और अपने पीर के खलीफा का मुत्लक लिहाज़ न फरमाया। जिनके तअल्लुक से फत्वा पूछा गया है वो ● मेरे पीर भाई हैं ● मेरे पीर के खलीफा हैं ● मेरे पीर के चहीते हैं ● मश्हूर आलिम हैं ● अज़ीम इदारे के मुन्तज़िमीन हैं ● पीरे तरीकत हैं ● आलमी पैमाने के शौहरत याफ्ता औलोमा हैं। वग़ैरा मनासिबो–मरातिब के हामिलीन हैं। इस बात का और किसी भी निस्बतो–कराबत का लिहाज़ न किया, रिश्तए–तरीकत की मुरव्वत व रिआयत न फरमाई, बल्कि अपने पीर भाईयों थानवी, गंगोही, नानोत्वी वग़ैरा के खिलाफ सादिर किए गए फतावे की ताईदो–तौसीक व तक़रीज़ फरमाई और अपने पीर भाईयों के खिलाफ शरीअते मुतह्हरा के हुक्म के निफाज़ में किसी भी किस्म की हिचकिचाहट व झिजक महसूस न की और साफ लफ्जों में यहां तक लिखा कि :–

''لَارَيْبَ اَنَّ هٰؤُلَآءِ مُكَذِّبُوْنَ لِلْاَدِلَّةِ صَرِيْحًا فَيُحْكَمُ عَلَيْهِمْ بِالْكُفْرِ''

–: तर्जुमा :–

''कुछ शक नहीं कि ये ताइफे सराहन दलीलों को झुठला रहे हैं, तो उन पर कुफ्र का हुक्म लगाया जाएगा।''

(**हवाला :– ''हुस्सामुल–हरमैन–अला–मुन्हरिल–कुफ्रि–वलमैन''**
मतबूआ :– रज़ा अकैडमी, **सफा : १४४**)

हमने सफा नंबर (१३७) से (१४०) तक औलोमा–ए हरमैन शरीफैन के मुबारक नामों की जो फहेरिस्त दी है, उस फहेरिस्त में हज़रत अल्लामा अहमद मक्की इमदादी का मुबारक नाम नंबर १५ पर है।

▣ हज़रत मौलाना अबदुलहक साहब इलाहाबादी:-

औलोमा-ए हरमैन शरीफैन के मुबारक नामों की दी गई फहेरिस्त में हज़रत मौलाना अबदुलहक साहब इलाहाबादी मुहाजिर मक्की का इस्मे शरीफ नंबर : ५ पर है।

हज़रत मौलाना अबदुलहक साहब बिन शाह मुहम्मद की पैदाइश हिन्दुस्तान के सूबा उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद ज़िले के **"नैवान"** में हुई थी। आपने हिन्दोस्तान में रह कर दीनी उलूम की तकमील की और जय्यद आलिम की हैसियत से व नीज़ उर्दू ज़बान के अदीब की हैसियत से शोहरत पाई। हि. १२८३ में हिन्दुस्तान से मक्का मुअज़्ज़मा हिजरत फरमाई और पचास (५०) साल तक मक्का मुअज़्ज़मा में मुस्तकिल सुकूनत इख्तियार फरमाने के बाद १६/ शव्वालुल मुकर्रम हि. १३३३ में इन्तकाल फरमाया और मक्का मुअज़्ज़मा के मशहूर कब्रस्तान जन्नतुलमाला में मदफून हुए।

मक्का मुअज़्ज़मा के पचास (५०) साला कयाम के दौरान आपके इल्म का दरिया ठाठें मारते हुए समंदर की तरह मौजें मारता रहा। हज़रत अल्लामतुल जलील व फहामतुन्नबील, मुहाफिज़े कुतुबे हरम सैयद इस्माईल खलील मक्की जैसे शोहरए आफाक औलोमा आपके शागिर्द थे। मक्का मुअज़्ज़मा बल्कि पूरे मुल्के हिजाज़ में आप **"शैखुद्दलाइल"** के मुअज़्ज़म लकब से मशहूर थे और आपके इल्मी दलाइल के सामने तमाम औलोमाए मक्का मुअज़्ज़मा व मदीना मुनव्वरा सरे तस्लीम खम फरमाते थे।

आपने हि. १२८३ में यानी हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की के सात (७) साल बाद हिन्दुस्तान से मक्का मुअज़्ज़मा हिज़रत फरमाई थी। हाजी साहब का इन्तकाल मक्का मुअज़्ज़मा में हि.१३१७

में हुवा था। इस हिसाब से मौलाना अबदुलहक ईलाहबादी और हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की तकरीबन चौंतीस (३४) साल (**34, Years**) तक मक्का मुअज़्ज़मा में हम असर की हैसियत से रहे। दोनों हिन्दुस्तानी थे और दोनों ने ना-मुवाफिक हालात की वजह से हिज़रत की थी। हमवतन होने की वजह से दोनों के दरमियान एक फितरती उन्स, लगाव और गहरे तअल्लुकात थे। गाहे-गाहे दोनों एक दूसरे के महेमान बनते थे और आते-जाते रहते थे, बल्कि हज़रत मौलाना अबदुलहक साहब ही ज़्यादातर हाजी साहब के यहां तशरीफ ले जाते थे।

हाजी साहब से गहरे तअल्लुकात अलावा अजीं पैदाइशी हिन्दुस्तानी और हिन्दुस्तान में ही उलूमे दीनिया की तकमील करने की वजह से आपको हिन्दुस्तान से आने वाले जाइरीने हज और बिल खुसूस जाइरीने हज औलोमा से फितरती तौर पर तबई मैलान, रुजहान और यगानगी थी। हाजी साहब के दौलत कदे पर हिन्दुस्तान से आने वाले जाइरीने हज मुरीदीन कसरत से आते थे और उनमें जो औलोमा मुरीदीन व खुल्फा होते थे, उनसे मौलाना अबदुलहक साहब इलाहाबादी बसा औकात मुलाकात किया करते थे, बल्कि बाहमी मुहब्बत और खुसूसी हमनशीनी के तआर्रुफात की गहेरी वाकफियत की जान पहचान थी। लिहाज़ा वो हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की साहब के मुरीदीन व खुल्फा औलोमाए देवबंद को अच्छी तरह जानते और पहचानते थे। उन्हें मालूम था कि हाजी साहब के महेमान औलोमा-ए देवबंद एक मशहूर इदारे से मुन्सलिक हैं और ज़ाती तौर पर भी वो अपने तलामज़ा, मुरीदीन, मोअतक़िदीन, मुतवस्सिलीन, मुहिब्बीन का वसीअ हलक़ा रखते हैं।

अलावा अजीं हज़रत मौलाना अबदुलहक साहब ने हिन्दुस्तान के मशहूरो-मारूफ शहर इलाहाबाद में मौलाना तुराब वग़ैरा असातिज़ा से दर्सयात पढ़ी थी और इल्मे अक्लिया व नकलिया की तकमील की थी। आप बा-सलाहियत और ज़ी-इस्तिदाद आलिमे दीन और अदीबे शहीर थे। अरबी और उर्दू अदब के सफे अव्वल के अदीब व अतालीक में आपका शुमार होता था। उर्दू और अरबी दोनों ज़बानों (**Language**) पर आपको कामिल उबूर (**Command**) हासिल था। अरबी से उर्दू या उर्दू से अरबी में किए गए तराजिम (**Translations**) में अगर कोई गलती बल्कि कमी या खामी पर फिल-फौर और फौरन गिरिफ्त फरमाने की आप सलाहियत रखते थे।

लिहाज़ा ....

अगर मौलाना अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी ने औलोमा-ए देवबंद की उर्दू कुतुब की कुफ्रिया इबारात का अरबी तर्जुमा करने में कोई कमी बैशी या तरमीमो-इज़ाफा या किसी तरह की कोई खियानत की होती, तो मौलाना अबदुलहक साहब से वो छुप नहीं सकती थी। आप फौरन एतराज़ करते बल्कि औलोमा-ए हरमैन शरीफैन को खियानते तर्जुमा से आगाह कर के फत्वे लिखने से रोकते और मौलाना अहमद रज़ा की खियानतो-फरेब का पोल खोल देते और सख्त अलफाज़ में सरजनिश और मलामत फरमाते। ऐसा कुछ भी नहीं हुआ बल्कि मौलाना अबदुलहक साहब ने हिमायते हक़, एहक़ाक़े हक़, ताईदे हक और नुस्रते हक का फरीज़ा मुखलिसाना तौर पर अदा फरमाया। अपने हमवतन शेखे़ तरीकत के साथ सालहा-साल पुराने तअल्लुकात का लिहाज़ न फरमाया। गहरे मरासिम के रिश्तए उलफत के सबब औलोमा-ए देवबंद से

क़ायम शूदा आश्नाई की मुरव्वत, ग़ैरत और अहम्मियत का मुत्लक़ लिहाज़ व ख़याल न किया, बल्कि बारगाहे रिसालत मआब के गुस्ताख औलोमा-ए देवबंद पर सादिर शूदा कुफ्र के फत्वे की ताईदो-तौसीक फरमाई।

मौलाना अबदुलहक़ इलाहाबादी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान की किताब "**अल-मोअतमद अल-मुस्तनद**" में औलोमा-ए देवबंद की किताबों की गुस्ताख़ाना इबारात की वजह से उन पर कुफ्र का हुक्म सादिर करने को इन अलफाज में सराहा है कि :-

"فَقَدْ اِطَّلَعْتُ عَلٰى هٰذِهِ الرِّسَالَةِ الشَّرِيْفَةِ ÷ وَمَا حَوَتْهُ مِنَ التَّحْرِيْرِ الْاَنِيْقِ ÷ وَالتَّقْرِيْرِ الرَّشِيْقِ ÷ فَرَاَيْتُهَا هِىَ الَّتِىْ تَقَرُّ بِهَا الْعَيْنَانِ لَابِغَيْرِهَا ÷ وَهِىَ الَّتِىْ تُصْغِى اِلَيْهَا الْآذَانُ حَيْثُ ظَهَرَ خَيْرُهَا وَمَيْرُهَا"
मुंदरजा बाला अरबी इबारत का हिन्दी तर्जुमा और हवाला:-
मैं इस शरफ वाले रिसाले पर मुत्तला हुवा और वो खुश्नुमा तहरीर और ज़ैबा तक़रीर जो इस में मुंदरज है, देखी, तो मैंने उसे ऐसा पाया कि इसी से आँखें ठंडी हों, न गैर से। और वही है जिसे कान जी लगाकर सुनें कि इस की खूबी और इस का फैज़ ज़ाहिर है।
हवाला :-"हुस्सामुल-हरमैन-अला-मुन्हरिल-कुफ्रि-वलमैन" मतबूआ :- रज़ा अकैडमी - मुंबई, सने इशाअत हि. २००९, **सफा : १०४**

कारेईने किराम गौर फरमाएं कि हज़रत मौलाना अबदुलहक़ साहब इलाहाबादी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान मज़कूरा बाला तेहरीर में साफ लफ्ज़ों में इरशाद फरमा रहे हैं कि **''मैं इमाम अहमद रज़ा की तहरीर यानी उनकी किताब ''अल-मोअतमदुल-मुस्तनद'' देखी, तो उसे देखकर मेरी आँखें ठंडी हुई''** जिसका साफ मतलब यही हुवा कि इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी की किताब **''अल-मोअतमदुल-मुस्तनद''** कि जिसमें औलोमा-ए देवबंद को काफिर कहा गया है, इस किताब को आप इतना ज़्यादा पसंद फरमा रहे हैं कि इस किताब को देखकर उनकी आँखें ठंडी हुई यानी औलोमा-ए देवबंद पर सादिर किया गया कुफ्र का फत्वा देखकर उनकी आँखें ठंडी हो रही हैं। बल्कि इस किताब में इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी ने दलाइलो-बराहीन के अंबार लगाकर जो इल्म के दरिया बहाए हैं, उसे मुलाहिज़ा फरमा कर हज़रत मौलाना अबदुलहक़ साहब इलाहाबादी इतने मुतास्सिर हुए कि इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान की तारीफ व तौसीफ में मुंदरजा ज़ैल अलफाज अरक़ाम फरमाए हैं कि :-

> ''اَصَابَ صَاحِبُهَا الْعَلَّامَةُ الْبَحْرُ الطَّمْطَامُ ÷ اَلْمِقْوَالُ الْمِفْضَالُ الْمِنْعَامُ ÷ اَلنِّكْرُ الْبَحْرُ الْهُمَامُ ÷ اَلْاَدِيْبُ اللَّبِيْبُ الْقَمْقَامُ ÷ ذُو الشَّرَفِ وَالْمَجْدِ الْمِقْدَامِ ÷ الذَّكِيُّ الزَّكِيُّ الْكِرَامُ ÷ مَوْلَانَا الْفَهَّامَةُ الْحَاجُّ اَحْمَدُ رَضَا خَانُ ÷ كَانَ اللّٰهُ لَهُ اَيْنَمَا كَانَ ÷ وَلَطَفَ بِهٖ فِيْ كُلِّ مَكَانٍ ÷ فِيْمَا بَسَطَ وَحَقَّقَ ÷ وَضَبَطَ وَدَقَّقَ ÷ اَقْسَطَ وَزَعَا ÷ وَاَرْشَدَ وَهَدٰى ÷ فَيَجِبُ اَنْ يَّكُوْنَ الْمَرْجَعُ عِنْدَ الْاِشْتِبَاهِ اِلَيْهِ ÷ وَالْمُعَوَّلُ عَلَيْهِ ÷ ''

मुंदरजा बाला अरबी इबारत का हिन्दी तर्जुमा और हवाला:-

इस के मोअल्लिफ अल्लामा आलिमे जलील, दरियाए जख्खार पुर गोहर, बीस्यारे फज़्ल, कसीरुल अहसान, दिलैर, दरियाए बुलंद हिम्मत, ज़हीन, दानिशमंद, बहरे नापैदा किनार, शर्फ व इज़्ज़तो सबकत वाले, साहिबे ज़का, सुथरे, निहायत करम वाले, हमारे मौला, कसीरुल फहम, **हाजी अहमद रज़ा ख़ां** ने कि वो जहां हो अल्लाह तआला उस का हो और हर जगह उस के साथ लुत्फ फरमाए। इस **तफसीलो-तहकीक** व रब्त व ज़ब्तो-तदक़ीक में राहे सवाब पाई। इन्साफ किया और अद्ल किया और रहनुमाई व हिदायत की, तो वाजिब है कि शुब्हे के वक़्त **इसी तहक़ीक़ की तरफ रुजू की जाए** और इसी पर एतमाद हो।

हवाला :- **''हुस्सामुल-हरमैन-अला-मुन्हरिल-कुफ्रि-वलमैन''**
मतबूआ :- रज़ा अकैडमी - मुंबई, सने इशाअत हि. २००९, सफा : १०४

मुहाफिज़े कुतुबे हरम, अल्लामा सय्यद इस्माईल खलील मक्की:-

औलोमा-ए हरमैन शरीफैन के मुबारक नामों की दी गई फेहरिस्त में मुहाफिज़े कुतुबे हरम, हज़रत अल्लामा सय्यद इस्माईल

खलील मक्की का इस्म शरीफ नंबर : ६ पर है। आप हरम शरीफ के कुतुब खाना के मुहाफिज़ो–निगरां थे।

आप हज़रत मौलाना अबदुलहक़ साहब इलाहाबादी मुहाजिर मक्की के शागिर्द अलावा अर्जी पीरे तरीक़त हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की के अजिल्ला खुल्फा में से थे। आपका शुमार मक्का मुअज़्ज़मा के मोअतमद, मोअतबर और सफे अव्वल के औलोमा में होता है। हज़रत अल्लामा सय्यद इस्माईल खलील मक्की के हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की के साथ गहरे तअल्लुक़ात और मरासिम थे। गाहे गाहे आप हाजी साहब के दौलत कदा पर तशरीफ ले जाते थे। बिलखुसूस अय्यामे हज में हिन्दुस्तान से आए हुए हुज्जाज़े किराम जो हाजी साहब के मुरीदीन, मुहिब्बीनो–मुतवस्सिलीन होने की वजह से हाजी साहब के मेहमान होते थे और हाजी साहब के मकान पर ठहरते थे, उनके साथ अल्लामा सय्यद इस्माईल खलील मक्की की अच्छी ख़ासी जान पहचान थी और बिलखुसूस औलोमा ज़ाइरीन के साथ भी तआरुफो–वाकफियत थी। लिहाज़ा वो भी हाजी साहब के खास मेहमान और खलीफा मौलवी अशरफ अली थानवी वग़ैरा को अच्छी तरह जानते और पहचानते थे। उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि हिन्दुस्तान से आए हुए औलोमा–ए देवबंद एक अहम दीनी इदारे से तअल्लुक़ रखने वाले और शौहरत याफ्ता औलोमा हैं, जिनका एक बड़े तबके व गिरोह पर असर है।

लैकिन एहक़ाक़े हक़ और इबताले बातिल के मुआमले में अल्लामा सय्यद इस्माईल खलील मक्की ने औलोमा–ए देवबंद के जुब्बा व दस्तार और उनकी शौहरत का मुत्लक लिहाज़ न फरमाया, बल्कि एक ही मुर्शिदे इजाज़त के खलीफा होने की मुरव्वत की नरमी न बरती। हुक्मे शरीअत की ता'मील में तअल्लुकातो–मरासिम

www.markazahlesunnat.net

की कतअन परवाह न की और औलोमा–ए देवबंद के खिलाफ कुफ्र के फत्वा **"हुस्सामुल–हरमैन–अला–मुन्हरिल–कुफ्रि–वलमैन"** की खुले ल●फ्जों में ताईदो–तौसीक फरमाते हुए यहां तक अरक़ाम फरमाया कि :–

"لَا شُبْهَةَ فِیْ کُفْرِهِمْ بِلَا مَجَالٍ ÷ بَلْ لَاشُبْهَةَ فِیْمَنْ شَکَّ بَلْ فِیْمَنْ تَوَقَّفَ فِیْ کُفْرِهِمْ بِحَالٍ مِنَ الْاَحْوَالِ"
मुंदरजा बाला अरबी इबारत का हिन्दी तर्जुमा और हवाला:–
उनके कुफ्र में कोई शुबा नहीं, न शक की मजाल। बल्कि जो उनके कुफ्र में शक करे बल्कि किसी तरह, किसी हाल में, उन्हें काफिर कहने में तवक्कुफ करे, उस के कुफ्र में भी शुबा नहीं।
हवाला :– "हुस्सामुल–हरमैन–अला–मुन्हरिल–कुफ्रि–वलमैन" मतबूआ :– रज़ा अकैडमी – मुंबई, सने इशाअत हि. २००९, **सफा : १०७**

▣ तारीखी दस्तावेज़ की हैसियत रखने वाली गवाही :–

हि. १३०२ में मक्तबए–फिक्र देवबंद के चार (४) अहम मुफ्तियों ने मेहफिले मीलाद को नाजाइज, गुनाह और रस्मे हुनूद की रसूम का फत्वा दिया। इस फत्वे ने मुसलमानों में इख्तिलाफो–इंतिशार का बीज बोया। इस फत्वे के रद्दो–इबताल और मीलादो–फातिहा के जवाज़ के सबूत में हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिरे मक्की के मुरीदो–खलीफा, आलिमे रब्बानी **हज़रत मौलाना अब्दुस्समी साहब "बेदिल"** रामपूरी सुम्मा सहारनपूरी अल–मुतवफ्फा

हि.१३१८ ने दलाइलो–बराहिन से लबरेज़ मोअतबर किताब **"अनवारे सातेआ दर बयाने मौलूदो–फातिहा"** के नाम से तस्नीफ फरमाई। इस किताब के जवाब में मौलवी रशीद अहमद गंगोही ने अपने मुरीदे ख़ास मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी के नाम से **"अल–बराहीने कातेआ अला ज़िलामे अन्वारे सातेआ"** किताब शाए कराई।

हज़रत मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी अल–मुतवफ्फा हि. १३१५ और मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी के दरमियान दोस्ताना तअल्लुकात थे। जब मौलवी अम्बेठवी की किताब "बराहीने कातेआ" छप कर मंज़रे आम पर आई, तब मौलवी अम्बेठवी मदरसए–अरबिया, रियासते भावलपूर (पाकिस्तान) में मुदर्रिसे अव्वल के ओहदे पर फाइज थे। हज़रत मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी ने बराहीने कातेआ किताब देखी तो उन्हें बड़ा सदमा हुवा और अपने दोस्त अम्बेठवी को समझाने के लिए ब–नफ्से नफीस भावलपूर तशरीफ ले गए। मगर अम्बेठवी साहब न माने और अपनी ज़िद पर क़ायम रहे। लिहाज़ा हज़रत मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी और मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी के दरमियान शव्वाल हि.१३०६ में बमुकाम भावलपूर (पाकिस्तान) में नवाब भावलपूर की निगरानी में मुनाज़रा हुवा। मुनाज़रा के हकम और फैसल भावलपूर के नवाब के पीरो मुर्शिद, पीरे तरीकत, शेखुल मशाइख **हज़रत ख्वाजा गुलाम फरीद** साहब, सज्जादा नशीन खानकाहे चाचडा शरीफ थे। इस मुनाज़रा में मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी को शिकस्ते फाश हुई और मुनाज़रा के हकम ने ये फैसला सुनाया कि **"अम्बेठवी साहब अपने मुआविनीन के साथ वहाबी हैं और अहले सुन्नत से खारिज हैं"**

इस फैसले के बाद मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी को भावलपूर से चले जाने का हुक्म नवाब साहब ने सुना दिया और उनका खारिजा कर दिया। इस मुनाज़रे की मुकम्मल और तफसीली रूदाद हज़रत मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी ने **"तकदीसुल–वकील अन तौहीने रशीदो–खलील"** के नाम से लिखी और किताबी शक्ल में शाए की। फिर इस किताब का अरबी तर्जुमा किया और हरमैन शरीफैन के औलोमा से तस्दीकात व तक़रीजात लिखवाईं। मुतअद्दिद औलोमा–ए हरमैन शरीफैन ने इस किताब को अपनी तकरीज़ात से मुज़य्यन फरमाया। जिनमें मुंदरजा ज़ैल नाम काबिले तवज्जोह व इलतिफात हैं :–

(१) शेखुद्दलाइल हज़रत मौलाना **अबदुलहक़ इलाहाबादी**

(२) शेखुल मशाइख, पीरे तरीकत **हाजी इमदादुल्लाह** साहब मुहाजिरे मक्की

(३) आ'लमे औलोमाए मक्का मुअज़्ज़मा, पायए–हरमैन शरीफैन **हज़रत मौलाना रहमतुल्लाह** साहब कैरानवी, मुहाजिर मक्की, असातिज़ए मदरसाए सौलतिया, मक्का मुअज़्ज़मा

(४) हज़रत अल्लामा **शेख़ कमाल मक्की**।

मुंदरजा बाला चार (४) हज़रात ने अल्लामा गुलाम दस्तगीर कसूरी की किताब **"तकदीसुल वकील"** में मज़कूर औलोमा–ए देवबंद के कुफ्रियात की वजह से उन पर नाफिज़ शरई हुक्म की ताईद फरमाई है, बल्कि शेख़ कमाल मक्की ने मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी को **"ज़िंदीक"** (यानी बेदीन, काफिर) लिखा है।

अलावा अज़ीं हज़रत मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी कि जिनसे मुतअद्दिद देवबंदी आलिमों ने इल्मे दीन सीखा है। देवबंद के

अकाबिर औलोमा ने हज़रत मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी की इल्मी जलालतो-बुज़ुर्गी का इक़रार किया है। मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी ने लिखा है कि :-

इस आखरी वक्त में अब मौलवी रहमतुल्लाह साहब तमाम औलोमा-ए मक्का पर फाइक़ और बा-इकरारे औलोमा-ए मक्का आ'लम हैं।
हवाला :- "**बराहीने-कातेआ**", मुसन्निफ :- मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी, मुसद्दिका :- मौलवी रशीद अहमद गंगोही (१) नाशिर :- कुतुबखाना इमदादिया, देवबंद, **सफा : २६५** (पुराना एडीशन) (२) नाशिर :- मदरसए इमदादुल इस्लाम-मेरठ, **सफा : २६३** (३) नाशिर :- कुतुबखाना इमदादिया, देवबंद, **सफा : ५२५** (जदीद एडीशन)

हल्ले लुग़त :-

- **फाइक़** = फौक़ियत रखने वाला, बढ़ा हुवा, बरतर, मुमताज़, आला, मुअज़्ज़ज़ (हवाला :- फीरोज़ुल्लुगात, **सफा : ९२३**)
- **अअ्लम** = बहुत जानने वाला, बहुत बड़ा आलिम (हवाला:- फीरोज़ुल्लुगात, **सफा : १०१**)

मुंदरजा बाला इक़तिबास और हल्ले लुग़त से साबित हुवा कि बक़ौल मौलवी रशीद अहमद गंगोही और मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी :-

"मौलाना रहमतुल्लाह साहब कैरानवी तमाम औलोमा-ए मक्का से फौकियत रखने वाले, आ'ला, मोअज़्ज़ज़ और मुमताज़ आलिम हैं और तमाम औलोमा-ए मक्का से ज़्यादा जानने वाले हैं।"

अब आईए ! जिस मौलाना रहमतुल्लाह साहब कैरानवी को मौलवी रशीद अहमद गंगोही और मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी तमाम औलोमा-ए मक्का पर फाइक और तमाम औलोमा-ए मक्का से आ'लम यानी ज़्यादा जानने वाले कह कर उनकी इल्मी जलालत का लोहा मान रहे हैं और उनकी इल्मी सलाहियतो-इस्तिदाद का एतराफो-इक़रार कर के उनकी आ'ला इल्मी शाने रफी के गीत गा रहे हैं, वही मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी साहब मौलवी रशीद अहमद गंगोही और उनके चेले चपाटों के लिए क्या फरमाते हैं? वो मुंदरजा ज़ैल दो (२) इकतिबासात में मुलाहिज़ा फरमाएं :-

इक़तिबास नंबर : १

औलोमा-ए मदरसए-देवबंद की तेहरीरो-तक़रीर बतरीके तवातुर मुझ तक पहूँची है। तमाम अफसोस से कहना पड़ता है और चुप रहना खिलाफे दियानत समझा गया। सो कहता हूँ कि मैं जनाब मौलवी रशीद को रशीद समझता था, मगर मेरे गुमान के खिलाफ और ही निकले। जिस तरफ आए उस तरफ ऐसा तअस्सुब बरता कि उस में उनकी तक़रीर और तहरीर देखने से रूंगटा खड़ा होता है।
हवाला :- "**तकदीसुल-वकील अन तौहीने रशीदो-खलील**" मुसन्निफ :- मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी, मतबूआः-नूरी बुक डिपो, लाहौर, पाकिस्तान - **सफा नंबर : ४४७**

हल्ले लुग़त :-

रशीद = हिदायत याफ्ता, ता'लीम याफ्ता, तर्बियत याफ्ता, सीधी राह दिखाने या पाने वाला। (हवाला :- फीरोज़ुल्लुगात, **सफा : ७११**)

यानी हज़रत मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी ने देवबंदी मौलवी रशीद अहमद गंगोही को ना रशीद यानी गैर हिदायत याफ्ता और सीधी राह से बे-ख़बर कह कर मौलवी रशीद अहमद की हक़ीक़त अयाँ फरमा रहे हैं।

इक़तिबास नंबर : २

मैं तो इन उमूर को ज़ाहिरो-बातिन में बहुत बुरा समझता हूँ और अपने मुहिब्बीन को मना करता हूँ कि हज़रत मौलवी रशीद के और उनके चेले चपाटों के ऐसे इर्शादात न सुनें।

हवाला :- "तकदीसुल-वकील अन तौहीने रशीदो-खलील" मुसन्निफ :- मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी, मतबूआ:-नूरी बुक डिपो, लाहौर, पाकिस्तान - **सफा नंबर : ४५१**

कारेईने किराम ! ग़ौर फरमाइएं। हज़रत मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने मज़कूरा बाला किताब **"तकदीसुल-वकील अन तौहीने रशीदो-खलील"** हि. १३०६ में उर्दू में तस्नीफ फरमाई। फिर हि. १३०८ में उस का अरबी में तर्जुमा फरमाया और हि. १३०८ में ही इस अरबी तर्जुमा को औलोमा-ए मक्का और मदीना की खिदमत में पैश फरमाया। औलोमा-ए मक्का ने मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी की किताब को ब-गौर मुतालेआ फरमाया। इस किताब में मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी ने औलोमा-ए देवबंद के कुफ्रियात का रद्दे बलीग फरमाया है। क़ारेईने किराम को हैरत होगी कि इस किताब पर औलोमा-ए देवबंद के पीरो मुर्शिद **हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की** ने भी दस्तख़त फरमाकर इस किताब की ताईदो-तौसीक फरमाई है।

कुफ्र के फत्वे के तअल्लुक से आ'ला हज़रत, इमाम अहले सुन्नत, मुजद्दिद दीनो-मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी के खिलाफ वावेला मचाकर अपना सर पीट पीट कर मकरो फरेब का रोना रोने वालों से सिर्फ इतना ही कहना है कि तुम्हारे रोने पीटने से तारीख़ हरगिज़ मस्ख़ न होगी। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी की किताब **"अल-मोअतमदुल-मुस्तनद"** की ताईद में औलोमा-ए हरमैन शरीफैन ने **"हुस्सामुल-हरमैन-अला-मुन्हरिल-कुफ्रि-वलमैन"** के नाम से जो तारीखी फत्वा दिया है, वो फत्वा सन हिजरी १३२३ में दिया गया है। जबकि **"तकदीसुल वकील"** किताब पर औलोमा-ए मक्का ने हि. १३०८ में औलोमा-ए देवबंद के कुफ्रियात के खिलाफ दस्तख़त फरमाए हैं। यानी **"हुस्सामुल हरमैन शरीफैन"** के फत्वे के पंदरह साल पहले ही औलोमा-ए मक्का और औलोमा-ए देवबंद के पीरो-मुर्शिद हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की ने औलोमा-ए देवबंद के सरीह कुफ्रियात के खिलाफ दस्तख़त फरमाकर उन्हें जिंदीक, ग़ैर हिदायत याफ्ता, सीधी राह से बे-ख़बर वग़ैरा लिख कर हुक्मे शरई बयान फरमा दिया है। क्या हि. १३०८ में औलोमा-ए देवबंद के खिलाफ फत्वा देने वाले औलोमा-ए मक्का और हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की भी बरेल्वी थे ?

अल-हासिल ....

औलोमा-ए हरमैन शरीफैन ने **"हुस्सामुल-हरमैन"** के नाम से औलोमा-ए देवबंद पर उनके कुफ्रिया अक़ाइद की वजह से जो कुफ्र का फत्वा सादिर फरमाया है, वो बिलकुल सही, हक़, बर-वक़्त, बर-महल, निहायत तहक़ीक़ो-तफ्तीश, मोअतबर छानबीन, गहेरी जांच पड़ताल, मुदक्क़िक़ तस्दीक़, अमीक जुस्तजू के बाद

हासिल शूदा यकीने कामिल और बय्यिन शहादत की रोशनी में ही दिया है। किसी के कहने या उकसाने पर, किसी की गलत बयानी पर एतिमाद व भरोसा करना, किताब की इबारत के अरबी तर्जुमे में खियानत, धोका दही, फरैब-कारी वग़ैरा का कतअन कोई इमकान ही नहीं । बल्कि औलोमा-ए मक्का मस्लन हज़रत **अल्लामा सालेह कमाल** मुफ्ती मक्का मुकर्रमा और **शेखुद्दलाइल अल्लामा शेख़ अब्दुलहक़ इलाहाबादी** मुहाजिर मक्की ने तो हुस्सामुल हरमैन के फत्वे के पंदरा साल पहले यानी हि. १३०८ में हज़रत मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी की किताब **''तकदीसुल वकील अन तौहीने रशीदो खलील''** पर तक़रीज़ और मोहर सबत फरमाकर औलोमा-ए देवबंद की दलालत और गुमराही पर शरई हुक्म नाफिज़ फरमाया है। यानी दोनों हजरात यानी **अल्लामा सालेह कमाल** और **अल्लामा अब्दुल हक़ इलाहाबादी** ने हि. १३२३ में औलोमा-ए देवबंद के कुफ्रियात पर सादिर शूदा फत्वे हुस्सामुल हरमैन पर भी दस्तख़त फरमाए हैं।

एक अहम अम्र की तरफ भी क़ारेईने किराम की तवज्जोह मुल्तफित करना निहायत ज़रूरी है कि हज़रत मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी की किताब **''तकदीसुल वकील अन तौहीने रशीदो खलील''** पर औलोमा-ए देवबंद के पीरो मुर्शिद हज़रत **हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिरे मक्की** ने भी तक़रीज़ अरक़ाम फरमाकर औलोमा-ए देवबंद की दलालतो-गुमराहियत पर मोहर सबत फरमा कर एक तारीखी कारनामा अंजाम दिया है। हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहब शरई फैसलों और फतावा पर तक़रीज़ व तौसीक के मआमले में हमेंशा **शेखुद्दलाइल अल्लामा अब्दुलहक़ साहब इलाहाबादी** से मश्वरा करते थे और मौलाना अब्दुलहक़ साहब की राय पर ही अमल करते थे । हज़रत मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी की

मा'रकतुलआरा किताब **''तकदीसुल वकील''** पर तक़रीज़ लिखने से पहले हाजी इमदादुल्लाह साहब ने अपने अहम मुशीरे खास हज़रत मौलाना अब्दुलहक़ साहब से मश्वरा किया था और मौलाना अब्दुलहक़ साहब ने **''तकदीसुल वकील''** पर जो मुफस्सल तक़रीज़ तेहरीर फरमाई है । इस तक़रीज़ के नीचे हाजी साहब ने हस्बे ज़ैल तहरीर लिखी है **:-**

''तहरीरे बाला सहीह और दुरुस्त है और मुताबिक अेतकाद फकीर के है। अल्लाह तआला इस के कातिब को जज़ाए खैर दे।''

बे-सबब गर अज़ीमा मौसूल नीस्त
कुदरत अज़ अज़ल सबब माज़ूल नीस्त

=मुहम्मद इमदादुल्लाह फारूकी =

हवाला :- ''तक़दीसुल वकील अन तौहीने रशीदो ख़लील'' मुसन्निफ :- मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी, मतबूआ :- रज़ा अकैडमी, मुंबई, सने इशाअत हि.२०१२, **सफा : ४७८**

हाजी इमदादुल्लाह साहब की मुंदरजा बाला तेहरीर से साफ साबित होता है कि हाजी साहब ने **''तकदीसुल-वकील''** किताब की ताईदो-तौसीक में हज़रत मौलाना अब्दुलहक़ इलाहाबादी ने जो कुछ भी तहरीर फरमाया है, उसे अपना ख़ुद का एतिकाद होने की वजह से सही व दुरुस्त फरमाया है। यानी फिर्कए नाजिया अहले सुन्नत व जमाअत के अक़ाइदे हक्का की सदाक़त और फिर्क़ए नारीया वहाबी, देवबंदी जमाअत के अक़ाइदे बातिला की दलालत, जो मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी ने अपनी किताब **''तकदीसुल वकील''** में बयान फरमाई है और इस किताब में शेखुद्दलाइल

हज़रत मौलाना **अब्दुलहक़ साहब इलाहबादी** ने जो मुफस्सल तक़रीज़ तहरीर फरमाई है, उसे औलोमा-ए देवबंद यानी मौलवी कासिम नानोत्वी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही और मौलवी अशरफ अली थानवी के पीरो मुर्शिद हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की कबूल व मंज़ूर रख कर तकरीज़ी दस्तख़त फरमाते हुए यहां तक लिखा कि "**तहरीरे बाला दरुस्त और सहीह है और मेरे अेतकाद के मुताबिक है।**"

बल्कि अक़ाइदे बातिला वहाबीया, देवबंदिया के रद्दो इब्ताल में और अक़ाइदे अहले सुन्नत व जमाअत की हक्कानियत और सदाकत की ताईद में हज़रत मौलाना अब्दुलहक़ साहब इलाहाबादी ने जो लिखा है, वो हाजी साहब के अक़ाइद के मुताबिक़ो-मुवाफिक़ होने की वजह से हाजी साहब को इतना पसंद आया कि ख़ुश हो कर मौलाना अब्दुलहक़ साहब के लिए ये इरशाद फरमाया कि **अल्लाह तआला इस तहरीर के लिखने वाले को जज़ाए खैर दे।**

"**तकदीसुल वकील**" किताब की तक़रीज़ में हाजी साहब का दस्तख़त फरमाना और मुंदरजा बाला मुख्तसर बल्कि जामे तहरीर लिखना दर हक़ीक़त **औलोमा-ए देवबंद और उनके मोअतकिदीन के मुँह पर गरमा गरम तमांचा है।** बल्कि औलोमा-ए देवबंद के बेक़सूर होने का वावेला मचाकर सर पीटने वाले नोहा बाज़ों के लिए "**चुल्लू भर पानी में डूब मरने का मुकाम है**" कि जिन औलोमा-ए देवबंद की तोबीखो-तन्क़ीस का जुर्म **इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान के खिलाफ साबित करने की नाकाम कोशिश कर रहे हैं, उन्हीं के देवबंदी औलोमा को ख़ुद उनके पीरो मुर्शिद ने नमक आलूदा हंटर से फटकार कर पीठ उधेड कर लहूलुहान कर के रख दिया है।

हि. १३०८ में औलोमा-ए देवबंद के पीरो मुर्शिद हाजी इमदादुल्लाह साहब मुहाजिर मक्की ने अपने मुशीरे खास मौलाना अब्दुलहक़ साहब इलाहाबादी से तबादलए-ख़याल, राय और मश्वरा के बाद उनसे इत्तिफाक व इत्तिहाद करते हुए हज़रत मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी की किताब "**तकदीसुल वकील**" की तक़रीज़ करते हुए दस्तख़त फरमाए, वो हाजी साहब अगर हि. १३२३ में बक़ैदे हयात होते, तो ज़रूर ज़रूर ज़रूर वो औलोमा-ए देवबंद पर सादिर कुफ्र के फत्वे "**हुस्सामुल हरमैन**" पर भी दस्तख़त फरमा देते, क्यूंकि "**हुस्सामुल हरमैन**" पर **अल्लामा अब्दुलहक़ साहब इलाहाबादी** के दस्तख़त हैं। मौलाना अब्दुलहक़ साहब इलाहाबादी और हाजी इमदादुल्लाह के तअल्लुकात लाज़िमो-मल्ज़ूम जैसे गहरे थे। बल्कि संगीन दीनी मआमलात में वो दोनों हमेंशा चोली दामन का साथ की तरह एक दूसरे का साथ निभाते थे। मगर सूए इत्तिफाक़ से हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की **१२/जमादिल आखिर हि. १३१७** के दिन मक्का मुअज़्ज़मा में रहलत फरमा गए। अगर वो हि. १३२३ में जिंदा होते, तो "**हुस्सामुल हरमैन**" पर भी उनके दस्तख़त ज़रूर होते और उनके दस्तख़त की रोशनाई (Ink) औलोमा-ए देवबंद बल्कि पूरी दुनियाए देवबंदियत व वहाबियत के लिए चेहरे पर कालक का टीका लगना साबित होती। मगर मशीयते इलाही को कुछ और ही मंज़ूर था और हाजी साहब हि. १३१७ में ही इन्तक़ाल फरमा गए।

अल-मुख्तसर! औलोमा-ए मक्का मुअज़्ज़मा और औलोमा-ए मदीना मुनव्वरा ने "**हुस्सामुल हरमैन**" के नाम से कुफ्र का जो फत्वा दिया है, वो बिला सबब और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी के धोका देने की वजह से नहीं दिया, बल्कि

शरई शवाहिद और मोअतबर सबूत की रोशनी में बराहीनो–दलाइल का कामिल यक़ीन और तहकीक के साथ दिया है। अलावा अर्जी औलोमा–ए मक्का मुअज़्ज़मा औलोमा–ए देवबंद से नावाक़िफ थे और ना वाक़फियत की वजह से उन्हें अवामी सतह के ग़ैर मारूफ मुल्लाने समझ कर फत्वा नहीं दिया बल्कि हि. १३२३ के पंदरह साल पहले से वो मौलवी रशीद अहमद गंगोही और मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी को जानते थे। इन्हीं की किताब **''बराहीने कातेआ''** के रद्दो–इब्ताल में हज़रत मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी की तारीखी किताब **''तकदीसुल वकील''** पर तक़रीज़ लिखते वक्त से वो इन दोनों देवबंदी अकाबिर को जानते थे और जब हि. १३२३ में आला हज़रत, इमाम अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, **इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने औलोमा–ए देवबंद की किताबों की कुफ्रिया इबारात में मर्क़ूम गुस्ताख़ा–ए रब्बुल आलमीन जल्लजलालुहू और तौहीने अंबिया व मुरसलीन के तअल्लुक से **''अल–मोअतमदुल–मुस्तनद''** से इस्तिफसार किया। तब औलोमा–ए मक्का मुअज़्ज़मा के सफे अव्वल के मोअतमद औलोमा मस्लन **मुफ्ती मक्का मुअज़्ज़मा हज़रत सालेह कमाल मक्की और शेखुद्दलाइल हज़रत अल्लामा अब्दुलहक़ साहब इलाहाबादी** की पुख्ता याददाश्त में मौलवी गंगोही और मौलवी अम्बेठवी के नाम उभर कर सतहे ज़हन में आए कि ये तो वही पुराने गुस्ताख और बे अदब मुल्लाने हैं, जिनके खिलाफ आज से पंदरह (१५) साल पहले यानी हि. १३०८ में **''तकदीसुल वकील''** नाम की किताब में हमने तक़रीज़ लिखी है और इनको **''जिन्दीक''** तक लिखा है। और अब पंदरह साल का अरसा गुज़रने पर भी ये पुराने खुर्राट अपनी हरकतों और स्याह करतूतों से बाज़ नहीं आए।

सुधरने के बजाय ख़तरनाक अंदाज़ से बिगड़ते जा रहे हैं। भोले भाले मो'मिन भाइयों के ईमान के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। बेख़बर भोले भाले मुसलमानों के ईमान पर डाका डालने की मज़्मूम हरकतें करते हैं। बारगाहे रिसालत मआब ﷺ में घिनौनी किस्म की तौहीनें और बे अदबियाँ कर के दाइरए इस्लामो–ईमान से खारिज हो कर ताजियाना और सरज़निश के लाइक़ हैं। लिहाज़ा अब उनके खिलाफ सख्त शरई हुक्म नाफिज़ करना वक्त की अहम ज़रूरत और हालाते हाजरा का लाज़मी तक़ाज़ा है। लिहाज़ा औलोमा–ए हरमैन शरीफैन में से वो जय्यद औलोमा कि जो उर्दू ज़बान से वाक़फियत रखते थे और जो तमाम औलोमा–ए हरमैन शरीफैन की नज़रों में मक़बूल, मोअतबर, मोअतमद और सफे अव्वल के औलोमा में जिनका शुमार होता था मस्लन **शेखुद्दलाइल हज़रत अल्लामा अब्दुलहक़ साहब इलाहाबादी** वग़ैरा ने औलोमा–ए देवबंद की उर्दू किताबों की कुफ्रिया इबारात के मआनी, मतलब, मकसद, मुराद, सियाको सबाक को समझा, उन कुफ्री इबारात के ज़िम्न में आपस में तबादलए ख़याल की नशिस्तें मुनअक़िद कीं, इल्मी मबाहिसो–मुज़ाकरे किए और बिल आख़िर बिल इत्तिफाक़े राय बारगाहे रिसालत ﷺ के बैबाक गुस्ताख और जरी बे–अदब औलोमा–ए देवबंद पर कुरआनो–हदीस की रोशनी में शरई हुक्म सादिर फरमाते हुए उन्हें काफिरो मुर्तद कहा और यहां तक हुक्म नाफिज़ फरमाया कि **''मन–शक्का व तवक्कफा फी कुफरिहिम व अज़ाबेहिम फकद कफर''** तर्जुमा :– **''जो इन के काफिर होने में और इन पर अज़ाब होने में शक करे या तवक्कुफ करे, वो भी काफिर है।''**

दर्द होना पेट में और कूटना सर को यानी दरोग–गोई का रोना और वावेला

हक़ीक़त से ना–आश्ना भोले–भाले अवामुल मुस्लिमीन को धोका देने की फासिद ग़रज़ से गुमनाम और लापता नाम–निहाद तंजीम **"जमीअते अहले हक जम्मू व कश्मीर"** का शाए करदा किताब्चा **"बरेल्वी जमाअत का तआरुफ और उनके फत्वे"** में गप ज़नी का एक ऐसा रिकार्ड (Record) क़ाइम किया है कि जो शायद ही कभी टूटे। इमामे इश्क़ो मुहब्बत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, **इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान के खिलाफ दिल की भड़ास निकालने में दरोग गोई, किज़्ब बयानी और इल्ज़ाम तराशी का फराख़ दिली से काम लिया है। हालाँकि किताब के बुज़दिल और ना–मर्द मुसन्निफ ने अपना नामे बद और इस्मे रज़ील खुफीया रखा है, लिहाज़ा हम उसे **"पर्दा नशीन मुसन्निफ"** के लकब से मुलक़्क़ब करते हैं। इस पर्दा नशीन मुसन्निफ ने किज़्बो–दरोग की तमाम सरहदें उबूर करते हुए बेतुके तार के ऐसे बे ढंगे सुर आलापे हैं कि उन्हें आलमी पैमाने का रईसुल काज़ेबीन, सरखीले दरोग गोयाँ, झूठ का पुतला, झूठ की पोट, मलिकुल मुकज़्ज़िबीन कि जो झूठ न बोले तो पेट उभर जाए। अपनी किज़्ब बयानी से भोले भाले क़ारेईन को अपने दामे फरेब में फांसने के लिए जुमलों की मक्काराना बंदिश और अलफाज़ की हेरा फेरी के फरेबी जाल बिछा कर, सतहे ज़हन पर गलत फहमी की फिज़ा क़ायम करने की महारते ताम्मा का मुज़ाहिरा करते हुए, अपने आठ वर्क़ी किताब्चा में किज़्बे सरीह की भरमार कर रखी है।

www.markazahlesunnat.net

स्यासी, मज़हबी और समाजी एतबार से शौहरत याफ्ता अश्खास को आगे धर कर उनकी शौहरत की आग में अवाम की हमदर्दी हासिल करने की ग़रज़ से चार, छे सतरों के फकरे लिख कर और उस के ऊपर सुर्खी बांध कर लिख दिया कि **"इन पर कुफ्र का फत्वा"** और इन तमाम फतावा की ज़िम्मेदारी इमामे इश्क़ो मुहब्बत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, **इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान के सर पर थोप दी।

बरेल्वी जमाअत का तआरुफ और उनके फत्वे किताब्चा ऐसे खतर नाक धोका दही अंदाज में लिखा गया है कि हक़ीक़त से नावाक़िफ और ना–आश्ना हजरात गलत फहमी का शिकार हो कर आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी के खिलाफ ग़लत नज़रिया क़ायम कर के बेजा तौर पर मुखालिफ बन जाएं। इस किताब्चे के पर्दा नशीन मुसन्निफ ने मुजहिका खेज़ तरीक़े से हवाले नक़ल कर के कहीं की बात कहीं पर चस्पाँ कर के ज़ैद के इर्तिकाब से अमर को मुजरिम और क़ुसूरवार साबित करने की कोशिश की है। इस किताब्चा की चंद सुर्खियाँ ज़ैल में पैशे खिदमत हैं :–

- **डाक्टर इक़बाल पर कुफ्र का फत्वा** (हवाला : तजानिबे अहले सुन्नत, सफा : २८९, ३३४)
- **सर सय्यद अहमद खां पर कुफ्र का फत्वा** (हवाला : तजानिबे अहले सुन्नत, कोई सफा नंबर नहीं)
- **शिब्ली नौमानी पर कुफ्र का फत्वा** (हवाला : तजानिबे अहले सुन्नत, सफा : २८९)
- **अल्ताफ हुसैन हाली पर कुफ्र का फत्वा** (हवाला : तजानिबे अहले सुन्नत, सफा : ८६, ८७)

- **क़ाइदे आज़म मिस्टर जिन्नाह पर कुफ्र का फत्वा**
(हवाला : तजानिबे अहले सुन्नत, सफा : १२२)
- **ख्वाजा हसन निज़ामी पर कुफ्र का फत्वा**
(हवाला : तजानिबे अहले सुन्नत, सफा : १४६, १५०,१६०)
- **अहले हदीष औलोमा पर कुफ्र का फत्वा**
(हवाला : हुस्सामुल हरमैन, सफा : १३३)
- **औलोमाए देवबंद पर कुफ्र का फत्वा**
(हवाला : इरफाने शरीअत, हिस्सा : २, सफा : २९)

मुंदरजा बाला सुर्ख़ियाँ क़ायम कर के हर सुर्खी के नीचे चार, छे सतर का फकरा लिख कर इधर उधर की गप्पें हाँकी हैं। इन तमाम अकाज़ीब का मकसद सिर्फ और सिर्फ इमामे इश्क़ो मुहब्बत, आ'ला हज़रत, **इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी** के दामने बे-अैब को दागदार कर के आपकी शख्सियत को मजरूह करना है। अलावा अज़ीं मज़कूरा बाला अश्खास की हमदर्दी जता कर उन अश्खास के मुतअल्लिकीनो-मुतवस्सिलीन अफराद से दादो तेहसीन हासिल करना और दरपर्दा उनका तआवुन व ताईद हासिल कर के इन सबको भी इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी का मुखालिफ बना देना है।

लिहाज़ा.......

"बरेल्वी जमाअत का तआरुफ और उनके फत्वे" किताब्चे के **पर्दा नशीन मुसन्निफ** की अय्यारी व मक्कारी व फरैब दही का पर्दा चाक करने के लिए हमदर्दी जताए गए मज़कूरा बाला अश्खास में से हर एक की इन्फिरादी हक़ीक़तो हैसियत का इन्किशाफ हर एक की किताब में मज़कूरो मस्तूर अकवाल व अहवाल के साथ अलग अलग सुर्खी के ज़िम्न में तफसीलन मुन्कशिफ करते हैं।

किताब तजानिबे अहले सुन्नत

पर्दा नशीन मुसन्निफ ने बे-वुक़्अत किताब्चा की इब्तिदा में बरेली शहर और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी का मुख्तसर तआरुफ लिख कर किज़्बो-दरोग पर मुश्तमिल तमहीद लिख कर ज़हर उगला है और यहां तक लिख डाला कि :-

मौलाना (अहमद रज़ा) मौसूफ ने अपनी ज़िंदगी का मकसद यही बनाया कि तकफीर की मशीनगन चालू कर दी .... जहां कोई शख्स अल्लाह के दीन का ज़िक्र करता है, या खातिमुन्नबिय्यीन मुहम्मद ﷺ के मिशन की आबयारी के लिए कोशिश करता है या औलियाए किराम व औलोमा-ए दीन के नक्शे कदम पर चल कर दीन की महनत करने लगता है, उस पर कुफ्र का गोला दाग देते हैं। चुनांचे उनके फत्वों का नमूना मुलाहिज़ा फरमाएं।

इस तरह की झूठी तमहीद बांधकर उस के ज़िम्न में चंद मशहूरो मारूफ अश्खास का नाम लिख कर उन पर कुफ्र का फत्वा देने का रोना रोया गया है और जिन अश्खास पर कुफ्र का फत्वा दिए जाने का वावेला मचाया है, इस के सबूत में **"तजानिबे अहले सुन्नत"** किताब का हवाला दर्ज किया गया है।

हक़ीक़त से नावाक़िफ तो यही समझेगा कि **"तजानिबे अहले सुन्नत"** किताब आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी की तसनीफ फरमूदा किताब है और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ने अपनी किताब **"तजानिबे अहले सुन्नत"** में मज़कूरा बाला अश्खास को काफिर लिखा है।

पर्दा नशीन मुसन्निफ ने अपने किताब्चा में जिस **"तजानिबे**

अहले सुन्नत'' किताब का जिक्र किया है, उस के मुसन्निफ का नाम कहीं भी नहीं लिखा। ताकि लोग धोका खा कर उस किताब को आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी की किताब समझें। लैकिन हक़ीक़त ये है कि जिस ''**तजानिबे अहले सुन्नत**'' के हवाले दर्ज कर के पर्दा नशीन मुसन्निफ ने जो आठ वर्क़ी किताब्चा लिखा है, उस का पूरा नाम ''**तजानिब अहलि सुन्नति अन अहलिल फित्नते**'' है और इस किताब का तारीखी नाम ''इजतिनाबे अहले सुन्नते अन अहलिल फित्नते'' (१३६१) है। और इस किताब के मुसन्निफ का नाम हज़रत अल्लामा मौलाना **मुफ्ती मुहम्मद तय्यब साहब सिद्दीकी दानापूरी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान है। ये किताब हि. १३६१ में लिखी गई है। जबकि इमाम अहले सुन्नत, आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी का **सने वफात हि. १३४०** है। जिसका साफ मतलब ये है कि किताब तजानिबे अहले सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी के **दुनिया से पर्दा फरमाने के इक्कीस (२१) साल (21,Years) के बाद लिखी गई है**। लिहाज़ा इस किताब को आला हज़रत, इमाम अहले सुन्नत की किताब करार देना सरासर झूठ, छल, फरेब, धोका बाज़ी और तारीख़ की आँखों में धूल झोंकने के मुतरादिफ है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद तय्यब साहब दाना पूरी का सिर्फ इतना ही तआरुफ काफी है कि वो मज़हरे आला हज़रत, शेर बेशाए अहले सुन्नत, अबुल फतह, मुनाज़िरे आज़मे अहले सुन्नत, **हज़रत मौलाना हश्मत अली खां साहब** लखनवी सुम्मा पीलीभीती के शागिर्द रशीद थे। एक ज़ी-वक़ार आलिम, मुक़र्रिर, मुनाज़िर और मुसन्निफ की हैसियत से अहले सुन्नत के अवामो खवास में एहतिरामो अदब का मुकाम उन्हें हासिल था।

www.markazahlesunnat.net

खैर ! हासिले कलाम सिर्फ यही है कि ''तजानिबे अहले सुन्नत'' किताब हरगिज़ इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी की तसनीफ नहीं, लिहाज़ा इस किताब में मर्क़ूम बातों की ज़िम्मेदारी इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी के सर पर थोपी नहीं जा सकती और इस किताब के हवाले दर्ज कर के इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी पर किसी किस्म का इल्ज़ाम आइद करना सरासर ना-इंसाफी और खिलाफे अद्लो-दयानत है।

लैकिन......

इस का ये मतलब भी नहीं कि जब किताब ''**तजानिबे अहले सुन्नत**'' इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी की नहीं, तो इस में मुंदर्ज अहकाम गैर सही और गलत हैं। नहीं .... नहीं.... बैशक ''तजानिबे अहले सुन्नत'' किताब में इस के मुसन्निफ **हज़रत मौलाना मुहम्मद तय्यब दानापूरी साहब** ने जो लिखा है, वो हक़ाइक़ो-दलाइल की रोशनी में ही लिखा है। नाम निहाद क़ाइदीन और रहबरान मिल्लते इस्लामिया के खिलाफ जो शरई अहकाम नाफिज़ फरमाए हैं, वो सुनी सुनाई और कहता था और कहती थी, जैसी ज़ईफो-लाग़र शहादत पर मबनी नहीं बल्कि उनकी तसनीफ करदा कुतुब के ठोस हवालों से लिखा है। जो कुफ्रियात और दलालत के जुम्ले उन्होंने अपनी किताबों में नरी बकवास, तौहीन, गुस्ताख़ी, बे-अदबी और शरीअते मुतह्हरा के खिलाफ लिखे हैं, उन पर शरई गिरिफ्त फरमाई है और कुरआनो हदीस की रोशनी में उन पर शरई अहकाम सादिर फरमाए हैं। जिसका सही अंदाज़ा तो क़ारेईने किराम को ज़ेल में शुरू होने वाले ''**किस ने क्या लिखा ? और कौनसी किताब में लिखा ?**'' उन्वान के तहत मर्क़ूम तफ्सीली वज़ाहत के मुतालेआ से हो जाएगा।

किस ने क्या लिखा ? और कौनसी किताब में लिखा ?

पर्दा नशीन मुसन्निफ के आठ वर्की किताब्चा में जिन पर कुफ्र का फत्वा देने का वावेला मचाकर पेट, सर और पूरा जिस्म पीटा गया है, उस किताब्चा में जै़ल में मर्कूम अश्खास के लिए हमदर्दी का रोना रोया गया है :-

●मौलवी नज़ीर अहमद देहलवी (अहले हदीस) ●मौलवी कासिम नानोत्वी ●मौलवी रशीद अहमद गंगोही ●मौलवी अशरफ अली थानवी ●मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी ●सर सय्यद अहमद खां अलीगढी ●शिबली नौमानी आज़मगढी ●अल्ताफ हुसैन हाली ●ख्वाजा हसन निज़ामी ●मुहम्मद अली जिन्नाह ●डाक्टर मुहम्मद इक़बाल वगै़रा नामों का ज़िक्र किया है।

मज़कूरा अश्खास में से अल्लामा डाक्टर इक़बाल के सिवा तमाम के तमाम अक़ाइदे बातिला वहाबिया या नेचरया या इलहादिया के हामिल थे। जिसका सबूत हम मज़कूरा बाला अश्खास की ही लिखी हुई किताबों के हवालों से गोशे गुज़ारे क़ारेईन कर रहे हैं :-

ख्वाजा हसन निज़ामी

ख्वाजा हसन निज़ामी ने सूफी होने का ढोंग रचा कर अपने चाहने वालों का वसीअ हलक़ा खड़ा कर लिया था। पीरी मुरीदी का कारोबार भी उसने बड़ी धूम धाम से फैला रखा था। तसनीफो-तालीफ के फन का मुज़ाहिरा करते हुए बे-बाकाना, बातिलाना और मुरतद्दाना, मज़ामीन की खामाफरसाई के सबब उस की शख्सियत हमेंशा मुतनाज़ा रही है। अपने मुरीदीन, मोअतकिदीन और

मुतवस्सिलीन पर अपना रोबो-असर जमाने के लिए वो कश्फो-इल्हाम होने की गप्पें हाँकता रहता था और जहालतो-दलालत पर मुश्तमिल ढकोसले किस्म की मुहमलो-बेहूदा बकवासें किया करता था और अक्सरो बैशतर उस की बकवासें सरीह कुफ्र और इर्तिदाद भी हुवा करती थीं। यहां इतनी गुंजाइश नहीं कि वो तमाम बातें नक़ल की जाएं। ताहम क़ारेईने किराम की खिदमत में उस की किताबों के चंद इकतिबासात पेश करते हैं।

अलावा अज़ीं ख्वाजा हसन निज़ामी हिन्दुओं के देवता श्रीकृष्ण का पक्का भगत था। उसने कृष्ण को हिन्दुस्तान का हादी और खुदा का भेजा हुवा मक़बूल और मामूर बंदा लिखा है। श्रीकृष्ण के फज़ाइल, खसाइस और मोअजज़ातो-करामात के बयान में उसने एक मुस्तकिल किताब भी लिखी है। उस किताब का नाम "**कृष्ण बीती**" है। इस किताब के चंद वो इकतिबासात पैशे खिदमत हैं, जो उसने हिन्दुओं के श्री कृष्ण की अज़मत का मुज़ाहिरा करते हुए लिखे हैं :-

"**कृष्ण बीती**" मुसन्निफ :- ख्वाजा हसन निज़ामी :- (तीसरा ऐडीशन)

▣ कृष्ण कनहैया के जन्म का वक्त सुब्ह सादिक और सच्चाई का सवेरा लिख कर इस अंदाज़ में पैदाइश का बयान किया है, जैसे अहले इस्लाम **हुज़ूरे अकदस रहमते आलम** ﷺ की विलादते अकदस का बयान करते हैं :-

"आज ज़मीन के चेहरे पर वो आँख नमूदार होती है, जिसकी दीद खाको अफलाक तक को मुहीत है।"

फिर दो सतरों के बाद लिखता है कि :-

साफ सुनो ! इस्तिक़बाल को आगे बढ़ो। कृष्ण जी पैदा होते हैं। नूर की चादर तानो। इस सिर्रे इलाही को अग़यार की आँखों से बचाओ। छुपाओ, जल्दी छुपाओ। इब्लीस की

नज़र न लग जाए। बासुदेव ने गोद फैलाई। देवकी ने गोद उठाई। ख़ुदा की दैन का दोनों में लैन दैन हुवा। माता ने अपना दिया पिता की आगोश में दिया। पिता ने जगमगाता तार सीने से लगाया और बाहर का रास्ता लिया। नैक अवहिं मिट्टी की आँखों से पोशीदा उस नूर के पुतले के साथ हुई।

(हवाला :- "**कृष्ण बीती**" मुसन्निफ :- ख़्वाजा हसन निज़ामी।
(तीसरा ऐडीशन, **सफा नंबर : ३२**)

▣ ख़्वाजा हसन निज़ामी ने कृष्ण कनहैया की सेवा में सलाम पेश किया है कि :-

सलाम तुझ पर ए गरीब ग्वालिन की गोद ठंडी करने वाले
सलाम तुझ पर ए गुमनामों के नाम को चार चांद लगाने वाले

(हवाला :- "कृष्ण बीती", सफा : ३२)

▣ ख़्वाजा हसन निज़ामी ने कृष्ण कनहैया का मौत के बाद आस्मान पर उठा लिया जाना इस तरह लिखा है कि :-

"रिवायत है कि श्री कृष्ण वफात पाते ही आस्मान की तरफ उठ कर चले गए और फिर उनकी लाश का कहीं पता न लगा। कहते हैं ये बयान ख़ुश अकीदा लोगों का मनघड़त है। मगर इस में हैरत की क्या बात है। रूह तो हर हाल उनकी मुकामे आ'ला पर गई। जिस्म भी अगर ख़ुदा ने उठा लिया हो, तो क्या तअज्जुब है। क्या हज़रते ईसा (अलैहिस्सलातो वस्सलाम) मअ जिस्म के आस्मान पर तशरीफ नहीं ले गए थे। जो अब भी वहां मौजूद हैं।"

(हवाला :- "कृष्ण बीती", सफा : १५१)

कुफ्रियात से भरपूर दुआ जो ख़्वाजा हसन निजामी ने बैतुल मुक़द्दस में मांगी

ख़्वाजा हसन निज़ामी जब बैतुल मुक़द्दस (Jerusalem) गया, तब उसने मस्जिद अक्सा के सखरा यानी सुतून (Pillar) के करीब खड़े हो कर भरपूर कुफ्रियात पर मुश्तमिल एक दुआ मांगी थी। वहां से हिन्दुस्तान वापस आने के बाद उसने अपनी इस दुआ को रोज़नामा बातसवीर। सफर मिस्रो-शाम व हिजाज़ में शाए की थी। मज़कूरा दुआ हर्फ ब हर्फ ज़ेल में दर्ज है :-

ए रब्बुल आलमीन के मजाज़ी तख्त! कहते हैं कि तेरे पाए को पकड़ कर जो कुछ मांगा जाए, वो दिया जाता है। इस लिए आज मैं वो मांगता हूँ, जो आदम की नस्ल में किसी ने नहीं मांगा। उस नामालूम जोश से मांगता हूँ, जो किसी इन्सान को नहीं दिया गया, जो कुछ कहूं वो ज़ैबा है क्यूंकि इस वक्त मेरी शान आ'ला है। सुन, अगर तू सुन सकता है, नहीं तो मैं उस को मुखातब करूँगा जिसको तेरे वास्ते की ज़रूरत नहीं। जो समीओ बसीर है, जो दाना व बीना है। ए देने की ताकत रखने वाले! ज़रा मेरी हिम्मतो जुर्रत को देख। बुलबुला समंदर से बढ़ना चाहता है। ज़र्रा आफ्ताब को गहन लगाता है। धुआँ आग पर गालिब होने की फिक्र करता है। तेरी दी हुई दिलैरी से, तेरी बख्शी हुई ताकत से, इस हक़ीक़ते लदुन्नी से, जिसका

उस वक्त तेरे और मेरे सिवा कोई राज़दार नहीं। लिखा है **"इन्नल्लाह अला कुल्लि शयइन कदीर"** खुदा हर चीज़ पर कादिर है। तो आज अपनी कुदरत के कमाल का इम्तिहान दे। देखूं तुझ में कितनी कुदरत है, मालूम करूँ कि तू किस किस चीज़ पर कादिर है। अब्दियत की चादर से पांव निकालता हूँ। इसरारे वहदत के हुजरे में दाखिल होता हूँ। मेरा हुक्म है कि तार के खम्बे उखाड़ दिए जाएं। तार काट डाला जाए। बे-तार के बर्की इशारों को भी मस्दूद किया जाए। मैं आमने सामने हो कर इस हुनर से जो आज मुझे हासिल है। इस फन से जिसको मेरे सिवा कोई नहीं जानता। तुझ से हम कलाम हूँगा। मूसा को कोहे तूर के एक दरख्त पर जलवा दिखाकर बुलाया। मैं इस सखरा के सुतूँ में अपनी तजल्ली दिखा कर तुझको पुकारता हूँ। आ - और जूतीयां उतार कर आ - इस मुकद्दस ज़मीन का अदब कर। फिरऔन की तरफ तुझको नहीं भेजा जाएगा। उस का काम तमाम हो चुका। तुझको खुद तेरी हस्ती ना पाईदा किनार का रसूल बनाता हूँ। जा और उस को मेरा पयाम पहुँचा। ए समझ में न आने वाले वजूद! कब तक ये हिजाबे सब्र शिकन क़ायम रहेगा। उठादे, आ जा, मअबूदियत के सब जल्वे देख ले। खुदाई के कुल तमाशे मुलाहिज़ा कर लिए। किबरियाई व जबरूत की हर शान नज़र से गुज़र गई। अब ज़रा अब्दियत की सैर भी कर और चालीस दिन के वास्ते तख्ते रबूबियत से दस्त बरदार हो कर बंदों की सिफत में

आ बैठ और देख के इस शान में तूने क्या आखिर किया। सोज़ क्या कैफ पैदा किया है। तेरे दिले तमाशा परस्त की कसम! तू अपने बंदों की कैफियाते बंदगी में असराते उलूहियत से ज़्यादा लुत्फ देखेगा। तख्त खाली मत छोड़। चिल्ले भर के लिए मैं ये बोझ उठा सकता हूँ। हाँ हाँ मुझ में इस बार के तहम्मुल की हिम्मत है। तो देखे कि मेरी चालीस रोज़ा खुदाई किस आन बान की होती है। ताज पोशीए उलूहियत के बाद मेरा सब से पहला काम ये होगा कि तेरे दिल को मुहब्बत के नश्तर से ज़ख्मी किया जाए और ज़ख्म पर तसव्वुर की नमक पाशी हो, खूब तरसाऊंगा। अपनी सूरत नहीं देखने दूँगा। वाअदा वईद में टालूंगा। यहां तक कि तेरी बेकरारी, तेरा इज़तिराब हद से गुज़र जाए। तू आंसू उबलें, कलेजा उछले, मुँह को आए। और तू जाने बेबस बंदा खुद मुख्तार खुदा की दी हुई मुहब्बत से कैसी अजियत पाता है, फिराक उस पर कितने जुल्म तोड़ता है। माबूद के पर्दे में रहना बंदे के लिए तखैय्युलात को कैसे कैसे अवहाम में ग़लतां पेचां रखता है। मेरी खुदाई का ज़माना मुसावात का ज़माना है, सबकी ज़बान एक कुर दूंगा। सब के रंग यकसाँ बना दूंगा। उम्र के मदारिज बाकी नहीं रखूँगा, मर्ज़ और मौत मेरे अय्यामे उलूहियत में फना के पर्दे में रहेंगे। ग़म, फिक्र, गुस्सा को अपनी ताकते एज्दी से मिटा दूंगा। नसीहत और बंदों के खुद अमल दर आमद का मुंतज़िर नहीं रहूंगा। खाने पीने और हुसूले मआश के तफक्कुरात नापैद कर दिए जाऐंगे। रात-दिन का फर्क, सर्दी व गर्मी का तफावुत, तरी व खुश्की का इम्तियाज, मेरे

हाँ मफकूद होगा। नींद कैसी ? मैं अपने बंदों को हर वक्त होशयार रखूँगा। नींद की लज़्ज़त, बे इख्तियारी, सुनसानी ये सब मुझको इस्तिबदादी हुकूमत की चीज़ें मालूम होती हैं। इनका मेरे आज़ाद दौर में कुछ काम नहीं। तू क्या समझता है कि ये इन्किलाब तकलीफ देह होगा ? नहीं, नहीं। मैं खुदा ही किस काम का हूँगा। जो मेरे अफआल से तकलीफ पैदा हो, हर दुख को अपने दस्ते तवानाई से मिटाऊंगा। जब मेरी खुदाई के दिन पूरे होंगे, तो अैन चालीस्वें दिन अरब के एक बशर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के घर में उतरुंगा और तख्ते खुदाई तेरे हवाले कर दूँगा और फौरन उस नैक और मक़बूल बंदे शफी व उम्मत नवाज़ रसूल से अर्ज़ करूंगा कि वो तेरी दरगाह में मेरी खता की माफी चाहे और मेरी गुस्ताखियों की माज़िरत करे और कहे कि ए हक़ीक़त शनास परवरदिगारे आलम! अपने इस हद से गुज़रने वाले बंदे की मजज़ूबाना बातों से नाराज़ न हो। तू खुदा है और वो बंदा। वो छोटा है और तू बड़ा। **"अज़ खूर्दां खता-व अज़ बुज़ुर्गां अता।"**

हवाला :-
"रोजनामा बा-तस्वीर-सफर मिस्र व शाम व हिजाज़", मुअल्लिफ :- हसन निज़ामी, मतबूआ :- दिल्ली प्रिंटिंग वर्कस, अज़ सफा नंबर **: १०७ ता सफा नंबर : १०९**

मुंदरजा बाला इबारत में अल्लाह तबारक व तआला की शान में घिनौनी बे-अदबी, तौहीनो तमस्खुर, तज़लील व गुस्ताख़ी के

मुसलसल कुफ्रियात बके गए हैं। इस इबारत का हर जुम्ला काबिले गिरिफ्तो-सरज़निश है। अगर कुरआन और हदीस की रोशनी में मज़कूरा इबारत का रद्दे काहिरा लिखा जाए, तो एक ज़खीम किताब तसनीफ हो जाएगी। लिहाज़ा क़ारेईने किराम से इल्तिमास है कि हसन निज़ामी की इस इबारत के हर जुमले को शरीअते मुतह्हरा के कानून के तराज़ू में तौलें। इस इबारत में शाने उलूहियत की सख्त तौहीनो-तन्क़ीस जिस मस्खरा पन अंदाज़ में की गई है, ऐसी तौहीन तो किसी यहूदो-नसारा व मजूसो-हनूद ने भी न की होगी। आप खुद फैसला फरमाएं कि बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में ऐसी सख्त तौहीन और मस्खरा पन क्या कोई मुसलमान कर सकता है ?

हसन निज़ामी के नज़दीक कुरआने मजीद को अल्लाह तआला की किताब मानना और हुज़ूर ﷺ पर ईमान लाना ये दोनों बातें उसूले मज़हब से नहीं।

ख्वाजा हसन निज़ामी एक ऐसा खब्तुल हवास (**Deranged/ Insane**) शख्स था कि उसे इस्लाम के उसूली अक़ाइद का भी लिहाज़ नहीं था। उसने अपनी फासिद ज़हनी इख़तिरा और खब्तुल हवासी की मखमूरियत में ऐसी ऐसी घिनौनी और खिलाफे उसूल व अक़ाइदे इस्लाम बकवासें की हैं कि ईमान सल्ब हो जाना कोई बईद बात नहीं। सिख कौम कि जिसने तकसीमे हिन्द के वक्त सूबए पंजाब और अतराफ के इलाकों में मुसलमानों का बेदर्दी से क़त्ले आम किया। पाक दामन ख्वातीन की अस्मतदरी, बेक़सूर बच्चों को तहे तेग़ करना, मसाजिदो मक़ाबिर को आग लगा कर ताराज करना वग़ैरा मज़ालिम से अपनी बरबरियत का जो मुज़ाहिरा

किया है, उस पर तारीख़ के अवराक शाहिदे आदिल हैं और वो अवराक तारीख़ के स्याह अवराक की हैसियत से खून के आँसू बहा कर मातम कुनाँ हैं।

ऐसी ज़ालिमो स●फ्फाक सिख कौम से और सिख धर्म से ख्वाजा हसन निज़ामी इस कदर गरवीदा था कि इस्लाम के मुकाबले में सिख धर्म को और कौमे मुस्लिम के मुकाबले में सिख कौम को मोहज़्ज़ब, मुवह्हिद, बा–अखलाक़, हामिले हक़ और सदाक़त की राह पर गामज़न समझता था। बल्कि मुसलमानों के मुकाबिल सिखों को ज़्यादा अहमियत देता था। हालाँकि सिख कौम कुरआने मजीद को अल्लाह तआला का मुकद्दस कलाम और हुज़ूरे अकदस, सय्यदुल अम्बिया वल मुर्सलीन को अल्लाह तआला का नबी व रसूल नहीं मानती। इस के बावजूद भी ख्वाजा हसन निज़ामी सिख धरम और सिख कौम की तारीफो तौसीफ में ऐसा रतबुल्लिसान है कि वो कौमे मुस्लिम को सिख धर्म अपना ने की तलकीन करता है और इस्लाम व सिख धर्म में कोई फर्क़ न होने की रागनी के बे ढंगे सुर आलाप कर अपनी बद मज़हबियत का सबूत इस तरह पैश करता है कि :–

> मैं सिखों को मुसलमान करना नहीं चाहता, न मेरे अक़ीदे में सिखों को मुसलमान करने की ज़रूरत है, क्यूंकि उनमें कोई उसूली बात इस्लाम के खिलाफ मुझे मालूम नहीं होती। मुम्किन है कोई ऐसी बात सिख मज़हब में हो जो उसूले इस्लाम के खिलाफ हो। लैकिन बीस साल की ज़ाती मालूमात के भरोसे से कहता हूँ कि मुझे तो सिख मज़हब में उसूले इस्लाम के

www.markazahlesunnat.net

> खिलाफ कोई बात मालूम नहीं होती। बेशक हज़रत रसूलल्लाह ﷺ की रिसालत को सिख लोग तस्लीम नहीं करते, लैकिन इस रिसालत के मकसद को मानते हैं यानी हज़रत मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ दुनिया में खुदा का पैगाम लाए थे कि खुदा को एक मानो और उस की ज़ातो–सिफात में किसी को शरीक न बनाओ। और किसी ग़ैरे खुदा की इबादत न करो, जिस कदर सिख हैं वो भी सब खुदा को एक मानते हैं और उस की ज़ातो–सिफात में किसी ग़ैर को शरीक नहीं करते और किसी ग़ैरे खुदा की इबादत नहीं करते। गोया हज़रत मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ जो पैगाम अपनी रिसालत के जरीए लाए थे, उस को सिख कौम तमामो कमाल तस्लीम करती है। तो गो वो लफ्ज़े रिसालत को न माने मगर मकसद रिसालत को तो मानती है। फिर मुझे सिखों को मुसलमान करने की ख्वाहिश या सिखों में इशाअते इस्लाम के लिए कोई जोड़ तोड़ करने की क्या ज़रूरत है।
>
> **हवाला :–** "**रिसाला दरवेश**" मोरखा :– १५/दिसम्बर इ. १९२५, अज़ :– ख्वाजा हसन निज़ामी,
> जिल्द नंबर : ५ और ६, कालम नंबर : २, **सफा नंबर : १४**

▣ सिख धर्म और सिख कौम से हसन निज़ामी की वालेहाना कल्बी उल्फत और दिली लगाव का एक मज़ीद हवाला मुलाहिज़ा फरमाएं :–

सुनो मुसलमानो ! तुम मुवह्हिद हो। खुदा को एक मानते हो। सिख भी मुवह्हिद हैं, खुदा को एक मानते हैं। तुम ग़ैरे खुदा की इबादत नहीं करते। सिख भी ग़ैरे खुदा की इबादत नहीं करते और तौहीद मैं तुम्हारा उनका रास्ता एक है। तुम रसूलल्लाह ﷺ को अपना हादी और रसूल समझते हो। सिख भी अपने गुरु को खुदा का रास्ता बताने वाला हादी ख़याल करते हैं। तुम कुरआने मजीद को खुदा का कलाम तस्लीम कर के उस के अहकाम पर अमल करते हो। सिख भी ग्रंथ साहब किताब को अपने मज़हब का रहनुमा समझते हैं और उनके अहकाम पर अमल करते हैं। जो अखलाकी तालीम झूठ, गीबत, जुल्म, दगा, चोरी, ज़िना, नशा बाज़ी, वग़ैरा के खिलाफ तुम्हारे हाँ है, वही उनके हाँ है। जिन अच्छी अखलाकी बातों को इस्लाम ने ताकीद की है, उन्हीं अच्छी बातों को सिखों के हाँ ताकीद की है। तुम तहज्जुद के वक्त बैदार हो कर इबादत करते हो, सिख के हाँ भी पिछली रात को बैदार हो कर इबादत का हुक्म है। गरज़ तुम में और सिखों में कोई बात मज़हबी इख्तिलाफ की नहीं है। और जो है तो वो बहुत ही अदना और मामूली बात है। जिसका उसूले मज़हब से कोई तअल्लुक नहीं है।

हवाला :- "**रिसाला दरवेश**" मोरखा :- १५/दिसम्बर इ. १९२५, अज़ :- ख्वाजा हसन निज़ामी,
जिल्द नंबर : ५ और ६, कालम नंबर : १, **सफा नंबर : १३**

मुंदरजा बाला दोनों इबारात पर तबसेरा की कोई हाजत नहीं क्यूंकि दोनों इबारात में मज़कूर कुफ्रियात और ईमान कुश जुम्ले साफ लफ्ज़ों में लिखे हुए हैं। जिनको कारेईने किराम अच्छी तरह समझ सकते हैं। मुख्तसर ये कि नाम निहाद मुस्लेहे कौम और मक्कार सूफी ख्वाजा हसन निज़ामी ने कुरआने अज़ीम को अल्लाह तबारक व तआला की किताब माने बगैर और हुज़ूरे अकदस, जाने ईमान ﷺ की नबुव्वत व रिसालत का इक़रार किए बगैर भी सिख कौम हक पर है, ऐसा फासिद नज़रिया पेश करता है. कुरआने मजीद को अल्लाह तआला की किताब न मानना और हुज़ूर ﷺ को नबी व रसूल न मानना हरगिज ईमानो-इस्लाम के खिलाफ नहीं। बल्कि ख्वाजा हसन निजामी ने तो साफ लफ्ज़ों में इक़रार किया है कि हुज़ूरे अकदस, जाने ईमान ﷺ की रिसालत पर ईमान लाना और कुरआने मजीद को अल्लाह तआला का कलाम मानना, ये दोनों बातें बहुत ही अदना और मामूली हैं। जिनका मज़हब के उसूल से कोई भी तअल्लुक नहीं। (मआज़ल्लाह)

मिल्लते इस्लामिया का इत्तिफाक व इजमा है और ये मस्अला उसूले दीन से है कि कोई शख्स हज़ार साल तक सिर्फ "**ला-इलाहा-इल्लल्लाह**" की माला जपता रहे, खुदा को एक, खुदा ही को मा'बूदो-मस्जूद, खुदा को "**वहदहु ला शरीकलहू**" सच्चे दिल से माने, खुदा की ज़ातो सिफात में किसी को शरीक न करे, खुदा के सिवा किसी दूसरे की इबादत, परसतिश, पूजा व बंदगी न करे, मगर कल्मा शरीफ के दूसरे जुज़ "**मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह**" को न माने और हुज़ूरे अकदस, जाने ईमान ﷺ पर ईमान न लाए या कुरआने मजीद को अल्लाह तआला का कलाम न माने और सिर्फ तौहीद .... तौहीद .... के कैफ में गर्क़ रहे और रिसालत को न माने, तो उस का

तौहीद का लाख मर्तबा बल्कि करोडों मर्तबा भी इक़रार करना बेसूद है। वो शख्स हरगिज़ मो'मिन व मुसलमान नहीं। हसन निज़ामी सिखों की मुहब्बत में अंधा हो कर कहता है कि :-

"बेशक हज़रत रसूलल्लाह ﷺ की रिसालत को सिख लोग तस्लीम नहीं करते, लैकिन इस रिसालत के मकसद को मानते हैं यानी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ दुनिया में ख़ुदा का पैगाम लाए थे कि ख़ुदा को एक मानो .... जिस कदर सिख हैं, वो भी सब ख़ुदा को एक मानते हैं। .... फिर मुझे सिखों को मुसलमान करने या मुसलमान करने की ख्वाहिश करने या सिखों में इशाअते इस्लाम के लिए कोई जोड़ तोड़ करने की क्या ज़रूरत है।"

(**हवाला :-** पूरी इबारत लफ्ज़ ब लफ्ज़ मा-हवाला व सफा नंबर के इस किताब के सफा नंबर : (१८४) पर नक़ल की गई है।)

बल्कि ......

क़ारेईने किराम को हैरत का झटका लगे ऐसी रज़ील बात ख्वाजा हसन निज़ामी ने कही है कि :-

"अगर तुम इन्साफ व अक्ल से गौर करोगे, तो ख़ुद मान लोगे कि हम गलती पर हैं और हमको सिखों से ऐसी मामूली बात पर इख़्तिलाफ न करना चाहिए।"

इस इबारत में ख्वाजा हसन निज़ामी साफ बकवास करते हुए कहता है कि मुसलमान ग़लती पर हैं और सिख धर्म सच्चा मज़हब है। हुज़ूरे अकदस, जाने ईमान ﷺ की रिसालत पर ईमान लाना और क़ुरआने अज़ीम को अल्लाह तआला का कलाम मानना, ये दोनों बातें ऐसी हैं कि जिसकी वजह से सिखों से इख़्तिलाफ करना मुसलमानों की ग़लती है। अगर

मुसलमान अक्लो इन्साफ से ग़ौरो-फिक्र करें, तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि इस्लाम और सिख धर्म में कोई उसूली इख़्तिलाफ है ही नहीं। जिस तरह मुसलमान मुवह्हिद हैं, इसी तरह सिख भी मुवह्हिद हैं। सिख कौम के लोग भी मुसलमानों की तरह एक ख़ुदा की इबादत करते हैं और शिर्क नहीं करते। रहा सवाल रिसालत पर ईमान लाने का। तो रिसालत पर ईमान लाना कोई उसूली बात नहीं बल्कि मामूली बात है। इसी तरह क़ुरआने मजीद को अल्लाह तआला की किताब मानना। लिहाजा इस्लाम और सिख धर्म उसूल में बराबर हैं। (मआज़ल्लाह)

अगर मआज़ल्लाह हुज़ूर ﷺ की रिसालत और क़ुरआने मजीद के कलामे इलाही होने का मुन्किर काफिर नहीं बल्कि अल्लाह तआला को एक और अल्लाह तआला को ही माबूद मानने वाला होने की वजह से गलती पर नहीं, तो फिर अबू जहल व अबू लहब को क्यूं काफिर और ग़लती पर कहा जाता है? हक व बातिल और कुफ्र व इस्लाम के इम्तियाज़ के लिए हुज़ूरे अकदस, जाने ईमान ﷺ की नबुव्वतो रिसालत का इक़रार या इनकार ही मदारे असली है। सिर्फ अल्लाह की तौहीद को मानना और रसूल की रिसालत का इन्कार करना, ईमान और हक्क़ानियत के लिए काफी नहीं।

ख्वाजा हसन निज़ामी सिर्फ तौहीद के इक़रार को उसूले इस्लाम को तस्लीम करने के मुतरादिफ गर्दान कर सिखों पर ऐसा वारफ्ता और गरवीदा हुवा था कि उसने अपनी मौत के वक्त किसी सिख के ज़ानू पर अपना सर होने की ख्वाहिश और तमन्ना का इज़्हार किया था। हवाला पैशे खिदमत है :-

"मेरा दिल चाहता है कि जब मैं मरूँ, तो मेरा सर किसी सिख दोस्त के ज़ानू पर हो ।"

हवाला :-
ख्वाजा हसन निज़ामी ने १२/दिसम्बर ई. १९२५ के रोज़ **अंजुमने अंसारुल मुस्लिमीन** के जलसे में जो खुत्बा पढ़ा था और वो खुत्बा "**रिसाला दरवेश**" जिल्द नंबर **:** ५ और ६ में मोरखा **:** १५/ दिसम्बर ई. १९२५ के **सफा नंबर : १२** पर शाए हुवा है ।

क़ारेईने किराम फैसला फरमाएं कि वो ख्वाजा हसन निजामी जिसने हिन्दुओं के देवता कृष्ण कन्हैया को ●सिर्रे इलाही और अन्वारे इलाही का पुतला कहा । ● कृष्ण कन्हैया को वह्दत का समंदर कहा । ● कृष्ण कन्हैया को खुदा का मक़्बूल कहा । ● कृष्ण कन्हैया पर सलाम पढ़ा । ● कृष्ण कन्हैया को अक़्लीमे वह्दत का बादशाह लिखा । ● कृष्ण कन्हैया को दीन का पेश्वा और हादी लिखा । ● उसे इश्क़े हक़ीक़ी का मज़्हर बताया । ● गोपियों के साथ उस की इश्क़ बाज़ीयों को इश्क़े हक़ीक़ी का पाक जज़्बा ठहराया । ● उस को एक बड़ी क़ौम की रहबरी पर अल्लाह तआला का मामूर बताया । ● एक मुर्दा बच्चे को जिंदा कर देने का मोजिज़ा दिखाने वाला कहा । ●मौत के बाद कृष्ण कन्हैया के जिस्म को मिस्ले हज़्रत ईसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम उड़ कर आसमान पर चला जाना बताया । ●हिन्दुओं के अवतार और अम्बिया-ए-किराम में कुछ फर्क नहीं और दोनों के एक ही मअनी हैं, ऐसा लिखा ।

अलावा अजीं पढ़ने वाले के रौंगटे खड़े हो जाएं ऐसी ख़तरनाक दुआ बैतुल मुक़द्दस में मांगी और फिर उसे छाप कर

www.markazahlesunnat.net

मुश्तहिर की । सिख धर्म के लिए अपने क़ल्बी तअस्सुरात का मुज़ाहिरा किया, जो सरासर कुफ्रो-इर्तिदाद पर मुश्तमिल हैं ।

इन तमाम बकवास व कुफ्रियात की वजह से अहले सुन्नत व जमाअत के एक ज़िम्मेदार आलिम ने उस पर बहुक्मे शरीअत कुरआनो-हदीस के दलाइले काहिरा की रोशनी में कुफ्र का हुक्म सादिर किया, तो दौरे हाज़िर के वहाबी देवबंदी मुल्लाने सर, छाती, पेट और सब कुछ पीट कर वावेला मचाते हैं कि हाय ! हाय ! देखो ! देखो ! ज़ुल्म हो गया ! ख्वाजा हसन निज़ामी को काफिर का फत्वा दे दिया । हम सिर्फ इतना ही जवाबन अर्ज़ करते हैं कि सरीह कुफ्रियात, तौहीने शाने उलूहियत और दीगर खिलाफे ईमान व उसूले दीन के ख्वाजा हसन निज़ामी की बकवासें जो हमने बहवाला नक़्ल की हैं, इन कुफरी बकवासों के बाद एक आलिमे दीन तो क्या बल्कि एक अवामी सतह का आम मुसलमान भी ख्वाजा हसन निज़ामी को मुसलमान नहीं मानेगा । हिन्दू धर्म के वैद को आस्मानी किताब यानी अल्लाह तबारक व तआला का कलाम बताने वाले ख्वाजा हसन निज़ामी को क्या फिर्क़ए वहाबिया - देवबंदिया के मुत्तबईन सच्चा मो'मिन व मुसलमान मानते हैं ?

लाखों, करोड़ों, अरबों, खरबों बल्कि अन गिनत सहीहुल अकीदा मुसलमानों को बेधड़क काफिरो मुशरिक का फत्वा देने वाले वहाबी, देवबंदी धर्म के औलोमा व मुत्तबईन ख्वाजा हसन निज़ामी के कुफ्रियात पर पर्दा डाल कर उस की हिमायत और हमदर्दी में मकरो फरैब का रोना क्यूं रोते हैं ?

सर सय्यद अहमद ख़ां अलीगढी

सर सय्यद अहमद खां कि जिसने "**अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सीटी**" क़ाइम की है, उसने कौमे मुस्लिम को आ'ला तालीम देने के पर्दे में "**नेचरीयत**" की बला और वबा में मुब्तेला कर के उनके ईमानो अक़ाइद को मुतज़लज़ल कर के दीन से मुन्हरिफ करने का ऐसा शातिराना रोल अदा किया है कि कौमो-मिल्लत को आ'ला तालीम और दीनी खिदमत के इवज़ में उसे दाइमी तौर पर सवाबे जारीया के बजाय कौमो-मिल्लत का ईमान बरबाद करने का "अज़ाबे नारीया व जारीया" की सऊबतों से दो-चार होना पड़ रहा होगा।

सर सय्यद अहमद ख़ां ने अपने ज़हनी ख़ुराफ़ात, तबई इखतिराआत और नेचरी खयालात के शुब्हात के दामे फरेब में लाखों की तादाद में तालीम याफ्ता नौजवानों को फाँस कर उन्हें दीन से मुन्हरिफ कर दिया। अपने नेचरी खयालाते फासेदा और तखय्युलाते बातिला को हक़ व सदाक़त के साँचे में ढालने के लिए उसने **अल्लाह तबारक व तआला** के मुक़द्दस कलाम "**क़ुरआने मजीद**" का सहारा लिया। कुरआने मजीद की आयात के मन चाहे मतालिब और तफासीर बयान कर के उस के ज़िम्न में अलफाज़ की हेराफेरी और मज़मून की तुक बंदी के मकरो फरैब से इस्लाम के बुनियादी अक़ाइद की तकज़ीब और कुरआने मजीद की खुल्लम खुल्ला मुखालेफ्त की। बल्कि कुरआने मजीद में मज़कूर अम्बिया व मुर्सलीन के वाकिआतो-मोजिज़ात को झुठलाने के लिए इन वाकिआत और

मोजिज़ात को नेचरीयत के ग़ैर मौजूं तराज़ू में तौल कर, उन्हें मश्कूक बल्कि बेअसल व बे-सबात साबित करने की मज़मूम व रजील हरकत की है।

क़ारेईने किराम को ये मालूम कर के हैरत होगी कि कुरआने मजीद की सदाकतो हक्कानियत में शक्को-शुबहात के शोशे व शगूफे छोड़कर कुरआने मजीद की तकज़ीब करने वाले "**पीरे नेचर अली गढी**" ने बे-हयाई और बेशरमी का मुज़ाहिरा करते हुए कुरआने मजीद की तफसीर लिखने की भी जुर्रत की है और कुरआने मजीद की तफसीर की आड़ में गुमराहियत, बे दीनीयत और नेचरीयत की नश्रो-इशाअत की मज़मूम हरकते कबीहा की है। कुरआने मजीद की आयाते मुकद्दसा की तफसीर के नाम से इस्लाम के बुनियादी अक़ाइद की तकज़ीबो-तन्क़ीस व तज़लील कर के सरीह कुफ्रियात पर मुश्तमिल अपने नेचरी खयालाते फासेदा का मुज़ाहिरा किया है। यहां तक कि वही लाने वाले फरिश्ते **हज़रत जिबरईल** अलैहिस्सलातो वस्सलाम के वजूद का भी इन्कार किया है। अलावा अज़ीं अरकाने हज, एहराम, ख़ानए-काबा, जन्नत, दोज़ख वग़ैरा का ठट्ठा और मस्खर उड़ाते हुए साफ इन्कार किया है।

यहां इतनी गुंजाइश नहीं कि पीरे नेचरीयत सर सय्यद अहमद ख़ां के तमाम कुफ्रियात तफसील के साथ बयान करें। ताहम क़ारेईने किराम की ज़ियाफ्ते तबअ की खातिर चंद इकतिबासात गौशे गुज़ार करते हैं:-

हज़रत जिबरईल और वही का इन्कार :-

पीरे नेचर सर सय्यद अहमद ख़ां ने हज़रत जिबरईल का साफ इन्कार करते हुए अपनी तफ्सीर में लिखा है कि :-

खुदा और पैगम्बर में बजुज उस मल्क-ए नबुव्वत कि जिसको नामूसे अकबर और ज़बाने शरई में जिबरईल कहते हैं और कोई एलची पैगाम पहुंचाने वाला नहीं होता। उस का दिल ही वो आईना होता है, जिसमें तजल्लियाते रब्बानी का जल्वा दिखाई देता है और उस का दिल ही वो एलची होता है, जो खुदा के पास पैगाम ले जाता है और खुदा का पैगाम ले कर आता है। वो खुद ही वो मुजस्सम चेहरा होता है, जिसमें से खुदा के कलाम की आवाजें निकलती हैं। वो खुद ही वो कान होता है, जो खुदा के बे-हर्फ व बे-सौत कलाम को सुनता है। खुद ही उस के दिल से फव्वारा के मानिंद वही उठती है और खुद ही उस पर नाज़िल होती है। उस का अक्स उस के दिल पर पड़ता है, जिसको वो खुद ही इल्हाम कहता है। उस को कोई बुलवाता नहीं बल्कि वो खुद ही बोलता है और खुद ही कहता है। **"वमा-यनत्किु-अनिल-हवा, इन-हुव-इल्ला-वह्यूंय्-यूहा"** जो हालात व इरादात ऐसे दिल पर गुज़रते हैं, वो भी ब मुकतजाए फितरते इन्सानी और सब के सब कानूने फितरत के पाबंद होते हैं। वो खुद अपना कलामे नफ्सी इन ज़ाहिरी कानों से, इसी तरह

सुनता है, जैसे कोई दूसरा शख्स उस से कह रहा है। वो खुद अपने आपको उन ज़ाहिरी आँखों से इस तरह देखता है, जैसे दूसरा शख्स उस के सामने खड़ा हुवा है।

इन वाकिआत के बतलाने को अगरचे ये क़ौल याद आता है कि **"कद्रे-ई-बादा-नदानी - बखुदा तान चिश्ती"** मगर हम बतौरे तमसील के गो वो कैसी ही कम रुत्बा हो, उस का सुबूत देते हैं। हज़ारों शख्स हैं, जिन्होंने मजनूनों की हालत देखी होगी। वो बगैर बोलने वाले के अपने कानों से आवाज़ें सुनते हैं। तन्हा होते हैं मगर अपनी आँखों से अपने पास किसी को खड़ा हुवा, बातें करता हुवा, देखते हैं। वो सब उन्हीं के ख्यालात हैं, जो सब तरफ से बे-ख़बर हो कर एक तरफ मसरूफ और सब में मुस्तगरक हैं और बातें सुनते हैं और बातें करते हैं। पस ऐसे दिल को जो फितरत की रू से तमाम चीज़ों से बे-तअल्लुक़ और रुहानी तरबियत पर मसरूफ और उस में मुसतगरक हो, ऐसी वारदात का पैश आना, कुछ भी खिलाफे फितरते इन्सानी नहीं है। हाँ, इन दोनों में इतना फर्क है कि पहला मजनून है और पिछला पैग़म्बर। गो कि काफिर पिछले को भी मजनून बताते हैं।

हवाला :- "तसानीफे अहमदिया", हिस्सा अव्वल, जिल्द सोम, मुश्तमिल बर कुतुबो-रसाइले मज़हबी, **"तफसीरे कुरआन"** अज़ :- सर सय्यद अहमद ख़ां, **जिल्द अव्वल,** तफ्सीरे सूरतुल फातेहा। तफ्सीरे सूरतुल बकरह, **सफा नंबर : २९,** सने तबाअत हि.१२९७, मुताबिक ई.१८८०
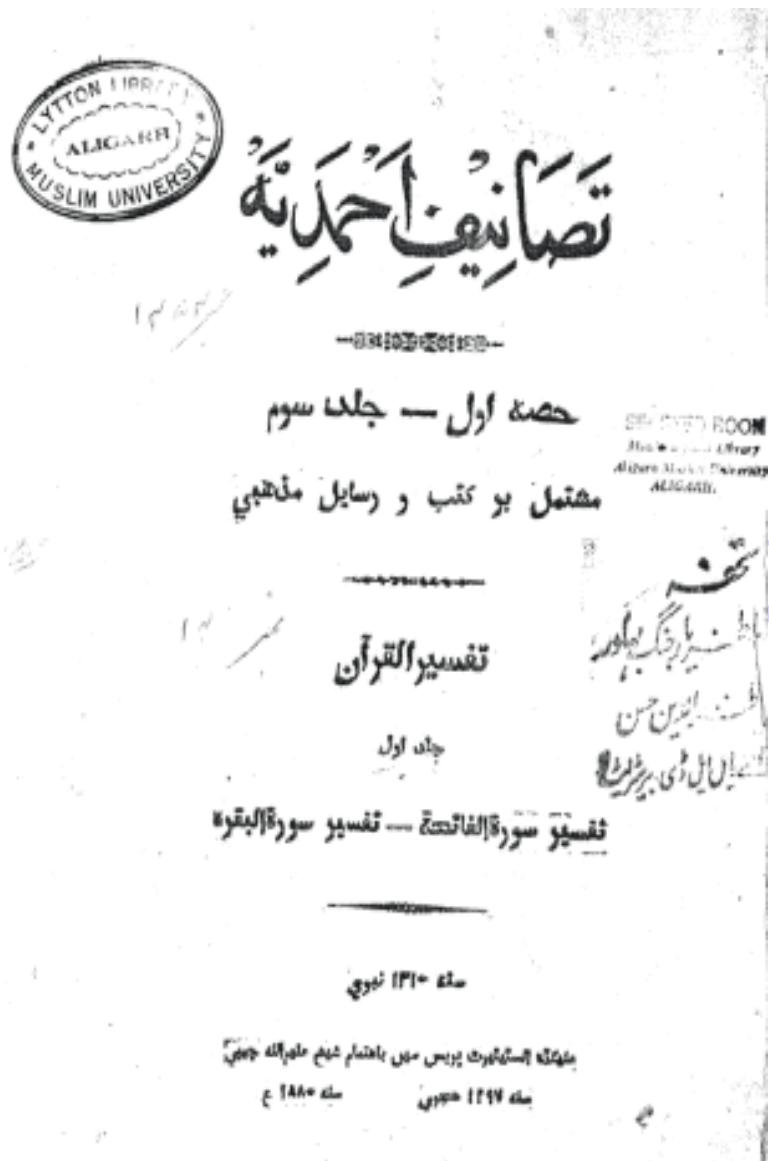
▣ मुंदरजा बाला इबारत वाली किताब का टाइटल सफा :-

تصانیفِ احمدیہ

حصہ اول — جلد سوم

مشتمل بر کتب و رسایل مذہبی

تفسیر القرآن

جلد اول

تفسیر سورۃ الفاتحۃ — تفسیر سورۃ البقرہ

سنہ ۱۳۱۰ نبوی

مطبع ... پریس میں باہتمام ... چھپی

سنہ ۱۲۹۷ ہجری سنہ ۱۸۸۰ ع

www.markazahlesunnat.net

▣ मुंदरजा बाला इबारत का अक्स अस्ल सफा :-

اپنے بندے پر

جاتے ہیں اسی طرح یہہ ملکہ بھی قوی ہوتا جاتا ہے، اور جب اپنی پوری قوت پر پہونچ جاتا ہے، تو اس سے وہ ظہور میں آتا ہے جو اسکا مقتضی ہوتا ہے، جسکو عرف عام میں بعثت سے تعبیر کرتے ہیں *

خدا اور پیغمبر میں بجز اس ملکہ نبوت کے جس کو ناموس اکبر اور زبان شرع میں جبرئیل کہتے ہیں اور کوئی ایلچی پیغام پہونچانے والا نہیں ہوتا، اس کا دل ہی وہ آئینہ ہوتا ہے جس میں تجلیات ربانی کا جلوہ دکھائی دیتا ہے، اس کا دل ہی وہ ایلچی ہوتا ہے جو خدا پاس پیغام لیجاتا ہے اور خدا کا پیغام لیکر آتا ہے، وہ خود ہی وہ متجسم چیز ہوتا ہے جس میں سے خدا کے کلام کی آوازیں نکلتی ہیں، وہ خود ہی وہ کان ہوتا ہے جو خدا کے بے حرف و بے صوت کلام کو سنتا ہے، خود اسی کے دل سے فوارہ کی مانند وحی اٹھتی ہے، اور خود اسی پر نازل ہوتی ہے، اسی کا عکس اس کے دل پر پڑتا ہے، جس کو وہ خود ہی الہام کہتا ہے، اس کو کوئی نہیں بلواتا بلکہ وہ خود بولتا ہے، اور خود ہی کہتا ہے " و ما ینطق عن الہوی ان ہو الا وحی یوحی " *

جو حالات و واردات ایسے دل پر گذرتے ہیں، وہ بھی بمقتضائے فطرت انسانی اور سبکے سب قانون فطرت کے پابند ہوتے ہیں، وہ خود اپنا کلام نفسی ان ظاہری کانوں سے اسی طرح پر سنتا ہے جیسے کوئی دوسرا شخص اس سے کہہ رہا ہے — وہ خود اپنے آپکو ان ظاہری آنکھوں سے اس طرح پر دیکھتا ہے، جیسے دوسرا شخص اس کے سامنے کھڑا ہوا ہے *

ان واقعات کے بتلانے کو، اگرچہ یہہ قول یاد آتا ہے کہ " قدر این بادہ ندانی بخدا تا نہ چشی " مگر ہم بطور تمثیل کے، گو وہ کیسی ہی کم رتبہ ہو اس کا ثبوت دیتے ہیں، ہزاروں شخص ہیں جنہوں نے مجنونوں کی حالت دیکھی ہوگی، وہ بغیر بولنے والے کے اپنے کانوں سے آوازیں سنتے ہیں، تنہا ہوتے ہیں مگر اپنی آنکھوں سے اپنے پاس کسی کو کھڑا ہوا باتیں کرتا ہوا دیکھتے ہیں، وہ سب انہیں کے خیالات ہیں، جو سب طرف سے بے خبر ہوکر ایک طرف مصروف اور اس میں مستغرق ہیں، اور باتیں سنتے ہیں اور باتیں کرتے ہیں، پس ایسے دل کو جو فطرت کی روسے تمام چیزوں سے بے تعلق، اور روحانی تربیت پر مصروف اور اس میں مستغرق ہو، ایسی واردات کا پیش آنا کچھہ بھی خلاف فطرت انسانی نہیں ہے، ہاں ان دونوں میں اتنا فرق ہے کہ پہلا مجنون ہے، اور پچھلا پیغمبر، گو کہ کافر پچھلے کو بھی مجنون بتاتے تھے *

▣ पीरे नेचर सर सय्यद अहमद ख़ां की तफ्सीर की मुंदरजा बाला इबारत में इस्लामी अक़ाइद की खुल्लम खुल्ला तरदीदो तकज़ीब और कुफ्रियात की भरमार है। चंद अहम नुक्क़ात की तरफ क़ारेईने किराम की तवज्जोह मुल्तफित की जाती है :–

- अम्बिया व मुर्सलीन अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम ने अपनी उम्मतों के सामने जो कलामे इलाही पैश किया है, वो हरगिज़ अल्लाह तबारक व तआला का कलाम नहीं, बल्कि वो उन अम्बिया व मुर्सलीन के दिलों के ख्यालात थे। जो पानी के फव्वारे की तरह उनके दिलों से निकले और फिर उन्हीं के दिलों पर नाज़िल हुए।
- जिबरईल अलैहिस्सलातो वस्सलाम किसी हस्ती का नाम नहीं, बल्कि फरिश्तों का कोई वजूद ही नहीं। हज़ारों लोगों ने पागलों की हालत देखी होगी कि पागल अपनी दिमागी बीमारी की वजह से ऐसे वह्मो–गुमान में होता है कि मेरे पास कोई खड़ा हुवा है और मुझ से गु●फ्तगू कर रहा है। हालाँकि हक़ीक़त ये है कि वहां कोई भी मौजूद नहीं होता, ये सब उस पागल के पागलपन के वहम व खयालात होते हैं। इसी तरह लोगों की इस्लाह, हिदायत और तर्बीयत में मस्रूफ होने की वजह से पैग़म्बर भी यही समझता है कि खुदा का पैगाम और कलाम ले कर जिबरईल आया है और मेरे पास खड़ा है। और मुझ से गु●फ्तगू कर रहा है। हालाँकि हक़ीक़त ये है कि वहां कोई भी मौजूद नहीं होता, ये सब उस पागल के पागलपन के वहमो–खयालात होते हैं। इसी तरह लोगों की इस्लाह, हिदायत और तर्बीयत में मस्रूफ

www.markazahlesunnat.net

होने की वजह से पैगम्बर भी यही समझता है कि खुदा का पैगाम और कलाम ले कर जिबरईल आया है और मेरे पास खडा है। जिबरईल नाम के फरिश्ते ने मुझ तक खुदा का ये पैगाम और कलाम पहुंचाया है। लैकिन हक़ीक़त ये है कि न जिबरईल का वजूद है और न किसी फरिश्ते का वजूद है। बल्कि ये सब उस पैगम्बर के दिल के खयालात हैं, जो उसे फरिश्ते की शक्ल में नज़र आते हैं। (मआज़ल्लाह)

★ अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के बानी और पीरे नेचरीयत सर सय्यद अहमद खां की तफ्सीर की मुंदरजा बाला इबारत में हस्बे ज़ैल कुफ्रियात हैं :–

▣ तमाम अम्बिया व मुर्सलीन को झूठा बताया कि वो अपने दिलों के वहम और खयालात को अल्लाह तबारक व तआला का कलाम ठहराया। कलामे इलाही के नाम से अपने दिल के वहम और खयालात को अपनी उम्मत में फैलाया।

▣ हज़रत जिबरईल और तमाम फरिश्तों के वजूद का इन्कार किया।

▣ तौरेत, ज़बूर, इंजील और कुरआन व दीगर अल्लाह तआला की किताबों को मआज़ल्लाह इन्सानी खयालात ठहराया और तमाम आस्मानी किताबों का कलामे इलाही होने से साफ इन्कार किया।

सर सय्यद अहमद ख़ां की मज़कूरा कुफ्री इबारत पर मज़ीद तबसेरा न करते हुए उनके मज़ीद कुफ्रियात बहुत ही इखतिसार के साथ हम दर्ज कर रहे हैं। ताकि क़ारेईने किराम पीरे नेचर की फासिद, परागंदा और तश्वीश नाक ज़हेनियत से आगाह होने की मालूमात हासिल कर सकें।

कुरआन में जिन फरिश्तों का ज़िक्र है उस का साफ इन्कार

इस्लाम के बुनियादी अक़ाइद और अरकान, जिन पर ईमान व इस्लाम का दारोमदार है, ऐसे अक़ाइदो-अरकान का पीरे नेचरीयत ने साफ लफ़्ज़ों में इन्कार किया है और इस्लाम के अरकान हज वग़ैरा का मज़ाक उड़ाया है। फरिश्तों का साफ और सरीह लफ़्ज़ों में इन्कार करते हुए यहां तक लिख मारा कि :-

> **कुरआने मजीद से फरिश्तों का ऐसा वजूद कि मुसलमानों ने एतिकाद कर रखा है, साबित नहीं होता, बल्कि बर-खिलाफ उस के पाया जाता है।**
>
> **हवाला :-** "**तसानीफे अहमदिया**", हिस्सा अव्वल, जिल्द सोम, मुश्तमिल बर कुतुबो-रसाइले मज़हबी, "**तफसीरे कुरआन**" अज़ :- सर सय्यद अहमद खां, जिल्द अव्वल, तफसीरे सूरतुल फातेहा। तफसीरे सूरतुल बकरह, **सफा नंबर : ४९**

▣ तफसीरुल कुरआन के इसी **सफा नंबर : ४९** पर ही चंद सतरों बाद लिखा है कि :-

> जिन फरिश्तों का कुरआन में ज़िक्र है, उनका कोई अस्ली वजूद नहीं हो सकता. बल्कि ख़ुदा की बे-इन्तेहा कुदरतों के ज़हूर को और उनके कुवा को जो ख़ुदा ने अपनी तमाम मख़्लूक में मुख्तलिफ किस्म के पैदा किए हैं, मलक या मलाइका कहा है। जिनमें से एक शैतान या इब्लीस भी है। पहाड़ों की सलाबत, पानी की रिक़्क़त, दरख़्तों की कुव्वते नुमू, बर्क़ की कुव्वते जज़्ब व दफा, गरज़ कि तमाम कुवा, जिनसे मख़्लूकात मौजूद हुई हैं और जो मख़्लूकात में हैं, वही मलक व मलाइका हैं, जिनका ज़िक्र कुरआने मजीद में आया है। इन्सान एक मजमूअए-कुवा-ए मलकूती और कुवा-ए बहीमी का है। और इन दोनों कुव्वतों की बे-इन्तिहा जुर्रियात हैं। जो हर एक किस्म की नैकी व बदी में ज़ाहिर होती हैं और वही इन्सान के फरिश्ते और उनकी जुर्रियात और वही इन्सान के शैतान और उस की जुर्रियात हैं।
>
> **हवाला :- अयज़न**

■ **मुंदरजा बाला दोनों इबारात के असल सफे का अक्स :-**

[۴۸]　　　سورۃ الم البقرۃ ۲　　　[۳۹]

کہ میں زمین میں

میں کہتا ہوں کہ جس طرح انسان سے فروتر مخلوق کا ایک سلسلہ ہم دیکھتے ہیں اسی طرح انسان سے برتر مخلوق ہونے سے انکار کرنے کی کوئی دلیل نہیں ہے' شاید کہ ہوں گو وہ کیسی ہی عجیب اور نا قابل یقین ہو --- مگر ایسی خلقت کے در حقیقت موجود ہونے کی بھی کوئی دلیل نہیں ہے' کیونکہ اس بات کا ثبوت کہ ایسی خلقت ہے' نہیں ہے' قران مجید سے فرشتوں کا ایسا وجود جیسا کہ مسلمانوں نے اعتقاد کر رکھا ہے ثابت نہیں ہوتا' بلکہ برخلاف اُس کے پایا جاتا ہے' خدا فرماتا ہے " و قالو لولا انزل علیہ ملک و لو انزلنا ملکا لقضی الامر ثم لا ینظرون --- و لو جعلناہ ملکا لجعلناہ رجلاً وللبسنا علیہم ما یلبسون " یعنی کافروں نے کہا کہ کیوں نہیں بھیجا پیغمبر کے ساتھ فرشتہ' اور اگر ہم فرشتہ بھیجتے تو بات پوری ہو جاتی اور تعمیل میں نہ ڈالے جاتے' اور اگر ہم فرشتہ ہی پیغمبر کرتے تو اُس کو آدمی ہی بناتے اور بلا شبہ اُن کو ایسے ہی شبہہ میں ڈالتے جیسے کہ اب شبہہ میں پڑے ہیں --- اس آیت سے پایا جاتا ہے کہ فرشتے نہ کوئی جسم رکھتے ہیں اور نہ دکھائی دے سکتے ہیں' اُن کا ظہور بلا شمول مخلوق موجود کے نہیں ہوسکتا " لجعلناہ رجلاً " قید احترازی نہیں ہے' اس جگہہ انسان بحث میں تھا اس لیئے " لجعلناہ رجلا " فرمایا ورنہ اُس سے مراد علم موجود مخلوق ہے *

ان باریک باتوں پر غور کرنے سے اور اس بات کے سمجھنے سے کہ خدا تعالیٰ جو اپنے جاہ و جلال اور اپنی قدرت اور اپنے افعال کو فرشتوں سے نسبت کرتا ہے تو جن فرشتوں کا قران میں ذکر ہے اُنکا کوئی اصلی وجود نہیں ہوسکتا بلکہ خدا کی بےانتہا قدرتوں کے ظہور کو اور اُن قویٰ کو جو خدا نے اپنی تمام مخلوق میں مختلف قسم کے پیدا کیئے ہیں ملک یا ملائکہ کہا ہے' جن میں سے ایک شیطان یا ابلیس بھی ہے --- پہاڑوں کی صلابت' پانی کی رقت' درختوں کی قوت نمو' برق کی قوت جذب و دفع' غرضکہ تمام قویٰ جنسے مخلوقات موجود ہوئی ہیں اور جو مخلوقات میں ہیں' وہی ملایک و ملائکہ ہیں جن کا ذکر قران مجید میں آیا ہے' انسان ایک مجموعہ قوائے ملکوتی اور قوائے بہیمی کا ہے' اور ان دونوں قوتوں کی بے انتہا ذریات ہیں' جو ہر ایک قسم کی نیکی و بدی میں ظاہر ہوتی ہیں' اور وہی انسان کے فرشتے اور اُن کی ذریات' اور وہی انسان کے شیطان اور اُس کی ذریات ہیں *

بعض اکابر اہل اسلام کا بھی یہی مذہب ہے جو میں کہتا ہوں' اور امام محی الدین ابن عربی نے فصوص الحکم میں یہی مسلک اختیار کیا ہے' شیخ عارف باللہ مریدالدین

■ मुंदरजा बाला इबारात में पीर नेचरीयत सर सय्यद अहमद खान कहता है कि अल्लाह तबारक व तआला ने कुरआने मजीद में जिन फरिश्तों का जिक्र फरमाया है, उन फरिश्तों का कोई असली वजूद ही नहीं और उन फरिश्तों का मौजूद होना भी मुम्किन नहीं, बल्कि अल्लाह तबारक व तआला ने अपनी हर मख्लूक में मुख्तलिफ किस्म की कुव्वतें रखी हैं, इन कुव्वतों को अल्लाह तआला ने फरिश्ता कहा है। जिनमें से एक शैतान भी है। अल्लाह तआला ने पहाड़ों में सख्ती, (**Strongness**) पानी में रवानी, दरख्तों में बढ़ने की और बिजली में किसी चीज़ को खींचने और फेंकने की जो ताकत रखी है, बस इन्हीं कुव्वतों का नाम फरिश्ता है। इन्सान में जो नैकी की कुव्वतें हैं, वही उस के फरिश्ते हैं और इन्सान के अंदर बुराई और गुनाह करने की जो कुव्वतें हैं, वही उस के शैतान हैं। (मआज़ल्लाह)

इस्लाम के बुनियादी अक़ाइद में से एक अक़ीदा ये है कि **फरिश्तों का मुस्तकिल वजूद मानना ज़रूरियाते दीन में है।** कुरआने मजीद की सदहा आयाते मुबारका और हज़ारहा अहादीसे करीमा में इस की तस्रीह और वज़ाहत मौजूद है। **फरिश्तों के वजूद का इन्कार करना कुफ्र है।**

ख़ानए काबा के तवाफ की हक़ारत

पीरे नेचरीयत, सर सय्यद अहमद ख़ां अलीगढी अपनी तफसीरुल कुरआन में लिखता है कि :-

हक़ीक़ते हज हमारी समझ में ये है, जो हमने बयान की। जो लोग ये समझते हैं कि इस पत्थर के बने हुए चोखून्टे घर में एक ऐसी मुतअद्दी बरकत है कि जहां सात दफा उस के गिर्द फिरे और बहिश्त में चले गए। ये उनकी खाम खयाली है। कोई चीज़ सिवाए ख़ुदा के मुकद्दस नहीं है। उसी का नाम मुक़द्दस है और उसी का नाम मुकद्दस रहेगा। उस चोखून्टे घर के गिर्द फिरने से क्या होता है? उस के गिर्द तो ऊंट और गधे भी फिरते हैं, वो तो कभी हाजी न हुए। फिर दो(२) पांव के जानवर को इस के गिर्द फिर लेने से हम क्यूंकर हाजी जानें? हाँ जो यकीनन हज करे वो हाजी है।

हवाला :- ''**तसानीफे अहमदिया**'', हिस्सा अव्वल, जिल्द सोम, मुश्तमिल बर कुतुबो-रसाइले मज़हबी, ''**तफसीरे कुरआन**'' अज़ :- सर सय्यद अहमद ख़ां, जिल्द अव्वल, तफसीरे सूरतुल फातेहा। तफसीरे सूरतुल बकरह, **सफा नंबर:** २५२, मतबुआ :- ई.१८८०

मुंदरजा बाला इबारत पर कुछ भी तबसेरा न करते हुए हज के लिबास एहराम के तअल्लुक से सर सय्यद अहमद ख़ां के खयालाते फासेदा मुलाहिज़ा के लिए पैश हैं :-

एहराम की तज़लीलो तौहीन

एहराम के वक्त तेहबंद बाँधने और बगैर कता किया हुवा कपड़ा पहनने का भी कुरआने मजीद में कहीं

जिक्र नहीं है। मगर इस में कुछ शक नहीं कि इस का रिवाज ज़मानए जाहिलियत से बराबर चलता आ रहा था और इस्लाम में भी क़ायम रहा। ये पोशाक जो हज के दिनों पहनी जाती है, वो इबराहीमी ज़माने की पोशाक है। हज़रत इबराहीम के ज़माने में दुनिया ने सिवीलेजीशन (**Civilization**) में जो तमद्दुनी उमूर (**Social Intimacy**) से इलाका रखती है, कुछ तरक्की नहीं की थी। वो कतअ किया हुवा कपड़ा बनाना नहीं जानते थे। उस जमाने की पोशाक यही थी कि एक तेह्बंद बांध लिया। किसी को अगर कुछ ज़्यादा मयस्सर हुवा, तो एक टुकड़ा कपड़े का बतौरे चादर के ओढ़ लिया। सर को ढाँकना और कतअ किया हुवा कपड़ा पहनना किसी को नहीं मालूम था। हज जो उस बुड्ढे ख़ुदापरस्त की इबादत की यादगारी में क़ाइम हुवा था, जिसने बहुत सोच बिचार कर कहा था।

''اِنِّی وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ۔''

तो इस इबादत को इसी तरह और इसी लिबास में अदा करना करार पाया था, जिस तरह और जिस लिबास में उसने की थी। मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ ने शुरू सवीलेजीशन के ज़माने में भी उसी वह्शयाना सूरत और वह्शयाना लिबास को हमारे बुड्ढे दादा की इबादत की यादगारी में क़ाइम रखा।

हवाला :- अयज़न - सफा नंबर : २४६

क़ारेईने किराम की खिदमत में इल्तिमास है कि **सर सय्यद अहमद ख़ां अलीगढी** की गुमराह कुन **"तफसीरुल कुरआन"** से चंद मज़ीद इक्तिबासात हम पैश कर रहे हैं। इन इक्तिबासात में इस्लाम के उसूली अक़ाइदो अरकान का इन्कार, तज़लील, तौहीन, हक़ारत और तमस्खुर किया गया है। पहले हम मुख्तलिफ उनावीन से इक्तिबासात पैश करते हैं। बादहू इन तमाम इक्तिबासात पर मजमूई तबसेरा व तन्क़ीद करेंगे। ताकि क़ारेईने किराम को पीर नेचरीयत अलीगढी के फासिद ज़हन में भरी हुई बे-दीनी और नेचरीयत की ग़लाज़त का सही अंदाजा मालूम हो सके और सही वाकफियत हासिल हो सके।

फरीज़ए हज के निफाज़ की हक़ारत

अरकाने इस्लाम में से एक रुक्न हज्जे बैतुल्लाह शरीफ है। मुसलमान सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तबारक व तआला की रज़ा और खुश्नूदी हासिल करने की निय्यते सालेह से हज का फरीज़ा अदा करता है। इस्लाम के इस अहम रुक्न को नेचरीयत की ऐनक लगा कर पीरे नेचर अपनी गुमराह कुन तफसीर में लिखता है कि :-

हज की हक़ीक़त

जब कि हज़रत इस्माईल मक्के में आबाद हुए और इबराहीम ने काबे को बनाया, तो और कौमें जो गिर्दो नवाह में ख़ाना ब-दोश फिरती थीं, वहां आ कर आबाद हुईं और जैसा कि दस्तूर है उस मुकद्दस मस्जिद की ज़ियारत को लोग आने लगे। वहां कोई ज़ियारत

की चीज़ बजुज़ बे छत की मस्जिद की दीवारों के और कुछ न थी। जो कुछ ज़ियारत थी, वो यही थी कि लोग जमा हो कर उस ज़मानए कदीम के वहशयाना तरीके पर खुदा की इबादत करते थे। नंगे सर, तेहबंद बंधा हुवा, नंग धडंग, उन दीवारों के गिर्द जो खुदा के घर के नाम से बनाई गई थीं, उछलते और कूदते और हलक़ा बांध कर चौगिर्द फिरते थे। जिसका अब हमने तवाफ नाम रखा है। हज़रत इबराहीम ने बगर्ज़े आबादीए मक्का और तरक़्क़ीए तिजारत ये बात चाही कि लोगों के आने और ज़ियारत करने और इस मुकाम पर इबादते माबूद के बजा लाने के लिए, अय्यामे खास मुक़र्रर किए जाएं, ताकि लोगों के मुतफर्रिक़ आने के बदले मौसमे खास में मजमा कसीर हुवा करे और सब मिलकर खुदा की इबादत बजा लाएं और मक्के की आबादी और तिजारत को तरक़्क़ी हो .... आँ हज़रत ﷺ ने भी इस रस्म को उन्हीं अग़राज़ के लिए जारी रखा। जिस गर्ज़ से कि हज़रत इबराहीम ने मुक़र्रर की थी।

हवाला :- "तसानीफे अहमदिया", हिस्सा अव्वल, जिल्द सोम, मुश्तमिल बर कुतुबो-रसाइले मज़हबी, **"तफसीरे कुरआन"** अज़ :- सर सय्यद अहमद ख़ां, जिल्द अव्वल, तफसीरे सूरतुल फातेहा। तफसीरे सूरतुल बकरह, **सफा नंबर : २४९/२५०**

नेचरीयत का सौदागर और बे दीनीयत का ताजिर खालिसन-लिवजहिल्लाह अदा किए जानेवाले इस्लाम के अहम

रुक्न फरीज़ए-हज को ताजिराना नुक्तए नज़र (Commercial View) से देख रहा है और साफ लिख दिया है कि हज सिर्फ तिजारत की ग़र्ज़ से मुक़र्रर किया गया है। हवाला पैशे खिदमत है :-

> मौसमे हज को सिर्फ तिजारत की ग़रज़ से मुक़र्रर किया गया था। ताकि कौम इस से फायदा उठावे और उन अय्याम में अरब की कौमें क़ाफ्लों के लूटने और आपस में लड़ाई झगड़ों से बाज़ रहें। वही तमाम तरीक़े जो हज की निस्बत इबराहीम के वक्त से चले आथे थे, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ ने भी क़ाइम रखे।
>
> **हवाला :-** "**तसानीफे अहमदिया**", हिस्सा अव्वल, जिल्द सोम, मुश्तमिल बर कुतुबो-रसाइले मज़हबी, "**तफसीरे कुरआन**" अज़ :- सर सय्यद अहमद खां, **जिल्द अव्वल**, तफसीरे सूरतुल फातेहा। तफसीरे सूरतुल बकरह, **सफा नंबर : २५०**

अब हम चंद ऐसे इक्तिबासात क़ारेईने किराम की खिदमत में पैश कर रहे हैं कि जिनको देखकर एक गैरतमंद मो'मिन का रोंगटा खड़ा हो जाएगा :-

सजदे का इन्कार करने की वजह से शैतान को अल्लाह तआला ने निकाल दिया। ये भानुमती का खेल है।

(मआज़ल्लाह)

क़ुरआने मजीद, पारा **:** १, सूरतुल बकरा की **आयत नंबर : ३४** में है कि शैतान ने अल्लाह तआला के हुक्म की नाफरमानी करते हुए हज़रते आदम अलैहिस्सलातो वस्सलाम को सजदा करने से इन्कार किया। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने उसे निकाल दिया। इसी तरह हज़रते आदम से मुमानिअत के बावजूद गेहूं का दाना खाने की लग़ज़िश हुई। लिहाज़ा उन्हें जन्नत से निकल कर दुनिया में आना पड़ा। इन दोनों वाकिआत को पीरे नेचर "**भानुमती का तमाशा**" कह कर अल्लाह तबारक व तआला की शान में तौहीन व बे-अदबी करता है। हवाला पैशे खिदमत है :-

> ख्वाह तुम ये समझो कि खुदा और फरिश्तों में मुबाहिसा हुवा और शैतान ने खुदा से ना-फरमानी की और आदम भी गेहूँ का दरख्त खा कर खुदा का नाफरमां बरदार हुवा ख्वाह में यूं समझूं कि इस बड़े तमाशे करने वाले ने जो भानुमती का एक तमाशा बनाया है। इस के राज़ को इसी भानुमती के इस्तिलाहों में बताया है।
>
> **हवाला :-** "**तसानीफे अहमदिया**", हिस्सा अव्वल, जिल्द सोम, मुश्तमिल बर कुतुबो-रसाइले मजहबी, "**तफसीरे कुरआन**" अज़ :- सर सय्यद अहमद खां, जिल्द अव्वल, तफसीरे सूरतुल फातेहा। तफसीरे सूरतुल बकरह, **सफा नंबर : ६९**

जन्नत, जन्नत की नेअमतों और जन्नतियों को **"जन्नती हूरों"** की इनायत व तोह्फा को पीरे नेचर अलीगढी **"बेहूदा पन"** और **"खुराफात"** कह कर तमस्खुर करता है और जन्नत के इन इनआमात व अतइय्यात के मुकाबले मौजूदा दौर के फहश इर्तिकाबात और अय्याशी को हजार दर्जा बेहतर कह रहा है। हवाला ज़ैल में मुलाहिजा फरमाएं :–

> ये समझना कि जन्नत मिस्ल एक बाग के पैदा हुई है, उस में संगे मरमर के और मोती के जड़ाऊ महल हैं। बाग में शादाब व सरसब्ज़ दरख्त हैं। दूध, शराब, शहद की नदियाँ बह रही हैं। हर किस्म का मेवा खाने को मौजूद है। साकी साकनें निहायत ख़ूबसूरत चांदी के कंगन पहने हुए, जो हमारे यहां की घोसनें पहनती हैं, शराब पिला रही हैं। एक जन्नती एक हूर के गले में हाथ डाले पड़ा है, एक ने रान पर सर धरा है, एक छाती से लिपटा रहा है, एक ने लबे जाँ बख्श का बोसा लिया है। कोई किसी कोने कुछ कर रहा है, कोई किसी कोने में कुछ। ऐसा बेहूदा पन है, जिस पर तअज्जुब होता है। अगर बहिश्त यही हो, तो बे मुबालगा हमारे खुराबात इस से हज़ार दर्जे बेहतर हैं।
>
> **हवाला :–** **"तसानीफे अहमदिया"**, हिस्सा अव्वल, जिल्द सोम, मुश्तमिल बर कुतुबो–रसाइले मज़हबी, **"तफसीरे कुरआन"** अज़ :– सर सय्यद अहमद खां, जिल्द अव्वल, तफसीरे सूरतुल फातेहा। तफसीरे सूरतुल बकरह, **सफा नंबर : ४०**

यहां तक हमने पीरे नेचर सर सय्यद अहमद ख़ां अली गढी के खुराफात पर मुश्तमिल कुफ्रियात उस की किताब **"तफसीरुल कुरआन"** से नक़्ल किए हैं। हालाँकि ऐसे सैंकड़ों कुफ्रियात उस की तफसीर और दीगर कुतुब में दस्तयाब हैं। उन तमाम का इहाता करना यहां नामुमकिन है। तूले तहरीर के खौफ से इख़्तिसार करते हुए चंद इक्तिबासात क़ारेईने किराम की खिदमत में पैश किए हैं। उन तमाम का मा–हसल ये है कि :–

- तौरेत, जबूर, इंजील, कुरआन शरीफ और दीगर आसमानी कुतुब हरगिज़ अल्लाह तबारक व तआला का कलाम नहीं बल्कि अम्बिया व मुर्सलीन के दिलों के खयालात हैं।
- अम्बिया व मुर्सलीन ने अपने दिलों के खयालात को अल्लाह का कलाम कह कर अपनी अपनी उम्मतों के सामने पैश कर के फैलाया। यानी झूठ बोल कर उम्मतों को धोका दिया।
- हज़रत जिबरईल और दीगर फरिश्तों का वजूद ही नहीं। लिहाज़ा कोई भी फरिश्ता अल्लाह तआला की तरफ से वही ले कर किसी भी नबी के पास नहीं आया।
- जिस तरह किसी पागल को ऐसा वहम व गुमान होता है कि मेरे पास कोई खड़ा है और बातें कर रहा है। बिलकुल इसी तरह अम्बिया व मुर्सलीन को भी पागलों की तरह ऐसा वहमो–गुमान होता है कि मेरे पास भी कोई खड़ा है और बातें करता है। पस इसी वह्मो–गुमान के फर्जी मुतकल्लिम को वो फरिश्ता समझता है और उस की बातों को अल्लाह तआला की वही गुमान करता है। लैकिन हक़ीक़त ये है कि न कोई फरिश्ता है और न कोई पैगामे इलाही है, बल्कि ये

सब उनके मिस्ल पागल के दिलों के खयालात होते हैं। इसी वजह से तो काफिरों ने उन्हें पागल कहा। हालाँकि उम्मती उनको अल्लाह तआला का पैग़म्बर गरदानते हैं।

▣ कुरआने मजीद में अल्लाह तआला ने जिन फरिश्तों का ज़िक्र फरमाया है, उन फरिश्तों का कोई वजूद ही नहीं, बल्कि किसी फरिश्ते का मौजूद होना ना मुमकिन है।

▣ मुसलमानों में फरिश्तों के वजूद का जो अकीदा राइज है, वो एक अंधी अकीदत (Bind Faith) है, बल्कि हक़ीक़त उस के खिलाफ है।

▣ जिन बातों और ताक़तों को फरिश्ते की कुव्वत समझा जा रहा है, वो हक़ीक़त में अल्लाह तआला ने इन्सानों में और दूसरी मख्लूक में जो ताकतें रखी हैं, वो हैं। जैसे कि पहाड़ की सख्ती, पानी की रवानी (Fluency), बिजली की खीचने और फेंकने (Shouck/Jerk) की ताकत वग़ैरा ही दर असल फरिश्ता हैं।

▣ बल्कि इन्सान में नैकी करने की जो ताकत है, वही उस का फरिश्ता है।

▣ पत्थर से तामीर शूदा ख़ानए काबा के इर्द-गिर्द तवाफ करने से जन्नत मिलती है, ये लोगों का खामो-खयाल (Vain Imagination/वहम) है। लोग ख़ानए काबा शरीफ को मुकद्दस समझते हैं। ये भी ग़लत खयाल है। सिर्फ खुदा ही मुकद्दस है। उस का नाम मुक़द्दस है। उस के सिवा कोई मुकद्दस नहीं।

▣ जो शख्स ख़ानए काबा का तवाफ कर के यानी हज कर के आता है, उसे लोग हाजी कहते हैं। हालाँकि ख़ानए काबा

www.markazahlesunnat.net

के इर्द-गिर्द तो ऊंट और गधे भी फिरते हैं। उन्हें क्यूं हाजी नहीं कहा जाता? दो पांव वाला ख़ानए काबा के इर्द-गिर्द फिरे तो वो हाजी बन जाए और चार पांव वाला फिरे तो कुछ भी नहीं?

▣ एहराम के वक्त बगैर क़तअ किया हुवा यानी बगैर तराशा हुवा यानी बगैर सिला हुवा (Un-Stich) कपड़ा पहनना, ये ज़मानए जाहिलियत का रिवाज है। ज़मानए जाहिलियत का ये रिवाज इस्लाम में भी क़ायम रहा है।

▣ ज़मानए जाहिलियत में लोग इतने ग़ैर तरक्की याफ्ता (Backwards) थे कि उन्हें कपड़ा सीना नहीं आता था। लिहाज़ा वो बगैर सिलाई का एक कपड़ा जिस्म के नीचे के हिस्से पर लपेट लेते थे और अगर किसी को कुछ ज़्यादा मयस्सर हो गया, तो एक कपड़ा बतौर चादर के जिस्म के ऊपर के हिस्से पर ओढ़ लिया। सिला हुवा कपड़ा बनाना और पहनना किसी को मालूम ही नहीं था। लिहाज़ा वो यही वह्शयाना यानी जंगली (Brute/Beast) लिबास पहनते थे।

▣ हज हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम की यादगार के तौर पर क़ायम हुवा है और हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम के ज़माने में लोग ज़मानए जाहिलियत का जंगली लिबास यानी बगैर क़तअ किया हुवा कपड़ा पहनते थे। लिहाज़ा इस्लाम में भी हज का फरीज़ा अदा करते वक्त एहराम पहनने में भी यही जंगली लिबास और जंगलियों जैसी सूरत बनाकर हज करने का तरीक़ा हमारे बडे दादा यानी हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम की यादगार के तौर पर क़ायम रखा गया है।

- हज की हक़ीक़त सिर्फ इतनी है कि जब ख़ानए काबा तामीर हुवा, तो उस के अतराफ में वो लोग आबाद हुए जो ख़ाना-ब-दोश (House Flourish) थे, जो वह्शयाना तरीक़े पर ख़ानए काबा की दीवारों के इर्द-गिर्द उछलते, कूदते और हलक़ा बांध कर चारों तरफ चक्कर लगाते थे, जिसे अब हम तवाफ कहते हैं। हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने मक्का की आबादी और तिजारत की तरक्की की ग़रज से अय्यामे हज के खास दिन मुक़र्रर किए थे।
- हज का मौसम सिर्फ तिजारत की ग़रज के नुक्तए-नज़र (Business View Point) से क़ायम हुवा है। ताकि लोग इस से फायदा उठावें यानी खरीदो फरोख्त के ज़रीए तिजारत को तरक्की दें। डाका ज़नी और झगड़े फसाद से बाज़ रहें। जिन अगराज़ो मकासिद से हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने हज का मौसम क़ायम किया था, वही हज की निस्बत के तमाम तरीक़े हज़रत मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ ने भी क़ायम रखे हैं। यानी मकसदे तिजारत।
- शैतान हज़रत आदम को सजदा न करने के सबब और हज़रत आदम अलैहिस्सलातो वस्सलाम गेहूँ का दाना खा कर ना फरमाने हुक्मे खुदा हुए। ये दोनों वाकिआत के वजूद में आने का राज़ सिर्फ इतना है कि बडे तमाशे करने वाले (मआज़ल्लाह) अल्लाह तआला ने भानुमती की इस्तिलाह में ये तमाशा बताया है।
- जन्नत की नेअमतें मस्लन आलीशान महल, शादाब बाग, दूध, शहद और शराब की नदियाँ, पैकरे हुस्नो जमाल हूरें, जो जन्नती जवान का दिल बहला रही हैं। ये तमाम दिल

लुभाने की हरकतें ऐसा बेहूदा पन (Immoral/Absurd) हैं, जिस पर तअज्जुब होता है।

- जन्नत में हूरों के साथ जन्नतियों की दिलजोई की हरकतें ऐसा बेहूदा पन हैं कि इस से हमारे खुराबात हज़ार दर्जा बेहतर हैं। खुराबात यानी शराब ख़ाना, क़ुमार खाना, फिस्को-फुजूर का अड्डा (हवाला :-फीरोज़ुल्लुगात, सफा : ५८८) यानी जन्नत के ऐशो आराम के जो सामान मोहिय्या हैं, उनसे हमारे खुराबात यानी रंडी ख़ाने (Brothel), शराब फरोश (Drunkard) और ज़ानी व शहवत परस्त (Debauchee) हज़ार दर्जा अच्छे हैं।

क़ारेईने किराम से इलतिमास

पीरे नेचर सर सय्यद अहमद ख़ां अलीगढी के हफ्वातो-हिज़यान पर मुश्तमिल मुख्तसर मगर तफसीली बहस क़ारेईने किराम के गोशे गुज़ार करने के बाद अब क़ारेईने किराम की आली जनाब में मोअद्दबाना इल्तिमास है कि पीरे नेचर अली गढी ने अपनी रुस्वाए ज़माना तफसीर में इस्लाम के बुनियादी अक़ाइदो-अरकान पर जो कारी ज़र्बें मारी हैं, उस के तअल्लुक से आपकी खिदमत में एक सवाल बहैसियते दर ख्वास्त अर्ज़ है कि **क्या कोई मुसलमान ऐसी गुमराहियत व दलालत आमेज़ बातें केह सकता है ? और लिख सकता है ?** हरगिज़ नहीं. एक अवामी सतह का और मज़दूर पैशा शख्स भी ऐसी बात नहीं केह सकता। कहना और लिखना तो दर किनार, ऐसा तसव्वुर भी नहीं कर सकता। क़ारेईने किराम अपने ईमान से लबरेज़ दिल पर हाथ रख कर ग़ौरो फिक्र करें कि ऐसी गुमराहियत व दलालत पर मुश्तमिल और ईमान सोज़ बातें लिख कर क्या कोई भी शख्स ईमान के दायरे में रेह सकता है?

हैरत तो **"जमीअते अहले हक जम्मूं व कश्मीर"** नाम की लापता और फर्जी तेहरीक और **"बरेल्वी जमाअत का तआरुफ और उनके फत्वे"** के बे-नामो-निशान, पर्दा नशीन, बुज़दिल और ना-मर्द मुसन्निफ पर होता है कि इमाम इश्क़ो-महब्बत, **इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान के साथ अंधी अदावत और क़ल्बी शक़ावत के मुज़िर व मोहलिक जज़्बे से मुतास्सिर हो कर पीरे नेचरीयत सर सय्यद अहमद ख़ां अली गढी की हिमायतो-हमदर्दी में पेट के दर्द का मुज़ाहिरा सर पीटकर कर रहा है।

अहले सुन्नत व जमाअत के और बिल खुसूस मक्तबए फिक्र बरेल्वी जमाअत के औलोमा-ए हक़ के खिलाफ अय्यारी व मक्कारी की सदाए बाज़गश्त बुलंद कर के इमाम अहमद रज़ा मुहक्किक बरेल्वी के खिलाफ ज़हर उगलने वाले मक्तबए देवबंद के हामी और **"बरेल्वी जमाअत का तआरुफ और उनके फत्वे"** नाम की झूठ का पुलंदा किताब के नामर्द और हिजड़े मुसन्निफ की हालत **"उलझा है पांव यार का ज़ुल्फे दराज़ में -:- खुद आप अपने दाम में सय्याद आ गया"** का मिस्दाक बनने जैसी हो गई है। शायद उन्हें मालूम नहीं होगा कि जिस पीरे नेचर अली गढी की हिमायत में कुफ्र के फत्वे का उन्होंने वावेला मचाया है, उस पीरे नेचर अली गढी को खुद उनके मुक्तदा व पैश्वा और नाम निहाद हकीमुल उम्मत व मुजद्दिद मौलवी अशरफ अली थानवी साहब ने क्या फरमाया है ?

पीरे नेचर अली गढी पर थानवी साहब का फत्वा

एक साहब ने अर्ज़ किया कि सर सय्यद की वजह से ज़्यादा हिन्दुस्तान में गड़बड़ फैली, लोगों के अक़ाइद खराब हुए। फरमाया कि गड़बड़ क्या मअना ? उस शख्स की वजह से हज़ारों लाखों मुसलमानों के ईमान तबाह और बरबाद हो गए। एक बहुत बड़ा गुमराही का फाटक खुल गया। इस के असर से अक्सर नेचरी ईमान से कोरे होते हैं।

हवाला :-

(१) **"अल इफादातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौमिया"** जिल्द नंबर : ३, हिस्सा : ६, मलफूज़ : ३५१, **सफा : २५८**, नाशिर : मक्तबए दानिश। देवबंद, सने तबाअत : ई. १९९९, हि. १४१९

(२) **मलफूज़ाते हकीमुल उम्मत जिल्द नंबर : ६** में शामिल किताब "अल इफादातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौमिया" जिल्द नंबर : ६, मलफूज़ : ३५१, सफा : ३०३ नाशिर : इदारा शरइय्या - देवबंद - सने तबाअत : ई. २०११

(३) **"अल इफादातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौमिया"** जिल्द नंबर : ३, किस्त : ५, मलफूज़ : ७६७, **सफा : ४७२**, नाशिर : मक्तबए दानिश। देवबंद, सने तबाअत : ई. १९८९, हि. १४०९

मुंदरजा बाला इबारत में देवबंदी मक्तबए फिक्र के मुजद्दिद व हकीमुल उम्मत, **मौलवी अशरफ अली थानवी** ने पीरे नेचरीयत **सर सय्यद अहमद ख़ां अली गढी** के लिए हस्बे ज़ैल जुम्ले कहे हैं :-

- **"इस (सर सय्यद अहमद ख़ां अली गढी) की वजह से हज़ारों लाखों मुसलमानों के ईमान तबाहो-बरबाद हो गए"** ईमान का तबाह और बरबाद होना यानी काफिर होना। अगर कोई शख्स इस्लाम से मुनहरिफ हो कर काफिरो मुर्तद हो जाता है, तो ऐसे शख्स के लिए यही कहा जाता है कि **"इस का ईमान तबाहो बरबाद हो गया।"**
- बक़ौल थानवी साहब सर सय्यद अहमद ख़ां अली गढी ऐसा **"काफिर"** था कि उसने हज़ारों बल्कि लाखों मुसलमानों को काफिर बना दिया. यानी पीरे नेचरीयत अहमद अली गढी सिर्फ काफिर न था बल्कि लाखों को काफिर बनाने वाला **"अकफर"** यानी सख्त काफिर था। यानी वो काफिर होने के साथ साथ **"काफिर साज़"** यानी काफिर बनाने वाला भी था।
- **"एक बहुत बड़ा गुमराही का फाटक खुल गया"** यानी सर सय्यद अहमद ख़ां अली गढी के फासिदो-बातिल अक़ाइदो-नज़रियात की वजह से दीन से मुनहरिफ यानी फिर जाने के मुर्तकिब बन कर बेदीन व गुमराह होने का फाटक खुल गया।
- **"फाटक"** यानी बड़ा दरवाज़ा। आम तौर से घर के दरवाज़ों की साइज यानी अर्जो-तूल को आमदो-रफ्त की मिक़दार को मलहूज़ रखते हुए बनाई जाती है। लिहाज़ा आम तौर से मकानों के दरवाज़े करीब करीब एक ही कदो-कामत के होते हैं, लैकिन ऐसी इमारत कि जहां लोगों की आमदो-रफ्त की मिक़दार कसरत से होती है, मस्लन राजा का महल, नवाब की कोठी, अदालत का सदर बाब,

मिनिस्टर की रिहाइश गाह, जागीरदार की हवेली वग़ैरा के अंदर आने जाने का जो दरवाज़ा होता है, वो आम मकानों के दरवाज़ों से बहुत ही बड़ा (Large) होता है। ताकि ज़्यादा तादाद में लोग उस से दाखिल और बाहर निकल सकें। ऐसे बड़े दरवाज़े को आम इस्तिलाह में **"फाटक"** कहा जाता है।

- जब बड़े (Large) दरवाज़े को फाटक कहा जाता है, तो जब फाटक भी आम सनअत की बनावट से बड़ा नहीं बल्कि **"बहुत बड़ा"** हो, तो ज़रूर ये मानना पड़ेगा कि आने जाने वालों की तादाद बहुत ज़्यादा होने की वजह से आम बनावट के फाटक कार-आमद न होने के सबब फाटक को बड़ा नहीं बल्कि बहुत बड़ा बनाया गया है। बक़ौल थानवी साहब सर सय्यद अहमद ख़ां अली गढी की वजह से गुमराही का दरवाज़ा नहीं, फाटक नहीं बल्कि **"बहुत बड़ा फाटक"** खुल गया। जिसका मतलब यही हुवा कि बक़ौल थानवी साहब पीरे नेचर अली गढी ने कसीर तादाद में मुसलमानों को गुमराह और बेदीन बनाया है।
- थानवी साहब का जुम्ला **"उस के असर से अक्सर नेचरी ईमान से कोरे होते हैं"** भी ग़ौरतलब है। **"कोरा होना"** यानी साफो-सफा होना। ईमान से कोरा होना यानी ईमान से खाली होना यानी ईमान न होना। जिसका ईमान होता है, उसे **"मो'मिन"** या **"मुसलमान"** कहा जाता है और जो ईमान से कोरा होता है, उसे **"काफिर"** कहा जाता है। बक़ौल थानवी साहब **"अक्सर नेचरी ईमान से कोरे होते हैं"** यानी अक्सर नेचरी काफिर होते हैं।

- नेचरी से मुराद सर सय्यद अहमद ख़ां अली गढी के मुत्तबईन (Followers) जिन्होंने पीरे नेचर अली गढी के अक़ाइदे बातिला और नज़रियाते फासेदा को अपनाया और सय्यद अहमद अली गढी के नक़्शे क़दम पर चले। देवबंदी मक्तबए फ़िक्र के हकीमुल उम्मत और मुजद्दिद **मौलवी अशरफ अली साहब थानवी** सिर्फ सर सय्यद अहमद ख़ां ही को नहीं बल्कि उस के मुत्तबईन अक्सर नेचरी लोगों को भी "**काफिर**" कहते हैं।

▣ **बरेल्वी जमाअत का तआरुफ और उनके फत्वे नाम के किताब्चे के पर्दा-नशीन व गुमनाम मुसन्निफ से सवाल:-**

पीरे नेचर सर सय्यद अहमद ख़ां की हमदर्दी और ग़मख़्वारी में वावेला मचाकर मकरो फरेब का रोना रो कर, इमाम अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, **इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान के खिलाफ झूठ, इल्ज़ामात, इफ़्तिराआत और इत्तिहामात की सदाए किज़्बो-दरोग बुलंद करने वाले "**बरेल्वी जमाअत का तआरुफ और उनके फत्वे**" नाम के आठ वर्की किताब्चे के पर्दा नशीन और बुज़्दिल गुमनाम मुसन्निफ से डंके की चोट पर अलल ऐलान सवाल है कि अगर पीरे नेचर सर सय्यद अहमद ख़ां अली गढी बेक़ुसूर था, उसने ऐसा कोई इर्तिकाब नहीं किया था, या उस से ऐसा कोई जुम्ला या क़ौल सादिर नहीं हुवा था, या किसी फासिद नज़रिये या बातिल अक़ीदे का ज़हूर नहीं हुवा था, वो सहीहुल अकीदा मो'मिन था, तो तुम्हारे ही पेश्वा बल्कि पूरी दुनियाए देवबंदियत के हकीमुल उम्मत व मुजद्दिद, मौलवी अशरफ अली थानवी साहब ने उस को ईमान से कोरा यानी बे-ईमान और "**काफिर**" क्यों कहा ?

सिर्फ पीरे नेचर अली गढी ही को नहीं बल्कि हज़ारों और लाखों की तादाद में उस की इत्तिबा करने वाले मुसलमानों को थानवी साहब ने **काफिर क्यूं कहा ?** हालाँकि जिस किताब "**तजानिबे अहले सुन्नत**" का हवाला नक़्ल कर के पीरे नेचर अली गढी को काफिर कहने का इल्ज़ाम तुमने इमाम अहले सुन्नत, इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी के सर पर थोपा है, वो किताब आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा की तसनीफ ही नहीं बल्कि इमाम अहमद रज़ा के सन हिजरी १३४० में दुनिया से पर्दा करने के इक्कीस साल (21, Years) के बाद सन हिजरी १३६१ में लिखी गई है। जबकि तुम्हारे पेश्वा और मुक्तदा मौलवी अशरफ अली थानवी ने तो अपनी हयात में "**अल-इफाजातिल यौमिया**" किताब में शद्दो-मद के साथ **पीरे नेचर अली गढी को काफिर कहा है।** अब पीरे नेचर की हमदर्दी में सर पीटो और सीना कूटो कि हाय हाय हमारे मुक्तदा व पैश्वा थानवी साहब भी **बरेल्वी बन गए। थानवी साहब भी बरेल्वी जमाअत में शामिल हो गए।**

एक अहम सवाल गुमनाम पर्दा नशीन मुसन्निफ से ये है कि सफा नं. (१९७) ता सफा नं. (२१५) तक हमने पीरे नेचर की किताब तफसीरुल कुरआन के इक्तिबासात से पीरे नेचर के जो कुफ्रियात नक़्ल किए हैं, उन कुफ्रियात के सादिर होने के बावजूद भी क्या तुम उन्हें मुसलमान समझते हो ? क्या इस्लाम के इन उसूली अक़ाइद का साफ लफ्जों में इनकार करने और तमस्खुर करने के बावजूद भी वो दाइरए ईमान से खारिज नहीं हुवा ? अगर तुम अपने बाप की जाइज़ औलाद हो, तो इस का जवाब दो। जवाब क्या दोगे ? तुम्हारी हालत तो बक़ौल शाइर ऐसी है कि :-

दामन को लिए हाथ में, कहता था ये कातिल
कब तक इसे धोया करूँ, लाली नहीं जाती

मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी

आठ वर्की किताब्चा के पर्दा नशीन मुसन्निफ ने सफा नं. ६ पर आला हज़रत **इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान के खिलाफ ज़हर उगलते हुए औलोमा–ए देवबंद के साथ साथ कादयानी फिर्क़ा के बानी **मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी** का भी ज़िक्र किया है कि मौलाना अहमद रज़ा ने **"गुलाम अहमद कादयानी"** पर भी काफिर का फत्वा थोपा है। शायद पर्दा नशीन मुसन्निफ को मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी की हक़ीक़त मालूम नहीं होगी कि वो कैसे भयानक अक़ाइद का हामिल था।

मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी के कुफ्रियात व इर्तिदाद पर मुश्तमिल फूहड़ क़िस्म के सड़े हुए अक़ाइदो नज़रियात के रद्दो–इब्बताल में राकिमुल हरूफ की किताब **"नबुव्वत के झूठे दावेदार और कादयानी मज़हब"** का क़ारेईने किराम ज़रूर मुतालेआ फरमाएं। मज़कूरा किताब उर्दू और गुजराती दोनों ज़बानों में इ. २०१३ में मंज़रे आम पर आ चुकी है। इस किताब में मिर्ज़ा कादयानी की असल किताबों के अक्स बतौरे सुबूत छाप कर कादयानी मज़हब की बीख़ कुनी की गई है। उर्दू ज़बान में ये किताब कुल एक सौ बहत्तर (१७२) सफहात पर मुश्तमिल है।

यहां पर मिर्ज़ा कादयानी के कुफ्रियात बहुत ही इख्तिसार के साथ क़ारेईने किराम की मालूमात के लिए गौशे गुजार हैं।

www.markazahlesunnat.net

- **मुझे वहीए इलाही और उमूरे गै़बीया की नेअमत अता फरमा कर नबी बनाया गया है। मेरे अलावा किसी औलिया, अबदाल और अकताब में मेरे जैसी ये सलाहियत नहीं।**
  (**हवाला :– "हक़ीक़तुल वही"**– मुसन्निफ :– मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, नाशिर :– मतबा मैगज़ीन, कादयान–**सफा : ४०६ और ४०७**)
- **जिस तरह क़ुरआन शरीफ यक़ीनी तौर पर ख़ुदा का कलाम है, इसी तरह मुझ पर नाज़िल होने वाला कलाम भी यकीनन ख़ुदा का कलाम है।**
  (**हवाला :– "हक़ीक़तुल वही"** अज़ :– मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, मतबा :– कादयान–**सफा : २२०**)
- **सच्चा ख़ुदा वही है, जिसने कादयान में अपना रसूल भेजा।**
  (**हवाला :– "दाफिउलबला"** मुसन्निफ :– मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, नाशिर :– दारुल अमान मतबा :– ज़ियाउल इस्लाम, कादयान–**सफा : २३१**)
- **मैंने अपने एक कश्फ में देखा कि मैं ख़ुद ख़ुदा हूँ और यक़ीन किया कि वही हूँ।**
  (**हवाला :– "कश्फुलबरिय्या"** मुसन्निफ :– मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, नाशिर :– मेजर बुक डिपो–कादयान – **सफा : १०३**)
- **मुझ पर कश्फ की हालत ये तारी हुई कि गोया मैं औरत हूँ और अल्लाह तआला ने रजूलियत (यानी मर्दानगी) की ताकत का इज़्हार फरमाया। (मआज़ल्लाह)**

(हवाला :- **"इसलामी कुरबानी"** अज़ :-काज़ी यार मुहम्मद, सने इशाअत इ. १९२० नाशिर :- रियाजुल हिन्द - प्रिन्ट- अमृतसर, **सफा : १२**)

- **इस उम्मत का यूसुफ यानी ये आजिज़ (यानी मिर्ज़ा कादयानी) इसराईली यूसुफ से बढ़ कर है ।**

(हवाला :- **"बराहीने अहमदिया"** मुसन्निफ :- मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, हिस्सा नंबर : ५, **सफा : ९९**)

- **हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से कोई मोजिज़ा ज़ाहिर नहीं हुवा । आपसे मोजिज़ा तलब करने वालों को आपने गंदी गालियां दीं और उनको हरामकार और हराम की औलाद ठहराया, लिहाज़ा शरीफ लोग आपसे किनारा कश हो गए ।**

(हवाला :- **"अन्जाम आथम"** मुसन्निफ :- मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, नाशिर :- ज़ियाउल इस्लाम प्रेस, कादयान- **सफा : २९०**)

- **इब्ने मरियम के जिक्र को छोड़ो ★ इस से बेहतर गुलाम अहमद है ।**

(हवाला :- **"दाफिउलबला"** मुसन्निफ :- मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, नाशिर :- दमरुल अमान मतबा : ज़ियाउल इस्लाम, कादयान- **सफा : २४०**)

- **हज़रत ईसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम झूठ बोलने की आदत वाले थे ।**

(हवाला :- **"अन्जाम आथम"** मुसन्निफ :- मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, **सफा : ५०**)

www.markazahlesunnat.net

- **हज़रत ईसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम शराब पिया करते थे ।**

(हवाला :- **"कश्तीए नूह"** मुसन्निफ :- मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, नाशिर :- मतबा : ज़ियाउल इस्लाम, कादयान- **सफा : ७१**)

- **हज़रत ईसा की वालिदा हज़रत मरियम ने यूसुफ नज्जार के अलावा दीगर एक शख्स से यानी कुल दो (२) मरतबा निकाह किया ।**

(हवाला :- **"कश्तीए नूह"** मुसन्निफ :- मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, **सफा : २०**)

- **मैं अबूबकर (सिद्दीके अकबर) और नबियों से अफज़ल हूँ ।**

(हवाला :- **"मजमूअए इश्तिहारात"** मुसन्निफ :- मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, नाशिर :- शिर्कतुल इस्लामिया लिमीटेड-रबवह, जिल्द : ३, **सफा : २७८**)

- **मैं हर वक्त करबला में सैर करता हूँ, एक सौ (१००) हुसैन मेरी जैब में हैं ।**

(हवाला :- **"नूज़ूलुल मसीह"** मुसन्निफ :- मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, नाशिर :- मतबा मैगज़ीन-कादयान-**सफा : ४७७**)

- **कुरआन शरीफ खुदा की किताब और मेरे मुँह की बातें हैं ।**

(हवाला :- **"तज़किरा"** मुसन्निफ :- मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, नाशिर :- शिर्कतुल इस्लामिया लिमीटेड-रबवह, **सफा : ६३५**)

- **तीन (३) शहरों का नाम एजाज़ के साथ कुरआन शरीफ में दर्ज किया गया है। मक्का और मदीना और कादयान।** (**हवाला :-** **"इज़ालए अवहाम"** मुसन्निफ :- मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, नाशिर :- मतबा रियाजुल हिंद - अमृतसर, हिस्सा : १, **सफा : १४०**)
- **मेरा हाथ खुदा का हाथ है और मेरी तालीम नूह की कश्ती है, जो तमाम इन्सानों के लिए मदारे नजात है।** (**हवाला :-** **"अरबईन नं. ४"** मुसन्निफ :- मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी, नाशिर :- बुकडिपो तालीफ व तस्नीफ - रबवह, **सफा : ४३५**)

मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी ने मुंदरजा बाला कुफ्रियात के अलावा कई मज़ीद कुफ्रियात अपनी मुतफर्रिक़ कुतुब में लिखे हैं। उन से सर्फे नज़र करते हुए सिर्फ मज़कूरा बाला कुफ्रियात ही इतने घिनौने और ख़तरनाक हैं कि उस को पढ़ कर एक सादा लौह मुसलमान भी मिर्ज़ा कादयानी को मुसलमान तस्लीम नहीं करेगा बल्कि डंके की चोट पर उसे काफिर ही कहेगा।

"जमीअते अहले हक जम्मू व कश्मीर" नाम की फर्जी तन्ज़ीम के जरीए शाअेअ शूदा **"बरेल्वी जमाअत का तआरुफ और उनके फत्वे"** नाम के आठ वर्की किताब्चे के पर्दा-नशीन मुसन्निफ से इस्तिफसार है कि अगर मज़कूरा बाला कुफ्रियात बकने के बावजूद भी मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी तुम्हारे नज़दीक मुसलमान है, तो फिर ईमानो कुफ्र में क्या फर्क़ बाकी रहा ? ईमान के बुनियादी उसूलो कवानीन का फिर क्या अदबो-एहतराम (**Rever**) बाकी रहा ? क्या ऐसे घिनौने किस्म के कुफ्रियात बोलने और लिखने वाले को तुम मो'मिन समझते हो ?

आशिके रसूल, इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान से बुग्ज़ो हसद और इनाद व खुसूमात के जज़्बे से मुतास्सिर बल्कि मखमूर हो कर मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी की हमदर्दी, हिमायत और तरफदारी का मुज़ाहिरा कर के मिर्ज़ा कादयानी का **"हिमायती टट्टू"** बनने वाला आठ वर्की किताब्चा का पर्दा-नशीन मुसन्निफ शायद ये भूल गया है या जहालत की वजह से उस अजहल को मालूम नहीं कि जिसकी हिमायत का ढोल पीट कर इमाम अहमद रज़ा की मुखालिफत की बाँसुरी के बेतुके राग आलाप रहा हूँ, वो मिर्ज़ा कादयानी ऐसा रुस्वाए ज़माना था कि देवबंदी मक्तबए फिक्र के हकीमुल उम्मत **"मौलवी अशरफ अली थानवी"** ने भी मिर्ज़ा कादयानी को काफिर कहा है बल्कि ऐसा काफिर कहा है कि :-

बक़ौल अशरफ अली थानवी मिर्ज़ा कादयानी को काफिर न कहे, वो भी काफिर है

मौलवी अशरफ अली थानवी के मलफूज़ात से एक इक़्तिबास पैशे खिदमत है :-

> एक मौलवी साहब ने कादयानी फिर्के का ज़िक्र करते हुए हज़रते वाला से अर्ज़ किया कि बाअज़ मुसलमान भी क़ादयानीयों को काफिर नहीं समझते, उस के मुताल्लिक शरई हुक्म क्या है, फरमाया कि न समझने की दो सूरतें हैं, एक तो ये कि वो ये कहें कि उनके ये अक़ाइद ही

नहीं, जिनकी बिना पर उन्हें काफिर कहा जाता है, और एक ये कि ये अक़ाइद हैं मगर फिर भी वो काफिर नहीं। तो अब ऐसा समझने वाला शख्स भी काफिर है, जो कुफ्र को कुफ्र न कहे।

हवाला :-
(१) **"अल इफादातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौमिया"** जिल्द नंबर : ५, हिस्सा : ९, मलफूज़ : ५७, **सफा : ३०**, नाशिर : मक्तबए दानिश। देवबंद, सने तबाअत : ई. १९९९, हि. १४१९
(२) **"मलफूज़ाते हकीमुल उम्मत"** जिल्द : ९ में शामिल किताब "अल इफादातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौमिया" जिल्द : ९, मलफूज़ : ५७, **सफा : ३७** नाशिर : इदारा अशरफिया – देवबंद – सने तबाअत : ई. २०११
(३) **"अल इफादातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौमिया"** जिल्द नंबर : ४, किस्त : ५, मलफूज : १०९९, **सफा : ५४७**, नाशिर : मक्तबए दानिश। देवबंद, सने तबाअत : ई. १९८९, हि. १४०९

"अल इफादातिल यौमिया" की मुंदरजा बाला इबारत में देवबंदियों के हकीमुल उम्मत **मौलवी अशरफ अली थानवी** ने मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी को और कादयानी फिर्क़ा के अक़ाइदे बातिला पर मुत्तला होने के बावजूद क़ादयानीयों को काफिर न कहने वालों को भी काफिर कह रहे हैं। इस पर मज़ीद तबसेरा न करते हुए, अब हम इस किताब की अगली कड़ी यानी नए उन्वान की तरफ क़ारेईने किराम की तवज्जोहात मरकूज़ करने की सआदत के हुसूल की सई करते हैं।

www.markazahlesunnat.net

शाइरे मशरिक़, अल्लामा, डाक्टर, सर, मुहम्मद इक़बाल

शाइरे मशरिक़, अल्लामा, डाक्टर, सर मुहम्मद इक़बाल बिन शेख़ नूर मुहम्मद ई. १८७७ के नवम्बर महीने की ९/तारीख़ को पाकिस्तान के शहर स्यालकोट में पैदा हुए। निहायत ज़हीन और ज़ी इस्तिदाद इल्मी सलाहियत की वजह से दीनी और दुन्यवी तालीम में कमाल दर्जा की दस्तरस हासिल थी। उनकी दीनी व दुन्यवी तालीम का मुख्तसर खाका ज़ैल में दर्ज है।

- फाज़िले उलूमे अरबिया व फार्सिया मौलाना मौलवी मीर हसन से अरबी और फारसी ज़बान में अहलियत व महारत हासिल की। फारसी और अरबी ज़बान में गु●फ्तगू करने की और शायरी करने की सलाहियत व चाबुक दस्ती हासिल थी।
- लाहौर की गर्वनमैंट कॉलेज से बी–ए (B.A.) और एम–ए (M.A.) में इमतियाज़ी (Top) कामयाबी हासिल की।
- लाहौर के मशहूर ओरीएंटल कॉलेज (Oriental College) में ई. १९०५ तक लेक्चरर रहे।
- इ. १९०५ में आला तालीम के लिए इंग्लिस्तान (England) गए और कैंब्रिज यूनीवर्सिटी से डाक्टरीयत (Doctor) और बैरिस्टर–ऐट–लॉ (Barrister-at-law) की डिग्री का शर्फ हासिल किया।
- जर्मनी की म्यूनिच यूनीवर्सिटी से भी डाक्टरीयत की मज़ीद डिग्री हासिल की।

- कुछ दिनों तक लंडन यूनीवर्सिटी में अरबी के प्रोफेसर रहे।
- ई. १९०८ में वतन लौट कर गर्वनमैंट कॉलेज – लाहौर में प्रोफैसर रहे और साथ में बैरिस्ट्री की प्रैक्टिस भी शुरू कर दी।
- कुछ अरसे के बाद कॉलेज की मुलाज़मत तर्क कर के सिर्फ वकालत पर कनाअत की।
- ई. १९२३ में हुकूमते बर्तानिया की तरफ से सर (Sir) का खिताब मिला।
- २१/अप्रैल ई. १९३८ मुताबिक हि. १३५७ को लाहौर (पाकिस्तान) में इंतिक़ाल हुवा।

- डाक्टर इक़बाल बचपन से ही सुल्तानुल आरेफीन, **क़ाज़ी हज़रत सुल्तान महमूद साहब** आवान शरीफ ज़िला: गुजरात (पाकिस्तान) के मुरीद थे। हज़रत काज़ी सुल्तान महमूद साहब सिलसिलए आलिया कादरिया के शेखे तरीकत थे। लिहाज़ा इक़बाल कादरी सिलसिले के मुरीद थे।
- उर्दू और फ़ारसी अदब के डाक्टर इक़बाल आलमी पैमाने के शौहरत याफ्ता शाइर थे। उनके मजमूअए-कलाम यानी शायरी के दीवान मस्लन ★ मस्नवी इसरारे खुदी ई.१९१५ ★ मस्नवी रुमूज़े बे-खूदी ई.१९१८ ★ पयामे मशरिक़ ★ ज़ुबूरे अज्म ★ इसरारो-रुमूज़ ★ बाँगे दरा ई.१९२४ ★ पस चेह बायद कर्द ★ जावेद नामा ई.१९३२ ★ बाले जिब्रील ई.१९३५ ★ ज़र्बे कलीम ई.१९३६ ★ इक़बाल का आखरी दीवान, जो इक़बाल के इंतिक़ाल ई.१९३८ के बाद अरमुग़ाने हिजाज़ के नाम से शाए हुवा।

अल्लामा इक़बाल की मुतनाजा शख्सियत

डाक्टर इक़्बाल की शख्सियत हिंद व पाक व दीगर ममालिक के उर्दू दां सुन्नी तबक़ा के दरमियान मुतनाज़े फियहे यानी जिसकी वजह से नज़ाअ यानी झगड़ा हो, हमेंशा से रही है। डाक्टर इक़बाल की मुखालिफत और उस के अकीदा व मशरब में शक्को-शुबा की फिज़ा उन की हयात ही से अवामो-खवास में मौज़ूए सुख़न रही है। मस्लन :- (मुख्तलिफ आरा ज़ेल में दर्ज हैं)

- इक़्बाल अंग्रेज़ों का एजैंट था। इसी लिए तो हुकूमते बर्तानिया ने उसे सर का खिताब दिया।
- इक़्बाल वहाबी तेहरीक के बानी मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब नजदी की तहरीके वहाबियत से मुतास्सिर था। (हवाला : माहनामा कौमी ज़बान-कराची-शुमारा नवम्बर ई.१९८१ के **सफा : ३२** पर डाक्टर मुईनुद्दीन अकील का उन्वान नज्दी तेहरीक और इक़्बाल)
- इक़्बाल की किताबें अक़ीदे के एतबार से गैर इस्लामी हैं। (हवाला :- १९/नवम्बर इ.१९८० को रियाज़ युनिवर्सीटी का सैमीनार तफसील के लिए अंधेरे से उजाले तक अज़ :- अल्लामा अब्दुल हकीम शरफ कादरी, **सफा : ५२**, मतबूआ : लाहौर)
- इक़्बाल शीया और सुन्नी के इत्तिहाद का मुबल्लिग था। (हवाला :- इकबाल का मज़हब-अज़ :- काज़ी मुहम्मद अदील अब्बासी, मशमूला मुतालए इक़्बाल, **सफा : १८**, नाशिर :- उत्तर परदेश अकादमी- लखनऊ)

- इक़बाल अइम्मए अरबा में से किसी का भी मुकल्लिद नहीं था। (हवाला :- अयज़न, सफा : २५)
- इक़बाल बारगाहे ख़ुदावंदी का बे-अदब और गुस्ताख था। (हवाला :- बाले जिब्रील सफा : ६ के अशआर को सनद बनाकर इल्ज़ाम)
- इक़बाल नेचरी खयालात रखने वाला और दहरिया किस्म का शख्स था।
- इक़बाल ने अपनी फारसी, उर्दू नज़्मों में नेचरी, फलसफा और इल्हाद का ज़बरदस्त प्रोपेगंडा किया है और शरीअते मुतह्हरा के बुनियादी अक़ाइद पर तमस्खुर, इस्तिहज़ा और इन्कार किया है।
- औलोमा-ए शरीअत और अइम्मए तरीकत पर एतराज़ात और तज़लील के जुम्ले लिखे हैं।
- इक़बाल ने बज़ाते खुद अपनी ज़िन्दीकियत व बेदीनी का फख्र और मुबाहात के साथ खुला हुवा इक़रार किया है। वग़ैरा वग़ैरा

लिहाज़ा ....

डाक्टर इक़बाल की शख्सियत मुख्तलिफ ज़ावियों से मौज़ूए सुख़न और मश्कूक रही है। अवामो-ख्वास दोनों तबक़ों में इक़बाल की शख्सियत हमेंशा मुख्तलिफ अंदाज़ से ज़ेरे बहस रही है और मुत्तफिका तौर पर इक़बाल के ताल्लुक से मुसम्मम राय क़ायम करने वाले हजरात बहुत ही कम तादाद में मिलते हैं।

क़ारेईने किराम की ज़ियाफते तबअ की खातिर हम हस्बे इस्तिताअत इस उन्वान के ताल्लुक से खामा आराई की जुर्रत करते हैं। उम्मीद है कि हमारी काविश हक़ीक़त की तलाशो जुस्तजू की मंज़िल तक रसाई करने में नाकाम न रहेगी।

डाक्टर इक़बाल की ज़िंदगी के ग़ैर मोअतदिल हालात :-

डाक्टर इक़बाल की पैदाइश सुन्नी सहीहुल अकीदा मुस्लिम खानदान में हुई थी। उनके वालिद शेख़ नूर मुहम्मद खालिस मज़हबी बल्कि सूफी किस्म के दीनदार शख्स थे और कादरी सिलसिले के मुरीद थे। उन्होंने अपने बेटे इक़बाल को भी कादरी सिलसिले में मुरीद कराया था। मेरा बेटा दीन का इल्म हासिल करे, इस सालेह निय्यत से शेख़ नूर मुहम्मद ने इक़बाल को फारसी और अरबी ज़बान की तालीम भी दिलवाई थी और इक़बाल ने इन दोनों ज़बानों में महारत और उबूर भी हासिल कर लिया था।

डाक्टर इक़बाल ने फारसी और अरबी ज़बान में महारत ज़रूर हासिल कर ली थी लैकिन उनकी ये महारत सिर्फ फन व अदब (**Art of Literature**) और ज़बान यानी (**Language**) की फसाहतो-बलागत (**Eloquence & Thetoric**) तक ही महदूद थी। दीने इस्लाम के उसूली व फुरूई यानी अकीदा और अमल के ताल्लुक से जो अहकामो मसाइल थे, उनका इल्म डाक्टर इक़बाल ने नहीं पढ़ा था। अल मुख्तसर ! डाक्टर इक़बाल ने किसी दीनी मदरसा या दारुल उलूम में नहीं पढ़ा था और दीनी तालीम हासिल नहीं की थी।

डाक्टर इकबाल ने दीनी तालीम हासिल नहीं की थी, लैकिन उनकी परवरिश एक दीनदार खानदान में हुई थी। लिहाज़ा मिल्लते इस्लामिया और कौमे मुस्लिम से बुनियादी तौर पर लगाव, उन्स, हमदर्दी, मुहब्बत, उल्फत, रग़बत, हुब्ब, चाह, प्यार, आश्नाई, मैलान, रुजहान, शनासाई, ग़मख्वारी, दर्दमंदी और शौक़ो लुत्फ का जज़्बा दिल के एक कोने में जागुज़ीं था। ये सब अख़लाक़ियात उन्हें

विरासत में मिले थे। लैकिन तमाम जज़्बात जामिद और साकिन हैसियत से इस्तिराहत पज़ीर थे। क्यूंकि होश सँभालते ही स्कूल और फिर कॉलेज की तालीम में मुन्हमिक होना। और उस पर तुर्रह ये कि कॉलेज की तालीम के लिए अपने आबाई वतन मालूफ **"स्यालकोट"** की सुकूनत तर्क कर के **"लाहौर"** के **"ओरीएंटल कॉलेज"** के दारुल इक़ामा (**Hostel**) में रहने का इत्तिफाक हुवा।

लाहौर के ओरीएंटल कॉलेज के एक ग़ैर मुल्की प्रोफैसर से डाक्टर इक़्बाल ने इल्मे फलसफा की तहसील की। डाक्टर इक़्बाल को इल्मे फलसफा (**Philosophy**) से दिली और गहरी मुनासिबत और लगाव देखकर उनके फलसफी उस्ताद **प्रोफैसर आर नुल्ड** जो बाद में **"सर"** का खिताब पा कर सर टॉमस आर नुल्ड (**Sir Thomas Arnold**) हो गए। वो प्रोफैसर आर नुल्ड ग़ैर मामूली क़ाबिलियत का शख्स था। इल्मी जुस्तजू और तलाश (**Research**) के तर्ज़े जदीद (**Latest Manner**) का माहिर था। उसने डाकटर इक़्बाल को परखा, जाँचा और टटोला, तो उसे इक़्बाल में ग़ैर मामूली सलाहियतों के जोहर नज़र आए। लिहाज़ा उसने इक़्बाल को अपना खासुल खास और चहिते शागिर्द की हैसियत से खास तवज्जो से पढ़ाया। यहां से डाकटर इक़्बाल के ज़हन पर नेचरीयत और फलसफियत का रंग चढ़ना शुरू हुवा।

लाहौर के कॉलेज में डाकटर इक़्बाल ने **B.A.** और **M.A.** की डिग्री हासिल की और फिर वहीं लेकचरर (**Lecturer**) की हैसियत से मुलाज़िम हो गए। इस दौरान उनका उस्ताद सर टॉमस आर नुल्ड इंग्लिस्तान (**England**) चला गया। डाकटर इक़्बाल और प्रोफेसर आर नुल्ड के दरमियान जो दोस्ती और मुहब्बत पहले दिन से पैदा हो गई थी, वो बदस्तूर क़ायम थी, बल्कि मज़ीद इजाफा हो गया था।

www.markazahlesunnat.net

डाकटर इक़्बाल के रफीके खास **शेख़ अब्दुल कादिर साहब** बैरिस्टर-ऐट-ला जो माहनामा **"मख़्ज़न"** लाहौर के साबिक़ मुदीर (**Ex.Editor**) हैं, वो डाकटर इक़्बाल की किताब **"बाँगे दरा"** के दिबाचे के सफा : ७ पर रकमतराज़ हैं कि **"उस्ताद और शागिर्द में पहले दिन से पैदा शुदा दोस्ती और मुहब्बत आखिरश शागिर्द को उस्ताद के पीछे पीछे इंग्लिस्तान ले गई।"** ई.१९०५ में इक़्बाल इंगलैंड गए, वहां से जर्मनी (**Germony**) गए। बिल आखिर ई. १९०८ में वतन वापस लौटे। तब उनकी उम्र ३१/साल थी। उनकी मज़्कूरा ३१/साल की उम्र में से :-

११/साल - प्राइमरी स्कूल से मैट्रिक तक की तालीम हासिल करने में।
६/साल - लाहौर गर्वनमैंट कॉलेज में **B.A.** और **M.A.** की तालीम हासिल करने में।
३/साल - लाहौर की ओरीएंटल कॉलेज में लेकचरर की मुलाज़िमत में।
४/साल - लंदन, जर्मनी वग़ैरा की युनिवर्सीटियों में आला तालीम के हुसूलो मुलाज़िमत में।

२४/साल - मीज़ान (**Total**)

मुंदरजा बाला खाका के हिसाब से डाकटर इक़्बाल जब डाकटरीयत, बरीस्टर और अदीब शहीर की हैसियत से ई. १९०८ में अपनी उम्र के इकतिस्वें साल (**31,st year**) में वतन वापस लौटे, तब उनकी उम्र से २४/साल दुन्यवी मुख्तलिफ किस्म की तालीम में खर्च हो गए थे। यानी उनकी उम्र का तक़रीबन सतत्तर (**77%**) फीसद हिस्सा ताल्लुम और तालीम में सर्फ हुवा था। यानी उनकी उस वक्त तक की जिंदगी का अक्सर हिस्सा सिर्फ दुन्यवी तालीम ही हासिल करने में खर्च हो गया था।

और........ दुन्यवी तालीम भी कैसी ? ख़तरनाक किस्म की तालीम। नेचर और फलसफा की तालीम। जो अच्छे अच्छों के अेतमाद और ईमान को बरबाद कर दे। इस पर तुर्रह ये कि ऐसी ख़तरनाक तालीम किस से हासिल की ? ऐसे शख्स से हासिल की जो आलमी पैमाने का मश्हूरो मारूफ और नंबर वन **(No. 1)** का नेचरी **(Naturalist)** और फलसफी **(Philosophy)** था। यानी प्रोफेसर सर टॉमस आरनुल्ड कि जिसने अलीगढ कॉलेज की प्रोफेसरी के ज़माने में अपने खास दोस्त जो एक पढ़ा लिखा और सनद याफ्ता मौलवी था। जिसने बाज़ाब्ता दर्से निज़ामी यानी मौलवी कोर्स **(Course)** पढ़ा था। यानी **मौलवी शिबली नोमानी आज़म गढी** को भी प्रोफेसर आरनुल्ड ने ऐसा बहका दिया कि उसे पक्का नेचरी बना दिया था। ऐसे ख़तरनाक माहिरे फन्ने नेचरीयत के हाथ में डाकटर इक़्बाल की तालीमो तर्बीयत हुई। भला इक़्बाल की बिसात कितनी थी ? शरीअते मुतह्हरा के उसूली और फुरूई उलूम में कामिल दस्तरस न होने की वजह से डाक्टर इक़्बाल भी अपने शफीक उस्ताद प्रोफेसर आरनुल्ड की लपेट में आ गया और नेचरीयत का रंग उस के दिलो दिमाग़ पर छा गया।

डाकटर इक़्बाल की वज़ा कता और रफ्तार गुफ्तार में मग़रिबी तहज़ीब की रवादारी

डाकटर इक़्बाल ई.१९०८ में बैरूने मुल्क से जब वतन लौटे, तो दुन्यवी उलूमो फुनून की आला डिग्रियां और तमग़ात से लैस हो कर लौटे थे। दुन्यवी आला तालीम का कैफो ख़ुमार और नेचर व फलसफा के फन की यगानतो–महारत से अवामो–खवास

में वो फकीदुल मिसाल शख्सियत की एहमियत के हामिल थे। अलावा अज़ीं वो ख़ुद भी अपने आपको मॉर्डन **(Morden)** और तरक्की याफ्ता गुमान करते थे। मग़रिबी तेहज़ीब के दिलदादा थे। वज़ा कता ग़ैर इस्लामी थी। चेहरा सुन्नते रसूल के यानी दाढी न होने की वजह से बे–नूर था। रोज़ रेज़र **(Razor)** से चेहरा छीलते थे। शरअन फासिके मोअल्लिन थे। लिबास भी अंग्रेजी वज़ा कता का पहनते थे।

जिस माहौल में डाकटर इक़्बाल ने तालीमो तर्बीयत पाई थी, वो मुकम्मल तौर पर ईमानो अमल को तबाह करने वाला था। कदम कदम पर फलसफा व नेचर की फिसलन व रपटन, चारों तरफ कुफ्रो इलहाद की गहेरी खाई। ज़रा पांव फिस्ला और गए काम से। ऐसे माहौल में ईमान बचाना कठिन से कठिन मरहला था। अच्छे अच्छों ने ईमान से हाथ धो डाले। बेदीनी और ला मज़हबियत की चमक दमक में बहुत से बह गए और बहक गए। अल्लामा इक़्बाल किस खेत की मूली कि शैतान के दामे फरेब से महफूज़ व मामून रहें। डाकटर साहब बहके ज़रूर मगर तौहीने रसूल के जुर्मे अज़ीम का इर्तिकाब नहीं किया था। इस की वजह सिर्फ यही थी कि डाकटर इक़्बाल साहब सिलसिलए कादरिया मैं बैअत हुए थे। उनके पीरो मुर्शिद हज़रत **काज़ी सुलतान महमूद साहब**, आवान शरीफ वाले सिलसिलए कादरिया के पीरे तरीकत थे। उनके तवस्सुत से पीराने पीर, पीरे दस्तगीर, हज़रत **सय्यदना शेख़ मुहीयुद्दीन अब्दुल कादिर जीलानी ग़ौसे आज़म बगदादी** रदीअल्लाहो तआला अन्हो का फैज मिला कि डाकटर इक़्बाल साहब नेचरीयत के दलदल में ग़र्क़ होने के बावजूद तौहीने अंबिया व औलिया से महफूज़ रहे और ज़िंदगी के आखरी दिनों में उन्होंने ईमान अफरोज़ अशआर कहे।

डाकटर इक़्बाल के गुस्ताख़ाना और काबिले गिरफ्त अशआर

डाकटर इक़्बाल को उनके अशआर की वजह से बैनुल अक़्वामी शौहरत हासिल हुई थी। वो अपने ज़माने में और आज भी **"शाइरे मशरिक़"** के मोअज़्ज़ज़ लकब से मशहूर थे और हैं। बर्तानवी हुकूमत के ज़ुल्मो सितम से ग़ैर मुनक़सिम हिन्दुस्तान को आज़ाद कराने की जंग के ज़माने में डाकटर इक़्बाल की शाइरी ने अहम रोल अदा किया है। वतन की मुहब्बत के खुमार से सरशार हो कर जौशो ख़रोश से तेहरीके आज़ादी की आग को मुश्तइल रखने में डाकटर इक़्बाल की शाइरी ने ईंधन (Fuel) का काम अंजाम दिया है। अलावा अज़ीं वतन के बाशिंदों और बिल खुसूस कौमे मुस्लिम की ख़स्ता-हाली, जहालत, गुर्बत, जराइम पेशा किरदार, काबिले नफ़रीं इरतिकाबात वग़ैरा के खिलाफ मुनज़्ज़म मुहिम चलाई और कौम को तरक्की की राह पर गामज़न होने की तलकीन की।

डाकटर इक़्बाल की शाइरी सोज़ो गुदाज़, दुख व दर्द, सोजिश व जलन, शोला व शरर, आहो-फुगां, शिकवा व शिकायत, इस्तिगासा व फरियाद, सरजिन्श व सरशारी, सरफराज़ी व सरफरोशी, सर मस्ती व सर गरदानी, इज़्तिराबो-बेकरारी, तेज़ी व चमक, शौक़ो-इश्तियाक, जोशो-सरगर्मी, मुहब्बत व इश्क़, धुन व तरंग, ख्वाहिश व आरज़ू, तलीक व तुमतराक, राज़ो-नियाज़, चाहो-हिर्स, तन्ज़ व तमस्खुर, तंतना व गलगला, शानो-शौकत, तमअ व ख्वाहिश, शोरो-गुल, मातमो-कोहराम, तैशो-गज़ब, सुबुकरवी व सिपास गुज़ारी, सुरूरो-इंबिसात, ख़ुमारो सरशारी, ख्वास्त व इल्तिमास, झिड़क व खुफगी, डाँटो डपट, मलामतो-लताड़, वग़ैरा

औसाफ से एक इन्फिरादी तर्ज़ व अंदाज़ की शानो शौकत से मशहूर व मक़बूले ज़माना हुई। डाकटर साहब का कलम कभी कभी शोख़ी व जराफत की तेज़ रंगी चमक की शोरीदा सरी में मुतनाज़ा शगूफे खिलाने की शहामतो-शुजाअत दिखाने के शौक़ में ऐसा बहक जाता कि नोके क़लम से निकली हुई बात मूरिदे फसाद बन जाती थी। नतीजन मिल्लते इस्लामिया के अफराद के दरमियान हंगामा बरपा हो जाता था।

कौमे मुस्लिम की गुर्बत, ख़स्ता-हाली, मुफलिसी व बेचारगी देख कर इज़्तिराब व बेचैनी के रिक्कत अंगेज़ जज़्बे से मुतास्सिर हो कर डाकटर इक़्बाल ने अल्लाह तबारक व तआला की बारगाहे आलिया में गिला और शिकायत की, लैकिन वो अपनी शाइरी के तर्ज़ व अंदाज़ में की। उनका आम तौर से जो अंदाज़ अवामुन्नास के साथ हुवा करता था, उसी अंदाज़ से उन्होंने बारगाहे इलाही में शिकवा किया। जो सरासर गलत अंदाज़, गुस्ताख़ी व बे-अदबी पर मुश्तमिल था। डाकटर साहब के शिकवा के कुछ अल्फाज़ जुम्ले ऐसे और इतने तौहीन आमेज़ हैं कि इस पर शदीद शरई गिरफ्त व मुवाखिजा है। बल्कि हुक्मे कुफ्र नाफिज होता है।

डाकटर इक़्बाल के पास उर्दू, फारसी और अरबी अदब का, फलसफा व मंतिक, नेचर और दीगर उलूमो-फुनून का चाहे वसीअ इल्म हो, लैकिन ये भी हक़ीक़त है कि उनके पास शरीअत के बुनियादी अक़ाइद, ज़रूरीयाते दीन से तअल्लुक रखने वाले उसूली मसाइल, फुरूआत के ज़रूरी अहकाम, इल्ज़ामे कुफ्र, लुज़ूमे कुफ्र, अहकामे इर्तिदाद, निफाज़े कुफ्र, हुदूदे शरई के दायरे से तजावुज की ताज़ीर व तोबीख, अल्लाह व रसूल की बारगाह की ताज़ीम, तौकीर और पास अदब के लवाज़मात वग़ैरा जैसे उसूलो-कवानीन

कि जिस पर ईमानो कुफ्र का मदार है, वग़ैरा का बाज़ाब्ता इल्म था ही नहीं। रस्मन और सुनी सुनाई या दस्तयाब अवामी सतह की किताबों के मुतालेआ से हासिल शूदा गैर मोअतमद मालूमात तक ही उनकी इल्मी बिसातो-इस्तिदाद थी। हुदूदे शरई के पासे अदब की नज़ाकत के तक़ाज़े और एहमियत नीज़ उस के नक्स और तोड़े की सूरत में आइद नाफिज अक़ूबत और सज़ा की सऊबत व सख्ती के अहकाम की बुनियादी तफसीली मालूमात से डाकटर इक़बाल नावाक़िफ और अंजान थे, लिहाजा **उनके कलम के जौश पर शरीअत के होश की लगाम न थी** और उनका कलम बेलगाम घोड़े का हवा से बातें करने के अंदाज़ से चलता था। इल्म की रोशनी के फुकदान से बेइल्मी के घटाटोप अंधेरे में बर्क रफ्तारी से दौड़ता था। लिहाज़ा कलम ने ऐसी ठोकर खाई कि कलमकार की हालत भी शदीद ज़ख्मी बल्कि करीबे मर्ग हो गई। इस हादसे में यकीनन और बिला शुब्ह कलमकार ही ख़तावार और मुस्तहिके इताब है।

क़ारेईने किराम की खिदमत में डाकटर इक़बाल के काबिले गिरिफ्त वो अशआर भी पैशे खिदमत हैं। मुलाहिज़ा फरमाएं :-

▣ डाकटर इक़बाल अपनी किताब "**बाले जिब्रील**" के **सफा: ६** पर लिखते हैं कि :-

तेरे शीशे में मय बाकी नहीं ★ बता क्या तू मेरा साकी नहीं है
समन्दर से मिले प्यासे को शबनम ★ बखीली है ये रज़्ज़ाकी नहीं है

मुंदरजा बाला अशआर में मआज़ल्लाह सुम्मा मआज़ल्लाह! डाकटर इक़बाल ने अल्लाह तबारक व तआला को बखील बताया और अल्लाह तआला के रज्जाक न होने की बात कही है।

▣ डाकटर इक़बाल अपनी किताब "**बाले जिब्रील**" के **सफा: ७** पर लिखते हैं कि :-

अगर हनगामहाए शौक़ से है ला-मकां खाली
खता किस की है या रब ! ला-मकां तेरा है या मेरा

इस शेअर में डाकटर इक़बाल बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में गुस्ताख़ाना दलील के तौर पर कह रहे हैं कि ए रब तआला! अगर ला-मकां शौक़ के हंगामों से खाली है, तो ये किस की खता है? अगर ला-मकां मेरा होता और शौक़ के हंगामों से खाली होता, तो बे-शक! ये मेरी खता होती। लैकिन ए रब तआला! ये ला-मकां तो तेरा है, और वो शौक़ के हंगामों से खाली है, लिहाज़ा ये तेरी ही खता तो है। (मआज़ल्लाह)

▣ डाकटर इक़बाल अपनी किताब "**बाले जिब्रील**" के **सफा: ७** पर लिखते हैं कि :-

ए सुब्ह अज़ल इन्कार की जुर्रत हुई क्यूं कर,
मुझे मालूम क्या, वो राज़दार तेरा है या मेरा

इस शेअर में डाकटर साहब अल्लाह तबारक व तआला से कह रहे हैं कि इब्लीस ने तेरे हुक्म की ना-फरमानी करते हुए सजदा करने से इनकार की जुर्रत क्यूं की? ये मुझे क्या मालूम! आखिर वो तेरा ही तो राज़दार है। मेरा राज़दार तो नहीं है। मैं क्या जानूं कि इब्लीस को तेरा कौन सा ऐसा राज़ मालूम हो गया, जिसकी बिना पर वो तेरा हुक्म बजा लाने से इनकार की जुर्रत कर बैठा।

▣ डाकटर इक़बाल ने अपनी किताब (दीवान) "**बाँगे दरा**" मतबूआ : करीमी प्रैस लाहौर (पाकिस्तान) में सफा नंबर : **१७७ से १८७** तक अल्लाह तबारक व तआला की बारगाहे

बेनियाज मैं "**शिकवा**" लिखा। जिसमें जा-बजा अल्लाह तबारक व तआला पर मुसलमानों के एहसान जताए, एतराज़ात किए और ये भी कह दिया कि "**हम भी वफादार नहीं, तू भी तो दिलदार नहीं।**" बल्कि यूं भी लिख दिया कि :-

खंदाज़न कुफ्र है, एहसास तुझे है कि नहीं,
अपनी तौहीद का कुछ पास तुझे है कि नहीं।
आए उश्शाक, गए वादा फर्दा ले कर,
अब उन्हें ढूंढ, चिरागे रुखे ज़ेबा ले कर,
आज क्यूं सीने हमारे शरर आबाद नहीं,
हम वही सोख्ता सामाँ हैं तुझे याद नहीं।

▣ "**बाँगे दरा**" के इसी "**शिकवा**" के सफा नंबर **: १८२** पर यहां तक लिख दिया कि :-

कहर तो ये है कि काफिर को मिलीं हूरो क़सूर
और बेचारे मुसलमान को फक़त वादए हूर

यानी ए अल्लाह! ये क्या ग़ज़ब है कि काफिरों को तो जन्नत की हूरें और जन्नत के महल सब कुछ मिलें और बेचारे मुसलमानों को सिर्फ "**हूरें मिलेंगीं**", ऐसा वाअदा दिया जाता है।

डाकटर इक़बाल ने अल्लाह तबारक व तआला से मुंदरजा बाला शिकवा किया। फिर अपने इस शिकवे का अल्लाह तआला ने क्या जवाब दिया? वो जवाब भी अपने खयालाते बातिला से खुद गढ़ लिया। और अपने दीवान "**बाँगे दरा**" के सफा नंबर **: २२०** से **२३२** तक "**जवाबे शिकवा**" के नाम से अल्लाह तआला का

www.markazahlesunnat.net

जवाब गढा और **सफा नंबर:२२४** पर अल्लाह तबारक व तआला की तरफ से अपने शिकवे का ये जवाब गढा कि :-

क्या कहा, बहर मुसलमाँ है फक़त वादए हूर !,
शिकवा बेजा भी करे कोई, तो लाजिम है शऊर।
अद्ल है फातिर हस्ती का अज़ल से दस्तूर,
मुस्लिम आएं हुवा काफिर, तो मिले हूरो-क़सूर।
तुम में हूरों का कोई चाहने वाला ही नहीं,
जल्वए तूर तो मौजूद है, मूसा ही नहीं।

मुंदरजा बाला अशआर में डाकटर इक़बाल ने अपनी खाम खयाली से अपने बेजा शिकवा का अल्लाह तबारक व तआला की जानिब से जवाब गढा है कि ए मुसलमानों को सिर्फ हूर का वाअदा देने पर शिकवा और शिकायत करने वाले! तेरा शिकवा बेजा यानी ना-मुनासिब, फुज़ूल, ना-हक़, बिला सबब और नादानी पर मबनी है। क्यूंकि "**अद्ल है फातिर हस्ती का अज़ल से दस्तूर**" यानी अद्लो इन्साफ करना हमेंशा से खालिके काइनात जल्लजलालुहू का कानून और दस्तूर है। काफिरों को दुनिया ही में हूरें और जन्नत के महल्लात मिल गए हैं, इस की वजह ये है कि मुसलमानों के आईन यानी दस्तूरुल-अमल **(Constitution)** और कवानीन को काफिरों ने इख्तियार कर लिया, तो उन्हें हूरो-क़सूर यानी हूरें और महल मिल गए। यानी यूरोपीयन **(European)** हसीनो-जमील लड़कियां, पार्सी मिसें, **(Misses)** यहूदी खूबसूरत लड़कियां, ईसाई इंडियन मेडम्स **(Madames)** जिनके साथ इख्तिलात, मेल-जोल, मुलाकात, खलवत और दीगर बे-हयाई पर मुश्तमिल और बेशरमी से मखलूत इर्तिकाबात से आज कल के कुफ्फार व मुशरिकीन के

आज़ादी पसंद लोग ऐशो-इशरत के गुलछर्रे उडाते हैं, यही वो हूराने जन्नत हैं, जिनका वाअदा मुसलमानों से किया गया है और दौरे हाज़िर की जदीद तामीर की बिल्डिंगें, बंगले, फ्लैट, कोठियाँ, होटलें कि जिनमें यूरोप के बाशिंदे अैशो आराम करते हैं, यही वो जन्नत के महल हैं, जिनका वाअदा मुसलमानों को दिया गया है।

काफिर लोग चूँकि मुसलमानों के दीने इस्लाम के आईन यानी दस्तूरुल अमल को अपनाए हुए हैं और इस पर अमल कर रहे हैं, लिहाज़ा उन्हें दुनिया ही में हूरें और महल हासिल हो गए हैं और मुसलमान अपने दीनो-मज़हब के दस्तूरुल अमल को छोड़े हुए हैं, इसी लिए मुसलमान हूर और महल से महरूम हैं। फिर आखिर में यानी तीसरे शेअर में मुसलमानों की महरूमी का सबब खुद मुसलमानों को ठहरा कर कहा कि : **"तुम में हूरों का कोई चाहने वाला ही नहीं"** (अस्तग़फिरुल्लाह)

▣ इलहादो-बेदीनी पर डाकटर इक़्बाल के इफ्कार, तख़ैयुलात, तसव्वुरात, तरद्दुदात, तफक्कुरात, इल्तिफातात, तवज्जोहात, मनशआत व आरा का वकूअ पज़ीर होना, ये सब उस नेचरी तालीम का सदका व तुफैल है, जो उन्होंने इंग्लिस्तान और दीगर ग़ैर ममालिक में हासिल की थी। जिसका एतराफ खुद डाकटर इक़्बाल ने इस शेअर में किया है :-

मुझ को सिखा दी है अफरंग ने ज़िन्दीकी
इस दौर के मुल्ला हैं क्यूं नंगे मुसलमानी

(हवाला :- **"बाले जिब्रील"** - अज़ :- डाकटर इक़्बाल, मतबूआ:- करीमी प्रेस - लाहौर, **सफा : ३१**)

डाकटर इक़्बाल की शाइरी का जादू हर आमो-खास पर असर करता था। डाकटर इक़्बाल ने अपनी शाइरी के बलबूते पर अपनी एक अलग पहचान (Image) खड़ी करली थी। अवाम उन पर वारफ्ता और फरेफ्ता थे और अवाम की इस अंधी मुहब्बत का भर पूर फायदा उठाते हुए डाकटर इक़्बाल ने अपनी शाइरी के तवस्सुत से इलहाद, बेदीनी और नेचरीयत की नश्रो-इशाअत की। शाइरे मशरिक़, अल्लामा, डाकटर और सर के अलक़ाब व खिताबात की चमक दमक से अवामुल मुस्लिमीन की आँखें इतनी चुन्ध्या गईं थीं कि डाकटर इक़्बाल की शाइरी और उस का कलाम शरीअत का कानून हो, ऐसे वहमो-गुमान में अवाम मुबतेला हो गए और डाकटर इक़्बाल की बात पर आँख बंद कर के भरोसा करने लगे।

डाकटर इक़्बाल की नेचरीयत की आंधी और तूफान में अवामुल मुस्लिमीन के ईमान को तबाह और बर्बाद होने से बचाने के लिए औलोमा-ए दीन आहनी दीवार की तरह खडे हो गए और डट गए। औलोमा ने कुरआनो हदीस की रोशनी में इक़्बाल के नेचरी नजरियात और अफकार का रद्दे बलीग़ फरमाया और हक़ व बातिल का बय्यिन इम्तियाज ज़ाहिर फरमाया। जिसके नफा बख्श नताइज व असरात सामने आए। काफी तादाद में लोगों ने अपनी मताए ईमान लूटने से बचाई। जिसका एहसास खुद डाकटर इक़्बाल को भी हो गया। बल्कि उसे यक़ीन के दर्जा में मालूम हो गया कि मेरी नेचरीयत की तहरीक में अगर कोई रोड़ा डाल कर अटकाता है, तो वो औलोमा-ए दीन हैं। लिहाज़ा डाकटर इक़्बाल ने अपने कलाम में औलोमा के खिलाफ खूब ही अनाप शनाप, अन्ट शन्ट, ऊटपटांग और आएं बाएं बकवासें अंधा धुंद लिख मारी हैं।

क़ारेईने किराम की ज़ियाफ्ते तबअ की खातिर डाकटर इक़बाल के चंद अशआर जो उन्होंने अपने फासिद ज़हन के खाम खयाली तसव्वुर की तख़लीक के तौर पर औलोमा-ए दीन के गिरोह के खिलाफ लिखे हैं, वो पैशे खिदमत हैं :-

मैं भी हाजिर था वहां, ज़ब्ते सुखन कर न सका,
हक़ से जब हज़रते मुल्ला को मिला हुक्मे बहिश्त
अर्ज़ की मैंने इलाही मेरी तकसीर माफ,
ख़ुश न आएँगे इसे हूरो शराब व लब किशत
है यद आमोज़ीए अक्वाम व मलल काम इस का,
और जन्नत में न मस्जिद, न कलीसा, न कनिश्त

(हवाला :- "**बाले जिब्रील**" - अज :- डाकटर इक़बाल, मतबूआ:- करीमी प्रैस - लाहौर, **सफा : १५९**)

औलोमा व इक़बाल में मज़हबी मआमलात के ताल्लुक से जंग छिडी हुई थी। इक़बाल औलोमा की शान में गुस्ताख़ाना अशआर से हमले करते थे। औलोमा की तरफ से जवाबी कारवाई होती थी। मोहतात औलोमा इल्ज़ामात के लिए ठोस शरई सुबूत हासिल करने के बाद ही कुछ फरमाते थे। कुछ गैर मोहतात और गैर ज़िम्मेदार किस्म के मौलवी साहेबान सुनी सुनाई बातों पर एतबार कर के बेधडक जो मुँह में आया वो कह देते थे। मस्लन :-

★ इक़बाल हिंदूओं को भी काफिर नहीं समझता।
★ इक़बाल राफज़ी है, क्यूंकि वो हज़रत अली रदीअल्लाहो तआला अन्हो को तमाम सहाबाए किराम से अफज़ल बताता है।

★ इक़बाल गाने बजाने को भी इबादत मानता है।
★ इक़बाल का मकसद दीने इस्लाम की खाक उडाना यानी बदनाम करना है।
★ इक़बाल दीने इस्लाम से मुनहरिफ हो गया है।
★ इक़बाल ने एक नए दीन की बुनियाद डाली है।

खुद इक़बाल को भी मालूम था कि उस के खिलाफ क्या क्या इल्ज़ामात और एतराज़ात आइद किए जा रहे हैं। लिहाज़ा इक़बाल ने औलोमा के जरीये आइद शुदा इल्ज़ामात व एतराज़ात की तर्जुमानी करते हुए अपने दीवान "**बाँगे दरा**" सफा नंबर **: ५२** पर एक शेअर लिखा है कि :-

उस शख्स की हम पर तो हक़ीक़त नहीं खुलती
होगा ये किसी और ही इस्लाम का बानी

यानी हम नहीं समझते कि डाकटर ऐसे अक़ाइद रखने के बावजूद भी कैसे मुसलमान है ? इस के इस्लाम की हक़ीक़त हमारी समझ में नहीं आती। अगर ऐसे फासिद अक़ाइद के बावजूद भी इक़बाल मुसलमान है, तो मालूम होता है कि उसने कोई और इस्लाम गढ़ लिया है और वो अपने गढ़े हुए नए इस्लाम की बुनियाद पर मुसलमान है।

डाकटर इक़्बाल पर शरई हुक्म

शाइरे मशरिक़, डाकटर इक़्बाल के मुताल्लिक औलोमा-ए अहले सुन्नत में मुख्तलिफ आरा और खयालात हैं, क्योंकि डाकटर इक़्बाल ने अपने क़लम को बेलगाम और तेज़ रफ्तार घोडे की तरह अंधा धुंद दौड़ाया। जिसकी ज़द में आ कर इस्लामी कवानीन के उसूली व फुरूई अहकाम का अदब व लिहाज़, मरासिमे इस्लामिया की अज़्मतो तौकीर और दीगर अक़ाइद से ताल्लुक रखने वाले मसाइल पर ऐसी कारी ज़रबें लगीं कि हंगामा बरपा हो गया। औलोमा-ए हक ने इक़्बाल के काबिले एतराज व गिरिफ्त अश्आर पर कुरआनो हदीस की रोशनी में मुवाखिज़ा फरमाया, तो इक़्बाल के कई अश्आर इल्हादो-कुफ्र पर मबनी पाए। अवराके साबिक़ा में हमने इक़्बाल के चंद गैर शरई अश्आर बतौरे सुबूत पैश किए हैं। जिनको मुलाहिज़ा फरमा कर क़ारेईने किराम भी यक़ीन के दर्जा में कह सकते हैं कि **बेशक ! डाकटर इक़्बाल से खिलाफे शरअ उमूर का सुदूर हुवा है, बल्कि कुफ्रियात तक उस से सादिर हुए हैं।**

डाकटर इक़्बाल पर उनके कुफ्रिया अश्आर की वजह से अहले सुन्नत व जमाअत के औलोमा-ए हक ने जो शरई हुक्म नाफिज़ फरमाया है, वो बर महल, बर हक़, सहीह, बजा, दुरुस्त, मौजूं, मुनासिब और बर वक्त है।

लैकिन........

नेचरीयत और बे दीनीयत पर मुश्तमिल अनाप शनाप बकवासें करने के बावजूद डाकटर इक़्बाल ने कभी भी अल्लाह

तबारक व तआला के महबूबे आज़म व अकरम ﷺ की शाने अक्दस में गुस्ताख़ी और बे-अदबी नहीं की थी। बेशक! डाकटर इक़्बाल से जहालत की बिना पर कुफ्र तक पहूँचाने वाली गलतियां ज़रूर हुई हैं। मगर आखरी वक्त में मरने से पहले उस की तौबा भी मशहूर है।

डाकटर इक़्बाल के मुताल्लिक शेहजादए आ'ला हज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत, हुज़ूर मुफ्तीए आज़म हिंद का मौकिफ

माहे रबीउन्नूर, हि.१४०१ में दारुल उलूम गुलशने रज़ा कोलंबी, ज़िला नांदेर, (महाराष्ट्र) के सदर मुदर्रिसीन, हज़रत मौलाना अब्दुस्समद कादरी रिजवी ने रिजवी दारुल इफ्ता, बरेली शरीफ से डाकटर इक़्बाल के खिलाफे शरअ शेअर के एक मिसरे **"मसीह व खिज़्र से ऊंचा मकाम है तेरा"** लिख कर हुक्मे शरई मालूम किया. रिजवी दारुल इफ्ता बरेली शरीफ के सदर मुफ्ती **हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद आज़म साहब** ने मज़्कूरा बाला मिसरे को कुफरी क़ौल करार दिया और इस के काइल यानी डाकटर इक़्बाल के बारे में ये तहरीर किया कि :-

मैंने हुज़ूर मुफ्तीए आज़म हिंद (यानी शहजादए आला हज़रत मौलाना शाह मुस्तफा रज़ा खां बरेल्वी) **से डाकटर इक़्बाल के बारे में दरियाफ्त किया था, तो आपने ये फरमाया कि बै:शक डाकटर इक़्बाल से खिलाफे शरअ उमूर का सुदूर हुवा है, कुफ्रियात तक उस से सादिर हुए हैं। मगर वो अल्लाह**

तआला के महबूब, सरकारे दो आलम की शान में गुस्ताख व बेअदब नहीं था। बैःशक ! उस से उस की जहालत की बिना पर कुफ्र तक पहूँचाने वाली गलतीयां हुई हैं। मगर आखरी वक्त में मरने से पहले उस की तौबा भी मशहूर है। जो अल्लाह तआला के महबूब की शान में गुस्ताख नहीं होता, उस को तौबा की तौफीक़ मिलती है। इस के बाद हज़रत ने डाकटर इक़बाल का ये शेअर पढ़ा :-

ब मुस्तफा ब-रसां ख्वैश रा के दीं हमा उस्त
गर बा-ऊ न रसीदी, तमाम बुःलहबी स्त

हज़रत ये शेअर पढ़ कर आबदीदा हो गए और फरमाने लगे कि इस शेअर से हुज़ूरे अकदस ﷺ के साथ इक़बाल की मुहब्बत ज़ाहिर होती है। इस के बाद फरमाया : इक़बाल के बारे में तवक्कुफ चाहिए। और हज़रत का ये फरमान उस वक्त की ना-साज़ीए तबअ से १५/१६ साल पहले का है। हज़रत के इसी फरमान पर मेरा अमल है। (वल्लाहु तआला आलम)

मुहम्मद आज़म गुफिरलहू

फत्वा नंबर : ३३४६
१५

खादिम दारुल इफ्ता
बरेली शरीफ
दस्तख़त :
फकीर मुस्तफा रज़ा गुफिरलहू
१९/ रजब हि.१४०१

(हवाला :- तजानिबे अहले सुन्नत नाशिर : मदरसा गुलशने रज़ा - कोलंबी, ज़िला : नांदेर, महाराष्ट्र, सने इशाअत, मार्च ई.२००७, सफा नंबर : ५-६)

▣ ताजदारे अहले सुन्नत, शेहजादए आला हज़रत, सयदी व सनदी व मुर्शिदी व मावाई व मलजाई, **हुज़ूर मुफ्तीए आज़मे हिंद** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान का ये जुम्ला तिलाई हुरूफ से लिखने के काबिल है कि **"जो गुस्ताखे रसूल नहीं होता, उसे तौबा की तौफीक़ मिलती है।"**

और ये हक़ीक़त है कि डाकटर इक़बाल हरगिज़ गुस्ताखे रसूल नहीं थे। बल्कि उन्होंने अपने कलाम में **"इश्क़े रसूल"** के वो शादाब और महकते फूल खिलाए हैं कि मुर्दा-दिल को हयाते जावेदानी नसीब हो।

एक अहम नुक्ते की तरफ क़ारेईने किराम की तवज्जोह मुल्तफित करना चाहता हूँ कि डाकटर इक़बाल ने इलहाद, बेदीनी और नेचरीयत की तर्जुमानी करने वाले अशआर अपने दीवान **"बाँगे दरा - ई.१९२४ और बाले जिब्रील। ई.१९३५"** में ज़्यादातर लिखे हैं। लैकिन इ.१९३५ से उनके इंतिक़ाल इ.१९३८ तक के अरसे के दरमियान यानी उनकी ज़िंदगी के आखरी अय्याम में इक़बाल की शाइरी में एक नया मोड (Turn) आया और उन्होंने इश्क़े रसूल ﷺ में ऐसे ऐसे नादिरे ज़मन अश्आर कहे कि गोया बक़ौले **हुज़ूर मुफ्तीए आज़म हिंद** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान **"जो गुस्ताखे रसूल नहीं होता, उसे तौबा की तौफीक़ मिलती है।"** का मुज़ाहेरा करते हुए डाकटर इक़बाल ने अज़मते मुस्तफा के पर्चम को बडी शानो शौकत से लहराया और पूरी दुनिया को ये पैगाम दिया कि :-

{ की मुहम्मद से वफा तूने तो हम तेरे हैं }
{ ये जहां चीज़ है क्या ? लौहो कलम तेरे हैं }

▣ डाकटर इक़्बाल का दीवान **"अरमुगाने हिजाज़"** इ.१९३८ जो उनके इंतिक़ाल के बाद शाए हुवा। उस में डाकटर इक़्बाल ने अपनी माज़ी की गलतियों की तलाफी और पादाश और मुकाफात में अज़्मते मुस्तफा ﷺ के तअल्लुक़ से **"अक़ाइदे अहले सुन्नत"** की तर्जुमानी की है, बल्कि बारगाहे रिसालत के गुस्ताखों की तोबीख व तज़लील में अपने कलम से **"किल्के रज़ा"** के जल्वे दिखाए हैं। जिसकी वज़ाहत आइन्दा सफ्हात में मुलाहिज़ा फरमाएं। डाकटर इक़्बाल ने अपने दीवानों में अक़ाइदे अहले सुन्नत की तर्जुमानी करते हुए हुज़ूरे अकदस, रहमते आलम ﷺ के अवसाफे जलीला और खसाइसे अज़ीमा में मारकतुल आरा अश्आर क़लमबंद किए हैं। जिनका बिल इस्तियाब और मुफस्सल तबसेरा यहां मुम्किन नहीं। लिहाज़ा हम सिर्फ उन उनावीन का इख्तिसारन और इशारतन खाका पैशे खिदमत करते हैं।

● हुज़ूर ﷺ अल्लाह के नूर हैं। ● हुज़ूर ﷺ अल्लाह तआला के महबूबे आजम व अकरम हैं। ● हुज़ूरे अकदस हाजिरो नाजिर हैं। ● हुज़ूरे अकदस ज़िंदए-जावेद रसूल हैं। ● हुज़ूरे अकदस बारगाहे इलाही के वसीलए उज़्मा हैं। ● हुज़ूरे अकदस से तवस्सुल और मदद माँगना जाइज़ है। ● हुज़ूरे अकदस शाफए मेहशर हैं। ● हुज़ूरे अकदस इल्म गैब दां रसूल हैं। ● हुज़ूरे अकदस दोनों आलम के सरदार हैं। ● हुज़ूरे अकदस आखरी नबी और रसूल हैं। ● हुज़ूरे अकदस इख्तियारात और तसर्रुफात के मालिक हैं। ● हुज़ूरे अकदस की मेअ्राज जिस्मानी थी। ● हुज़ूरे अकदस ने अपने सर की आँखों से अल्लाह तबारक व तआला का दीदार किया है।

www.markazahlesunnat.net

अलावा अज़ीं डाकटर इक़्बाल **"मीलादुन्नबी"** के जुलूस और महफिलों के इनइक़ाद को बाइसे नजातो-सवाब समझते थे और शिरकत करते थे। औलियाए-किराम के इख्तियारात के पुख्ता क़ाइल थे, मज़ाराते औलिया पर हाजरी देते थे और उनकी शान में मनक़बत लिखते थे।

वहाबियत के गाल पर डाकटर इक़्बाल का करारा तमांचा

बुनियादी तौर **(Basicly)** पर डाकटर इक़्बाल अहले सुन्नत व जमाअत के वो अक़ाइद जो ताज़ीमो-तौकीर रसूल ﷺ से तअल्लुक रखते हैं, उनके वो सख्त पाबंद व काइल व आमिल थे। बल्कि उन्होंने हुज़ूरे अकदस ﷺ की ताज़ीम व तौकीर और वालेहाना अकीदत व मुहब्बत में इश्के़ रसूल में डूबे हुए बेमिस्लो-मिसाल अश्आर लिख कर रिफअत व शौकते मुस्तफा के पर्चम को हमेशा लहराया है। जिसकी तफसीली वज़ाहत तूल तहरीर के खौफ से यहां मुम्किन नहीं। लिहाज़ा बतौरे नमूना एक शेअर मुलाहिज़ा हो।

ब मुस्तफा ब-रसां ख्वैश रा के दीं हमा उस्त
गर बा-ऊ न रसीदी तमाम बु:लहबी स्त

(हवाला :- **"अरमुगाने हिजाज़"** अज : डाकटर इक़्बाल)

इश्के़ रसूल के कैफो सुरूर में रहने वाले डाकटर इक़्बाल को नबीए अकरम ﷺ की शान में गुस्ताख़ी करने वालों से सख्त नफरत थी। ज़ैल में पैश करदा वाकिआ पढ़ें और फिर डाकटर इक़्बाल की तड़प देखें।

▣ इमामे इश्क़ो मुहब्बत आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा के शहज़ादे हुज्जतुल इस्लाम, **हज़रत अल्लामा हामिद रज़ा ख़ां साहब**, कुद्दसा सिर्रहू के दामाद हज़रत मौलाना तकद्दुस अली ख़ां रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने डाकटर इक़्बाल के साथ हज़रत हामिद रजा ख़ां अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान की मुलाकात का वाकिआ बयान फरमाया है कि :-

''ग़ालिबन ई.१९३४ का वाकिआ है कि जब कि मस्जिद वज़ीर ख़ां के आखरी फैस्ला कुन मुनाज़रा का अेहतिमाम किया गया था। हज़रत हुज्जतुल इस्लाम अल्लामा हामिद रज़ा ख़ां साहब ब-नफ्से नफीस लाहौर तशरीफ ले आए थे, लैकिन मौलवी अशरफ अली थानवी को ख़ुसूसी दावत देने और आने के लिए रेलवे में डिब्बा रिजर्व (Reserve) कराने के बावजूद नहीं आए। इस मौके पर हज़रत हुज्जतुल इस्लाम और डाकटर इक़्बाल मरहूम की मुलाकात हुई। हज़रत हुज्जतुल इस्लाम ने देवबंदियों की गुस्ताख़ाना इबारतें इक़्बाल के सामने पढ़ीं, तो डाकटर इक़्बाल ने बेसाख्ता कहा कि ''**मौलाना ये ऐसी गुस्ताख़ाना इबारात हैं कि इन लोगों पर आसमान क्यूं नहीं टूट पड़ता ? इन पर तो आसमान टूट पड़ना चाहीए।**''

(हवाला :- ''**दावते फिक्र**'' अज़ :- मौलाना मुहम्मद ताबिश कसूरी, मतबूआ :- मुरीद के. प्रैस इ.१९८३, शेखूपूरा (पाकिस्तान) **सफा नंबर : २५**)

मुंदरजा बाला इबारत में डाकटर इक़्बाल के क़ौल से अक़ाइदे वहाबिया देवबंदिया से डाकटर इक़्बाल की सख्त नफरत और बेज़ारी का सुबूत मिलता है और ये भी पता चलता है कि वो हुज़ूरे

अकदस ﷺ से वालेहाना मुहब्बत और अकीदत की वजह से वहाबियों से मुतनफ्फिर और बैज़ार थे।

डाकटर इक़्बाल ने वहाबियों और देवबंदियों के मुँह पर पांव का पंजा मारा

दारुल उलूम देवबंद के सदर मुदर्रिसीन और शेख़ुल हदीस **मौलवी हुसैन अहमद** ने जब ये आवाज़ बुलंद की कि कौमें अवतान यानी मुल्कों (Countries) से बनती हैं। तब डाकटर इक़्बाल ने मौलवी हुसैन अहमद के इस क़ौल के रद्द व इबताल नीज मौलवी हुसैन अहमद की तज़लील और तोबीख करते हुए सख्त गिरफ्त करते हुए फरमाया कि :-

अज्म हनूज़ न दान्द रमूज़ दीं वर्ना
ज़ देवबंद हुसैन अहमद ई बुल अजमी स्त
सरवद बर सर मिम्बर कि मिल्लत अज़ वतन अस्त
चेह बे-ख़बर अज़ मकामे मुहम्मदे अरबी स्त

(हवाला :- ''अरमुगाने हिजाज़'' अज :- डाकटर इक़्बाल)

डाकटर इक़्बाल ने देवबंदी पेश्वा की बर सरे आम खिंचाई कर के उसे दो कोड़ी का कर के रख दिया। लैकिन वाह रे बेशरमी ! देवबंदियों की ढिटाई और बे-हयाई देखो कि डाकटर इक़्बाल के हंटर (Whip) की सख्त ज़र्ब लगने के बाद भी अपनी खस्लते बद से बेगैरती का ठीकरा आँखों पर रख कर निहायत बे-हयाई और बेशरमी का मुज़ाहिरा करते हुए ऐसा झूठा प्रोपेगंडा करते हैं कि

अल्लामा इक़बाल ने हमारे पेश्वा हुसैन अहमद के तअल्लुक से जो शेअर लिखा है, उस से बाद में रुजू कर लिया है। लैकिन हक़ीक़त इस से बर अक्स है। डाकटर इक़बाल ने इस शेअर से रुजू नहीं किया बल्कि उस की मज़ीद ताईद और तौसीक की है। ज़ैल में मुंदरजा दो अश्आर हमारे दावे के शाहिदे आदिल हैं :-

कसे कू पंजा ज़द मुल्क व नसब रा ★ नदानद मानीए दीने अरब रा
अगर कौम अज़ वतन बूदे मुहम्मद ★ न दादे दावते दीं बू लहब रा

(मनकूल अज़ माहिरे इकबालियात मुहम्मद अब्दुल्लाह कुरैशी। साबिक़ ऐडीटर **"अदबी दुनिया", लाहौर (पाकिस्तान)** बहवाला :- **"इक़बाल व अहमद रज़ा"** मुसन्निफ : राजा रशीद महमूद। M.A. मतबूआ : लाहौर सने तबाअत ई.१९७९, बारे दोम, **सफा : ५९**)

डाकटर इक़बाल के चंद वो अश्आर जो अहले सुन्नत व जमाअत के अक़ाइद की ताईद और वहाबी देवबंदी अक़ाइद की तरदीद करते हैं, वो अशआर ज़ैल में पैशे ख़िदमत हैं :-

- **क़ुव्वते इश्क़ से हर पस्त को बाला कर दे**
  दहर में इस्मे मुहम्मद से उजाला कर दे
- **शहीदे इश्क़े नबी हूँ, मेरी लहद पे शम्ए कमर जले**
  उठा के लाएँगे खुद फरिश्ते चिराग खुरशीद से जला कर
- **हर कुजा हंगामए आलम बूद**
  रहमतुल्लिल आलमीने हम बूद
- **पंजए ऊ पंजए हक मी शवद**
  माह अज अंगुश्ते ऊ शक़ मी शवद

www.markazahlesunnat.net

- **लीं शफाअत ने कयामत में बलाऐं क्या क्या**
  अर्के शर्म में डूबा जो गुनहगार आया
- **हर कि इश्क़े मुस्तफा सामाने उस्त**
  बहरो बर दर गोशए दामाने उस्त
- **निगाहे इश्क़ो मस्ती में वही अव्वल, वही आखिर**
  वही कुरआँ, वही फुरक़ाँ, वही यासीन, वही ताहा

▣ एक मरतबा अंजुमने इस्लाम, स्यालकोट (पाकिस्तान) का सालाना जलसा डाकटर इक़बाल की सदारत में हुवा। जलसे में किसी ख़ुश इल्हान नात ख्वाँ ने आला हज़रत इमाम **इश्क़ो महब्बत, इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी** की मशहूरे ज़माना नाअत पढ़ी। जिसका एक शेअर ये है :-

ख़ुदा की रज़ा चाहते हैं दो-आलम ﷺ
ख़ुदा चाहता है रज़ाए मुहम्मद ﷺ

नाअत ख्वानी के बाद जब डाकटर इक़बाल अपनी सदारती तक़रीर के लिए खडे हुए, तो फिल फौर आला हज़रत की मज़कूरा नाअत की ही बहर और उसी रदीफ और क़ाफिया में दो अशआर कहे। वो हस्बे ज़ैल हैं :-

★ **तमाशा तो देखो कि दोज़ख की आतिश**
लगाए ख़ुदा और बुझाए मुहम्मद ﷺ
★ **तअज्जुब तो ये है कि फिरदौसे आला**
बनाए ख़ुदा और बसाए मुहम्मद ﷺ

(हवाला :- **"नवादिरे इक़बाल"**, नाशिर : सर सय्यद बुक डिपो, अलीगढ़ - **सफा : २५**)

डाकटर इक़बाल पर आ'ला हज़रत के फत्वे का बोहतान और ग़लत इल्ज़ाम

"बरेल्वी जमाअत का तआरुफ और उनके फत्वे" नाम के आठ वर्की किताबचे के दरोग गो और पर्दा-नशीन मुसन्निफ ने इमाम अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत **इमाम अहमद रजा मुहक्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान के खिलाफ झूठा इल्ज़ाम लगाते हुए अपने आठ वर्की किताबचे में सुर्खी बाँधी है कि **"डाकटर इक़बाल पर कुफ्र का फत्वा"** फिर उस उनवान के तहत मौलाना मुहम्मद तय्यब दाना पूरी की किताब **"तजानिबे अहले सुन्नत"** की इबारतें इधर उधर से नक़ल कर के और मोड तोड के ये साबित करने की सईए-नाकाम की है कि आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने डाकटर इक़बाल को काफिर कहा है।

लैकिन हक़ीक़त ये है कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा या आपके साहिबज़ादगान में से बल्कि बरेली शरीफ से डाकटर इक़बाल के खिलाफ कोई भी फत्वा जारी नहीं किया गया। अगर बरेली शरीफ से डाकटर इक़बाल के खिलाफ फत्वा जारी किया गया होता, तो आला हज़रत के दुनिया से पर्दा फरमाने के दस साल से भी ज़्यादा अरसा के बाद आला हज़रत के बडे शहज़ादे हुज्जतुल इस्लाम **हज़रत अल्लामा मुफ्ती हामिद रज़ा खां** रहमतुल्लाहि तआला अलैह लाहौर के मुनाज़रे के मौक़े पर अल्लामा इक़बाल से मिलना कैसे गवारा फरमाते? जिस किताब **"तजानिबे अहले सुन्नत"** की इबारत नक़ल कर के डाकटर इक़बाल पर कुफ्र के फत्वे का वावेला

www.markazahlesunnat.net

मचाया गया है, इस किताब में भी डाकटर इक़बाल के खिलाफ कुफ्र का हुक्म सादिर नहीं किया गया। अलबत्ता डाकटर इक़बाल के खिलाफे शरअ और काबिले गिरिफ्त अशआर पर तबसेरा व तन्क़ीद ज़रूर की गई है। और वो तन्क़ीद इन अश्आर पर की गई है, जिन अश्आर का तज़किरा हमने अवराके साबेक़ा में किया है।

लैकिन **"शर्म चेह कुत्ती कि पैशे मर्दां आयद"** वाली मिस्ल के मुताबिक आठ वर्की किताबचा का **"कुत्ता-बच्चा"** मुसन्निफ की ढिटाई के ढोल ढमक्का के रक़्से बेहयाई पर तअज्जुब होता है कि जिस डाकटर इक़बाल की हमदर्दी का मुज़ाहेरा कर के इमाम अहले सुन्नत के खिलाफ बोहतान, इफ्तरा, इत्तिहाम और इल्ज़ाम की फिक्री आवारगी, बीमार और कमीना ज़हनियत, ज़नाना रविष, ज़लील सिरशत और खसीस खसलत से मुरक्कब जिस खुब्सा शरारत का ढंडोरा पीटा है, उसी **डाकटर इक़बाल ने पर्दा-नशीन मुसन्निफ की पूरी वहाबी देवबंदी जमाअत के मुँह पर करारा तमांचा बल्कि पांव का पंजा मारा है।** अवराके साबिक़ा में इस हक़ीक़त को आश्कारा किया गया है। जिसे पढ़ कर पर्दा-नशीन मुसन्निफ की हालत ज़रूर **"मैं मरूँ तुझ पर और तू मारे मुझ को"** जैसी हो गई होगी।

अपने अकाबिर के अक़ाइदे बातिला और इर्तिकाबे फाहिशा पर शर्मसार और नादिम होने के बजाय सतूदा सिफात शख्सियात के दामने तक़द्दुस पर कीचड़ उछालने वाला सिर्फ बेवक़ूफ ही नहीं बल्कि पागल भी है।

▣ डाकटर इक़्बाल के मुतअल्लिक़ आखरी बात :-

यहां तक की तफसीली वज़ाहत के बाद अज़्हर मिनश्शम्स साबित हुवा कि **इमाम अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा मुहक़्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने डाकटर इक़्बाल पर कुफ्र का फत्वा सादिर नहीं फरमाया बल्कि किसी मोअतमद व मोअतबर सुन्नी आलिम ने डाकटर इक़्बाल पर ऐसा कोई फत्वा नाफिज़ नहीं फरमाया। अलावा अज़ीं आला हज़रत की या किसी सुन्नी आलिम की किसी किताब में बल्कि तजानिबे अहले सुन्नत किताब में भी डाकटर इक़्बाल को काफिर नहीं कहा गया।

अलबत्ता डाकटर इक़्बाल से खिलाफे शरअ अश्आर का सुदुर ज़रूर हुवा है, बल्कि कुफ्रियात तक उनसे सादिर हुए हैं। लैकिन डाकटर इक़्बाल **हुज़ूरे अक़दस, जाने ईमान, बाइसे तख़्लीके आलम** ﷺ की शान में गुस्ताख और बे-अदब नहीं थे। बे:शक उनसे जहालत की बिना पर कुफ्र तक पहूँचाने वाली गलतियां हुई हैं, लैकिन बक़ौल **शहज़ादए आला हज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत, हुज़ूर मुफ्तीए आज़्म हिंद, रदीअल्लाहो तआला अन्हो आखरी वक्त में इन्तेक़ाल से पहले उनकी तौबा भी मशहूर है।**

लिहाज़ा ....

डाकटर इक़्बाल के बारे में तवक़्क़ुफ व सुकूत से काम लें। और उनके मुतअल्लिक़ नामौज़ूं, नाशाइस्ता, बेतुकी, बेमेल और ओल जलूल बात न कहनी चाहिए। लैकिन डाकटर इक़्बाल के वो अश्आर जो शरीअते मुक़द्दसा के खिलाफ हैं, उनसे क़तई परहेज़ करें। उन अश्आर को सनद बना कर हरगिज़ न पढ़ें।

शिबली नोमानी, हाली, अबुल कलाम आज़ाद और मुहम्मद अली जिन्नाह के मुतअल्लिक़

आठ वर्क़ी फुहड़ किताबचा के पर्दा-नशीन और बुज़दिल मुसन्निफ ने मशहूरे ज़माना चंद शख्सियात के नाम का ज़िक्र कर के उन पर कुफ्र का फत्वा थोपने का वावेला मचा कर अपना सर, सीना, पेट और सब कुछ पीटा है। हक़ीक़त से ना-आश्ना लोगों को अपने दामे फरैब में फांसने की गरज़ से दरोग-गोई का रोना रोया है कि उन पर ज़ुल्म हुवा है, ये हजरात बेक़सूर थे, लैकिन बरेली के मौलाना ने उन पर बुग्ज़ो-हसद की बुनियाद पर कुफ्र का फत्वा चस्पाँ कर दिया है। उनमें से ● औलोमा-ए देवबंद बिल खुसूस ● मौलवी अशरफ अली थानवी ● रशीद अहमद गंगोही ● कासिम नानोत्वी ● खलील अहमद अम्बेठवी ● औलोमा-ए अहले हदीस व नज्दी अकाबिर में मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब नज्दी ● मौलवी इस्माईल दहेलवी। अलावा अज़ीं दीगर मशहूरे ज़माना में ● शाइरे मशरिक़ डाकटर इक़्बाल ● सर सय्यद अहमद ख़ां अली गढी ● ख्वाजा हसन निज़ामी ● मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी का तफसीली जायजा क़ारेईने किराम ने मुलाहिजा फरमा लिया और यक़ीन के दर्जे में बावर कर लिया होगा कि मज़्कूरीन की ही किताबों के ठोस हवालों के बराहीनो-शवाहिद की रोशनी में साबित कर दिया गया है कि उनमें का एक भी दूध का धोया हुवा नहीं था। बाकी रहे मुसन्निफ के चहीते ● शिबली नोमानी ● अल्ताफ हुसैन हाली ● अबुल-कलाम आज़ाद और ● मिस्टर मुहम्मद अली जिन्नाह। इन चारों के तअल्लुक से काफी मवाद मौजूद है। अगर इस पर खामा आराई पर कमर बस्ता हुए। तो किताब की जखामत बहुत ही बढ़

जाएगी। अलावा अज़ीं इन चारों की वो मज़हबी हैसियत भी नहीं, जो अवराके साबिक़ा के कलमज़दा मुजरिमीन ने अय्यारी और मकरो फरेब से हासिल की थी। मज़कूरा चार अश्खास में से **हाली** और **शिब्ली** शाइर थे। आखरी दो यानी **अबुल-कलाम आज़ाद** और **मुहम्मद अली जिन्नाह** पक्के सियासी (Politician) थे। इंशाअल्लाह ! किसी और मौके पर इन चारों के मुतअल्लिक भी तफ्सील से लिखा जाएगा।

अब ये किताब इख़्तेताम के मरहले में है। लिहाज़ा चारो चार यानी आठ वर्की किताबचा के पर्दा नशीन मुसन्निफ की आखरी बात यानी सफा नंबर : ७ और ८ पर उन्होंने "**काफिर को काफिर न कहने वाला भी काफिर**" उन्वान छेडकर औलोमा-ए अहले सुन्नत व जमाअत के खिलाफ बुग्ज़ो हसद और कीना की जो भडास निकाली है, उस का भी माकूल और मुनासिब जवाब देना भी ज़रूरी है। लिहाज़ा वो जवाब आखरी उन्वान की हैसियत से ज़ैल में है।

काफिर को काफिर न कहने का हुक्म

● कोई भी मुसलमान न ये अकीदा रखता है और न कहता है कि अल्लाह तबारक व तआला एक नहीं बल्कि दो हैं। **क्यूं ?** इसी तरह कोई भी मुसलमान न मानता है और न कहता है कि अल्लाह तआला के सिवा किसी ग़ैर की परसतिश और इबादत करना जाइज़ है। क्यूं ? ● कोई भी मुसलमान नमाज़ में सजदा करता है, लैकिन किसी बुत को सजदा नहीं करता। **क्यूं ?**

इस लिए कि अल्लाह तआला का कोई शरीक मानना या अल्लाह तआला के सिवा किसी ग़ैर को इबादत के लाइक़ समझना

या किसी बुत को इबादत का सजदा करना तौहीद के उसूल के खिलाफ है। ऐसा करने वाला दाइरए ईमान से खारिज हो कर काफिरो मुशरिक हो जाएगा। इसी लिए एक सच्चा मुसलमान अपने ईमान को बचाने के लिए उन तमाम खिलाफे तौहीद बातों से इजतिनाब करता है। उसे यक़ीन के दर्जे में मालूम है कि अगर मैंने तौहीद के खिलाफ काम किया, तो मेरा ईमान बरबाद हो जाएगा और जिंदगी भर की मेरी इबादतो-रियाज़त व दीगर आमाले सालेहा जाअेअ और तबाह हो जाऐंगे।

अब एक ज़रूरी नुक्ते की तरफ तवज्जो मुल्तफित करें कि एक शख्स कलमा "**ला-इलाहा-इल्लल्लाहो-मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह**" पढ़ता है, मुसलमान खानदान में पैदा हुवा। बहैसीयते मुसलमान परवरिश पाई, तालीम हासिल की, इस्लामी तौर तरीक़े और रस्मो-रिवाज और अहकाम का पाबंद रहा, लैकिन चालीस साल के बाद उस की **अक्ल का चिराग गुल हो गया** और मंदिर जा कर बुत की पूजा और परसतिश करने लगा, तो अब ये नहीं देखा जाएगा कि उसने चालीस (४०) साल तक नमाज़ पढ़ी है, रोज़े रखे हैं, ज़कात दी है, तीन तो हज किए हैं, बल्कि उस के इर्तिकाबे कुफ्र व शिर्क पर मुवाखिजा और गिरिफ्त कर के कुफ्र का हुक्म सादिर किया जाएगा। उस की चालीस साल की इबादतो-रियाज़त एक मिनट में काफूर हो जाएगी। जब उसने पहली मर्तबा बुत को इबादत का सजदा किया, उस पहले सज्दे के वकूअ पजीर होते ही उस की चालीस साल की इबादत आनन फानन तबाह और बर्बाद हो जाएगी।

इसी तरह एक शख्स पांचों वक्त पाबंदी से बा-जमाअत नमाज़ पढ़ता है, लैकिन रमज़ानुल मुबारक के रोज़े नहीं रखता और ये कहता है कि मैं नमाज़ को फर्ज़ मानता हूँ, नमाज़ पढ़ना लाज़्मी

और ज़रूरी है, लैकिन रमज़ान के रोज़े रखना फर्ज़ नहीं मानता। रोज़ा रखना लाज़्मी और ज़रूरी नहीं, तो ऐसा शख्स अरकाने इस्लाम में से एक रुक्न का इन्कार करने की वजह से काफिर हो जाएगा। अब ये नहीं देखा जाएगा कि इस्लाम के तमाम फराइज़, वाजिबात और दीगर अहकाम को मानता है, उस पर अमल करता है। कलमा पढ़ता है। कलमागो है, उसे काफिर कैसे कहें? हमें हमारे नबी ﷺ ने **अहले किब्ला की तकफीर यानी उसे काफिर कहने से मना फरमाया है,** लिहाज़ा हम उसे काफिर क्यों कहें? नहीं! यहां उस की कलमा गोई और अहले किब्ला होने का मुतलक़ लिहाज़ नहीं किया जाएगा। क्यूंकि उसने अल्लाह तबारक व तआला के एक फर्ज़ यानी रमज़ानुल मुबारक के फर्ज़ रोज़े का सरीह इन्कार किया है, लिहाजा वो दाइरए ईमान से खारिज हो कर काफिर हो गया है। उस पर कुफ्र का हुक्म जारी किया जाएगा।

⊙ इसी तरह एक शख्स चुस्त पाबंदे शरीअत है। इस्लामी वज़अ-क़तअ, आलिमाना लिबास, फराइज़ का छोड़ना तो दूरकी बात है, कोई मुस्तहब काम भी नहीं छोड़ता। निहायत परहेजगार, बा-अख्लाक, तवाज़ोअ व इन्किसारी का हुस्ने पैकर, जूदो सख़ावत में सबसे सबकत ले जाए। तक़्वा और गुनाहों से परहेज़ करने में अपनी मिसाल आप। ऐसा पाबंदे शरीअत शख्स, लैकिन एक बात ऐसी कहता है कि मैंने कभी भी शराब नहीं पी, न पीता हूँ न कभी पीऊँगा। लैकिन मैं शराब को हराम नहीं समझता, बल्कि शराब पीना जाइज़ मानता हूँ। हालाँकि मैंने कभी शराब नहीं पी, क्यूंकि उस की बू (Smell) मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। जब कोई शराब पी कर मेरे करीब आ जाता है, तो शराब की बू से मुझे मतली (Nausea) होने लगती है। बल्कि कभी कभी तो कै़ (Vomit) हो जाती है। तबई

तौर पर मुझे शराब पसंद नहीं, लैकिन फिर भी में उसे शरअन हराम नहीं मानता। तो ऐसा शख्स शराब का हराम होना, जो ज़रूरियाते दीन से है, उसे हराम मानने से इन्कार करने की वजह से काफिर हो जाएगा।

⊙ इसी तरह एक मुसलमान शख्स मुस्लिम खानदान में पैदा हुवा। खानदान के इस्लामी माहौल में परवरिश पा कर जवान हुवा। इस्लामी अरकाने सौमो-सलात और शरीअत के अहकाम का पाबंद था। लैकिन साथ में एक नाज़ेबा हरकत ये भी करता था कि हिन्दुओं के मंदिर में और ईसाइयों के चर्च (Church) में भी जाता था और वहां जा कर उनके बातिल मज़हब के तरीक़े से शिर्किया पूजा और परे (Pray) भी करता था और ये कहता था कि हमें हर मज़हब के तौर तरीक़े अपनाने चाहिए क्यूंकि सब के सब मज़हब सच्चे हैं। हमारे रास्ते अलग हैं, लैकिन मंज़िल तो एक ही है। उस की इस हरकत से मुज़तरिब हो कर ज़ैद नाम के शख्स ने मुहल्ले की मस्जिद के इमाम से शिकायत कर दी। इमाम एक नंबर का दुनियादार, जाहिल और कट मुल्ला था। उसने ज़ैद को समझाते और सहलाते हुए कहा कि इस में क्या बुराई है? उसने अपना मज़हब तो नहीं बदला। सिर्फ थोड़ी देर के लिए मंदिर में जा कर पूजा कर आता है। वैसे तो वो पाबंदे नमाज़ है। मेरी इक्तिदा में नमाज़ पढ़ता है। इस को हम कैसे काफिर कहेंगे? मौलवी साहब के इस जवाब से मौलवी साहब के ईमान का फ्यूज (Fuse) भी उड़ गया। क्यूंकि बुत की पूजा करना खुला हुवा शिर्क है। इतने बड़े गुनाह को उसने मामूली गलती में शुमार कर के कुफ्र और शिर्क जैसे संगीन गुनाह को हल्का जाना। कुफ्र को कुफ्र न जाना। इस्लाम के जो उसूली मसाइल जो अक़ाइद के तअल्लुक से हैं और वो ज़रूरीयाते दीन कहलाते हैं, उनमें एक कानून ये भी है कि "**कुफ्र को कुफ्र न समझना, ये भी कुफ्र**

है।'' लिहाजा मुहल्ले की मस्जिद के इमाम ने बुतपरस्ती को कुफ्र न समझा, इस लिए उन पर भी कुफ्र का हुक्म आइद होगा।

अवाम की ग़लत फहमी कि निन्नानवे (९९) बातें कुफ्र की हों और सिर्फ एक बात ईमान की हो, तब भी कुफ्र का हुक्म नहीं लगाया जाएगा

अवामुन्नास में आम तौर से एक गलत फहमी फैली हुई है कि ''**अगर किसी में निन्नानवे वजह कुफ्र की और सिर्फ एक वजह ही ईमान की हो, तो उस के कुफ्र की निन्नानवे वजूह का एतबार न किया जाएगा, हालाँकि ईमान की एक वजह का एतबार कर के, उसे काफिर न कहा जाए।**'' ये गलत फहमी इतनी राइज हो गई है कि कुफ्र बकने वाले और करने वाले निडर, बे-ख़ौफ, बेबाक, जरी और बे परवाह हो गए हैं। जो जी में आया वो बक दिया। बे-धडक कुफ्रियात बोलते और करते हैं। जब उन्हें शरई हुक्म से आगाह और खबरदार किया जाता है कि जनाब ! आपका ये क़ौल या इर्तिकाब खिलाफे शरअ है और इस पर कुफ्र का हुक्म सादिर होता है। तब वो ला-उबाली पन का मुज़ाहिरा करते हुए बे परवाही और बेफिक्री से यही कहता है कि **तो क्या हो गया?** में काफिर नहीं हुवा। ऐसे तो निन्नानवे काम करूँगा, तो भी काफिर नहीं हूँगा, क्यूंकि मुझ में जब तक ईमान की एक बात बाकी होगी मुझ पर कुफ्र का हुक्म नहीं लगेगा और मुझ में तो ईमान की एक नहीं बल्कि बहुत सी बातें पाई जाती हैं। मैं कलमा पढ़ता हूँ, अल्लाह को मानता हूँ, नमाज़ पढ़ता हूँ, वग़ैरा।

मज़कूरा बाला ग़लत फहमी में अच्छे अच्छे बल्कि दीनदार कहलाने वाले और पढ़े लिखे हजरात मुबतेला हैं। ये गलत फहमी सुलह कुल्लियों ने ही फैलाई है, जो वहाबियों का माल खा खा कर उनकी नमक हलाली का हक़ अदा करते हैं। जब किसी बद अक़ीदा और गुस्ताखे रसूल के लिए ये कहा जाता है कि नबी की शान में गुस्ताख़ी करने की वजह से ये शख्स काफिर हो गया, तब वो सुलह कुल्ली मज़कूरा बाला मंतिक छांटता है कि देखो ! देखो ! आप इस बेचारे पर ज्यादती और जब्र व ज़ुल्म कर रहे हैं। इतना तशद्दुद मत करो। जरा नरमी से काम लो। अगर इस ने ऐसा कुछ कहने की गलती की है, तो वो जाने और उस के आमाल जाने। हमें उसे काफिर कहने का कोई हक़ नहीं। देखो वो शख्स कलमा पढ़ता है और नमाज़ पढ़ता है, लिहाज़ा वो कलमा गो और अहले किब्ला है। किसी भी कलमा गो और अहले किब्ला को काफिर नहीं कहना चाहिए। जब तक उस में एक बात भी ईमान की बाकी है, तब तक उस पर काफिर होने का हुक्म सादिर नहीं होगा।

इस तरह की मक्कारी और फरेबदही से वो सुलह कुल्ली शख्स ईमान वालों को गुस्ताखे रसूल की मुखालिफत से रोकता है। जिसका फायदा वहाबी देवबंदी फिर्के के गुस्ताखे रसूल लोगों को होता है। अक्सर देखा जाता है कि जब किसी गुस्ताखे रसूल के खिलाफ आवाज़ उठाई जाती है, तो अक्सर लोग ये कह कर किनारा कश हो जाते हैं कि हमें क्या लेना देना ? अगर उसने ऐसा कुछ कहा है या किया है, तो उस के आमाल उस के साथ हमारे आमाल हमारे साथ। उस की कब्र में न हम सोने जाऐंगे, न वो हमारी कब्र में सोने आएगा। अगर उसने किसी नबी या वली की शान में गुस्ताख़ी की है, वो नबी और वली उस से ज़रूर बदला लेंगे। उसे सज़ा देंगे।

हम कौन होते हैं बीच में टांग लड़ाने वाले। ऐसे बेजा, फुज़ूल और ना–मुनासिब झगडा फसाद से कौम का नुक़सान होता है। मुसलमानों का आपसी इत्तिहाद व इत्तिफाक टूटता है। कौम में फूट पडती है। लोग अलग गिरोह में तकसीम हो जाते हैं। लिहाज़ा मज़हब के नाम पर ऐसे झगडे फसाद मत करो। किसी की मुखालिफत मत करो। किसी को भी काफिर मत कहो।

वाह! बडे आ गए मुसलेह मिल्लत और हमदर्दे कौम! हुज़ूरे अकदस रहमते आलम ﷺ की शाने आला व अर्फा में गुस्ताख़ी और बे अदबी के मुआमले के वक्त अम्नो–अमान, इत्तिहाद व इत्तिफाक, सुलह और आश्ती, चैन व इतमिनान, सुकूनो–खैरीयत, आसाइशो पनाह, राहतो सुख, मेलो–मिलाप, मुहब्बतो दोस्ती, यगानत व मुवाफिकत, यक जिहती व इखलास, रब्त व ज़ब्त, राह व रस्म, इर्तिबातो–तअल्लुक और दीगर अख्लाके हसना, मिलन सारी और खुश खूई की डींगें मारने वाले के खिलाफ अगर कोई कुछ कहता है या उस के कोई ज़ाती मज़मूम ऐब का कोई पर्दा फाश करता है, तब वो तमाम अख्लाकियात को बालाए ताक़ रख कर आस्तीनें चढा **मार डालूं, काट कर रख दूं और ज़मीन में गाड दूं** के जोशो जुनून में आग बगोला और गुस्से से सुर्ख़ व पीला हो कर कान के कीडे झड जाएं ऐसा शोरो–गुल मचाते हुए ऐसी ऐसी गंदी और सडी हुई गालियों का इस्तिमाल करते हुए जिस अंदाज़ की फहश कलामी से अपनी मादरी ज़बान में चींखता और चिल्लाता है कि उसे सुनकर फूटपाथ का मवाली भी उस के सामने ज़ानूए अदब तय करे और गालियां बोलने की महारत हासिल करने में उस की शागिर्दगी इख्तियार करे।

"**बरेल्वी जमाअत का तआरुफ और उनके फत्वे**" नाम के आठ वर्की किताबचा के पर्दा–नशीन मुसन्निफ ने भी यही

www.markazahlesunnat.net

तर्ज़ अपना कर अपने अकाबिर औलोमा–ए देवबंद के खिलाफ सादिर हुक्मे शरीअत के खिलाफ वावेला मचाया है। इस जाहिल मुसन्निफ का मुँह बंद करने बल्कि **जिसकी जूती उस का सर** वाली मिस्ल पर अमल करते हुए उस के और पूरी दुनियाए वहाबियत और देवबंदियत के पैश्वा **मौलवी अशरफ अली थानवी** की किताब का एक हवाला पैशे खिदमत है :–

> फरमाया कि फुकहा का जो ये हुक्म है कि अगर किसी में निन्नानवे वजूह कुफ्र की और एक वजह ईमान की हो तो उस निन्नानवे वजूह का एतबार न किया जाएगा और उस एक वजह का एतबार किया जाएगा, उस का मतलब लोग गलत समझते हैं और समझते हैं कि ईमान के लिए सिर्फ ईमान की एक बात का होना काफी है। बकिया निन्नानवे बातें कुफ्र की हों तब भी वो मुनज़्ज़िले ईमान न होंगे। हालाँकि ये ग़लत है अगर किसी में एक बात भी कुफ्र की होगी वो बिल इजमाअ काफिर है, बल्कि मुराद ये है कि अगर किसी कलाम में निन्नानवे महमिल कुफ्र के हों और सिर्फ एक महमिल ईमान का हो, तो उस पर हुक्म ईमान ही का लगाया जाएगा न कि कुफ्र का, क्यूंकि ईमान का कम अज़ कम एक एहतिमाल तो है, ये मेअयार तो किसी की तकफीर करने के लिए मुक़र्रर किया गया है कि ईमान के अद्ना से अदना एहतिमाल के होते हुए भी किसी की तकफीर न करें और मुतकल्लिम की ज़ात के एतबार से अगर वो एक महमिल कुफ्र का भी मोअतकिद होगा तो काफिर होगा।

हवाला :-

(१) "**अल इफादातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौमिया**" जिल्द नंबर : ५, हिस्सा : १०, मलफूज़ : ३०, **सफा : ४१**, नाशिर : मक्तबए दानिश। देवबंद, सने तबाअत : ई. १९९९, हि. १४१९

(२) "**मलफूज़ाते हकीमुल उम्मत**" जिल्द : १० में शामिल किताब "अल इफादातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौमिया" जिल्द : १०, मलफूज़ : ३०, **सफा : ५३** नाशिर : इदारा अशरफिया - देवबंद - सने तबाअत : इ. २०११

(३) "**अल इफादातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौमिया**" जिल्द नंबर : ४ में जिल्द : ५, किस्त : ३, मलफूज़ : १९३, **सफा : २३४**, नाशिर : मक्तबए दानिश। देवबंद, सने तबाअत: ई. १९८९, हि. १४०९

खुद मौलवी अशरफ अली थानवी ने इक़रार किया है कि किसी शख्स में चाहे एक नहीं बल्कि सैंकडों बातें ईमान की हों लैकिन "**अगर वो एक मुहमिल कुफ्र का भी मोअतकिद होगा, तो वो काफिर होगा।**"

अब हम आठ वर्की किताबचा के मुसन्निफ से पूछते हैं कि :-

- ▣ अल्लाह तआला झूठ बोलने पर कादिर है। ये अकीदा कुफ्र नहीं ?
- ▣ हुज़ूरे अकदस ﷺ के बाद भी कोई नबी आ सकता है। और हुज़ूरे अकदस ﷺ के बाद कोई नबी आ जाए, तो भी खातमियते मुहम्मदी ﷺ में कोई फर्क न आएगा। क्या ये इबारत कुफ्रिया नहीं ?

- ▣ हुज़ूरे अकदस ﷺ का इल्मे गैब आम इन्सानों बल्कि बच्चों, पागलों और चौपाए जानवरों की तरह है। क्या ये अकीदा कुफ्र नहीं ?
- ▣ हुज़ूरे अकदस ﷺ के इल्म से शैतान और मलकुल मौत का इल्म ज़्यादा है। क्या ऐसा अकीदा कुफ्र नहीं ?
- ▣ शैतान और मलकुल मौत का इल्म तो कुरआन से साबित है, लैकिन हुज़ूरे अकदस ﷺ के लिए इल्मे गैब मानना कुरआन के खिलाफ बल्कि शिर्क है। क्या ये अकीदा कुफ्र नहीं ?
- ▣ अमल कर के उम्मती नबी के बराबर हो सकता है बल्कि बढ़ भी जाता है। क्या ये अकीदा कुफ्र नहीं ?
- ▣ हुज़ूरे अकदस ﷺ को दीवार के पीछे का भी इल्म न था। क्या ये अकीदा अपनी किताब में छापना और ऐसा एतेकाद रखना कुफ्र नहीं ?
- ▣ अम्बियाए किराम और औलियाए इजाम के लिए इल्मे गैब का अकीदा रखना शिर्क है। क्या ये क़ौल कुफ्र नहीं ? वग़ैरा वग़ैरा

ऐसे तो मुतअद्दिद अक़ाइदो अक़्वाल जो सरासर अल्लाह तबारक व तआला और अल्लाह तआला के महबूबे आज़म व अकरम ﷺ व नीज अम्बियाए किराम व औलियाए इजाम की तौहीन, गुस्ताख़ी, तहकीर व तज़लील में तुम्हारे पेश्वाओं मस्लन ● मौलवी महमूदुल हसन देवबंदी ● मौलवी कासिम नानोत्वी ● मौलवी रशीद अहमद गंगोही ● मौलवी अशरफ अली थानवी ● मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी वग़ैरा ने अपनी रुस्वाए ज़माना किताबों में लिखा, शाअेअ किया और उस की इशाअतो-तश्हीर की, उन अक़ाइदे बातिला व कुफ्रियात की बिना पर उन्हें **मक्का**

मुअज़्ज़मा और **मदीना मुनव्वरा** और आलमे इस्लाम के औलोमा–ए हक़ ने "**काफिर**" और कुफ्र के मुर्तकिब ठहरा कर एलाए कलिमतुल हक़ का फरीज़ा अंजाम दिया, तो तुम तिलमिला उठे और बौखलाहट व बदहवासी के आलम में सर, सीना, पेट और सब कुछ पीटना शुरू कर दिया। अगर तुम में राई के दाने के हज़ारवें हिस्से जितनी भी दियानतदारी होती तो अपने अकाबिर के अक़ाइदे बातिला शनीआ के तदारुक का इल्तिज़ाम करते। लैकिन तुम्हारी फितरत "**उलटा चोर कोतवाल को डाँटे**" की है। अपने अकाबिर के कुफ्रियात पर पर्दा डालने के लिए एक आशिके रसूल के खिलाफ इल्ज़ामात व इत्तिहामात की मुहिम चलाई जा रही है, लैकिन इस मुहिमो–तहरीक की बुनियादें इतनी खोखली हैं कि हवा के एक हल्के से झोंके से वो इमारत मुनहदिम हो जाएगी। तअज्जुब तो इस बात पर होता है कि **इमामे इश्क़ो मुहब्बत, इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान के दामने सफा को इल्ज़ामात के कीचड़ से दागदार करने की फासिद गरज से जो खुद–साख्ता उसूल और मुरव्वयात का पज़ मुर्दा गौगा मचाया जा रहा है, वो खुद–साख्ता उसूल "**दरोग गो रा हाफिज़ा न बाशद**" वाली मिस्ल की एक थप्पड से "**ततडी ने दिया, जनम जली ने खाया ★ न जैब जली, न सौदा आया**" की तरह पुर मलाल हो कर पुरज़े पुरज़े हो कर रह जाते हैं।

क्यूंकि ....

जिस बात को लेकर वो इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी के खिलाफ हंगामा मचाते हैं, और उसी के बलबूते पर नाचते कूदते हैं, उन्हें याद ही नहीं रहता कि वही बात तो हमारे पेश्वा थानवी साहब ने भी कही है।

www.markazahlesunnat.net

▣ काफिर बनाना और बताना का फर्क :-

आठ वर्की किताबचा के पर्दा–नशीन मुसन्निफ ने ज़नानी रविष अपनाते हुए इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी और दीगर औलोमा–ए अहले सुन्नत को सीना कूबी करते हुए कोसना शुरू किया कि हाय हाय ! देखो देखो ! बरेल्वी जमाअत के औलोमा ने हमारे अकाबिर व पेश्वा औलोमा–ए देवबंद और दीगर मशहूरे ज़माना शख्सियात को "**काफिर बना दिया**" ये तमाम हजरात बेक़सूर थे लैकिन मौलाना अहमद रज़ा ने ज़ाती बुग्जो–हसद की बिना पर उन पर कुफ्र का फत्वा थोप कर उन्हें "**काफिर बना दिया.**" हाय हाय जुल्म हो गया। गज़ब हो गया। ऊं... ऊं... ऊं... इस तरह ज़ोर ज़ोर से चींख कर और सिसकियाँ ले–ले कर मकरो–फरेब का रोना शुरू किया और अपनी ज़नानी फितरत और निस्वानी खू का मुज़ाहिरा किया।

लैकिन ....

हक़ीक़त ये है कि औलोमा–ए अहले सुन्नत और बिल खुसूस **मक्का मुअज़्ज़मा** और **मदीना मुनव्वरा** के औलोमा–ए हक़ ने जिन जिन पर कुफ्र का फत्वा सादिर फरमाया है वो बरहक़, बरमहल, बरवक्त, सहीह, ठीक और दुरुस्त है। फत्वा देने वाले अज़ीमुश्शान मुफ्तियाने किराम निहायत ही मोहतात और शाने तहम्मुल के हामिल थे। उन्होंने **बारगाहे रब्बुल आलमीन** जल्लजलालुहू और **बारगाहे महबूबे रब्बुल आलमीन** ﷺ में गुस्ताख़ी, बे–अदबी और तौहीन करने वालों की किताबों के जुम्ले, अकवाल, जुम्ले का माअना, मतलब, मफहूम, मकसद और मुराद को अच्छी तरह देखा, पढ़ा, समझा, उन पर गौरो–फिक्र किया,

सियाक व सबाक, क़ौले मुतकल्लिम में तावील की गुंजाइश, इल्ज़ामे कुफ्र और लुज़ूमे कुफ्र, वग़ैरा जैसे अहम और लाज़मी उमूर, बल्कि मुतकल्लिम को कुफ्र के फत्वे की ज़द में आने से बचाने की हर मुम्किन कोशिश करने के बावजूद भी उस का कुफ्र निस्फुन्नहार के आफताब की तरह रोशन तौर पर साबित होने के बाद ही कुफ्र का फत्वा दिया यानी कि उस की किताब में अल्लाह व रसूल की बारगाह में तौहीन आमेज़ कलिमात का जो कुफ्र था, उस कुफ्र को बताया।

एक बात का ज़रूर लिहाज़ फरमाएं कि बारगाहे रिसालत ﷺ के जिन गुस्ताखों पर कुफ्र का फत्वा औलोमा-ए अहले सुन्नत ने दिया है। वो फत्वे की वजह से काफिर नहीं हुए। बल्कि वो तौहीने रिसालत के जुर्मे अज़ीम की वजह से काफिर ही थे। औलोमा-ए अहले सुन्नत ने उन्हें काफिर नहीं बनाया बल्कि उनका जो कुफ्र उनकी किताबों में था, और उस कुफ्र की वजह से वो काफिर तो थे ही, लैकिन भोले-भाले मुसलमान उन्हें मज़हबी पेश्वा मानते थे, उनका अदब व एहतेराम करते थे, उन भोले भाले मुसलमानों के ईमान के तहफ्फुज़ की खातिर, उन्हें आगाह और खबरदार करने की निय्यते सालेह से उन गुस्ताखों का तौहीने रिसालत के जुर्म का कुफ्र भोले भाले मुसलमानों को बताया कि जिनको तुम बुज़ुर्ग, रहबर और दीनी पेश्वा समझ कर, उनकी ताज़ीमो तौकीर और इज़्ज़त व एहतराम करने में कोई कसर बाकी न रखते थे, वो मुस्लिम पेश्वा या मुसलमानों के रहनुमा व हादी तो क्या ? मुसलमान ही नहीं। ये देखो उनकी किताब में ये कुफ्र लिखा हुवा है। औलोमा-ए अहले सुन्नत के बताने से अवामुन्नास भी इन गुस्ताखों की हक़ीक़त से वाक़िफ हो गए और समाज में उनका ऐसा बाईकॉट (Boycott) हुवा कि जिस तरह दूध से मख्खी को निकाल फेंका जाता है, इसी तरह

उन्हें भी ज़लीलो ख्वार कर के बिरादरी और समाज से बाहर निकाल दिया गया। औलोमा-ए अहले सुन्नत ने इन गुस्ताखों को काफिर बनाया नहीं बल्कि उनके कुफ्रियात साबित कर के उन्हें काफिर बताया है। सिर्फ एक नुक्ता का ही फर्क़ है। लफ्ज़े बनाया में हर्फे **"नून"** आता है और लफ्ज़े बताया में हर्फे **"ता"** आता है और दोनों लफ्ज़ों में सिर्फ एक नुक्ता का ही फर्क़ है। हमारी इस वज़ाहत की मुखालिफत करने से तमाम वहाबी देवबंदी लोगों का मुँह बंद करने के लिए हम उनके ही पेश्वा **"मौलवी अशरफ अली थानवी"** की किताब से एक इक़तिबास ज़ैल में पैशे खिदमत करते हैं :-

> आजकल औलोमा पर अेतराज किया जाता है कि औलोमा लोगों को काफिर बनाते हैं , मैं कहा करता हूँ कि एक नुक्ता तुमने कम कर दिया है। अगर एक नुक्ता और बढ़ा दो तो कलाम सही हो जावे। वो ये कि वो काफिर बताते हैं (बित्ता), बनाते नहीं (बिन्नून) बनाने के मअनी की तहक़ीक़ कर लो, वो इस तरह आसान है कि ये देखो कि मुसलमान बनाना किस को कहते हैं, उसी को तो कहते हैं कि ये तरग़ीब दी जाये कि तू मुसलमान हो जा, तो उसी क़यास पर काफिर बनाने के मअनी कुफ्र की तालीमो तरग़ीब होंगे, तो क्या तुमने किसी मुसलमान को अव्वल देखा कि औलोमा उस को ये कह रहे हों कि तू काफिर हो जा ? अलबत्ता जो शख्स खुद कुफ्र करे, उस को औलोमा काफिर बता देते हैं यानी ये कह देते हैं कि ये काफिर हो गया।

हवाला :-

(१) ''**अल इफादातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौमिया**'' जिल्द नंबर : १, हिस्सा : १, मलफूज़ : ५३०, **सफा : ३६६**, नाशिर : मक्तबए दानिश। देवबंद, सने तबाअत : ई. १९९९, हि. १४१९
(२) ''**मलफूज़ाते हकीमुल उम्मत**'' जिल्द : १० में शामिल किताब ''अल इफादातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौमिया'' जिल्द : २, मलफूज़ : १८, **सफा : ३०** नाशिर : इदारा अशरफिया – देवबंद – सने तबाअत : ई. २०११
(३) ''**अल इफादातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया**'' जिल्द नंबर : १, किस्त : २, मलफूज़ : ५३१, **सफा : २६०**, नाशिर : मक्तबए दानिश। देवबंद, सने तबाअत : ई. १९८९, हि. १४०९

''**बरेल्वी जमाअत का तआरुफ और उनके फत्वे**'' नाम की आठ वर्की किताबचा के नामर्द और हिजडे मुसन्निफ की बुज़दिली, नामर्दी, कम हिम्मती, कम ज़ाती, कम ज़र्फी, कम मायगी और कम बजाअती का तो ये आलम है कि झूठ, किज़्ब, दरोग, बोहतान, तोहमत, इल्ज़ाम, इफतिरा, इत्तिहाम और ऐसे ही दीगर शनीआते कबीहा का अटाला जमा कर के आठ वर्की किताबचा तो लिख मारा, मगर बहैसियते मुसन्निफ अपना नाम देने से उनका पाजामा गीला हो जाता था। लिहाज़ा अपना नाम पोशीदा रखा। नामर्दी की वजह से निस्वानी फितरत का मुज़ाहिरा किया। इस किताबचा में किज़्ब बयानी और दारोग गोई की वो बोहतात व फरावानी की है कि बैनुल अकवामी कज़्ज़ाब का लकब उसी के लिए ही मौजूं व मुनासिब है।

खैर! हमने अपनी इल्मी बे–बज़ाअती और अदबी बेमायगी के बावजूद हस्बे इस्तिताअत माकूल, मुस्बत और मुस्कित जवाब अरक़ाम करने की सईए इखलास की है।

आखरी बात :-

आठ वर्की किताबचा के पर्दा–नशीन मुसन्निफ ने अपने किताबचा के आखिर में एक मज़ीद रोना ये भी रोया है कि बरेल्वी जमाअत के औलोमा ये भी कहते हैं कि ''**जो काफिर को काफिर न कहे, वो भी काफिर है।**'' बेःशक ये सहीह है। क्यूंकि कुफ्र को कुफ्र समझना ज़रूरीयाते दीन में से है। और ज़रूरीयाते दीन का मुन्किर काफिर है।

मिल्लते इस्लामिया के अज़ीमुल मरतबत अइम्मए किराम की मारकतुल आरा और मुस्तनदो–मोअतबर कुतुब ● तबय्यिनुल हक़ाइक़ ● फतावा क़ाज़ी खान ● तन्वीरुल अबसार ● दुर्रे मुखतार ● रद्दुल मोहतार अल मारूफ–ब●–फतावा शामी ● फतावा आलमगीरी वग़ैरा में साफ सराहत से लिखा हुवा है कि ''**मन–शक्का–फी अज़ाबेही–व कुफरिही फक़द कफर**'' यानी ''**जो उस के अज़ाब और कुफ्र में शक करे वो भी काफिर है।**'' औलोमा–ए देवबंद की किताबों की कुफरिया इबारात की बिना पर हरमैन शरीफैन के औलोमा–ए इज़ाम ने उन पर कुफ्र का जो फत्वा सादिर फरमाया है, उस फत्वे में भी मज़कूरा जुम्ला तहरीर फरमाया है। लैकिन दौरे हाजिर के देवबंदी हजरात अपने पेश्वाओं के खिलाफ अइम्मए मुतकद्दिमीन के इर्शादात को भी पसे पुश्त डाल देते हैं। लिहाज़ा ऐसे जिद्दी और ढंड लोगों का मुँह बंद करने के लिए उनके ही पैश्वा का हवाला पेश है।

● देवबंदी जमाअत के हकीमुल उम्मत **मौलवी अशरफ अली थानवी** साहब के मलफूज़ात के मजमूए ''**अल इफाज़ातिल यौमिया**'' में है कि थानवी साहब ने खुद ने फरमाया है कि ''**ऐसा**

शख्स भी काफिर है, जो काफिर को काफिर न कहे'' तफसीली वज़ाहत और हवाला के लिए इस किताब के **सफा नं : (२३३)** को फिर एक मर्तबा मुलाहिज़ा फरमाएं।

● दारुल उलूम देवबंद के नाज़िमे तालीमात और देवबंदी जमाअत के मुनाज़िर **मौलवी मुर्तज़ा हसन दरभंगी** ने अपनी किताब **''अशद्दुल-अज़ाब''** में एतराफ किया है कि :-

''अगर खान साहब के नज़दीक बाअज़ औलोमा-ए देवबंद वाक़ई ऐसे ही थे ..... अगर वो उनको काफिर न कहते तो खुद काफिर हो जाते। पूरी इबारत म्आ-हवाला इस किताब के सफा नंबर : (१३२) पर मुलाहिज़ा फरमाएं। **अल मुख्तसर ......**

इमाम इश्क़ो मुहब्बत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, **इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरेल्वी** अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने और उनके फत्वे की ताईदो-तौसीक में मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा के सरताज औलोमा-ए हक़ ने औलोमा-ए देवबंद की किताबों में मर्क़ूम तौहीनो-तन्क़ीसे अम्बियाए-किराम के तअल्लुक से जो कुफ्रिया इबारात थीं, उन कुफ्रिया इबारात की बिना पर उन पर बहुक्मे शरीअत कुफ्र का फत्वा सादिर फरमाया है और जो ये हुक्म इरशाद फरमाया है कि **''जो उनके कुफ्र में शक करे, वो भी काफिर है''** ये हुक्म उन्होंने शरीअते मुतह्हरा के अहकाम की रोशनी और दायरे में महदूद रह कर ही सादिर फरमाया है। और ये हुक्म इतना अटल और पुख्ता है कि किसी को भी इनकार करने की मजाल नहीं, बल्कि खुद देवबंदी मक्तबए फिक्र के हकीमुल उम्मत मौलवी अशरफ अली थानवी साहब ने भी इस हक़ीक़त का इक़रार व एतराफ किया है कि **जो काफिर को काफिर न कहे, वो भी काफिर है।**

लिहाजा........ आठ वर्क़ी किताबचा के पर्दा नशीन मुसन्निफ से सिर्फ यही कहना है कि पहले अपने घर की खबर लो। बक़ौल शाइर :-

ए चश्मे शोला-बार जरा देख तो सही
ये घर जो जल रहा है। कहीं तेरा न हो

उम्मीद है कि इस किताब के ज़रीए आठ वर्क़ी किताबचा के पर्दा-नशीन मुसन्निफ के सर और पीठ पर ज़िल्लत और रुस्वाई के दुर्रे और ताज़ियाने कसरत से पड़े होंगे। लिहाज़ा मुस्तक़बिल में इस क़िस्म की फुवड किताब लिखने की जुर्रतो-गुस्ताख़ी न करेंगे और दाइमी तौर पर पर्दा-नशीनी इख्तियार कर के घर की ज़ीनत बन कर मस्तूर रहेंगे।

फक़त वस्सलाम

ख़ानक़ाहे आलिया बरकातिया
मारेहरा मुतह्हरा और
ख़ानक़ाहे नूरिया रज़विया
बरेली शरीफ का अदना सवाली
अब्दुस्सत्तार 'मस्रूफ' बरकाती-नूरी
मरकज़ अहले सुन्नत बरकाते रज़ा
इमाम अहमद रज़ा रोड़, पोरबंदर

बमुकाम :- पोरबंदर
मौरखा :-
२९/जुलकाअदा
हि. १४३६
मुताबिक :- १४/
सितंबर
ई.२०१५
बरोज़ :- ईद दो शम्बा

मआखज़ व मराजेअ

नंबर शुमार	अस्माए कुतुब	मुसन्निफीन व मुतर्जिम	नाशिरीन
१	हिकायाते औलिया (उर्दू)	मौलवी अशरफअली थानवी, अल-मुतवफ्फा हि.१३६२	ज़करीया बुक डिपो-देवबंद (यू.पी.)
२	शोअबुल ईमान (अरबी)	इमाम अबूबक्र अहमद बिन हुसैन बैहकी अल-मुतवफ्फा हि.४५८	दारुल कुतुबुल इल्मिया, लबनान-बैरूत
३	कन्जुल उम्माल फी सुननिल अक्वाल वल अफआल (अरबी)	अल्लामा अलाउद्दीन अली मुत्तकी बिन हिसामुद्दीन अल-मुतवफ्फा हि. ९७५	दारुल कुतुबुल इल्मिया, लबनान-बैरूत
४	अल-जामेउस्सगीर फी अहादीसे बशीर अन्नज़ीर (अरबी)	अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन कमाल बिन अबीबक्र सुयूती अल-मुतवफ्फा हि.९११	दारुल कुतुबुल इल्मिया, लबनान-बैरूत
५	मिरकातुल मसाबीह	वलीउद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह खतीब तबरेजी हि.७४०	रजा अकेडमी - मुंबई
६	तक़वियतुल ईमान (उर्दू)	मौलवी इस्माईल देहेलवी हि.१२४६	दारुस्सलफिया-मुंबई
७	बहिश्ती ज़ेवर (उर्दू)	मौलवी अशरफअली थानवी, अल-मुतवफ्फा हि.१३६२	रब्बानी बुक डिपो जामेअ मस्जिद-देहेली
८	फतावा रशीदिया (उर्दू) कामिल मुबव्वब मतबूआ : ई.१९८७	मौलवी रशीद अहमद गंगोही	मक्तबे थानवी देवबंद-यू.पी.
९	तज़किरतुर्रशीद (उर्दू) पुराना अेडीशन	मौलवी आशिक इलाही मेरठी	मकतबतुश्शेख मोहल्ला मुफ्ती सहारनपुर (यू.पी.)
१०	तज़किरतुर्रशीद (उर्दू) जदीद अेडीशन इ.२००२	मौलवी आशिक इलाही मेरठी	दारुल किताब देवबंद-यू.पी.
११	सवानेह कासमी (उर्दू) मतबूआः- हि.१३७३	मौलवी मुनाज़िर अहसन गीलानी	दारुल उलूम देवबंद ज़िला सहारनपुर (यू.पी.)

नंबर शुमार	अस्माए कुतुब	मुसन्निफीन व मुतर्जिम	नाशिरीन
१२	आज़ाद की कहानी आज़ाद की ज़बानी (उर्दू)	मौलवी अब्दुर्रज़्ज़ाक मलीहाबादी	मकतबए खलील, उर्दू बाज़ार लाहौर
१३	तारीखे़ तनावुलिया (उर्दू)	सय्यद मुराद अली अली गढी	मकतबए कादरिया, लाहौर (पाकिस्तान)
१४	मक्तूबाते सय्यद अहमद शहीद (उर्दू तर्जुमा) मुअल्लिफ :- मुहम्मद जाफर थानेसरी	मुतर्जिम :- सखा़वत मिर्ज़ा	नफीस अकैडमी कराची - पाकिस्तान
१५	सीरते सय्यद अहमद शहीद (उर्दू)	सय्यद अबुल हसन अली नदवी	ऐम.ऐच. सईद ऐंड कंपनी- कराची
१६	उन्वानुल मज्द फी तारीखे़ नज्द (अरबी)	उस्मान बिन बशीर नज्दी अल-मुतवफ्फा हि.१२८८	मतबूआ :- रियाज़, सऊदी अरब
१७	मुहम्मद बिन अब्दुलवह्हाब (अरबी)	शेख़ अली तनतावी ज़ोहरी मिस्री-अल-मुतवफ्फा हि.१३३५	मतबूआ :- रियाज़, सऊदी अरब
१८	सवानेह हयात सुल्तान बिन अब्दुल अज़ीज़ आले सऊद (अरबी)	सय्यद सरदार मुहम्मद हसनी	मतबूआ :- रियाज़, सऊदी अरब
१९	अद्दुररुल सुन्निया फी रद्दे अलल वहाबिया (अरबी)	सय्यद अहमद दहलान मक्की अल-मुतवफ्फा हि.१३०४	मकतबतुल हकीकिया दारुश्शफका-इस्तम्बूल-तुर्की
२०	अस्सवाइके इलाहिया फी रद्दे अलल वहाबिया (अरबी)	शेख़ सुलेमान बिन अब्दुल वह्हाब नज्दी अल मुतवफ्फा हि.१२०८	मरकज़ अहले सुन्नत बरकाते रज़ा-पोरबंदर
२१	अल फजरुस्सादिक फी रद्दि अला मुन्किरी अत्तवस्सुल वल करामात वल खवारिक (अरबी)	अल्लामा शेख़ जमील सिदकी अज्जहावी अल बगदादी अल-मुतवफ्फा हि.१३५४	दारुल कुतुबुल इल्मिया, बैरूत-लबनान
२२	कशफुश्शुबहात (अरबी)	शेख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब नजदी- हि. १२०६	मतबूआ :- रियाज, सऊदी अरब
२३	हयाते तय्यबा (उर्दू)	मिर्ज़ा हैरत देहलवी	मक्तबा अत्तौहीद - देहेली
२४	सय्यद अहमद शहीद (उर्दू)	गुलाम रसूल महर	किताब मंज़िल, लाहौर (पाकिस्तान)
२५	सवानेह अहमदी (उर्दू)	मौलवी मुहम्मद जाफर थानेसरी	नफीस अकैडमी कराची (पाकिस्तान)

२६	मुशाहिदाते काबुल व यागिस्तान (उर्दू)	मुहम्मद अली कसूरी (एम.ए.)	अंजुमन तरक्कीए उर्दू कराची (पाकिस्तान)
२७	हकाइके तहरीके बालाकोट (उर्दू)	शाह हुसैन गुरदेजी	अल मजमउल इस्लामी मुबारकपुर
२८	मौलाना इस्माईल देहेलवी और तकवियतुल ईमान	मौलाना शाह अबुल हसन ज़ैद फारूकी	हज़रत शाह अबुल खैर अकैडमी–देहेली
२९	मकालमतुस्सदरैन	मौलाना ताहिर अहमद क़ासमी	ऑल इंडिया जमीअते औलोमा–ए इस्लाम – देहेली
३०	तेहज़ीरुन्नास (पुराना ऐडीशन)	मौलवी कासिम नानोत्वी बानी दारुल उलूम देवबंद मुतवफ्फा हि.१२९७	कुतुबखाना रहीमीया देवबंद (यू.पी.)
३१	तेहजीरुन्नास (उर्दू)	मौलवी कासिम नानोत्वी	मकतबा थानवी देवबंद
३२	तेहजीरुन्नास (उर्दू)	मौलवी कासिम नानोत्वी	दारुल किताब देवबंद
३३	बराहीने कातेआ (पुराना ऐडीशन)	मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी मुसद्दिका: मौलवी रशीद अहमद गंगोही	इमदादुल इस्लाम मेरठ (यू.पी.)
३४	बराहीने क़ातेआ (उर्दू)	अयज़न	कुतुब खाना इमदादिया देवबंद (यू.पी.)
३५	बराहीने क़ातेआ (उर्दू)	अयज़न	दारुल किताब देवबंद (यू.पी.)
३६	हिफ्जुल ईमान (उर्दू)	मौलवी अशरफ अली थानवी मुतवफ्फा हि.१३६२	दारुल किताब देवबंद (यू.पी.)
३७	हिफ्जुल ईमान (उर्दू) पुराना ऐडीशन	अयज़न	दारुल किताब देवबंद (यू.पी.)
३८	हिफ्जुल ईमान (उर्दू)	अयज़न	मसऊद पब्लिशींग हाऊस–देवबंद (यू.पी.)
३९	हिफ्जुल ईमान (उर्दू)	अयज़न	मदरसा मज़ाहिरुल उलूम सहारनपुर(यू.पी.)

www.markazahlesunnat.net

४०	तमहीदे ईमान ब आयाते कुरआन (उर्दू)	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहक्किक बरेल्वी–मुतवफ्फा हि.१३४०	रज़ा अकेडमी – मुंबई
४१	अशद्दुल अज़ाब अला मुसैलमतिल कज़्ज़ाब (उर्दू)	मौलवी मुर्तजा हसन चांद पूरी, दरभंगी	मतबा मुजतबाई जदीद दहेली
४२	हुस्सामुल हरमैन अला मुन्हरिल कुफ्रेवलमैन (अरबी–उर्दू) सने इशाअत ई.२००९	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहक्किक बरेल्वी–मुतवफ्फा हि.१३४०	रज़ा अकेडमी – मुंबई
४३	तक्दीसुल वकील अन तौहीने रशीदो–खलील (उर्दू)	मौलाना गुलाम दस्तगीर कसूरी	नूरी बुक डिपो, लाहौर (पाकिस्तान)
४४	तजानिबे अहले सुन्नते अन अहलिल फित्नते (उर्दू)	मौलाना मुहम्मद तय्यब दाना पूरी	दहेली प्रिंटिंग वर्कस–दहेली
४५	कृष्ण बीती (उर्दू) तीसरा ऐडीशन	ख्वाजा हसन निज़ामी	दहेली प्रिंटिंग वर्कस–दहेली
४६	सफरनामा मिस्रो–शाम व हिजाज़ मअ रोजनामा बा–तस्वीर (उर्दू)	ख्वाजा हसन निज़ामी	दहेली प्रिंटिंग वर्कस–दहेली
४७	रिसाला दरवेश (उर्दू) १५/ दिसंबर इ. १९२५	ख्वाजा हसन निज़ामी	दहेली प्रिंटिंग वर्कस–दहेली
४८	तसानीफेअहमदिया – मुश्तमिल हर कुतुबो रसाइले मज़्हबी "तफ्सीरुल कुरआन" सने तबाअत ई.१९८०	सर सय्यद अहमद ख़ां	अलीगढ इंसटीटवट प्रैस अलीगढ (यू.पी.)
४९	अल इफादातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौमिया (उर्दू) सने तबाअत ई.१९९९	मौलवी अशरफ अली थानवी के मलफूज़ात का मजमूआ	मक्तबा दानिश–देवबंद (यू.पी.)
५०	" (उर्दू) सने तबाअत इ.१९८९	अयज़न	मक्तबा दानिश–देवबंद (यू.पी.)
५१	मलफूज़ाते हकीमुल उम्मत (उर्दू) सने तबाअत ई.२०११	अयज़न	इदारा अशरफिया–देवबंद (यू.पी.)

५२	हक़ीक़ुतुल वही (उर्दू)	मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी	मक्तबा मैगज़ीन-क़ादयान (पंजाब)
५३	दाफ़िउल बला (उर्दू)	मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी	दारुल अमान मतबा ज़ियाउल इस्लाम-क़ादयान
५४	कशफ़ुलबरिय्यह (उर्दू)	मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी	मेजर बुक डिपो - क़ादयान
५५	इस्लामी क़ुरबानी (उर्दू) सने इशाअत इ.१९२०	क़ाज़ी यार मुहम्मद	रियाज़ुल हिंद प्रिंटर अमृतसर (पंजाब)
५६	अरबईन नंबर : ४ (उर्दू)	मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी	बुक डिपो-तालीफ़े तसनीफ़ रबवा (पंजाब)
५७	बराहीने अहमदिया (उर्दू)	मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी	मतबा ज़ियाउल इस्लाम-क़ादयान (पंजाब)
५८	अंजाम आथम (उर्दू)	मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी	ज़ियाउल इस्लाम प्रेस-क़ादयान (पंजाब)
५९	कश्तीए नूह (उर्दू)	मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी	मतबा जियाउल इस्लाम-क़ादयान (पंजाब)
६०	मजमूअए-इश्तिहारात (उर्दू)	मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी	अश्शिरक़तुल इस्लाम लिमीटेड रबवा (पंजाब)
६१	नुज़ूलुल मसीह (उर्दू)	मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी	मतबा मैगज़ीन क़ादयान
६२	तज़किरा (उर्दू)	मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी	अश्शिरक़तुल इस्लाम लिमीटेड रबवा (पंजाब)
६३	इज़ालए-अवहाम (उर्दू)	मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी	मतबा रियाज़ुल हिंद अमृतसर (पंजाब)
६४	इक़्बाल व अहमद रज़ा (उर्दू)	राजा रशीद महमूद। एम.ए. लाहौर	एजाज़ बुक डिपो (कलकत्ता)
६५	"माहनामा क़ौमी ज़बान" में शाए उन्वान "नज्दी तहरीक और इक़्बाल"	डाक्टर मुईनुद्दीन अक़ील	शुमारा-नवम्बर ई.१९८१ कराची (पाकिस्तान)

६६	"इक़बाल का मज़हब" मशमूला "मुतालए इक़्बाल"	क़ाज़ी मुहम्मद अदील अब्बासी	उत्तर प्रदेश अकाडमी-लखनऊ (यू.पी.)
६७	"बाले जिब्रील"	डाक्टर मुहम्मद इक़्बाल	करीमी प्रैस, लाहौर
६८	"बाँगे दरा"	डाक्टर मुहम्मद इक़्बाल	करीमी प्रैस, लाहौर
६९	इक़्बाल मस्लके रज़ा के आईने में	डाक्टर अब्दुन्नईम अज़ीज़ी	रज़ा अकैडमी अस्टा कपोरट (बरतानिया)
७०	दावते फ़िक्र सने तबाअत इ.१९८३	मौलाना मुहम्मद ताबिश क़सूरी	मुरीद के - बुक सेलर शेख़ूपुरा (पाकिस्तान)
७१	अरमग़ाने हिजाज़	डाक्टर मुहम्मद इक़्बाल	करीमी प्रैस, लाहौर
७२	नवादिरे इक़्बाल	मुख़्तलिफ़ मज़ामीन का मजमूआ	सर सय्यद बुक डिपो अलीगढ (यू.पी.)